अनुभवात्मक आध्यात्मवाद

(2023 edition)

Realisation Centred Spiritualism

by Shri A. Nagraj

English translation version by: Sanjeev Chopra, New Delhi, India

[schopra45@yahoo.com](mailto:schopra45@yahoo.com)

Draft / Work-in-progress

**Next online meeting : Sunday, 3-Nov-2024 (7:30 - 9:00 am)**

Reading from page-44 of original Hindi book

Status as on Oct 28, 2024

| 1 | Draft translation (first round by translator) | Completed (total 147 pages in Hindi book) |
| --- | --- | --- |
| 2 | Own review (second round by translator) | Started on 10 Sept, 2023.  Completed till page 129. |
| 3 | Reading in weekly meetings | Started on 7 April 2024.  Completed till page 43. |
| 4 | Peer review | Later |

**भूमिका**

**Introduction**

इस अनुभवात्मक अध्यात्मवादी प्रबंध को मानव के कर कमलों में अर्पित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ ।

I feel immensely pleased while offering this treatise of Realisation Centred Spiritualism to humankind.

अनुभवात्मक अध्यात्मवाद अपने में अनुभवमूलक विधि से जीता जागता हुआ मानव की आपसी चर्चा है या दूसरी भाषा में अनुभवमूलक विधि से जीता जागता विवेक और विज्ञान की परामर्शात्मक प्रस्तुति है ।

Realisation Centred Spiritualism in itself is the dialog within an awakened person living in accordance with the realisation-rooted method. Put another way, it is the counsel and advice on wisdom and science by an awakened person.

सौभाग्य यह रहा कि सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव करने और उसकी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने की सुखद घटना मेरे इस शरीर यात्रा में घटित हुई । यह मेरे ही स्वयं स्फूर्त जिज्ञासा की परिणिति रही । नियति के अनुसार, अनुभव को व्यक्त करने का स्वरूप, प्रक्रिया, लक्ष्य और दिशा मुझे स्पष्ट हुई, जिसके आधार पर इस कृति की रचना संभव हो पाई ।

I have been fortunate that the event of realising the existence as coexistence, and the expression thereof, occurred during this lifetime of mine. This has been the culmination of my own self-ignited curiosity. As per the destiny, the true form, process, purpose and direction to express the realisation became clear to me and as a result, it became possible to create this book.

परिणिति, परिणति (परिभाषा संहिता से) : परमाणुओं में प्रस्थापन विस्थापन क्रिया का परिणाम; कार्य-व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी का फल परिणाम रूप में वर्तमान.

Culmination : Result of the insertion and expulsion activity in atoms; Present result & consequence of work & behaviour and of participation in systems.

जितनी भी सुनी हुई बातें हैं, उसके सार संक्षेप में, मेरे स्वयं को प्रमाणित होना ही, मेरा उद्देश्य बना रहा । इसी मानसिकता की गति जिज्ञासा में, जिज्ञासा शोध में, शोध अनुसंधान में प्रवर्तित होने के फलस्वरूप, नियति के अनुरूप होना संभव हो गया । अनुभवात्मक अध्यात्मवाद पूरा प्रबंधन रूप में साकार हुआ ।

From all that I had heard, in nutshell, myself becoming the evidence remained my goal throughout. This mindset led to curiosity, curiosity to inquiry and inquiry to exploration; all this occurred as per the destiny and made realisation of the goal possible. Finally, this took the shape of a full treatise in the form of Realisation Centred Spiritualism.

इस अभिव्यक्ति की संप्रेषणा में यही आशय निहित है कि अपने में अनुभव को भाषा रूप देना बन गया है । उसी प्रकार इसे अध्ययन करने वाले हर व्यक्ति में, भाषा को अर्थ रूप में स्वीकारने की महिमा समाई हुई है । इसी विश्वास से इसको मानव में, से, के लिए अर्पित करना संभव हुआ ।

The intent of this communication is to highlight that it has become possible to precisely articulate ‘realisation’ in oneself. In a similar manner, in every person studying this, the capacity of grasping the meaning of the words is inherent. It is with this confidence that it has become possible to offer it to, by & for humans.

यह मैं अथ से इति तक अनुभव किया हूँ कि अनुभवमूलक विधि से किया गया सूझ-बूझ अर्थात लक्ष्य और दिशा के अनुसार योजना और कार्य योजना तथा फल परिणाम - ऐसे फल परिणाम का अनुभव के अर्थ में सार्थक होना ही सर्वमानव सौभाग्य का स्वरूप होना पहचाना गया । इसी कारणवश इसे मानवता के लिए अर्पित किया गया है । इसी से अर्थात अनुभवमूलक प्रणाली से न्यायपूर्वक जीना, समाधानपूर्वक जीना, व्यवस्था में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना, यह सभी संभव हो चुका है ।

I have experienced it thoroughly that (1) planning and execution, and the results and consequences thereof, done wisely (aligned with goal and direction) by realisation- based method, and (2) such results and consequences becoming meaningful for realisation - this indeed is the true form of serendipity (good fortune) of humankind. It is for this reason that this has been dedicated to humanity. It is only because of the realisation-based method that living justly, living resolutely, living in systems, and participating in the overall system - all this has become possible.

समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का तात्पर्य - मानवीय शिक्षा कार्य में, न्याय सुरक्षा कार्य में, परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य में, लाभ-हानि मुक्त विनिमय कार्य में, स्वास्थ्य-संयम कार्य में भागीदारी करने से है ।

Meaning of participating in the overall system is the participation in humane education activities, justice & protection activities, producing more than the needs of the family, exchange activities devoid of profit & loss, and health-*sanyam* activities.

हम यह भी अनुभव कर चुके हैं कि हर समझदार मानव परिवार का समाधान समृद्धिपूर्वक जीना सुलभ होगा । मेरा यह भी विश्वास है कि हर मानव अर्थात प्रत्येक नर-नारी समाधान, समृद्धि के प्यासे हैं । यह प्यास तृप्ति में परिवर्तित हो, यही इस अनुभव दर्शन का मूल उद्देश्य है ।

I have also realised that it is possible for all wise families to effortlessly live with resolution and prosperity. I am also confident that all humans, males & females, strive for resolution and prosperity. To convert this striving into fulfilment is indeed the main purpose of this book.

इसका मानव में स्वीकृत होना, नियति विधि और नियति होने के आधार पर इसका लोकव्यापीकरण होना आवश्यक है । इसे स्वीकारने के उपरान्त ही, इसे प्रस्तुत किया ।

Based on the facts that it is acceptable to humans, is aligned with destiny, and is destined, it is important to disseminate it. It has been presented only after it has been accepted.

मुझे पूरा भरोसा है कि मानव कुल में आदि काल से बनी हुई अभ्युदय की अपेक्षा प्रयासों के क्रम में यह ग्रन्थ सार्थकता की मंजिल तक पहुँचाने में उपयोगी होगा ।

I have full confidence that this book (scripture) shall be immensely useful and meaningful in the chain of endeavours for comprehensive resolution which humankind has been awaiting and seeking since ancient times.

**जय हो ! मंगल हो ! कल्याण हो !**

**Let there be glory, goodness and fulfilment !**

**(May the universal well-being prevail)**

- ए. नागराज

- A. Nagraj

**विकल्प**

**The Alternative**

1. अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।

The study of humans could not be accomplished through instability and uncertainty-based physicochemical matter-centric ideology, also known as the scientific approach. The study of humans could also not be accomplished by way of mystery-based idealistic contemplation. Both of these approaches refer to humans as animals.

विकल्प के रूप में प्राप्त अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।

As an alternative, Madhyasth Darshan Co-existentialism recognised humans to be in knowledge order by way of existence based human-centric contemplation.

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता, (जानने वाला), सह-अस्तित्वरूपी अस्तित्व जानने मानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए संपूर्ण वस्तु है यही ज्ञेय दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान व मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित सहअस्तित्व प्रमाणित होने की विधि अध्ययनगम्य हो चुकी है।

Madhyasth Darshan posits that only humans are capable of knowing, and the entire object of this knowledge is existence in the form of coexistence, which itself is the philosophical knowledge. Furthermore, the way of evidencing coexistence has become studiable through knowledge of *jeevan* and humane conduct.

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

I have presented Madhyasth Darshan Co-existentialism, the knowledge of human-centric contemplation based on existence, in the form of literature for humanity to study.

1. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए.नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

Prior to my realisation of human-centric contemplation based on existence, I, Agrahar Nagraj from Hassan district in Karnataka, India, was initiated in the spiritual knowledge through *upasana* and *karma* based on Vedic ideology.

1. वेदान्त के अनुसार ज्ञान ‘‘ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या’’ जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पत्ति बताई गई।

उपासना :- देवी देवताओं के संदर्भ में

कर्म :- स्वर्ग मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)

मनुधर्म शास्त्र में :- चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है।

कर्म काण्डों में :- गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्म काण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है।

इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

According to *Vedanta* knowledge, only *Brahma* is considered the truth, and this world is considered an illusion ("*Brahma satya, jagat mithya*"). However, *jeeva* and *jagat* are said to have originated from *Brahma*.

*Upasana*: - Devotional practices towards gods and goddesses.

*Karma*: - All actions for attaining the so-called heaven.

*Manu Dharma Shastra*: - Prescribes the code of daily conduct of four social classes (*varna*) in four life stages (*ashrama*).

*Karma kanda*: - Adherence to sixteen kinds of rituals from conception till death.

After studying all of these concepts, a question arose in my mind.

1. सत्यम ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है? तत्कालीन वेदज्ञों एवं विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे :-

समाधि में अज्ञात के ज्ञात होने का आश्वासन मिला। शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य सम्पन्न करने की स्वीकृति हुई। मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में संपूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभवपूर्ण विधि से समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद वाूमय के रूप में विकल्प प्रकट हुआ।

How can the *jeeva*-*jagat*, which originated from the Truth, Knowledge, and Infinite *Brahma*, be an illusion? Upon raising this question to scholars and wise people of the time :-

I received assurance that one can "know the unknown" in the state of *samadhi*. Based on its confirmation in the scriptures, I resolved to pursue *sadhana*, *samadhi*, and *samyama*. Through *sadhana* and attaining *samadhi*, I reached a complete understanding by studying and realising that all existence is in the form of being and abiding as coexistence. Consequently, the alternative philosophy of Madhyasth Darshan Co-existentialism emerged in the form of literature.

1. आदर्शवादी शास्त्रों के अनुसार- रहस्य मूलक ईश्वर केद्रित चिंतन ज्ञान तथा परम्परा के अनुसार- ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय

विकल्प के अनुसार - ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोध गम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रुप में स्पष्ट हुआ.

According to the scriptures of idealism and the mystery-based God-centric contemplation knowledge and tradition, knowledge is considered to be unmanifest and ineffable.

According to Madhyasth Darshan, knowledge is manifest, effable, and comprehensible through studying, and its evidence becomes accessible to all through behaviour.

1. अस्थिरता, अनिश्चियता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केंद्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव निर्मित करने की बात कही गयी है।

इसके विकल्प में सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित सम्पूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

According to the instability and uncertainty-based materialism of matter-centric thinking, science is considered to be the only source of knowledge, and it is believed that humans create the laws.

The alternative human-centric contemplation, based on knowledge of existence in the form of coexistence, postulates that existence is stable, development and awakening are definite, and all laws are natural and inherent to being and abiding.

1. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुयें व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही ‘‘मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद’’ शास्त्र सूत्र है।

Existence is not just physicochemical matter, but all physical, chemical and *jeevan* entities are inseparably present in Omnipresence. This is the essence of “Madhyasth Darshan Co-existentialism” literature.

**My Testimony**

1. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबंधित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रुप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना-आराधना-अर्चना-स्तवन कार्य सम्पन्न होता रहा।

My ancestors were known as *Vedmurti* (apostles of Vedic knowledge) in the place of my birth. My home and village were filled with the sounds of *Vedanta*, *Upanishads*, and *Darshanas*. In my family, there was a tradition of performing *upasana*, *aradhana*, *archana*, and *stavan* in accordance with the *Vedas*.

1. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवा भावी तथा श्रम शील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

My family tradition included some of the highest-grade Vedic scholars, who were devout practitioners of *seva* (selfless service) and physical labour in both work and behaviour. While I accepted the tendencies of *seva* and labour, I still had questions about the scholarly aspect.

1. प्रथम प्रश्न उभरा कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्ति मिथ्या कैसे ?

दूसरा प्रश्न -

ब्रह्म ही बंधन एवं मोक्ष का कारण कैसे ?

तीसरा प्रश्न -

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण ?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्गाता प्रमाण?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

The first question arose -

How can *jeeva* and *jagat* be an illusion which originated from *Brahma* the Truth?

The second question -

How *Brahma* itself is the cause of both *bandhan* and *moksha*?

The third question -

* Is word the evidence, or is the carrier and bearer of the word the evidence?
* Is *aapt-vakya* the evidence, or is the originator of *aapt-vakya* the evidence?
* Is *shastra* the evidence, or is propounder the evidence?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

चौथा प्रश्न -

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय-चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

वोट-नोट (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा ?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य, एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और संविधान में उसका प्रक्रिया होना।

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट नोट कागठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र है ?

One more question arose in me from the prevailing circumstances.

The fourth question -

Following India's independence, a constituent assembly was established. When drafting the Constitution, the assembly assumed that the public representatives were qualified to govern the nation, even though the assembly did not define or describe the nation, nationhood, or national character.

How valid is the public verdict or the public representative who is elected as a result of a coalition of votes and money?

Although the Constitution of India declared the country a secular state, it listed numerous castes, communities, and sects.

The Constitution of India proclaimed equality, yet it also described the procedures and provisions for reservation.

In a democratic system, public representatives are elected through a process that involves a coalition of votes and money.

What kind of democracy is this?

1. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्मानीय ऋषि महर्षियों के सुझाव से-

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।

सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढता आई।

In order to get rid of these questions, I approached the scholars, *vedmurtis* (apostles of Vedas), revered spiritual teachers and sages of the time, and from their suggestion: –

1. The only way to “know the unknown” is *samadhi* – which I accepted.
2. I accepted Amarkantak to be the appropriate place for *sadhana*.
3. I began my *sadhana* activities in 1950, and my practice matured during the 1960s.
4. सन् 1970 में समाधि सम्पन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह से अठारह घंटे तक होती रही।

समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारी। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम सम्पन्न होने की क्रिया में भी 12 घण्टे से 18 घण्टे लगते रहे। फलस्वरुप संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व सहज रूप में होना-रहना मुझे अनुभव हुआ। जिसका वाूमय ‘‘मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद’’ शास्त्र के रुप में प्रस्तुत हुआ।

In 1970, I accepted that I had attained *samadhi*. In this state, my hopes, thoughts, and desires were silent, and it was clear that the event of "knowing the unknown" did not occur. I would experience this state for twelve to eighteen hours every day.

Of my own accord, I accepted the sequence of *samadhi*, *dhyan*, and *dharana* as the process for *samyama*. Two years later, having accomplished *samyama*, I accepted the evidence of having attained *samadhi*. Even during the phase from *samadhi* to the accomplishment of *samyama*, I practised *sadhana* for 12 to 18 hours every day. As a result, I attained the realisation that all existence is in the form of coexistence, which I have presented in literary form as "Madhyasth Darshan Co-existentialism."

1. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रुप में भूखे अजीर्ण व परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त गठनपूर्ण परमाणुओं के रूप में जीवन होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई-जीवन रुप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही सम्पूर्ण भौतिक-रासायनिक रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया।

Coexistence : - Entire insentient and sentient nature was understood to be saturated and eternally present in the Omnipresence reality.

In coexistence itself : - I understood the progression of development in the atom (*vikas kram*) in the form of hungry and overfull atoms, and the development (*vikas*) of the atom itself as satiated, constitutionally complete atoms, i.e., '*jeevan*' in its being and abiding.

In coexistence itself : - The constitutionally complete atom or sentient unit is understood to be in the form of ‘*jeevan*’.

In coexistence itself: - It is understood that the entire physical, chemical and plant order compositions are made of hungry and overfull atoms, molecules and cells, and this Earth and every other planet are compositions of atoms and molecules.

1. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण वन-वनस्पतियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मनुष्य शरीर का भी रचना सम्पन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

In coexistence itself: - It is understood that on Earth, a physical form, the formation of compounds, along with the process of chemical reactions, resulted in the emergence of cells. These cells eventually formed complex organisms and, as the organisms evolved and became enriched, forests and vegetation appeared. From these cells, animal bodies were formed, including the human body, and their traditions were established.

1. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में से के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

In coexistence itself: - The human tradition is understood to be a combination of *jeevan* and body.

Coexistence is understood to be eternally effective in, from, and for coexistence, which is considered to be the course of destiny.

1. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही :-

(1) अस्तित्व में चार अवस्थाएँ

० पदार्थ अवस्था

० प्राण अवस्था

० जीव अवस्था

० ज्ञान अवस्था

और

(2) अस्तित्व में चार पद

० प्राणपद

० भ्रांति पद

० देव पद

० दिव्य पद

(3) और

० विकास क्रम, विकास

० जागृति क्रम, जागृति है।

तथा जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया। इसे मैंने सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

The way of destiny: - through coexistence itself: -

(i) Four orders in existence

* + Material Order
  + Plant Order
  + Animal Order
  + Knowledge Order

(ii) Four stratums in existence

* + Physicochemical stratum
  + Delusion stratum
  + Godly stratum
  + Divine stratum

(iii) and

* + Development progression, Development
  + Awakening progression, Awakening

and the eternal grandeur of awakened human tradition as orderly living with humaneness and participation in the universal system was understood. I accepted this as the essence of universal good and recognised the natural expectation for goodness in all humans. As a result, I have presented to humankind the essence and explanation of consciousness development, value education, humane constitution, humane conduct, and humane system.

**भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो**

**धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।**

May Earth become heavenly, and humans become gods,

May *dharma* prevail, and goodness arise forever.

* A. Nagraj

**इस ग्रंथ से**

**From this book (scripture)**

* भ्रमित स्थिति में मानवीयता के विपरीत जीवों के सदृश्य जीना देखने को मिलता है, जबकि मानव की मौलिकता मानवीयता ही है । जागृति सहज विधि से मानवीयता स्वयं स्फूर्त विधि से प्रमाणित होती है।

In the state of delusion, humans are seen to be living inhumanely, very similar to the animal kind; while humaneness is the uniqueness of humans. Humaneness is evidenced effortlessly by way of awakening.

* अनुभव (जागृति) के पश्चात् नैतिकता पूर्वक मानव व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह कर पाता है, चरित्रपूर्वक व्यवहार करता है और संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्तिपूर्वक जी पाता है । यही सुख, सुन्दर और समाधानपूर्वक जीने की कला का स्वरूप है ।

After realisation (awakening), humans are able to participate in the system by following the ethics, their behaviour is governed by character, and the living is based on relationship, values, evaluation & mutual fulfilment. This indeed is the true form of art of living with happiness and resolution.

* जागृति के अनन्तर हर व्यक्ति स्वाभाविक रूप में असंग्रह प्रतिष्ठा को समृद्धिपूर्वक, स्नेह प्रतिष्ठा को पूरकतापूर्वक, विद्या प्रतिष्ठा को जीवन विद्यापूर्वक, सरलता प्रतिष्ठा को सह-अस्तित्व-दर्शनपूर्वक, अभय प्रतिष्ठा को मानवीयतापूर्ण आचरणपूर्वक वैभवित होने के लिए कार्य करता हुआ देखने को मिलता है ।

While in the state of awakening, all humans are naturally found to be working towards establishing the harmonious tradition of non-accumulation (by way of prosperity), of affection (by complementariness), of knowledge (by knowledge of *jeevan*), of simplicity (by holistic view of coexistence), and of fearlessness (by humane conduct).

* जागृत जीवन ही ज्ञाता है, जीवन सहित सम्पूर्ण अस्तित्व ज्ञेय है और जागृत जीवन का परावर्तन क्रियाकलाप ही ज्ञान है ।

Only the awakened *jeevan* is ‘knower’; all existence, including jeevan, is ‘knowable’ (comprehensible); and manifestation activity of the awakened *jeevan* indeed is ‘knowledge’.

* आशा बंधन इन्द्रियों द्वारा सुखी होने के रूप में, विचार बंधन व्यक्ति द्वारा अपने विचारों को श्रेष्ठ मानने के रूप में और इच्छा बन्धन रचना कार्य की श्रेष्ठता को स्पष्ट करने के रूप में होता है ।

Bondage of hope is in the form of sensory happiness, bondage of thoughts is in the form of believing one’s thoughts to be superior to others, and bondage of desires is in the form of claims of superiority of creative endeavours.

* जीवन नित्य होने के कारण अस्तित्व में ही वर्तमान रहता है। यही मानव शरीर यात्रा समय में मानव कहलाते हैं, शरीर त्यागने के उपरांत यही देवी, देवता, भूत-प्रेत कहलाते हैं ।

As *jeevan* is eternal, it always remains in existence. During human lifetime, these are called humans; and after death, the same are called goddesses, gods, ghosts and evil spirits.

**Index**

Chapter Topic

1. Critique and Proposal
2. Realisation Centred Spiritualism : An introduction
3. Authenticity of Realisation is same in all human beings
4. Atma is inseparable from jeevan
5. Bondage and Liberation
6. The Seer, The Doer, The Enjoyer
7. The Absoluteness of Awakening

अध्याय विषय वस्तु

1. समीक्षा एवं प्रस्ताव
2. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद : एक परिचय
3. अनुभव सहज प्रामाणिकता सर्वमानव में समान है
4. आत्मा जीवन में अविभाज्य है
5. बन्धन और मुक्ति
6. दृष्टा, कर्ता, भोक्ता
7. जागृति कैवल्य

**Chapter 1**

**समीक्षा एवं प्रस्ताव**

**Critique and Proposal**

सुदूर विगत से ही अध्यात्मवादी, अधिदैवीयवादी और अधिभौतिकवादी विचार मानव-मानस में स्मृति और श्रुति के रूप में हैं । कल्पनाओं-परिकल्पनाओं के आधार पर वांग्मय रचना बहुत सारा हुआ है । इसमें अनेकानेक मानव ने भागीदारी का निर्वाह किया घोर परिश्रम किया । इसी क्रम में घोर तप, योगाभ्यास, यज्ञ, दान के रूप में भी अपने-अपने आस्थाओं के साथ जीकर दिखाया अथवा करके दिखाया । इन्हीं सब कृत्यों को आदर्शवादी कृत्य भी मानते आये हैं । क्योंकि ये सब कृत्यों को सब नहीं कर पाते थे । न करने वाले के लिए, करने योग्य कृत्यों के रूप में सभी प्रकार के धर्म ग्रंथ बताते आये । ये सब करने के उपरांत भी अध्यात्म, देवता और ईश्वर ये सब रहस्य में ही रहे । रहस्य की परिभाषा है - हम मानव जो कुछ जानते नहीं है वह सब रहस्य होना समीक्षित हुआ । इस विधि से नहीं जानते हुए मनवाने के जितने भी प्रयास हुए वह सब आस्थावादी कार्यकलाप के रूप में गण्य हुआ । आस्था का परिभाषा ही है नहीं जानते हुए किसी के अस्तित्व को स्वीकार करना । यह सर्वविदित है।

Ever since ancient times, idealistic thoughts (spiritualism, polytheism and metaphysics) have occupied the human mind in the form of memories and anecdotes. Lot of literature, full of stories and fables, is available for which numerous people have done hard work and made important contributions. In this process, many people have lived strictly according to their faiths, by doing and demonstrating rigorous meditations in the form of asceticism, *yoga*, offerings and charity. All such activities are often assumed to be the ideal activities. As it was not practical for everyone to devote their lives to such rigour and strictness, all religious scriptures prescribed doable & simple rituals for the common people. In spite of doing all this, spirituality, deities and God, all have remained shrouded in mystery. All that we humans haven’t understood is mystery. In this manner, all the endeavours for ensuring compliance without knowing get categorised as faith-based or belief-based activities. Definition of faith is – to accept the existence of something without knowing it. All this is well-known.

ईश्वर, अध्यात्म और देवी-देवता के अधीनता में ही जीव जगत होना वांग्मयों में बताया गया है । अनजान घटनाओं की व्याख्या करने के क्रम में जीव-जगत अध्यात्म, देवी-देवता और ईश्वराधीन है इसके समर्थन में बहुत कुछ लिखा गया है । इन सभी प्रयासों का महिमा सहित अर्थात् बहुत सारे साधनों को नियोजित करने के उपरांत भी अध्ययन विधि से कोई प्रमाण, अनुभव विधि से कोई प्रमाण, प्रयोग विधि से कोई प्रमाण और व्यवहार विधि से कोई प्रमाण मिला नहीं । जबकि कोई मानव रहस्य को वरता नहीं । आस्था के आधार पर अपने कल्पनाशीलता के अनुरूप रहस्य को सजाने गया वही वांग्मय का स्वरूप बना । इसका आधार केवल मानव सहज कल्पनाशीलता-कर्म स्वतंत्रता ही है और मानव कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय परतंत्र रहा ।

Scriptures talk about the living world being subservient to God, spirit and deities (gods-goddesses). A lot has been written to support this and to explain many random events. In spite of such glorious endeavours, or despite allocating many resources to all these endeavours, no evidence has been found either by study, or by realisation, or by experimentation, or by behaviour. And mystery is not acceptable to anyone. As the humans went about articulating the mystery, the unknown, on the basis of their beliefs, using their imagination, it took the form of idealistic literature. Imagination and freewill of humans is indeed the basis of idealistic literature, and humans (in delusion) remained free while performing their actions, and dependent while experiencing the consequences of their actions.

इस समीक्षा को यहाँ इसीलिये प्रस्तुत किये हैं कि हर मानव सत्य, समाधान, व्यवस्था, न्याय, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित करना चाहते हैं । हर मानव जन्म से ही सत्य वक्ता होता है इसलिए सत्य बोध होने की आवश्यकता है। भौतिकवादी और आदर्शवादी विधि से सत्यबोध होना मानव जाति के लिए प्रतीक्षित है । इसलिए सर्वतोमुखी समाधान और न्यायबोध होना अभी तक प्रतीक्षित है, अर्थात् 20 वीं शताब्दी के दसवें दशक तक प्रतीक्षित है । विक्रम शताब्दी के अनुसार 2052 आषाढ़ मास तक प्रतीक्षित है । इसी सर्वेक्षण, निरीक्षण और परीक्षण के आधार पर ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ की आवश्यकता को पहचाना गया ।

This critique has been presented here because all humans want to be the evidence of truth, resolution, system, justice, prosperity, fearlessness and coexistence. All children naturally speak the truth from birth; therefore enlightenment of truth is much needed. By pursuing the paths of materialism & idealism, humankind still awaits the enlightenment of truth. Therefore, comprehensive resolution and enlightenment of justice is also awaited until this last decade of the twentieth century. This inspection, examination & survey is the basis on which the need of ‘Realisation Centred Spiritualism’ has been recognised.

रहस्यमय और सुन्दर कल्पना के आधार पर अर्थात मनलुभावन विधि से वांग्मयों में मोक्ष और स्वर्ग की कल्पनाएँ प्रस्तुत की गई है । जहाँ तक मोक्ष की बात है अध्यात्म विधि से ऐसा बताया गया है कि जीवों के हृदय में आत्मा रहता है । वह आत्मा ब्रह्म में अथवा परमात्मा में विलय हो जाता है । इसके लिये ब्रह्म ज्ञान ही एकमात्र शरण स्थली बताया गया । कुछ प्रणेताओं का कहना है यह एकांत विधि से संभव है और कुछ प्रणेताओं का कहना है घोर तप से, कुछ प्रणेताओं का कहना है योगाभ्यास से, संघ के शरण में जाने से, और कुछ प्रणेताओं का कहना है योग और संयोग से, होता है । ये सब मोक्ष के सम्बन्ध में बताए गए उपायों के क्रम में इंगित कराया गया । इंगित कराने का तात्पर्य स्वीकारने योग्य तरीके से है । और भी कुछ प्रणेता लोगों का कहना है कि प्रलय काल में परिणाम मोक्ष के रूप में जीव-जगत, ब्रह्म में अथवा देवी, देवता में विलय हो जाता है । (‘वह’ का तात्पर्य ऊपर कहे गये अध्यात्म, ईश्वर, देवी, देवताएँ) सबका कल्याण करेगा तब तक ईश्वरीय नियमों के साथ-साथ जीना ही धर्म संविधान है । ऐसा बताया करते हैं ।

In scriptures, *moksha* and heaven have been depicted using mysterious and attractive imagery. As far as *moksha* is concerned, it is mentioned in spirituality that the seat of the soul is in the heart of living beings. That soul gets dissolved (subsumed) into God or *Brahmna*. For this, knowledge of *Brahmna* is suggested as the only refuge. Some great men say it is possible by solitude, some say it is possible by rigorous asceticism, some recommend *yoga* meditations or some other practices for this, while some claim that it occurs by coincidence. All these methods have been indicated for attaining *moksha*. Indicated here means methods which can be resorted to. Some other learned people talk about the doomsday whose final outcome is *moksha*, when all living beings dissolve into *Brahmna* or gods-goddesses. It is also mentioned that He (means all above-mentioned spirituality, God, gods-goddesses) will take care of everyone; till then, living by His rules as prescribed in religious constitutions and scriptures, is recommended.

जहाँ तक स्वर्ग की बात है इसे, इस धरती से भिन्न स्थली में संजोने का वांग्मयों में प्रयत्न किया । उन-उन लोक में कोई देवी-देवता का होना और उन्हीं के आधिपत्य में उनका सौन्दर्य और सुख रहने का विधि से बताया गया है । इन वांग्मयों में स्वर्ग को सर्वाधिक सम्मोहनात्मक और आकर्षक विधियों से सजा हुआ बताया गया है वहाँ पहुँचने के लिए जो ज्ञात स्थिति है वह पुण्य ही एक मात्र पूंजी बताई गई है । पुण्य को पाने के लिए स्वार्थी को परमार्थी होना आवश्यक बताया । अतिभोग-बहुभोगशीलता गलत है । इसी के साथ-साथ स्वर्ग की अर्हता को पूरा करने के लिए त्याग का उपदेश दिया गया। ज्यादा से ज्यादा सुख-सुविधावादी वस्तुओं का दान योग्य पात्रों को करने से स्वर्ग में अनंत गुणा सुख सुविधाएं मिलने का आश्वासन किताबों में लिखा गया । ध्यान, स्मरण, कृत्यों को पुण्य कमाने का स्त्रोत बताया गया । इसी के साथ-साथ अवतारी आचार्य, गुरू, सिद्ध, आश्वासन देने में समर्थ व्यक्तियों का सेवा, सुश्रुषा, उनके लिए अर्पित दान, स्तुति, कीर्तन ये सब पुण्य कमाने का विधि बताए । इसी के साथ-साथ परोपकार, जीव, जानवर, पशु पक्षीयों के साथ प्रेम, फूल-पत्ती, पेड़ के साथ दया करने को भी कहा । साथ ही मन को धोने और स्थिर करने की बातें बहुत-बहुत कही गयी है ।

As far as heaven is concerned, scriptures have attempted to put it together as a world different, or away, from Earth. It is mentioned that such places are governed by their respective gods & goddesses, and their beauty and happiness is entirely in their own control. In these scriptures, heaven is described as extremely attractive, and a stock of divine acts (*punya*) is mentioned as the only capital which surely takes someone there. For that, the selfish must become unselfish or altruistic. Hedonism, or extreme indulgence in sensory pleasures, is mentioned as wrong. Additionally, advice for renunciation is also given for becoming eligible for heaven. Assurance of getting in heaven many times over of what one donates to the needy here, is also given in scriptures. Acts of meditation and memorising the scriptures are claimed to be sources of earning divine merits. Other prescribed methods of earning divine merits (*punya*) are *seva* of religious gurus and making offerings to them, as well as prayers and hymns. Along with this, helping others and being kind to the animal-world, plants and vegetation is also prescribed. A lot has been said about cleansing and stabilising the mind, too.

इन सभी उपदेशों का भरमार रहते हुए भी भय, प्रलोभन और आस्थावादी कृत्यों से अधिक मानव परंपरा में इस समूची धरती में और कुछ होना देखने को नहीं मिला । अर्थात उपदेश के रूप में जो बातें कहते आये हैं उसके अनुरूप कोई प्रमाण होता हुआ देखने को नहीं मिला । इसी समीक्षा के आधार पर ही ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ की परमावश्यकता को स्वीकारा गया ।

In spite of all these sermons, nothing more than actions based on fear, temptation & faith is seen in human tradition on Earth. In other words, evidence of outcomes in accordance with such sermons is not found. On the basis of recognising this shortcoming, a serious need of ‘Realisation Centred Spiritualism’ has been felt.

दूसरे विधा से मानव सहज कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता के आधार पर विचारों का उन्नयन हुआ, जिसको हम भौतिकवादी विचार कह रहे हैं । सम्पूर्ण कल्याण का आधार सुख-सुविधा और स्वर्ग का स्वरूप भौतिक वस्तु ही होना बताया गया । इसे अधिकांश लोकमानस में स्वीकारा भी गया । इस प्रकार अदृश्य के प्रति आस्थान्वित होना, दूसरे विधि से जो दृश्यमान वस्तुएँ है उसी को सम्पूर्ण सुख-सुविधा का आधार या विकास का आधार मान लेना देखा गया । भौतिकवाद भय और प्रलोभन के बीच झूलता हुआ संघर्षशील, संघर्षमय मानसिकता को तैयार करता हुआ देखा गया । भौतिकवाद का सार बात समीक्षा के रूप में यही मिलता है कि संघर्ष के लिए तैयार रहना परमाणु, अणु और अणु रचित पिण्डों का कार्यकलाप है। उसी क्रम में मानव भी एक रासायनिक-भौतिक वस्तुओं से रचित पिण्ड है । इनको सर्वाधिक संघर्ष करने का हक है । इसका प्रयोग करना ही प्रगति और विकास बताया गया है । यह भय, प्रलोभन निग्रह बिन्दुओं में फँसा हुआ आस्थाओं से टूटकर स्वर्ग में मिलने वाला सभी चीजें यहीं मिलने का संभावना बना । उसके लिए आवश्यकीय संघर्ष को जैसा-जैसा भौतिकवादी शिक्षा में शिक्षित हुए वैसे-वैसे अनेक तरीकों सहित संघर्ष करने के लिए प्रवृत्तियाँ बुलंद होते ही आया, अर्थात बढ़ता ही आया । जबकि हर मानव भय और प्रलोभन रूपी भ्रमवश ही संघर्ष करता है । आदि काल से कबीला युग तक भी भय और प्रलोभन रहा ।

In the other approach, the power of imagination and free-will naturally available to humans led to new thoughts and developments; we are calling it materialistic thought, or materialism. Basic message behind this thought is that material comfort is the basis of everyone’s well-being, and even heaven is depicted as attractive only in the material sense. Majority of common people subscribe to this. Thus, it is seen that in one way (idealism), there is faith in the formless and the non-physical; while in the other way (materialism), the physical world itself is the basis of overall well-being or development. It is seen that materialism, caught between fear & temptation, is churning out struggle- and conflict-based mindset. It is found upon scrutiny that the sum and substance of material-centred thoughts is that atoms, molecules and the structures made from them, are in conflict with each other. Extending the logic, humans are also seen as a physico-chemical entity. So it is considered normal for them to be in maximum conflict. Its use indeed leads to development and progress. This demolished faith caught in the push & pull of fear and temptation, and raised possibilities of obtaining all the good things which (in idealism) were promised in heaven. Tendencies for conflict kept on strengthening with the spread of materialism based education. However, all humans indulging in conflict do it only under delusion, out of fear and temptation. Fear and temptation remained operative since the beginning of human history through tribal age.

प्राकृतिक प्रताड़ना से भयभीत रहा हुआ मानव जाति को राजा और गुरु ने मिलकर स्वर्ग और मोक्ष का, जान-माल की सुरक्षा का आश्वासन देते रहे । कबीला युग तक में संघर्षशीलता हाथ, पैर, नख, घूंसा, पत्थर, डंडा, तलवार तक पहुँच चुके थे । जैसे ही राजदरबार आया, समर शक्ति संचय विद्या में समुन्नत क्रिया के नाम से जो कुछ भी किया वह सब बन्दूक, बारूद, हथगोला, गुलेल प्रणाली, धनुष प्रणाली के साथ-साथ राडर प्रणाली जुड़कर वध, विध्वंसात्मक जैविक रासायनिक अणुबमों को दूर मार, मध्यम मार, निकट मार विधियों को विधिवत तकनीकी पूर्वक हासिल किया । इसमें भय स्वाभाविक रूप में बरकरार रहना पाया गया। प्रलोभन, छीना-झपटी, वंचना-प्रवंचना, द्रोह-विद्रोह पूर्वक और छल-कपट-दंभ-पाखंड पूर्वक परस्पर शोषण चरमोत्कर्ष रूप धारण किया । प्रलोभन के रूप में संग्रह-सुविधा उद्वेलित करता ही आया । इसका तात्पर्य यह हुआ आदिकाल में जो भय और प्रलोभन रहा है, उसे नर्क के प्रति भय और स्वर्ग के प्रति प्रलोभन के रूप में आदर्शवाद ने स्थापित किया, भौतिकवाद से सुविधा, संग्रह, भोग, अतिभोग में प्रलोभन, दूसरे का अपहरण, छीना-झपटी, लूट-खसोट करते समय सामने वाला कुछ कर जायेगा, इस भय के मारे दमनशील उपायों को अपनाने के आधार पर संघर्ष मानसिकताएँ सज गया । इसी में सर्वाधिक व्यक्तियों का मन प्रवृत्त रहना पाया जाता है । इसका पहला साक्ष्य संग्रह, द्वितीय साक्ष्य दमनकारी उपायों के प्रति पारंगत रहना ही है । ऐसे दमनकारी उपायों से लैस रहने के लिए व्यक्ति, परिवार और हर समुदाय अधिकाधिक सुसज्जित होने के लिए यत्न, प्रयत्न, कर्माभ्यास, युद्धाभ्यास करता हुआ समूची धरती में दिखाई पड़ता है । इन्हीं गवाहियों के साथ आदिकालीन अर्थात झाड़ के ऊपर, गुफा, कन्दराओं में झेलते हुए समय में जो मानव मानसिकता में भय सशंकता सर्वाधिक प्रकोप किया था वह यथावत् रहा है । उसके साथ प्रलोभन मानसिकताएँ धीरे-धीरे बढ़ते हुए समूचे धरती की सम्पदा का हर व्यक्ति अपने तिजोरी में बंद कर लेने की कल्पना करता हुआ स्थिति को सर्वेक्षित किया जा सकता है । इसका गवाही यही है संग्रह का तृप्ति बिन्दु नहीं है ।

To the people scared of natural calamities, assurances of the security of life and wealth were given by the king, and of heaven and liberation, by the guru. Fists, punches, stones, sticks and swords were in common use by tribal age. With the advent of monarchies and nation-states, starting from crossbows, guns and dynamites, warfare (in the name of development) now includes radars, biological and chemical weapons including medium-range and long-range missiles. In all this, fear remained intact. Temptation has taken the shape of snatching, deceit, manipulation, betrayal, fraud, offence & revolt - all of these leading to extreme mutual exploitation. In the form of comfort and accumulation, temptation was already charging up the mind. Sum and substance of all this is that the fear and temptation which were already prevalent since ancient times were replaced by idealism as fear of hell and temptation towards heaven. Snatching, exploitation and usurpations became common in materialism due to temptation of hedonism, comfort and accumulation. The one who is exploited is bound to resist – this fear catered to the mindset of fear, and adaptation of means to suppress and oppress. Minds of the majority of people got inclined and occupied only in this. Accumulation is its first testimony; being expert in the methods of repression is the second testimony. Every individual, family and sect on Earth is working to be equipped with such means, and making efforts and practices to be expert in repression. With these testimonies, the fear which the caveman had, remains as it is, till today. Side by side, the mindset of temptation became widespread and every human wants to accumulate all the wealth available on Earth. It can be verified by the fact that accumulation has no point of satiation.

ऊपर कहे सम्पूर्ण विश्लेषण और समीक्षा के मूल में मानव मानसिकता ही अनुप्राणन वस्तु है । स्वर्ग-नर्क भय, प्रलोभन, सुविधा संग्रह भोग-अतिभोग इन खाकों में, इन कक्षों में, इन गतियों में मानव जाति का स्वरूप एक दूसरे के बीच विश्वास का सूत्र व्याख्या करने में असमर्थ रहा है। इसलिये सर्व मानव के परस्परता में भी सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी होने सहज सत्य को, यथार्थता को, वास्तविकता को शिक्षागम्य, लोकगम्य, लोकव्यापीकरण कार्यक्रमों सहित ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ मानवीयतापूर्ण मानव मानस के लिए अति आवश्यक समझा गया है । इसीलिये, अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व रूपी ध्रुव, मानव स्वीकृत प्रामाणिकता रूपी ध्रुव के मध्य में अनुभव सहज अनिवार्यता, आवश्यकता, प्रयोजन और उसकी निरंतरता को ज्ञान सम्मत विवेक सम्मत और विज्ञान सम्मत विधि से मैनें प्रस्तुत किया है ।

Human mindset (thought process) is the core reality at the root of all the analysis and critique which has been presented above. Hell and heaven, fear and temptation, comforts and accumulation, extreme indulgences – in these compartments, divisions and activities, humans have been unable to define and describe trust among themselves. Therefore, the truth, reality and actuality of the coexistence being eternally effective among all human interactions too, need to be made studiable and communicable through education, and ‘Realisation Centred Spiritualism’ along with means of dissemination is considered very essential for the humane mindset. Hence, to bridge the two ends (1) existence in the form of coexistence and (2) its acceptance with authenticity by humans, I have presented the inevitability, necessity, purpose and continuity of realisation, in a way that has coherence in knowledge, wisdom and science.

| Sensory fulfilment is momentary, intellectual fulfilment is long lasting, and spiritual fulfilment is eternal or everlasting. |
| --- |

**Chapter 2**

**Realisation Centred Spiritualism – An Introduction**

**अनुभवात्मक अध्यात्मवाद : एक परिचय**

सम्पूर्ण आदर्शवाद यथा अध्यात्मवाद, अधिदैवीवाद, अधिभौतिकवाद रहस्यमयता और कल्पनाशीलता के योगफल में वांग्मय रचित होता ही रहा। इन वांग्मयों का मूल आशय श्रेय के लिए आस्थावादी प्रवृत्ति में मानव मानस को परिवर्तित करना ही रहा । क्योंकि भय किसी को स्वीकृत रहता नहीं, प्रलोभन कल्पना के अनुरूप वस्तुओं को उपलब्ध करना संभव नहीं रहा। इसी आधार पर शरीर यात्रा के अनन्तर मोक्ष और स्वर्ग मिलने के आश्वासनों को आदर्शवादी विचार द्वारा विविध प्रकार से प्रस्तुत किया गया । यह स्वयं भी विविध समुदाय और उसकी अस्मिता का आधार बना । यह भी समुदायात्मक अस्मिता होने के आधार पर युद्ध से मुक्त नहीं हो पाया।

All literature of idealism, that is, of spiritualism, polytheism, and metaphysics, in human history was created by the blending of mystery and imagination. Basic objective of such literature has been to develop the mindset of faith so as to ultimately bring out the gratitude in humans. Fear is acceptable to no one, and it is not possible to satisfy all the tempting imaginations of everyone during their lifetime; therefore, in diverse ways, idealism provided assurances of *moksha* and heaven after death. This diversity too became the basis of various sects and their respective identities. Being sectarian identity, this too could not be free of conflicts and wars.

समुदाय (परिभाषा संहिता): एक से अधिक मानव परिवार नस्ल, रंग, जाति, मत, सम्प्रदाय, पंथ के रूप में मान्यता सहित स्वीकृत समूह

Sect: Group of more than one family with assumptions based on race, colour, caste, ideology & creed. Due to assumptions and delusion, this leads to divisions and sections in society (sect).

संप्रदाय (परिभाषा संहिता): पूर्णता के अर्थ में प्रदान, जागृति के लिए मार्गदर्शन, जागृति सहित मानव परम्परा

Community : Human tradition with purpose of completeness; Human tradition with awakening; Guidance for awakening. Vision of indivisible society, completeness and unity (community)

आस्थावादी मानसिकता से प्रेरित उक्त वांग्मय रहस्य से ही सम्पूर्ण आरंभ होना, रहस्य में सम्पूर्ण समा जाने की कल्पनामय विधि को प्रस्तुत किये ।

ये सब रहस्यमूलक, रहस्यमयी ईश्वर, अध्यात्म, देवताओं के आधार पर सृष्टि, स्थिति लय और स्वर्ग और मोक्षदाता के रूप में प्रतिपादित तत्कालीन रूप में एक आवश्यकता रही । उसी के अनुसार सम्माननीय लोग प्रस्तुत करते रहे अथवा प्रस्तुति के आधार पर सम्मानित हुए । इस दशक तक में और परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई। भौतिकवादी विधि से मानव धरती को ही घायल करने के परिणाम स्वरूप धरती अपने शक्ल को जैसा बदलता गया भोग-मानसिकता के आधार पर जनसंख्या समस्या, पर्यावरण समस्या, आर्थिक और राजनैतिक समस्या इसी के साथ व्यापार और नौकरी की समस्या घर-घर, घाट-घाट, व्यक्ति-व्यक्ति में पीड़ा के रूप में देखने को मिली । ये दोनों (आदर्शवाद और भौतिकवाद) विचार मूलत: रहस्यमय ही है। इसके आधार पर ही यह सब समस्यात्मक कार्यक्रम को सुख या समाधान का स्त्रोत घोषित करता हुआ भ्रमित मानव परंपरा में से के लिए ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ को प्रस्तुत करना आवश्यक समझा गया ।

In the above-mentioned idealistic literature inspired by the mindset of faith, the imagination put forward is that everything originates from mystery and eventually gets folded up in mystery.

All this mystery-based & mysterious God, spirituality, gods-goddesses based cosmic- order, its rhythm and representation as redeemer and saviour had been a need of those times. Respectable people kept on presenting this, or those who made such presentations were respected. By the last decade of the twentieth century, new circumstances have emerged. By following the way of materialism, humans have changed the face of this planet. Environmental, economic, political & population crisis due to the mentality of excessive indulgences, and along with them business and employment problems are being painfully felt individually, in families, and everywhere. Both of these thoughts (idealism and materialism) are basically shrouded in mystery. In this background, this book is presented to and for the deluded human tradition which has assumed all the problematic programs as the sources of happiness or resolution.

अनुभव का आधार मूलत: सह-अस्तित्व होना देखा गया है । सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान है । अस्तित्व न घटता है न बढ़ता है । अस्तित्व स्वयं ही सह-अस्तित्व है । अस्तित्व में, से, के लिए सह-अस्तित्व विधि से परमाणु में विकास, पूरकता विधि से होना देखा गया । इस विकासक्रम में जितने भी परमाणुएँ है वह सब भौतिक और रासायनिक कार्यकलापों में भागीदारी करता हुआ देखा गया है । परमाणु विकास पूर्वक गठनपूर्ण होना चैतन्य पद में संक्रमित होना पाया जाता है । यही चैतन्य इकाई ‘‘जीवन’’ आशा, विचार, इच्छापूर्वक कार्यरत है। हर मानव, जीवन एवं शरीर का संयुक्त रूप है ।

It has been seen that coexistence is the core of realisation. Coexistence is eternally present. Existence neither decreases, nor increases. Existence itself is coexistence. It has been seen that ‘development’ in the atom is in, by & for existence, by way of coexistence and complementariness. It has also been seen that the atoms which are in the ‘development progression’, are participating in the physical & chemical activities. In this course of progression, atoms of material-nature itself become a constitutionally complete atom, or transcend to the conscious plane. This conscious entity, or *jeevan*, is active with the use of hope, thoughts and desires. All humans are the combined form of body and *jeevan*.

देखने का तात्पर्य समझना, समझने का तात्पर्य अनुभवमूलक विधि से संप्रेषित करना है । भौतिक-रासायनिक क्रियाकलापों में अनेक परमाणुओं से अणु रचना, अनेक अणुओं से छोटे-बड़े पिण्ड रचना का होना दिखाई पड़ता है । ऐसे पिण्डों के स्वरूप ग्रह, गोल, नक्षत्रादि वस्तुओं के रूप में प्रकाशमान है और इस धरती पर रासायनिक क्रियाकलापों अथवा रासायनिक उर्मि के आधार पर अनेक प्रजाति की वनस्पतियाँ, अनेकानेक नस्ल की जीव संसार दिखाई पड़ते है । इन सबके मूल में परमाणु ही नित्य क्रियाशील वस्तु के रूप में देखने को मिलता है ।

The meaning of ‘seeing’ is ‘understanding’, the meaning of ‘understanding’ is to communicate by the realisation-rooted method. In physico- chemical activities, it is apparent that coming together of multiple atoms results in the formation of molecules, which further result in the formation of small and big objects. Such objects in the forms of planets, stars etc. are clearly visible; and a diverse range of plants and vegetation, and many species of birds and animals are also seen on Earth, as a result of chemical processes and ripples. It is understandable that continuous atomic activity is at the root of all this.

परमाणु में ही विकास होने का तथ्य हर परमाणु में विभिन्न संख्यात्मक परमाणु अंशों का होना ही आधार के रूप में देखा गया है । ऐसे परमाणु विकासक्रम से गुजरते हुए अस्तित्व में रासायनिक-भौतिक कार्यकलापों को निश्चित व्यवस्था के रूप में सम्पन्न करते हुए प्रकाशमान रहता हुआ मानव देख पाता है । प्रत्येक मानव इसे आंशिक रूप में देखा ही रहता है साथ ही सम्पूर्ण रूप में देखने की आवश्यकता बनी रहती है सम्भावना समीचीन रहती है । समझने के अर्थ में अर्थात अनुभवमूलक विधि से संप्रेषित, प्रकाशित, अभिव्यक्त होने के विधि से सम्पूर्ण वस्तु को मानव समझना सहज है ।

It has been seen that the fact of different types of atoms, having different numbers of atomic particles in them, indeed is at the root of progression in atoms. Humans can see that atoms are going through such progression and doing physico-chemical activities in a well-defined manner. Every human being has seen this to some extent or the other, and the need to understand completely also exists; such possibility also exists. With a purpose to understand, in other words, to communicate, manifest & express by the realisation-rooted method, it is natural for humans to understand the complete reality.

इस क्रम में मानव का मूल अथवा सार्वभौम उद्देश्य समझदारी के साथ जीने की स्वीकृति आवश्यक है । इसी विधि से हर मानव में निष्ठा और जिम्मेदारी आवश्यक है। जिम्मेदारी का तात्पर्य दायित्व और कर्तव्यों को स्वयं स्फूर्त विधि से निर्वाह करने से है और निष्ठा का तात्पर्य है उसकी निरंतरता को बनाये रखने वाली समझदारी से जुड़ी हुई सूत्र से है। ऐसे सूत्र अनुभव से ही जुड़ा हुआ देखा गया है । इस प्रकार अनुभवमूलक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन विधि से सर्वमानव में निहित संपूर्णता को समझने, कल्पना, विचार और इच्छाओं का गम्य स्थली दिखाई पड़ती है ।

In this process, acceptance that the main and universal goal of humans is to live with ‘understanding’, is essential. And dedication and responsibility towards this is also essential. Meaning of responsibility is – spontaneous fulfilment (discharge) of duties and responsibilities. And the meaning of dedication is – the resolve to maintain continuity of responsibility. In this way, responsibility and dedication are seen to be linked with the realisation itself. In this manner, by realisation-rooted expression, communication & manifestation, we can see - in all humans - the inherent imagination, thoughts and desires for understanding the entirety.

अस्तित्व ही रासायनिक-भौतिक ग्रह, गोल, ब्रम्हाण्डों के रूप में मानव सहज कल्पना, विचार, इच्छा सम्पन्न, संवेदनाओं सहित होना पाया जाता है । मानव (जीवन व शरीर का संयुक्त रूप) अभी तक जितने भी आयाम को प्रमाणित करना संभव हुआ है वह केवल रूप और गुण को ही आंकलन करके । उसके आधार पर वांछित यांत्रिकी परिकल्पना जो सकारात्मक है, दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन विधि से और आहार-आवास-अलंकार-द्रव्यों के रूप में प्राप्तियाँ दिखाई पड़ती है । यह मानव का परिभाषा में से मनाकार को साकार करने वाले परिकल्पनाओं अथवा चित्रण के अनुरूप अथवा इच्छाओं के अनुरूप ये सब प्राप्त हैं ।

दूसरा पक्ष जो मानव के लिए नकारात्मक है, सामरिक यंत्र-तंत्रों, उपकरणों को जितने भी जखीरे के रूप में इक्ट्ठा किये, नैसर्गिक, भौगोलिक, ब्रह्माण्डीय संगीत में सदा-सदा हस्तेक्षप करने वाला है । इसी में हर समुदाय की संघर्षशील प्रवृत्ति का होना देखा गया है । इससे यह भी पता लग गया कि संघर्षशीलतावश ही मानव धरती का शक्ल बिगाड़ा है । फलस्वरूप धरती और धरती का वातावरण बदलना भी है जिसके आधार पर इस धरती पर रहने वाले मानव परंपरा का अस्तित्व रहेगी या नहीं रहेगी इस प्रश्न चिन्ह तक पहुँच चुके हैं । इस प्रश्न चिन्ह का सामान्य असर पूरे भूगोल पर ही दिखाई पड़ रही है । इसका विवरण आवश्यकीय स्थानों पर विस्तृत रूप में प्रस्तुत करेंगे ।

Existence includes the physico-chemical world, planets, galaxies together with human imagination, thoughts, desires and sensations. So far, all the dimensions evidenced by humans (the combined form of body & *jeevan*), have only been based on the appreciation of form & attributes. On that basis, the necessary technological achievements, which are positive, are in the form of telecommunications and transport, as well as in the areas of food, shelter and clothing. From the definition of human beings, the part pertaining to ‘materialising the ideas’ according to desires, or (the activity of) visualisation, has been accomplished.

The other aspect, which is negative, in the form of machinery and equipment of warfare, is bound to forever interfere in the natural, geographical and cosmic harmony. It is here that all sects are found to be struggling. This also shows that it is struggle only which has forced humans to spoil the face of the Earth. Due to this, whether the humans will survive on this earth or not itself is in doubt. Its effect can be seen all over the Earth. It will be covered in detail wherever needed.

चाहे आदर्शवादी विधि से हो अथवा भौतिकवादी विधि से हो मानव ने अभी तक जो यात्रा की है वह स्वस्थ जगह नहीं है । कल्पना और भ्रम के आधार पर ही आधारित रहना मुख्य रूप से देखा गया है । अस्तित्व में परमाणु में विकास नित्य प्रभावी है । अनुस्यूत क्रिया है । इसी क्रम में परमाणु में गठनपूर्णता एक अद्भूत संक्रमणिक घटना के रूप में होना अथवा मौलिक परिवर्तन के रूप में होना जीवन नित्य वर्तमान रहना देखा गया है । ऐसे गठनपूर्ण परमाणु जीवन के रूप में चैतन्य इकाई सहज रूप में नित्य विद्यमान रहना देखा गया है । साथ में सह-अस्तित्व नित्य प्रकटन है, वर्तमान है ।

ऐसे जीवन ही अपने में अक्षय शक्ति, अक्षय बल सम्पन्नता सहित ही कार्यशील रहना पाया गया इसका प्रमाण अस्तित्व और अस्तित्व में अनुभव सहज शाश्वत् ध्रुवों के बीच विधिवत अध्ययन करने से हर व्यक्ति को यह समझ में आयेगा कि ‘जीवन’ एक गठनपूर्ण परमाणु का ही स्वरूप है, चैतन्य इकाई है यह परमाणु-अणुबन्धन, भार-बन्धन मुक्त आशा बन्धन से अपने से कार्यकारिता को प्रकाशित करता है । भ्रम से आशा, विचार और इच्छा बन्धन शरीर को जीवन समझने के आधार पर कार्यकारिता प्रकाशित होता है । इसके उपरान्त जागृतिशीलता की कार्यकारिता और जागृति और जागृतिपूर्ण कार्यकारिता से अस्तित्व में अध्ययनगम्य और अनुभवगम्य है । यही अनुभवात्मक अध्यात्मवाद का तात्पर्य है ।

Whether it is by idealism, or by materialism, humans in their journey have not yet reached a healthy juncture; imagination and delusion are the main reasons behind this. In existence, progression of atoms is continuous, and ever-effective. In this course of progression, transcendence (or a substantive change) of the material-nature atom into the constitutionally-complete atom, has been seen (understood) as an amazing phenomenon. It has also been seen that such a constitutionally-complete atom (*jeevan*, or conscious entity) has eternal-presence. Also, coexistence is eternally-manifest and present.

*Jeevan* is active with inexhaustible strength and power endowed in it. Its evidence is that anyone doing proper study of existence on one end, and of realisation of existence on the other, shall certainly reach an understanding that *jeevan* is a constitutionally- complete atom, it is a conscious entity, is free from atomic-bondage and molecular- bondage, and has bondage-of-hope, and expresses its activities in this manner. Under delusion, bondages of hope, thought & desire in *jeevan* manifest themselves under the assumption that the body itself is *jeevan*. After this, activities of awakening-progression, awakening and complete- awakening are studiable and realisable in existence. This indeed is the meaning of Realisation Centred Spiritualism.

व्यापक वस्तु रूपी साम्य ऊर्जा में जड़-चैतन्य प्रकृति संपृक्त, क्रियाशील एवं वर्तमान है । सह-अस्तित्व में अनुभव दृष्टा, कर्ता, भोक्ता मानव ही है । मानव ‘शरीर’ और ‘जीवन’ का संयुक्त रूप है । इसे भली प्रकार से समझा गया है। शरीर का स्वरूप भौतिक-रासायनिक रचना के रूप में प्रमाणित है जो प्राण कोषा और रचना सूत्र के आधार पर विविध वंशों में शरीर रचना अपने-अपने मौलिक रूप में होना समझा गया है । इसका प्रमाण विविध रूप में रचना में होना, विविध शक्ल के जीव जानवर, मानव शरीर रचनाओं का वंशानुषंगीय विधि से सम्पन्न होता हुआ वर्तमान है । संपूर्ण प्रमाण वर्तमान में ही प्रमाणित होता है । इस प्रकार भौतिक-रासायनिक रचनाएं विविध स्वरूप में होना स्पष्ट हो जाता है । रचना की विविधता ही नस्ल का आधार होना स्वाभाविक है । जबकि जीवन हर नस्ल, हर रंग, हर देश, हर काल में समान रूप में होना देखा गया है ।

Entire material- and conscious-nature is saturated, active and present in the all-pervasive energy, or Omnipresence. Only humans are the seer, doer and enjoyer of realisation in coexistence. Humans are the combined form of body and *jeevan*. It has been understood very clearly. Body is evident as a physico-chemical composition whose presence has been understood on the basis of biological-cells and formation-codes in different races in their own unique ways. Continuous availability of the diverse species, of diverse appearances of animals and birds, and of human bodies by way of heredity in the present, is its evidence. All evidence is evidenced in the present only. In this manner, diversity of physico-chemical entities becomes understandable. Diversity in the composition (appearance) itself is the basis of different races; while the form of the *jeevan* is the same in all human races, at all places, at all times.

इसका प्रमाण कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता हर देश, हर काल में स्थित हर मानव में वर्तमान होना सर्वेक्षित है । दूसरा हर मानव कर्म-स्वतंत्रता के साथ कार्यरत रहना देखने को मिलता है और फल भोगते समय में परतंत्र होना भी देखा गया है अथवा विवश होना भी देखा गया है । परतंत्रता और विवशता का तात्पर्य वांछित, अपेक्षित फलन न होते हुए उसे भोगने में है । जैसे :- गन्दी हवा किसी को वांछित नहीं है । मानव स्वयं ही ऐसे कर्मों को कर गया है (केवल इसी 200 वर्ष में उसमें भी 100 वर्ष सर्वाधिक रूप में) कि धरती के सभी ओर बहने वाले विरल-तत्व रूपी प्राण वायु को बिगाड़ रखा है-इसको करते समय हर विज्ञानी स्वतंत्र रहा है । हर उद्योगपति पूंजी की अस्मितावश स्वतंत्र रहा है । इसे भोगने के लिए विवश है । इसी प्रकार विकिरणीय क्रियाकलापों के विसर्जित परिणामों से हवा, धरती और जल प्रदूषण की तकलीफ, अर्थात जलवायु, धरती प्रदूषण की अस्वीकृतियाँ मानव में धीरे-धीरे बढ़ रही है । ऐसे संकट के पराकाष्ठा में मानव से ही इसका समाधान निकलना स्वाभाविक है । शरीर का दृष्टा भी जीवन ही है इसलिये जागृत मानव ही हर समस्या का समाधान और उसका निरन्तर स्रोत होना पाया गया है, देखा गया है ।

Presence of imagination and free-will in every human being, at all times, at all places, is its evidence. Moreover, every human being has a free-will while performing actions, and is also seen to be dependent, or rather helpless, at the time of experiencing results. The meaning of being dependent or helpless is the compulsion to face results even when they are not on expected or anticipated lines. For example, no one wants polluted air. But humans have themselves indulged in activities (in the last 200 years, and maximum in the last 100 years) due to which now, the air all over the Earth is polluted. It originates from the free-will of scientists and industrialists while performing their actions; when facing the results, they are helpless. In a similar manner, disagreements and complaints on air, soil and water pollution due to radioactive waste are also increasing. In all these troubles, it is natural that the resolution will come only from humans. *jeevan* itself is the seer of body, too. It has been seen that the awakened human being is the solution to all problems, as well as the continuous source of the resolution.

मानव भ्रमवश शरीर को ही जीवन मानकर अपने सभी क्रियाकलापों को करता है-तभी वह सब किया गया का परिणाम समस्याओं के रूप में होती है । समस्याएँ मानव को स्वीकार नहीं है । विज्ञानियों के अनुसार शरीर ही जीवन होना बताया गया है । भ्रम का यही प्रधान बिन्दु है जबकि संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संतुलन-संगीत परमावश्यक है । हर मानव में संवेदनशीलता, संज्ञानशीलता का होना पाया जाता है । जैसे ऊपर कहे गये उदाहरण के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि मानव अपने कर्म स्वतंत्रतावश विज्ञान, तकनीकी, प्रौद्योगिकी विधि से सामरिक दृष्टियों (*शक्तियों*) के और मानव में निहित सुविधा-संग्रह रूपी प्रलोभन की तुष्टि के लिये सम्पूर्ण पर्यावरण को दूषित कर दिया और धरती बीमार हो गई। यह विज्ञान सहज कर्म-स्वतंत्रता का फल है। पर्यावरण संतुलन सहज, संगीत सहज, अवधारणा और अनुभव होने के उपरान्त मानव अपने कर्म स्वतंत्रता को समस्याकारी कार्यों में नियोजित करना समाप्त हो जाता है । संज्ञानशीलता ही अनुभव सूत्र है-संवेदनशीलता ही कार्यसूत्र है । अनुभव ही ज्ञान-स्वरूप है । यह स्वयं नित्य समाधान और प्रामाणिकता है ।

Humans, under delusion, do everything with the assumption that the body itself is *jeevan*; consequently, all such actions result in problems. Problems are not acceptable to humans. According to scientists, the body itself is *jeevan* - this is the main point of delusion; while in reality, harmony & balance between cognisance and sensitiveness is very essential. Cognisance and sensitiveness are present in all humans. It is clear from the above-mentioned example that deluded humans, due to their free-will, have attempted to appease their craving for military warfare by use of science, technology & industry, and for temptation of accumulation & comforts inherent in humans - have polluted & harmed the Earth and its environment. It is a result of free-will related to science. It is only after comprehension of environmental harmony & balance, and realisation, that humans stop deploying their free-will in problematic activities. The cognisance aspect in humans is indeed the connecting link to realisation, and the sensitivity aspect is indeed the connecting link for their actions. Realisation itself is knowledge. This is the perpetual resolution and authenticity.

अनुभवमूलक सभी कार्यकलाप सत्य, समाधान और न्याय के रूप में प्रमाणित होता है । न्याय को हम नैसर्गिक और मानव संबंधों के साथ अनुभव किये हैं । इसे हर मानव अनुभव करने योग्य इकाई है, इसकी आवश्यकता सदा-सदा ही बना है । मानव परंपरा में अनुभवमूलक अभिव्यक्ति ही ज्ञानावस्था का सार्थक, आवश्यक, वांछित कार्य होना देखा गया है। इसी आधार पर अनुभवमूलक विचार के रूप में इस ग्रन्थ को प्रस्तुत करने की आवश्यकता निर्मित हुई ।

All human activities rooted in realisation, are evidenced in the form of truth, resolution and justice. I have experienced & understood justice in relationships with humans, and with the rest of nature. Everyone has the potential to do so, and this need has always been there in humans. Realisation-rooted expression in human tradition has indeed been seen as ‘the’ meaningful, essential & expected activity of humans in the knowledge order. It is on this basis that the need to present realisation-rooted thoughts in the form of this book (scripture) was felt.

ज्ञानावस्था सहज मानव में, से, के लिये अनुभव प्रामाणिकता के रूप में सर्वोपरि प्रमाण है । नियम, न्याय, धर्म, सत्य यह अनुभवमूलक विधि से ही प्रमाणित होना देखा गया । अनुभव का मूल रूप (स्थिर बिन्दु) जानने-मानने का तृप्ति बिन्दु ही है । जानने-मानने का जो मौलिक स्थिति कारण-गुण-गणित है वह केवल मानव में ही होना पाया जाता है । यह कल्पनाशीलता और जागृति की सम्भावना के योगफल में गतित होना पाया जाता है । इसी प्रकार नियम, न्याय, धर्म, सत्य भी अध्ययन विधि से जानना; मानना बन जाता है । फलस्वरूप प्रामाणिक होने के लिये पहचानना, निर्वाह करना सम्भावना निर्मित होती है ।

Realisation, in the form of authenticity, is the ultimate evidence in, by & for humans in the knowledge order. It has been seen that law, justice, *dharma* & truth - all these can be evidenced only by the realisation-rooted method. Basically, the point of satiation (the equilibrium point) between knowing & believing itself is realisation. Causal, qualitative & mathematical - the core of knowing & believing - are found only in humans. This is set in motion when imaginativeness is aligned with the possibility of awakening. In a similar manner, knowing & believing of law, justice, *dharma* & truth can also be achieved by the method of study. Thereafter, to become an evidence, the possibility emerges for recognising & fulfilling.

प्रामाणिकता का स्वरूप जानने-मानने की तृप्ति बिन्दु को अनुभव करना ही है । जानने का मूल तत्व सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है । अस्तित्व में ही जीवन और जागृति, अस्तित्व में ही विकास और रचना-विरचना होना देखा गया है । यही जानने का तात्पर्य है। इसी के आधार पर मानव का सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार निर्धारित हो जाना ही, निर्धारित विधि से मानव परंपरा प्रमाणित होना ही अनुभव का तात्पर्य है । यह न्याय, धर्म, सत्य सहज अनुभव विधि से ही सार्थक होना देखा गया है।

Realisation of the point of satiation of knowing-believing itself is authenticity. Existence, which is coexistence indeed, is the content of knowing. jeevan and its awakening, progression and all formation-deformation – all this is seen in the existence only. This is the meaning of ‘knowing’. All the work and behaviour of a person is decided on this basis only. Evidence of the human tradition in this manner – this is what is meant by realisation. It is seen that this materialises only by way of realisation of justice, *dharma* & truth.

ऊपर जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने का शब्द प्रयोग किये हैं । इनमें से जानने की वस्तुएँ में से प्रधान वस्तु को सह-अस्तित्व के रूप में बता चुके हैं । अस्तित्व ही सह-अस्तित्व के रूप में नित्य वर्तमान है । सह-अस्तित्व का स्वरूप अपने में सत्ता में संपृक्त प्रकृति है । क्यों और कैसे का उत्तर पा लेना ही जीवन जागृति क्रम सहज प्रवर्तन और जागृतिपूर्वक प्राप्ति है । हर प्रवर्तन में मानव प्राप्ति चाहता ही है । प्राप्ति ही मान्यता का आधार है । अस्तित्व में ही जीवन और जीवन जागृति का होना जानना है । अस्तित्व में ही विकास, रचना, विरचनाओं को जानना होता है । क्योंकि अस्तित्व नित्य वर्तमान है ही; अस्तित्व में ‘जो कुछ’ भी है यह ‘सब कुछ’ को मानव जानना चाहता है । इसे जानना सम्भव है इसको हम देख चुके हैं । मानव और नैसर्गिक परस्परता में सम्बन्ध रहता ही है क्योंकि सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी रहता ही है । इसे जानना जागृत मानव के लिये सहज है। इसी के साथ अर्थात् सम्बन्ध के साथ मूल्यों को जानना भी जागृत मानव के लिए परम सहज है । मानव ही अस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाणों को प्रस्तुत करता है । अस्तित्व में मानव जागृतिपूर्वक ही व्यवस्था, उसकी सार्वभौमता, समाज और उसकी अखण्डता को जानता है ।

Knowing, believing, recognising & fulfilling - these words have been used above. Out of the realities to be known, coexistence has already been mentioned as the main reality. Existence itself is eternally present in the form of coexistence. Coexistence is in the form of nature submerged in Omnipotence. Finding the answers to every why and how is a natural pursuit in awakening progression, and is also the accomplishment of awakening. One wants to accomplish something in every pursuit. Accomplishment is the basis of belief. The knowledge that *jeevan* and awakening of *jeevan* exist in existence, is what is meant by ‘knowing’. Knowing the development, formations-deformations occur only in existence. Development, and formations-deformations, which occur in existence itself, are to be known (understood). Existence is perpetually present, and ‘whatever is’ in existence, humans want to know ‘all that’. That it is possible to know it, has already been seen (understood). As the coexistence is continuously effective, there is an ongoing relationship between humans and the rest of nature. It is natural and simple for an awakened person to know this relationship. Along with this, it is straightforward for an awakened person to know the values inherent in the relationship. It is only the humans who present evidence of realisation in existence. It is only by way of awakening that a person ‘knows’ orderliness; and its universality, and society, along with indivisibility.

जानने का फलन मानने के रूप में आता ही है । मानने का स्वरूप है :- ‘‘यह सत्य है इसे स्वीकारना है ।’’ और सत्य सहज प्रयोजन स्वयं से या सबसे जुड़ी हुई स्थिति को और गति को स्वीकारना ही मानना है । इससे स्पष्ट होता है **हर स्थिति में वस्तु सहज वास्तविकताओं को जानना सहज है । इसी क्रम में उसके गति और प्रयोजन के साथ ‘सह-अस्तित्व’ में, से, के लिये आवश्यकताओं को स्वीकारना ही मानना है** क्योंकि प्रयोजन हर व्यक्ति में एक आवश्यकता है । इसलिये जानने-मानने की क्रिया मानव में परम मौलिक है। अन्य प्रकृति में यांत्रिक रूप में ही पहचानने, निर्वाह करने की क्रियाकलापों को देखा जाता है ।

Result of knowing certainly appears in the form of believing. Meaning of believing is - ‘This is the truth, and it must be accepted’. And to agree with the purpose of truth, itself is believing; in other words, to agree with the state (being) and motion (functioning) of every reality associated with me, and with everything else, itself is believing. It thus becomes clear that **it is possible to ‘know’ all the realities. And on this course, the motion (functioning) and purpose of all these realities, to accept the needs in, by & for coexistence - this itself is believing**. As the need to understand the purpose is inherent in all humans, the activity of knowing-believing is absolutely unique to humans. In the rest of nature, activities of recognising-fulfilling occur in a mechanical manner.

*Second line interpreted as : और सत्य सहज प्रयोजन (स्वयं से या सबसे जुड़ी हुई स्थिति और गति) को स्वीकारना ही मानना है ।)*

मानव ही जानने-मानने के आधार पर पहचानने-निर्वाह करने में प्रयोजनशील होता है। **मानने का आधार प्रयोजन होना है । जानने का आधार क्यों और कैसे के उत्तर के रूप में है। साथ ही ‘वस्तु’ कैसा है ? यह भी जानने में आता है** । वस्तु कैसा है? यह जानने का स्वरूप है । इसी से क्यों और कैसे का उत्तर स्वयं स्फूर्त विधि से निर्गमित होता है । मानने का तात्पर्य प्रयोजन पहचानने के अर्थ में सार्थक होता है । जैसे-अस्तित्व सहज नित्य स्थिति को जानना, सह-अस्तित्व प्रयोजन सूत्र को पहचानना स्वाभाविक होना पाया गया ।

It is only the humans who make efforts for recognising-fulfilling on the basis of knowing-believing. **Purpose is the basis of believing. The basis of knowing lies in the answer to why and how. Along with that, what is the reality - also comes under the category of knowing**. What is the reality - this is knowing. The answer to why and how emerges spontaneously from this. The meaning of believing lies in recognising the purpose of reality. For example, knowing the timelessness of existence, as well as recognising the purpose of coexistence, occurs naturally.

अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व को पहचानने की क्रिया-स्वरूप ही निर्वाह करने के अर्थ को प्रमाणित कर देता है । इस प्रकार जानना-मानने के लिये उत्सव और उत्साह है; जानना-मानना, पहचानने के लिये उत्सव और उत्साह है; जानना-मानना-पहचानना, निर्वाह करने के लिये उत्सव और उत्साह है । यह सर्वमानव में हृदयंगम और स्वीकार्य योग्य सूत्र है ।

The accomplishment of ‘recognising’ the realities in existence, or coexistence, leads to the evidence of ‘fulfilling’. In this manner, knowing is the celebration and enthusiasm for believing, knowing-believing is the celebration and enthusiasm for recognising, and knowing-believing-recognising is the celebration and enthusiasm for fulfilling. This maxim is worth internalising and accepting by all human beings.

पहले इस बात को भी स्मरण दिलाया गया है कि मानवेत्तर प्रकृति में भी पहचानने, निर्वाह करने की प्रक्रिया विधि नित्य वर्तमान है । इसी विधि सहज वैभव का प्रमाण पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्थाओं में देखने को मिलता है। देखने का तात्पर्य समझने से है । मानव ही अस्तित्व में दृष्टापद प्रतिष्ठा को प्रमाणित करता है, प्रमाणित करने योग्य है, प्रमाणित करने के लिये बाध्य है ही । समझना ही बाध्यता है ।

It has been pointed out earlier that the process & law of recognising-fulfilling is perpetually present in the rest of nature also. Evidence of the grandeur of this law is seen in the material order, plants order and animal order. Meaning of seeing is to understand. In existence, it is only the humans who produce evidence of the glory of the perceiver-plane, are capable of producing such evidence, and are destined to produce such evidence. Understanding is destined.

जो कुछ भी समस्याएँ है उसे समाधान में परिणित कराने के लिये मानव सहज आवश्यकता प्रवर्तन हमें इस तथ्य पर ध्यानाकर्षित करता है कि हर मानव समाधान की ओर ही अपने को उन्मुख बनाये रखना चाहता है जबकि समाधान सर्वसुलभ हुआ नहीं रहता है । जैसा भ्रमित मानव परंपराओं में शरीर यात्रा को आरंभ किया हुआ हर मानव, न्याय की अपेक्षा करता ही है, सही कार्य-व्यवहार करना चाहता ही है, अपने से ही स्वयं-स्फूर्त विधि से सत्य वक्ता रहता ही है यह हर मानव संतान में सर्वेक्षित रहता ही है । इसे हर मानव सर्वेक्षित करता है । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मानव परंपरा जागृत रहने की स्थिति में हर मानव संतान में सत्यबोध सहज अध्ययन वस्तु व प्रणाली, मानवीयतापूर्ण आचरणकारी प्रमाण सम्पन्न शिक्षण और संस्कार सहित व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी होने की स्थिति समीचीन है । ऊपर बताये स्वरूप में परिणित करना जागृत मानव परंपरा का सहज क्रियाकलाप होना देखा गया है ।

Need and efforts in humans to turn their problems into resolution, brings our attention to the fact that all humans are looking for resolution only, despite its unavailability in the human tradition. For example, humans even in deluded traditions, have a natural expectation of justice, naturally want to do the right actions, and naturally speak the truth. This can be easily seen in every human child, and is verifiable by everyone. From this, it is concluded that when human tradition is awakened, the method and content of study for enlightenment of truth, education rich with evidence of humane conduct, along with becoming sociable in behaviour, and self-reliant in occupation - all this is accessible to every child. It has been seen to transform into such a state is a natural activity in awakened human tradition.

यह परंपरा स्वयं जागृत न रहने की स्थिति में भी सत्यवक्ता होना, सही कार्य-व्यवहार करना, न्याय सहज आवश्यकता को स्वीकार करना हर मानव में देखने को मिलता है । यही इस सर्वेक्षण का अति उत्तम निष्कर्ष है । इस निष्कर्ष के आधार पर मानव परंपरा जागृतिपूर्ण परंपरा के रूप में प्रमाणित होने की आवश्यकता है ही । इसे प्रमाणित करने की आवश्यकता-आकांक्षा-आशा अथवा अभीप्सा के रूप में हर मानव में देखने को मिलता है। अभीप्सा का तात्पर्य अभ्युदय के लिए इच्छा से, अभ्युदय का तात्पर्य सर्वतोमुखी समाधान से है । आशा का तात्पर्य जीने की आशा सहित सुखी होने की आशा से है । आकांक्षा का तात्पर्य अपने स्वयं-स्फूर्त आदतों के आधार पर सुखी होने की आशा से है और प्रयास से है । इच्छा का तात्पर्य समझदारी सहित निष्ठा को प्रमाणित करने की चित्रणो से है ।

Even though the human tradition is not yet in a state of awakening, the acceptance to speak the truth, to do the right actions, and the need of justice, is seen in all humans. This is an outstanding inference from such a survey. On this basis, the need for evidence in the form of fully-awakened tradition in human tradition is clearly established. Need, aspiration *(akanksha)*, hope *(asha)* - in other words, the ambition *(abhipsa)* - to evidence it is seen in all humans. The meaning of ambition is - the desire for enlightenment. The meaning of enlightenment is - comprehensive resolution. The meaning of hope is - hope of living with happiness. The meaning of aspiration is - the hope and endeavour for happiness based on one’s own habits & lifestyle. The meaning of desire is - visualisations of evidencing ‘understanding’ with dedication.

अभीप्सा (परिभाषा संहिता): अभ्युदय के लिए स्वीकृति व इच्छा

Ambition: Acceptance & desire for comprehensive resolution.

*ambi* - is used in the sense of ‘both sides’ (as in ambidextrous); and ‘all around / encircling’ (as in ambience, ambiguous). ‘ambition’ literally means an intense desire for advancement or achievement.

इस प्रकार हर मानव में शुभेच्छा सतत् उद्गमशील है ही । शुभेच्छाओं को शुभ के रूप में प्रमाणित करने की स्थली तक की, जागृति की, बनाम अनुभव की अपेक्षा और अनुभवशीलता बना ही रहता है । ऐसे अनुभव परंपरा में स्थापित होने की अपेक्षा और अनुभवशीलता बना ही रहता है । ऐसे अनुभव परंपरा में स्थापित होने के उपरान्त सदा-सदा के लिये मानव परंपरा अनुभव मूलक प्रणाली से सर्वशुभ को प्रमाणित करता ही है । अनुभवमूलक प्रणाली-पद्धति स्वस्थ-सुन्दर समाधान पूर्ण नीतिपूर्वक यह देखा गया है कि -

(1) समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व, यह सर्वशुभ है । यह सर्वमानव में, से, के लिये नित्य अपेक्षा है । इसके लिये मानव प्रयोग, अनुसंधान, शोध में कार्यरत रहा आया ।

(2) जीवन सहज शुभ सुख, शांति, संतोष, आनन्द है । ऐसे मानव सहज, शुभ गति, मानवीयता पूर्ण आचरण है । प्रत्येक व्यक्ति में शुभ, सुन्दर, समाधान रूप ही ‘स्वायत्त मानव’ है । समग्र परिवार शुभ ही चाहते हैं जो पुन: समाधान समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है । यही अखण्ड समाज का सूत्र और व्याख्या है। यह अनुभवमूलक विधि से ही प्रमाणित होता है । अस्तित्व सहज सह- अस्तित्व ‘त्व’ सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी क्रम में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था ही है । सह-अस्तित्व वर्तमान में विश्वास, समाधान, समृद्धि यह अनुभव का ही स्वरूप है । अनुभव करने योग्य वस्तु जीवन है ।

In this manner, all humans naturally emanate an intent for well-being. Until the intentions of well-being actually materialise, the expectation of awakening or realisation, and efforts towards achieving it continue to exist. The expectation of a tradition of such realisation persists. Upon establishment of such realisation in the form of tradition, the human tradition naturally and continuously evidences universal good by the realisation-rooted method. Based on the realisation-rooted method, and by way of resolution & ethics, it has been seen (understood) that -

(1) Resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, is the universal good (or well-being). This expectation is ever-present in, by & for all human beings. Experiments, endeavours & explorations for the same have always been carried out by humans.

(2) Happiness, peace, contentment and bliss - this is the well-being of *jeevan*. Humane conduct is the goodness of such humans. Good, beautiful & resolution aspects of any person are indeed in the form of an ‘autonomous person’. All families want only the good to happen - which again is resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. This itself is the maxim and elaboration of indivisible society, and is evidenced by the realisation-rooted method. Existence in the form of coexistence, innateness with essence & participation in the overall system - this itself leads to the family-rooted self-organised system. Coexistence, trust in the present, resolution & prosperity - all this is the manifestation of realisation. It is only the *jeevan which* attains realisation.

मानव ही दृष्टा पद में होने के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है मानव ही हर और सर्वदेश काल में अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में, सह-अस्तित्व सहज सबंधों में, सबंध सहज मूल्यों में, मूल्य सहज अनुभवों में बनाम, मूल्यांकन में ओतप्रोत रहने का नित्य अवसर सर्व समीचीन है । यहाँ इस तथ्य को इंगित कराने का उद्देश्य यही है सर्वमानव अनुभव मूलक विधि से ही नियम-न्याय-समाधान सत्य में, से, के लिये प्रमाणित होना देखा गया । यह सर्वमानव में स्वीकृत है । इसी आधार पर अनुभवात्मक अध्यात्मवाद को प्रकाशित, संप्रेषित, अभिव्यक्त करने में पारंगत होने के आधार पर संप्रेषित की गई । इससे मानव में, से, के लिये अनुभवमूलक विधि से जीने की विधि को विज्ञान और विवेक सम्मत विधि से अध्ययन पूर्वक सम्पन्न करना सहज रहेगा । यही इस प्रस्तुति की शुभकामना है ।

Based on the fact that humans are in the perceiver-plane, it is clear that only they have, at all times and at all places, accessibility to the opportunity to remain commingled - in existence in the form of coexistence, in relationships in coexistence, in values in relationships, and in evaluation (realisation) of values. The purpose of pointing it out here is that it is only by the realisation-rooted method that all humans become evidence in, by & for law, justice, resolution & truth. This is acknowledged or accepted by all humans. This book, Realisation Centred Spiritualism, has been published so that the students studying it may become experts with the ability to communicate and express realisation-centred spiritualism. This will be helpful for all humans in accomplishing the right way of living aligned with science and wisdom by following the realisation-rooted method. This indeed is the noble wish behind the presentation of this book.

ओतप्रोत: संपूर्ण प्रकृति सत्ता में ओतप्रोत, जीवन जागृति पूर्वक जागृति में ओतप्रोत

Commingle: The whole nature soaked in Omnipotence, *jeevan* (after awakening) soaked in awakening.

(commingle normal dictionary meaning : to blend thoroughly into a harmonious whole)

अनुभव ही हर मानव का ठोस प्रमाण है । व्यवहार में प्रयोग में भी, मानव का अनुभव ही संप्रेषणा का आधार है न कि यंत्र या वांग्मय । अनुभवमूलक विधि में महिमा यही है हर मुद्दा वस्तु के रूप में सत्यापित होने और प्रबोधन, अध्यापनपूर्वक बोध सुलभ करने और व्यवहार में, प्रयोग में पारंगत होने की स्थिति स्वयं स्फूर्त होती है। इसी क्रम में मानव, मानवीयता पूर्वक जीने की कला, विचार शैली और अनुभव बल को संस्कारों के रूप में स्थापित करते ही रहना और सम्पूर्ण संस्कार और समझ अनुभवमूलक क्रम में जानने-मानने की तृप्ति बिन्दु को प्रमाणित करने में अभिव्यक्त होना सहज है । इसी विधि से प्रमाण परम अनुभव का धारक-वाहक होने हर मानव आतुर-कातुर और व्याकुल है । वह सार्थक होना सहज है।

Realisation is indeed the concrete evidence of a human being. In behaviour as well as in experimentation, realisation itself is the basis of communication from an awakened human being, not the scriptures or the instruments. Greatness of the realisation-rooted method is that – everything becomes verifiable as a reality; wisdom and understanding become achievable by mentoring & teaching; and reaching the state of becoming expert in work and behaviour – and all this will occur spontaneously and naturally. Thus, it is natural for humans to keep reinforcing the *sanskar* aspect by way of humane living along with the thoughts and the strength of realisation; and in the realisation-rooted state, all *sanskar* and wisdom getting expressed with the evidence of equilibrium point of knowing & believing. In this manner, each & every human being is eager & impatient to become beholder (bearer-holder) of the ultimate evidence called realisation. Its materialisation is comfortable.

मानव परंपरा तब तक भ्रमित रहना भावी है जब तक समुदाय और समुदायगत आवश्यकता की हठधर्मिता, सुविधा संग्रह की हठधर्मिता, भोग-अतिभोगवादी हठधर्मिता, आदमी को मूलत: दुखी मानने वाली हठधर्मिता, स्वार्थी, अज्ञानी और पापी मानने वाली हठधर्मिता, कोई एक समुदाय अपने को धर्मी अन्य को विधर्मी मानने की हठधर्मिता, द्रोह-विद्रोह-शोषण और युद्ध को एक आवश्यकता मानने वाली हठधर्मिता, व्यक्तिवादी (अहम्तावादी) मानसिकता के लिये सभी हठधर्मिता रहेगी ।

Human tradition is bound to remain under delusion as long as adamancy persists - for sects and sectarian needs; for comforts and accumulation; for hedonism and extreme hedonism; for continuing to believe that humans are basically miserable, selfish, ignorant and sinful; for one sect believing itself to be just and others to be unjust; for the belief that offence, revolt, exploitation & wars are essential; and for individualistic (egoistic) mindset.

इसका निराकरण जागृति ही है। जागृति पूर्ण परंपरा मे ही अर्थात् जागृत शिक्षा-संस्कार, जागृत न्याय व्यवस्था और जागृत उत्पादन कार्य-व्यवस्था, जागृत लाभ-हानि मुक्त विनिमय व्यवस्था और जागृत स्वास्थ्य संयम पीढ़ी से पीढ़ी को सुलभ होने से है । ऐसी जागृत पूर्ण परंपरा में पीढ़ी से पीढ़ी जागृत होते ही रहना एक अक्षुण्ण परंपरा है । ऐसी परंपरा में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सर्वसुलभ होने की कार्यप्रणाली, पद्धति, नीति क्रियाशील रहेगी फलत: विविध प्रकार से समुदायों को अपनाया हुआ भ्रम अपने आप विलय होना स्वाभाविक है। यह अनुभव मूलक जीने के क्रम में पाया जाने वाला वैभव है ।

Awakening is its only solution. It is only in the fully-awakened tradition that continuity of awakened education-*sanskar*, awakened justice system, awakened production work system, awakened exchange system free of profit & loss, and awakened health-*sanyam* system, is available from generation to generation. Every generation becoming and remaining awakened is indeed the fully-awakened tradition. Methods, processes & policies for continuity of indivisible society and universal systems shall remain alive and available in such a tradition. As a result, it is easy and natural for the delusion among various sects to dissolve and resolve by itself. This is the grandeur of living in the realisation-rooted tradition.

उक्त उदाहरण के क्रम में ही जागृत परंपरा में प्रवाहित मानव परंपरा के महिमावश सम्पूर्ण हठधर्मिताएँ विलय हो जाते हैं । जैसे-सही गणितीय ज्ञान के उपरान्त गणित में होनेे वाली कोई गलतियां शेष नहीं रहती हैं, इसी प्रकार जागृति सहज रूप में जीने के क्रम में सम्पूर्ण भ्रम विलय होता है । जैसा-संग्रह सुविधा रूपी हठधर्मिता और विवशताएँ समृद्धि पूर्ण होने के साथ-साथ विलय होना देखा गया है । भोग-अतिभोगवादी प्रवृत्ति और विषमताएँ तन, मन, धन रूपी अर्थ का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन और प्रयोजनशील बनाने के प्रमाणों के साथ ही भ्रम विलय हो जाते हैं ।

In this manner, all stubbornness (adamancies) disappear under the magnificence of the human tradition concurrent in the awakened tradition. For example - no mistakes are made after one gains knowledge of mathematics; in the same way, all delusions disappear when living in the state of awakening. Another example - stubbornness and helplessness in the form of accumulation-comforts disappear after attaining the state of prosperity; in the same way, tendencies & disparities of extreme indulgence, and all delusions, disappear with the evidences of use, right-use, purpose and purposefulness of the resources of body, mind & wealth.

धर्म गद्दी, राज गद्दी, व्यापार गद्दी और शिक्षा गद्दी जो अपने हठधर्मितावश मानव को पापी-अज्ञानी-मूख पिछड़ा, दलित दुखी रहना मानते हुए अपने अहम्ता, अहंकार को बढ़ाये रहते हैं । जागृत परंपरा सहज विधि से स्वायत्तता का प्रमाण, परिवार मानव सहज प्रमाण और परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था प्रमाण समाधान समृद्धि सहित प्रमाण के साथ ही ये सब हठधर्मिताएँ विलय हो जाते हैं । साथ ही इस जागृति का प्रमाण में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित होना स्वाभाविक होने के कारण सभी समुदायवादी एवं व्यक्तिवादी अस्मितायें अपने आप विलय को प्राप्त करेगें । भ्रमवश ही मानव परंपरा में विभिन्न समुदाय और उसकी अस्मितावश द्रोह-विद्रोह-शोषण और युद्ध को एक आवश्यकता मानते हुए छल, कपट, दंभ और पाखण्ड का वशीभूत हो गया है, ये सब तभी विलय हो जाते है जिस मूहुर्त में इस धरती पर परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था जागृति के साथ स्थापित हो जाता है । इसी के साथ अखण्ड समाज का सहज रूप सर्वविदित और प्रमाणित हो जाता है।

The seats of religion, political power, commerce and education - due to their own stubbornness - continue to assume human beings as sinners, ignorant, foolish, backward and miserable, and boast about their own importance. In the awakened tradition, due to the evidences of self-reliance, of family members living in fulfilling relationships, of family-rooted self governance system, and of resolution & prosperity, all this stubbornness disappears. Moreover, with indivisible society and universal systems being the natural outcome of such awakening, all claims of sectarian and individualistic (egoistic) haughtiness will disappear by themselves. It is only due to delusion that the haughtiness of many sects in human tradition - due to their beliefs that offence, revolt, exploitation & wars are necessary - is besieged by deceit, fraud, perfidy (treachery, betrayal) & hypocrisy. All these disappear as soon as the family-rooted self governance system with awakening gets established on this planet; simultaneously, the natural form of the indivisible society is universally evidenced.

हठधर्मिता जो व्यक्तिवादी (अहम्तावादी) मानसिकता के लिये जिम्मेदार है उसके मूल में समाज विरोधी सूत्र सदा ही पनपते आई है। क्योंकि समाज, व्यवस्था और समग्र व्यवस्था जो अस्तित्व सहज है, इसे स्पष्टतया समझने के स्थिति में हम यह पाते हैं कि यह अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व सूत्र ही है । सह-अस्तित्व सूत्र के आधार पर ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था हमें विदित हुआ है । इस तथ्य के आधार पर मानव जब तक जागृतिपूर्ण होता है तब तक भले ही ऊपर कहे हुए वितण्डावाद रहे आये । जैसे ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था परंपरा में प्रमाणित होते है, व्यक्तिवादी अहम्ताएँ अपने आप ही विलय को प्राप्त करते हैं ।

Adamancy, which is responsible for individualistic (egoistic) mentality, has always caused anti-social elements to flourish. After a clear understanding of society, systems and universal systems which are all aligned with coexistence, we reach the conclusion that this is the essence of existence or coexistence. It is only after understanding the coexistence that I have understood the indivisible society and universal system. Thus, until the human tradition reaches the fully-awakened state, needless arguments and conflicts may remain there; but as soon as the indivisible society and universal system is evidenced, individualistic egos disappear naturally.

व्यक्तिवादी अहम्ता को शक्ति केन्द्रित शासन, उसमें अधिकारों को वर्तने के लिये प्रावधानित अधिकारों को प्रयोग करता हुआ, जितने भी विसंगतियाँ अधिकारी मानस और जनमानस के बीच दूरी तैयार होती जाती है, यह सब समस्या का ही ताण्डव है । समस्या में ग्रसित होने के फलस्वरूप या विवश होने के फलस्वरूप ही व्यक्तिवादी होना पाया जाता है । जैसे - अधिकारवाद, भोगवाद, भक्तिवाद और विरक्तिवादी । ये सब व्यक्तिवादी अस्मिता के रूप में ही पूर्वावर्ती वाूमयों में स्वीकारा गया है । इन चारों स्थितियों में पहला मुद्दा है अधिकारवाद । इसे विसंगतियों के अर्थ में स्पष्ट किया जा चुका है ।

Individualistic (egoistic) haughtiness under the power-centric rule, and exercise of the discretionary powers provided therein, creates discord, and generates distance between the authorities and the masses, leading to all the problems. It is only due to getting affected, or feeling helpless, by problems which gives rise to individualistic mindset. For example, ideologies related to authority, indulgences, devotion and detachment – all these have been historically accepted as individualistic approaches in scriptures. The first of these four states is authoritarianism. It has already been explained that it is related to discord.

इसी के आनुशंगीक स्पष्टीकरण के क्रम में ही शक्ति केन्द्रित शासन अनेक समुदायों के द्वारा किसी भूखण्ड के क्षेत्र में पनपता हुआ देखने को मिलता है । यह-सर्वविदित तथ्य है । इसी को राष्ट्र और राज्य कहा जाता है । उस भू-क्षेत्र में रहने वाले उन संविधान को सम्मान करने वाले व्यक्ति समुदाय होना स्वाभाविक है । उनका भाषा-संस्कृति में समानता का भी अपेक्षा बनी रहती है । इसी क्रम में राष्ट्रभाषा का भी संविधान में एक प्रावधान बनी रहती है । प्रधान रूप में सभी संविधान अपने-अपने धर्म-कर्म-उपासना-अभ्यास-संप्रदाय के स्वतंत्रता की घोषणा और गलती, अपराध और युद्ध को उसी-उसी प्रकार से रोकना प्रधान उद्देश्य रहता है । सही-गलती को बताने वाला राजा और गुरू के संयोग से होता रहा । अभी भी कहीं-कहीं ऐसा होता भी होगा । अधिकांश भू-भागों में अर्थात् राज्य-राष्ट्रों में जनप्रतिनिधियों के मानसिकता के अनुसार सही, गलती, अपराध और न्याय जो कुछ भी निर्णय के रूप में स्वीकारे रहते हैं - न कि ‘वस्तु’ वास्तविकता के रूप में ।

As a sequel to this, the power-centred rule under various sects is seen to be flourishing in different geographical regions. This is well-known. This itself is called nation or state. People living in such regions, and respecting such constitutions, are collectively called the sect. Moreover, there is expectation of similarity in language and culture in the sect. On similar lines, there is provision of a national language also in the constitution. Primarily, all the constitutions declare freedom of religion, rituals, prayers & practices for their own people; and mainly try to stop mistakes, crime and wars with mistakes, crime and wars. Together, it is the ruler and the guru who have been defining right and wrong. Even today, it may still be happening at some places. In most geographical regions (in states and nations), the conclusions about right, wrong, crime & justice are based on the mindset of public representatives – and not on reality.

सम्पूर्ण देश और राष्ट्रवासियों का कार्यकलाप इस प्रकार दिखाई पड़ती है - (1) शासन कार्यो में भागीदारी (अधिकारों की भागीदारी) करते हुए कुछ लोग होते है । (2) कुछ लोग शासन कार्यो में भागीदारी को निर्वाह नहीं करते - इन्हीं को आम जनता भी कहा जाता है ।

Actions of all the citizens are observed in this manner - (1) Some people participate in the ruling activities (exercise of authority). (2) Some people don’t participate in the ruling activities - they are called common people.

आम जनता अपने आजीवीका के लिये स्वयं ही चिंतित रहते हुए प्रयत्न किये रहते है, कुछ लोग उत्साह से भी प्रयत्न करते हैं । इन्हीं आम लोगों के सुविधा को भी शासन कार्यों में एक मानवीयता के रूप में स्वीकारा हुआ रहता है । ऐसे सभी कार्य धन पर आधारित रहना देखा गया है । आम जनता के सुविधावादी क्रिया-कलापों को सड़क, चिकित्सालय, पानी, डाक, दूरभाष, शिक्षा-साक्षरता, आवास, दूर संचार कार्यों के रूप में देखने को मिलता हैं । प्रधानत: इन्हीं को विकास कार्य कहते हैं ।

Common people are on their own while sweating & struggling for their livelihoods, although some of these people remain motivated while struggling. Providing amenities to these common people is accepted as a humane aspect of the ruling activities (administration). Performing all such activities is dependent on money. Roads, hospitals, water, postal service, telecom, education & literacy, and housing - all these are considered to be the amenities for common people. Primarily, these are called development activities in common parlance.

शासन मानसिकता मानव में तब से पनपा जब मारपीट कार्यों में परकाष्ठा में पहुँच गये । अर्थात् हर दिन मारपीट, सशंकता, भय से पीड़ित जीने की स्थिति आरंभ हुई । इससे राहत दिलाने के लिये राजा और गुरू आश्वासन दिये, इसके लिये लोक सम्मति मिली । इसका गवाही है - राजा और गुरू स्थापित हुए । अभी तक राजगद्दी और धर्मगद्दी का वैभव होना देखने को मिलता ही है । इससे मुख्य रूप में उल्लेखनीय स्मरणीय तथ्य यही है कि आम मारपीट को रोकने के लिये उससे ज्यादा अर्थात् आम लोगों में जो मार-पीट का तौर तरीका था, उससे ज्यादा प्रभावशाली तौर-तरीके को अपनाते हुए प्रयास किये ।

The ruler mindset emerged in human tradition when the violent activities reached their peak, that is, when every day appeared to be full of violence, suspicion & fear. To provide relief from this, the king and the guru gave assurances, and this received approval of common people. The proof of this approval is - the king and guru got established in human tradition. The seats of power and seats of religion are firmly established even in today’s times. An important point to remember here is that the rulers (administrators) have progressively adapted & used more sophisticated weapons than the weapons of violence which the common people were using.

इस चित्रण से यही समझ में आता है कि मार-पीट को मारपीट से रोकना जरूरी समझा गया । आज के संविधान में भी यही ध्वनित होता है । जबकि मारपीट से पुन: मारपीट ही हाथ आता रहा, युद्ध के अनंतर पुन: युद्ध की तैयारी होता ही आया । इस विधि से शांति का कोई रास्ता मिला नहीं। इसी के साथ हर धर्म गद्दी शांति के समर्थक रहा है अभी भी है । इसके बावजूद धर्म में अपना पराया, राज्य में अपना पराया मानसिकता पनपता रहा । इसी से पता लगता है इन दोनों के अथक प्रयासो में अंतरर्विरोध पनपती रही । बाह्य विरोध तो रहा ही । राज्य परंपरा में करने में और होने में दूरी होती रही है । धर्म गद्दी में कहने-होने में दूरी रहे आयी । यही मानव समुदायों में अन्तर्विरोध का कारण रहा । बाह्य विरोध अपना-पराया के रूप में रहा ही । इस प्रकार धर्म और राज्य के मूल में मानसिकता का स्वरूप स्पष्ट है ।

It is clear from this narration that it was considered necessary to stop violence with violence. Its echo can be felt in today’s constitutions too, even though violence led to more violence and preparations for war continued after every war. The way to peace has not been found in this manner although every seat of religion has always been, and still is, in favour of peace. In spite of this, the mindset of us-and-them in religion, us-and-them in states continued, and still continues, to grow. It shows that inner conflicts continued unabated in spite of untiring efforts of religion & state. External conflicts, in any case, were already there. In the seat of power, the dissonance between right living versus actual living, remains. In the seat of religion also, the dissonance between their sermons versus actual living remains. This has been the root cause for inner conflicts within sects. Outer conflicts have always been there in the form of us-and-them. In this manner, it is clear that there is a mindset (or thinking) at the root of religion and states.

मानव परंपरा में यह विदित है कि मानव क्रियाकलाप के मूल में मानसिकता का रहना अत्यावश्यक है । मानसिकता विहीन मानव को मृतक या बेहोश घोषित किया जाता है । विकृत मानसिकता (मान्य, सामान्य मानसिकता के विपरीत) वाले मानव को पागल, असंतुलित अथवा रोगी के नाम से घोषणा की जाती है । यह सभी क्रियाकलाप वांछित, इच्छित और आवश्यकीय मानसिकता हर क्षण, हर पल, हर दिन शरीर यात्रा पर्यन्त प्रभावित होने के क्रम में ही राज्य मानसिकता, धर्म मानसिकता, व्यापार मानसिकता, अधिकार मानसिकता, भोग मानसिकता, सुविधा-संग्रह मानसिकता समीक्षित होता है ।

The fact that presence of mindset (or thinking) is essential for all human actions, is well-known in human tradition. A person devoid of thinking is declared as dead or unconscious. A person with a wicked mentality (mentality opposite to acceptable, normal mentality) is declared as insane, off-balance or sick. Recognition of this continuous, lifelong expectation, aspiration and need of healthy mentality behind all human actions forms the basis on which the incompleteness of state mentality, religion mentality, commerce mentality, authoritative mentality, hedonistic mentality and comfort -accumulation mentality becomes noticeable.

न्याय मानसिकता, धर्म (समाधान) मानसिकता, नियम मानसिकता, प्रामाणिकता पूर्ण मानसिकता, समृद्धि मानसिकता, सह-अस्तित्व मानसिकता, वर्तमान में विश्वास मानसिकता, परिवार मानसिकता, स्वायत्त मानसिकता, समाज मानसिकता, व्यवस्था मानसिकता, मानवीय शिक्षा-संस्कार मानसिकता, स्वास्थ्य संयम मानसिकता का मूल्यांकन किया जाना जागृत परंपरा में संभव होता है ।

Mentality of justice, mentality of resolution, mentality of laws, mentality of authenticity, mentality of prosperity, mentality of coexistence, mentality of trust in present, mentality of family, mentality of self-reliance, mentality of society, mentality of systems, mentality of humane education, mentality of health & *sanyam* - possibility of evaluation of all these emerges in awakened human tradition.

अनुभवमूलक विधि से किया गया कार्य-व्यवहार विचार, अर्पण-समर्पण, सम्बंध-मूल्य-मूल्यांकन-उभयतृप्ति परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन लाभ-हानि मुक्त विनिमय, प्रामाणिकता पूर्ण प्रबोधन (समझे हुए को समझाने, किये हुए को कराने, सीखे हुए को सिखाने) से ही ये सब सकारात्मक उपलब्धियाँ मानव परंपरा में सहज-सुलभ होना पाया जाता है । यह सम्पूर्ण वैभव मानव परंपरा में अनुभवात्मक अभिव्यक्ति एवं मानसिकताएँ है ।

Work & behaviour, thoughts; offering & devotion; relationship, values, evaluation & mutual happiness; producing more than needs of the family; exchange free from profit & loss; communication with authenticity (passing on to others what they have understood, what they have done, and what they have learnt) - all this done by realisation-rooted method results in positive accomplishments for all in human tradition. All this is the grandeur of realisation-centred expressions and mindsets in humane tradition.

आदर्शवाद और भौतिकवाद के स्थान पर अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन बनाम मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद क्रम में ऊपर कहे गये सभी सकारात्मक पक्षों का सहज समाधान और उसकी निरंतरता की समीचीनता प्रस्तावित रहता ही है । यही अनुभवात्मक आदर्शवादिता का ‘पूरक गुण’ होना देखा गया ।

As an alternative to idealism and materialism, the existence-rooted human-centred contemplation (or Madhyasth Darshan, Co-existentialism) proposes the proximity to solution, along with its continuity, of all the positive aspects mentioned above. This indeed is the ‘completeness attribute’ of the realisation-centred idealism.

मूलत: अनुभव अनुक्रम से ही होता है मानव कुल में जीवन जागृति सहज विधि से सभी सकारात्मक पक्ष प्रमाणित होना देखा गया है । इसके विपरीत भ्रमबंधन वश ही अर्थात् भ्रम में ग्रसित मानसिकता वश ही मानव अनेक समुदाय, राज्य, धर्म, जाति, पंथ, सम्प्रदाय, धन, पद और सामारिक बल के आधार पर अपने को विकसित-अविकसित भी मान लेते है, कह लेते है । प्रयोजन के रूप में कुछ भी नहीं निकलता है । यथा सह-अस्तित्व, समाधान, अभय, समृद्धि मानव कुल में प्रमाणित नहीं हो पायी । इससे यह स्पष्ट हो गई कि जागृति में मानव मानसिकताएँ सकारात्मक, अमानवीयता में नकारात्मक पक्षों में कार्य करता है । नकारात्मक कार्य में भ्रमवश, अनर्थ एवं सकारात्मक पक्ष में जागृति-पूर्णतापूर्वक सार्थक होना, मूल्यांकित होना, समीक्षित होना, फलित होना देखा जाता है ।

Primarily, realisation occurs only in a step by step, progressive manner. In humankind, all the positive aspects are evidenced by the way of *jeevan* awakening. On the other hand, under delusion, or afflicted by the delusionary mindset, humans assume and even claim themselves to be developed or undeveloped based on sect, state, religion, caste, creed, wealth, status or military prowess. In all this, nothing comes forth in the form of purpose. Therefore, resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, could not be evidenced in humankind. Thus, it becomes clear that human mindsets focus on positive (constructive) aspects when awakened, and on negative (destructive) aspects when deluded. Upon evaluation & scrutiny, it is observed that negative activities under delusion lead to undesired & meaningless results, while awakening is the meaningful & desired result of positive aspects.

भ्रमित परंपरा में ही शक्ति केन्द्रित शासन मानसिकता स्पष्ट हो चुकी है । यह भी साथ में झलक मिल चुकी है कि समाधान केन्द्रित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था ही सर्व शुभ कार्यक्रम हैं ।

By now, it is clear that the mentality of power-centred rule develops only in the deluded tradition. Also, we have got a glimpse that the resolution-centred family-rooted self-governance system is indeed the program for universal-good.

इस दशक तक अधिकारों की होड़ रही है । अधिकार सर्वप्रथम शासन और शासन के स्वरूप में भागीदारी की मानसिकता पर आधारित होना स्पष्ट है । शासन मानसिकता स्वयं भ्रमित होने के आधार पर भागीदारी की तैयारी भ्रम ही होना, भ्रमवश ही होना, भ्रमित अपेक्षाओं के साथ ही होना पाया जाता है । सुविधा संग्रह के लिये ही अधिकार मानसिकता बना रहता है । अधिकार मानसिकता में अधिकार को पाया हुआ मानसिकता में, और अधिकार प्रवर्तन की मानसिकता में जो भ्रम अपने श्रेष्ठता अन्य की नेष्ठता को बनाये रखा रहता है वहीं कार्यरूप में अन्य को क्षति ग्रस्त होना ही प्रयोजित हुआ रहता है। जैसा- ‘दासवाद’ को समर्पित शासनाधिकार में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ, शासन में जो नहीं रहते है उनसे अपने आप को श्रेष्ठ मानते हुए सभी प्रकार से निर्णय लिये रहना अर्थात् संवाद के पहले से ही निर्णय लिये रहना देखा गया है ।

Till the last decade of the twentieth century, there has been a rivalry for gaining authority. First of all, authority is based on the ruler-mentality, and participation in the ruler-based system. As the ruler-mentality itself is based on delusion, preparation for participation in the ruler-based system is also a delusion, occurring due to delusion, and has deluded expectations. Comforts & accumulation (perks & benefits) are the driving force behind the authoritarian mentality. In the authoritarian mentality (having and exercising authority), the deluded assumption that they are superior, and the others inferior, leads to actions and programs that cause harm to others. For example, it is observed that under the authoritarian rule endorsing slavery, there is an assumption that the rulers are superior and the others are inferior, and all the decisions are taken accordingly; so much so that often the decisions are already taken before any dialog takes place.

इसका साक्ष्य अभी तक शासन मानसिकता लोक मानसिकता से मिलन बिन्दु स्थापित नहीं हुई है । जबकि धर्मशासन विधि से आचरण पद्धति के रूप में एक आचार संहिता प्रस्तुत किये रहते हैं । ईश्वरीय नियम के रूप में संध्या-उपासना-प्रार्थना अभ्यास भाषा के रूप में बताया करते हैं । हर धर्म गद्दी में बैठा हुआ व्यक्ति अपने को सर्वश्रेष्ठ बाकी सब अज्ञानी-पापी स्वार्थी के रूप में गणना करते हुए भाषा, लहजा मुद्रा, भंगिमाओं को प्रस्तुत करते हैं जबकि यह सर्वथा भ्रम का ही द्योतक है । क्योंकि भ्रमित धर्म, भ्रमित राज्य के वशीभूत जन-मानस भ्रमित रहना स्वाभाविक है इसलिए धर्म, राज्य और जनमानसिकता का तालमेल में संगीत, समाधान प्रतिपादित नहीं हुआ । ये तीनों दिशाविहीन, अंतर्विहीन, अर्थविहीन रूप से ही अंत होते है। नामत: इसे समस्या कहा जाता है । इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक धर्म गद्दी, राज्य गद्दी की अस्मिता स्पष्ट है । प्रस्ताव के रूप में अर्थात् समाधान केन्द्रित सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज के अर्थ में ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ बनाम अनुभवात्मक आदर्शवाद को प्रस्तुत किया है ।

That there is no common ground so far between the mentality of the ruling class and the mentality of the masses, is its testimony. Under the religious rule, a code of conduct is presented as the recommended conduct. Evening worship prayers are mentioned as the laws of the Supreme. Persons occupying the seat of every religion declare themselves to be superior most; count others as ignorant, sinners & selfish; and present themselves with corresponding language, body language & postures, although all this is but an indication of delusion. It is natural for the masses to be deluded under deluded seats of political power and religion. This is the reason harmony & resolution is missing between religion, state and the masses. All these three end up directionless, incompatible, hollow & meaningless. This itself is called the problem. This is how haughtiness of the seat of political power and the seat of religious power can be identified till the last decade of the twentieth century. As a proposal for resolution-centred indivisible society universal systems, Realisation Centred Spiritualism or Realisation Centred Idealism is being presented here.

भ्रमात्मक धर्म और राज्य परंपरा में परिकल्पित अधिकारों का प्रवर्तन संग्रह, सुविधा और भोग के अर्थ में ही अंत होना देखा गया । आज की स्थिति में शक्ति केन्द्रित शासन प्रयोग में अधिकार पाया हुआ व्यक्ति की सफलता का स्वरूप इस प्रकार दिखाई पड़ता है कि देशवासियों को कड़ी मेहनत, ईमानदारी का नारा और पाठ सुनाते रहे और अपने संग्रह कोष को स्वदेश के अतिरिक्त विदेश में मजबूत बनाते रहे । इसी प्रकार सफल धर्म में अधिकार प्राप्त व्यक्ति (सिद्धि प्राप्त व्यक्ति) का स्वरूप देखने पर यही पता लगता है कि संसार में त्याग और वैराग्य का पाठ पढ़ावे और अपने कोष व्यवस्था को स्वदेश में अधिकतम मजबूत बनाये रखे ।

It is observed that under the deluded religious and political traditions, exercise of the desired authority ends up only in accumulation, comforts and indulgences. In today’s times, success of a person having authority under power-centric rule is seen in this manner – motivating the common man to be honest and hard-working, while they themselves keep on accumulating wealth not only in their own country but also in the foreign accounts. In a similar manner, success of a person having religious authority lies in motivating the world for renunciation & detachment, while they themselves keep on accumulating wealth.

इस तरह राज्याधिकार, धर्माधिकार सफल व्यक्ति का स्वरूप इस बीसवीं शताब्दी का अंतिम दशक में देखने को मिल रहा है । यही भ्रमात्मक धर्म, भ्रमात्मक राज्य का गवाही है । जबकि ‘मानव धर्म’ अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के स्वरूप में ही सार्थक और सर्वसुलभ होना पाया जाता है । इस विधि से सम्पूर्ण मानव के सम्मुख सर्वमानव सुखी होने का सूत्र ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ प्रस्तुत है ।

This is the manner in which a person having authority in political power or religion in this last decade of the twentieth century, is assumed to be successful. This is the proof of deluded religion and deluded politics. In reality, it is only in the form of the indivisible society & universal system that ‘human dharma’ becomes meaningful and universally accessible. Thus, ‘Realisation Centred Spiritualism’ is presented to humankind as the key to universal happiness.

पहला मुद्दा - शक्ति केन्द्रित शासन चाहिये या समाधान केन्द्रित व्यवस्था चाहिये ?

दूसरा मुद्दा - संग्रह सुविधा चाहिये या न्याय, समाधान और समृद्धि चाहिये?

तीसरा मुद्दा - इसके लिये लाभोन्मादी अर्थशास्त्र, भोगोन्मादी समाज शास्त्र, कामोन्मादी मनोविज्ञान शिक्षा की वस्तु के रूप में चाहिये या आवर्तनशील अर्थशास्त्र, व्यवहारवादी समाजशास्त्र और मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शिक्षा की वस्तु के रूप में चाहिये ?

चौथा मुद्दा - विखण्डनवादी (प्राकृतिक असंतुलनवादी) विज्ञान चाहिये या सह-अस्तित्ववादी (प्राकृतिक संतुलनवादी) विज्ञान चाहिये?

First question : Do we need the power-centred rule? Or resolution-centred systems?

Second question: Do we need accumulation & comforts? Or justice, resolution & prosperity?

Third question : For this, do we need profit-obsessed economics, consumption-obsessed sociology and sex-obsessed psychology as the content of education? Or circular economics, behavioural sociology and human-consciousness based psychology as the content of education?

Fourth question : Do we need fragmentation-oriented science (disturbing the equilibrium in nature)? Or coexistence-oriented science (maintaining the equilibrium in nature)?

इन्हीं सकारात्मक-नकारात्मक अर्थात् अभी तक किया गया शिक्षा स्वरूप को नकारता हुआ और सकारात्मक पक्ष को प्रस्तावित किया हुआ का समर्थन में समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद और अनुभवात्मक अध्यात्मवाद (सह-अस्तित्ववाद) चाहिये या द्वन्दात्मक भौतिकवाद, संघर्षात्मक जनवाद, रहस्यात्मक अध्यात्मवाद (आदर्शवाद) चाहिए ।

रहस्यमूलक ईश्वर केन्द्रित चिन्तन और अस्थिरता अनिश्चयता मूलक वस्तु केन्द्रित चिन्तन चाहिये या अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन चाहिये ?

What do we need - Rejection of the negative aspects in education so far, and proposal & support for the positive aspects in the form of resolution-centred materialism, behaviour centred conversations and realisation centred spiritualism? Or dialectical materialism, conflict centred conversations and mystery centred spiritualism (idealism)?

Do we need mystery based God centred contemplation, and instability and uncertainty based material centred contemplation? Or existence based, human centred contemplation?

यही मानव कुल को निश्चय करने का अवसर समीचीन हुआ है । इसे नकारने-सकारने के पक्ष में कही गई विश्व दृष्टिकोण, विचार शैली, शास्त्र प्रणालियों में से प्रभावित का परिचय अधिकांश लोगों के पास जाँच पड़ताल सहित धारक-वाहकता के रूप में प्रस्तुत है । और प्रस्तावित दर्शन बनाम चिन्तन, विचार शैली का नाम, प्रस्तावित शास्त्रों का नाम मानव के सम्मुख प्रस्तुत हुआ । इस स्थली में, यहाँ इस ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ को अध्ययन करता हुआ मेधावियों के स्मरण में इस बात को ला रहे हैं कि प्रस्तावित चिन्तन-दर्शन, मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद के नाम से तीनों वाद तीनों शास्त्र वांग्मय के रूप में प्रतिपादित, सूत्रित, व्याख्यायित विधि से प्रस्तुत कर चुके हैं । अतएव मानसिकता के आधार के रूप में भ्रमात्मक विधि से इस दशक तक मानव जो भुगत चुका है और प्रस्ताव के रूप में जागृति और अनुभव प्रमाण सहित जीने की आवश्यकता, उसकी सफलता के लिये सुयोजित मार्ग को प्रशस्त करना सर्वसुलभ करना ही हमारे प्रयासों का आशय है ।

Opportunity to get precise answers to these questions is now available to humankind. Most people are already aware about the arguments related to world-views, thought processes and living models for and against various aspects pertaining to these questions. And now this proposed philosophy or contemplation (Madhyasth Darshan) is also formally available to humans. At this point, let us remind the talented students studying this book titled ‘Realisation Centred Spiritualism’ that all the literature pertaining to this philosophy (Madhyasth Darshan or Co-existentialism) has been presented, written and explained in the form of books. The intent of our efforts is to highlight the need of living with awakening and evidence of realisation, and to define and describe the roadmap for the same, so that the humans may overcome whatever adversities they have gone through so far under the deluded mindset.

भ्रमित राज्य और धर्म के साथ व्यापार शोषणाधीन हो चुका है। व्यापार मानसिकता में शोषण का ही एकमात्र बुलंद आवाज है, उसमें सभी छल-कपट-दंभ-पाखण्ड समाया हुआ है। इसी क्रम में मानवेत्तर वस्तु व्यापार, मानव व्यापार, देह-व्यापार, धर्म व्यापार, ज्ञान व्यापार, तकनीकी व्यापार में अधिकाधिक व्यक्ति प्रवृत हो चुके हैं । इसका मूल कारण भ्रमित सामुदायिक परंपराएँ ही हैं । व्यापार विधि से हर मानव किसी न किसी का शोषण करता ही है । राज्य विधा में द्रोह-विद्रोह होता ही है । धर्म विधा में अपना पराया बना रहता है । इस शताब्दी के मध्यावधि से अभी तक सर्वधर्म सम्मेलन के नाम से अनेकानेक भाषण करने वाले विभूतियों को देखा गया है । सब अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताते है । कभी-कभी एक दूसरे को सराहते भी हैं । इसके बावजूद कौमी-मजहबी संघर्ष, दूसरे विधि से कौमी मजहबी मानसिकता के आधार पर राज्यों के साथ संघर्ष, सत्ता हथियाने, दमन करने, तंग करने का प्रयास देखा गया है ।

Along with the deluded governance and religion, commerce has also come under the influence of exploitation. Exploitation is at the core of the mentality of commerce. Deceit, cheating, hypocrisy & fraud, all these are included in exploitation. On this course, most people are now engaged in, and prefer trade, business & commerce of material objects, humans, flesh, religion, knowledge and technology. Deluded sectarian traditions are its root cause. Exploitation is inevitable in business, and offence & revolt are ever present in governance. In religion, the mindset of ours-and-theirs is a constant. Since the mid-twentieth century, many learned people have been addressing all-religion conferences. All of them declare their own religions as the best, while sometimes appreciating others too. In spite of all this, conflicts based on faith and sect (in other words, friction based on religious mentality), and attempts for power grabbing, suppression and harassment are quite visible.

जबकि मानव जाति एक है, धर्म एक है फलस्वरूप अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, शांति, न्याय, सुरक्षा, समृद्धि, समाधान, सह-अस्तित्व, वर्तमान में विश्वास जागृति सहज विधि से नित्य समीचीन है ही । यही अनुभवमूलक आदर्शवाद मानवीयता सहज समाधानात्मक भौतिकवाद का स्वरूप है । अनुभवमूलक विधि से ही जागृति का प्रमाण होना देखा गया है ।

However, the human race is one, and human dharma is one; and therefore, indivisible society, universal systems, peace, justice, security, prosperity, resolution, coexistence, trust in the present – all this is always in close proximity by way of awakening. This itself is the manifestation of realisation-based idealism and resolution-centred materialism. It has been observed that the evidence of realisation occurs only by the realisation-rooted method.

भ्रम पर्यन्त अधिकारों के प्रति पागल होने के अनंतर कम से कम कुछ लोगों को घायल किये बिना रहा नहीं जा सकता । मूलत: अधिकार तंग करने के अर्थ में ही ख्यात है । कुछ लोग तंग होने के लिये अर्थात् शोषित होने के लिये तैयार भी बैठे रहते हैं । मानव पुरूष हो या स्त्री हो वह सदा-सदा शरीर यात्रा काल में पाँच कोटि में ही गण्य होता है । वह क्रम में जागृति पूर्ण मानव ही दिव्यमानव, जागृत मानव ही देवमानव और मानव जागृत पशु मानव व राक्षस मानव के अर्थ में अमानव गण्य होना देखा गया है । जीवन में ही दृष्टि, स्वभाव और प्रवृत्तियाँ होना अध्ययन गम्य है और स्वयं में अनुभव किया गया है, हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है । अतएव मानव ही सत्यापित करने के लिये मानव से ही सत्यापित होने के लिये मानव में ही सम्पूर्ण सत्यापन उद्गमित होना देखा गया है । यही सत्यापन अभिव्यक्ति संप्रेषणा के अर्थ में गण्य होता है । अस्तित्व सहज पदार्थावस्था, प्राणावस्था और जीवावस्थाएँ अपने-अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था के अर्थ में परंपरा के रूप में प्रकाशमान है ही ।

While in delusion, and obsessed with authority, it is simply not possible to live without hurting at least some people. Authority is popularly and primarily linked with harassment. Moreover, there are some people who are gullible enough to be readily harassed, exploited or duped. Humans, whether males or females, can always be categorised at any time in their lifetimes, in one of the five categories, namely : (1) divine humans as fully-awakened humans; (2) godly humans and (3) humane-humans, as awakened humans; and (4) animalistic humans and (5) demonic humans as inhumane humans. That the perspectives, innate-nature and tendencies are only in *jeevan*, is studiable. I have realised this, and so can everyone. All the authentication originates in, by & for humans only. This authentication itself is the main content of expression & communication. Material order, plant order and animal order are observed to be participating in the existential orderliness with their essence, in the form of tradition.

अस्तित्व सहज सभी अवस्थाओं का दृष्टा, मानवीयता पूर्ण क्रियाकलापों का कर्ता, मानवापेक्षा सहज समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व का भोक्ता केवल मानव ही है । अस्तित्व में अनुभव सहज अभिव्यक्ति ही यह सत्यापन और सत्यापन विधि होना पाया गया है । यही मानव परंपरा का मौलिक वैभव है । यह सर्वसुलभ होने के लिये परंपरा ही जागृत होना अति अनिवार्य है । इस बीसवीं शताब्दी की दसवें दशक तक इस धरती के मानव विविध प्रकार से अथवा उक्त दोनों प्रकार से यथा भौतिकवादी और आदर्शवादी विधि से मानव को भुलावा देकर ही सारे धरती का शक्ल बिगाड़ दिया । और दूसरे विधि से मरणोपरांत स्वर्ग और मोक्ष के आश्वासन में लटकाया । जबकि मानव शरीर यात्रा के अवधि में ही जागृति अनुभव मूलक प्रमाण, प्रामाणिकता मानव के लिये एक मात्र शांति पूर्ण समृद्धि, समाधान, अभय, सह-अस्तित्व सहज आनन्दित होना देखा गया है । यही जागृति सहज प्रमाण है ।

A human being is indeed the perceiver of all the four orders in nature, the doer of all actions with humaneness, and the enjoyer of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence (the human expectations). It has been concluded that expression of realisation in existence itself is indeed the testimony, as well as the way of testifying. This is the grandeur of human tradition. For this to be easily accessible to all human beings, it is essential for the human tradition itself to be awakened. Till this last decade of the twentieth century, by way of materialism and idealism, humans on Earth have ignored fellow humans. Materialism ruined this planet in diverse ways. On the other hand, idealism gives assurances of heaven and *moksha* after death; whereas, humans are observed to be living in bliss in their lifetime only by way of awakening, evidence, resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. This itself is the evidence of awakening.

आडम्बर मूलत: भ्रमवश ही घटित होना देखा गया है। सम्पूर्ण भ्रम का पोषण राजगद्दी एवं धर्मगद्दी करता है। इसका स्रोत शिक्षा-गद्दी है। इस प्रकार शिक्षा गद्दी को जागृत होना आवश्यक है । इसके फलन में मानव धर्म ही अखण्ड समाज के अर्थ में सर्वमानव में, से, के लिये आश्वस्त और विश्वस्त होना नित्य समीचीन है । इससे सम्पूर्ण समुदायों जो अपने को समाज कहते है उनका विलय होगा ही । दूसरा परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज विधि से अनेक राज्यों की परिकल्पना तिरोभावित होगी । इस प्रकार धरती की अखण्डता अपने में सम्पूर्णता के साथ स्वस्थ होने का शुभ दिशा प्रशस्त होगा । इसी के साथ मानव कुल में वांछित संयमता, प्रदूषण विहीन प्रौद्योगिकी, ऋतु संतुलन, जनसंख्या नियंत्रण सहित स्वस्थ मानसिकतापूर्ण मानव इकाई इस धरती के ऊपरी सतह में सहज रूप में निष्पन्न होती रहेगी । उसी के साथ सह-अस्तित्व विधि से सदा-सदा के लिये पीढ़ी से पीढ़ी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक जीने की कला, विचार शैली, अनुभव बल सम्पन्न होगा। यही समृद्ध मानव परंपरा का स्वरूप होना स्पष्टतया समझा गया है।

It has been observed that hypocrisy occurs only under delusion. All the delusion is nurtured by the seat of political power and the seat of religion. The seat of education is its source. Thus, it is essential for the seat of education to become awakened. The assurance and trust that human *dharma* for indivisible society is always in close proximity to, for & in all humans is its natural outcome. This will certainly lead to merging of all the sects, who call themselves society. Secondly, by way of the family-rooted self-governing system, the illusion that multiple countries are needed will also disappear. This will show the right direction towards the indivisibility of Earth with its completeness and good health. This will ensure the continuity of humankind on the surface of this planet with long-desired discipline, pollution-free industry, clean environment, population control, all this along with healthy mindsets. Side by side, the art of living, thought process & strength of realisation, by way of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence will thrive continuously from generation to generation. It is clearly understood as the form of prosperous human tradition.

यह समझदारी अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से स्पष्ट हुआ है । यही मूलत: अस्तित्व-मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन की अभिव्यक्ति है ।

This understanding has emerged from the realisation-rooted method in existence. Primarily, this indeed is the expression of existence based human centred contemplation.

अनुभवमूलक विधि से शिक्षा का स्वरूप अपने आप से जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहज विधि से शिक्षा-संस्कार सम्पन्न करने का उपक्रम सहज होना देखा गया है । इसे सर्व सुलभ करना सम्भव है। इस तथ्य को भी परिशीलन कर चुके हैं । ऐसी शिक्षा-संस्कार को मानवीय शिक्षा-संस्कार का नाम दिया है । यह शिक्षा का स्रोत सह-अस्तित्व सहज है । इस बात को सत्यापित किये हैं । अस्तित्व में नित्य व्यवस्था है न कि शासन । शासन को व्यवस्था मानना ही पूर्ववर्ती दोनों विचारधारा भटकने का एक बिन्दु रहा है । दूसरा प्रधान बिन्दु अस्तित्व को समझने में असमर्थ रहा है या अड़चन रहा है अथवा भ्रम से पीड़ित रहे हैं।

It has been observed by the realisation-rooted method that the program of education is to impart education-*sanskar* by way of knowledge of *jeevan*, knowledge of existence and knowledge of humane conduct. It is possible to make it accessible to all. This fact has been thoroughly verified. Such education-*sanskar* is being referred to as the humane education-*sanskar*. Coexistence is the source of this education. Truthful declaration regarding this has been made. There is eternal orderliness in existence, and not the rule of rulers. To assume that ruling itself is orderliness, is one of the points where both the erstwhile ideologies (idealism and materialism) strayed. Another main point is the inability to understand the existence, or hurdles therein, or suffering from delusion.

इन्हीं कारणों से दोनों प्रकार के विचारधाराएँ अस्तित्व सहज यर्थाथता, वास्तविकता, सत्यता को स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रूप में अनुभव करने में वंचित रहे हैं या अनुभव हुआ किन्तु अभिव्यक्ति संप्रेषणा में प्रमाणित होना संभव नहीं हो पाया है । जबकि हमें अस्तित्व में अनुभव के अनंतर अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन में कोई अड़चन उत्पन्न नहीं हुई । अब यह भी सर्वेक्षण, निरीक्षण, परीक्षण की बेला समीचीन है कि यह संप्रेषणा मानव कुल में, से, के लिये आवश्यकता के रूप में विदित होगा या नहीं । हमें इस पर पूर्ण भरोसा है - मानव में, से, के लिये अस्तित्व में अनुभव एक आवश्यकता के रूप में स्वीकार्य हुआ हो ऐसी स्थिति में यह अभिव्यक्ति, संप्रेषणाएँ स्वाभाविक रूप में बोधगम्य, हृदयंगम पूर्वक सह-अस्तित्ववादी मार्ग को प्रशस्त करेगा क्योंकि अस्तित्व ही सह-अस्तित्व के रूप में नित्य विद्यमान है ।

Because of these limitations, in either of the two ideologies, the actuality, reality & verity could not be realised in the form of absolute truth, manifested truth & objective truth; or if realised, could not be evidenced in expression and communication. Because of these limitations, the actuality, reality & verity could not be realised in the two ideologies, in the form of absolute truth, manifested truth & objective truth; or if realised, could not be evidenced in expression and communication. On the other hand, subsequent to realisation in existence, I did not face any problem in expression, communication or exposition. Now, the time has come when we will know if this communication is felt as necessary or not in, by & for humankind. I have full confidence that - if realisation in existence is accepted as necessary in, by & for humankind, then these expressions and communications will naturally pave the way to understanding of coexistence by way of comprehension & internalisation, because existence itself is ever-present in the form of coexistence.

इस दशक तक दंडाधिकार, दमनाधिकार, पूंजी का अधिकार, धरती का अधिकार, मानव पर अधिकार, जीवों पर अधिकार, वनों पर अधिकार, खनिजों पर अधिकार, प्रौद्योगिकी पर अधिकार, व्यापार अधिकार, राज्याधिकार, समुद्र और आकाश पर अधिकार, धर्माधिकार और बौद्धिक संपदाओं पर अधिकारों का चर्चा, अधिकारों की सीमा और मर्यादाओं पर भी ध्यान दिया जाना देखा गया । इन सभी मुद्दों के सम्बन्ध में कई समुदायों अथवा सभी समुदायों का सम्मिलित अथवा समुदाय प्रतिनिधियों का सम्मिलित गोष्ठी, विचारपूर्वक गोष्ठी, विचार पूर्वक निर्णयों को स्वीकारा गया । अब ऐसी सभी स्वीकार्यताएं महिमामय दस्तावेजों के रूप में माने गये हैं । महिमा सम्पन्न दस्तावेज का तात्पर्य जिस स्वीकृतियों का हेराफेरी होने से उसके लिये डरावनी सबक सीखने के लिये स्वीकृतियाँ बनी रहती हैं । या इसको मर्यादा माना जाता है । ये सब ऐसे मौलिक दस्तावेजों का मूल तात्पर्य सभी अपने-अपने देश में शांतिपूर्वक जी सके इसी मानसिकता से उक्त सभी बातों पर एक समझौता किया जाता है । जबकि अभी तक पूर्वावर्ती किसी भी चिन्तन के अनुसार, कोई भी वांग्मय जो मानव सम्मुख प्रस्तुत हुई है उसमें सार्वभौम शांति का कोई परिभाषा, प्रतिपादन, उसका व्याख्या संप्रेषित नहीं हो पाया । साथ ही सुख शांति की अपेक्षा हर मानव में होना पाया जाता है ।

Until this last decade of twentieth century, authority to punish, authority to suppress, authority to capital, authority to territories, authority on humans, authority on animals, authority on forests, authority on minerals, authority on industry, authority on trade & commerce, authority to govern, authority on oceans & skies, authority of religions, and authority of intellectual properties – it has been observed that discussions on all these authorities, and scrutiny of limits & extent of all these authorities keep on happening. On all these matters, decisions are taken and accepted after discussions and deliberations in meetings of various (or all) sects, or among representatives of sects. All such decisions are compiled in well-respected documents. Well-respected document means the acceptance that deeds at variance from such decisions will lead to scary outcomes. Compliance with such decisions is considered dignified. Main objective of all such documents is that all the people are able to live in their respective countries peacefully - agreements are reached with this mentality; although none of the ideologies, or literature available to humankind, has so far been able to define, describe or communicate what universal peace is. But the expectation of peace and happiness is found in every human being always.

उक्त मुद्दों पर स्वीकृत अधिकारों के आधार पर किये गये समझौते बारंबार बदलते भी रहते है । इसी के साथ इस शताब्दी के अंतिम दशक तक में यह भी देखा गया जिस देश के पास सर्वाधिक समर शक्ति हाथ लगी है वह किसी के अधिकारों को भी हथिया लिया है और अपने अधिकार के रूप में स्वीकार कर लिया गया है । इस शताब्दी के पहले भी इस प्रकार की नजीरें उपनिवेश के रूप में घटित होना ख्यात हो चुकी है । इस प्रकार कोई भी अपने सामरिक कूटनीतिक (अन्त:कलह को पैदा करो-राज करो) मानसिकता से ही पहले भी जो अपना देश नहीं है ऐसे देशों पर अधिकार पाने का प्रयोग किया है । यह राज्याधिकार मानसिकता मूलत: अपने स्वजनों, स्वजातियों और स्वदेशियों के सुविधा के लिये अन्य देश की सम्पदाओं को अपहरण कर, शोषण कर अपने देश में उपयोग करने के रूप में प्रयास करना देखा गया है ।

Moreover, the treaties related to concurrence on the above accepted authorities keep on changing with time. By the end of the last decade of the twentieth century, it has been observed that whenever a country became a military superpower, it ended up usurping authority of others or assumed authority over others. It is well-known that even before this century, such precedents have occurred in the form of colonialism. In this manner, attempts to usurp authority over other territories based on the mentality of military strategies (trigger a civil war, and then intervene and rule) have been made in history. This mentality of expansionism is visible in the form of attempts to provide facilities to one’s own countrymen and people, by forcefully seizing resources of other countries, exploiting them and using them in one’s own country.

आदिकाल से ही सामरिक शक्ति सम्पन्न राज्य को विकसित राज्य, उस देश में निवास करने वालों को विकसित जनजाति होना मान्यता के रूप में लोकव्यापीकरण हुआ है जबकि युद्ध न तो विकास का आधार है, कड़ी है, न प्रक्रिया है । क्योंकि इससे अखण्ड समाज का एक भी सूत्र-व्याख्या, प्रयोजन प्रमाणित नहीं होता । जबकि मानवीयतापूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति से अखण्ड समाज का ही सूत्र रचना, व्याख्या व प्रयोजन नित्य समीचीन है । इससे वंचित होने का एक ही कारण है, भ्रमात्मक मानसिकता अथवा भय, प्रलोभन, आस्थाओं से ग्रसित मानसिकता ही है । अभी तक जितने भी झीना-झपटी युद्ध, विश्वयुद्ध हुए हैं, वे सब उक्त तीनों आधारों पर ही सम्पन्न हुए हैं । अतएव अनुभव मूलक विधि से ही मानवीयतापूर्ण पद्धति प्रणाली नीतिपूर्वक है । अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था, मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार सुलभता, न्याय-सुरक्षा सुलभता, उत्पदान-कार्य सुलभता, विनिमय-कोष सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता नित्य वैभव के रूप में इसी धरती पर वैभवित होना सहज है, नियति है, एक अपरिहार्यता है । ऐसी ऐश्वर्य सम्पन्न मानव परंपरा महिमा से ही अनेक राज्य, समुदाय सम्बन्धी अधिकारोन्माद समापन होना स्वाभाविक है। इसका समापन और मानवीयता का उदय अर्थात् जागृति ही मानव परंपरा में, से, के लिये मौलिक संक्रमण और परिवर्तन है ।

Countries with superior military power have been popularly called developed countries since ancient times, and residents of these countries as developed people; although military is no basis of development, has no connection with development and does not lead to development. It is so because not even a single maxim-description, or the goal of indivisible society materialises through war. On the contrary, it is easily and naturally possible to unravel the maxims, description and the goal of the indivisible society by way of humane conduct, methods and policies. There is only one reason for this being denied to humankind – and that is the deluded mentality, or mentality afflicted by fear, temptations and faith. All the invasions, wars and world-wars so far were based on these three factors only. Therefore, only the realisation-rooted method leads to humane systems, processes & policies. Accessibility to indivisible society, universal systems, humane education-sanskar, justice-security, production-work, exchange-reserve and health-discipline - the ever presence of all this grandeur on this planet is natural, destined and inevitable. It is only due to the magnificence of human tradition rich with such systems that the obsession for authority over various sects and countries naturally disappears. This disappearance, and rise of humaneness or awakening itself is a fundamental change and transformation in, by & for human tradition.

मानव जाति, मानव धर्म एक ही है और धरती एक है । इस आधार पर अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था मानव परंपरा में वैभवित होना सहज है । इसी के साथ राज्याधिकार उन्माद समापन होने के साथ-साथ सामुदायिक धर्मोन्माद, बनाम संप्रदाय-मत-पंथों का भ्रम और उन्माद अपने-आप दूर होता है । अखण्ड समाज विधि से सहज होने के कारण, सर्वसुलभ होने के कारण मानव परंपरा में सुख-शांति का सूत्र अपने-आप प्रभावशील होने लगता है । सुख-शांति के लिये विविध धर्म कहलाने वाले अथवा सामुदायिक धर्म कहलाने वाले संप्रदायों का आशय रूप में जो सुख शांति की अपेक्षा और आश्वासन के बीच ये सभी गद्दियाँ अपने को सम्मानशील बनाये रखे हैं । सभी मानव इनकी आवश्यकता को मूल्यांकन करने योग्य होता है फलस्वरूप ये सब भ्रम अपने आप दूर होने की व्यवस्था समीचीन है ।

Human race is one, human *dharma* is one, and Earth is one. On this basis, the presence of the indivisible society and universal system in human tradition is natural. With this, obsession of rulership and obsession of sectarian religion, i.e. delusion and obsession of sects, ideologies & creeds, disappears by itself. The maxims of happiness & peace start becoming effective in human tradition because they are natural and accessible by way of indivisible society. Seats of all traditional, sectarian religions have been successful in commanding respect because they recognised the inherent expectation of happiness & peace in humans, and gave assurances for fulfilling the same. All humans have the capability to recognise this expectation; therefore, the design for all this delusion to disappear by itself, exists in existence.

उत्पादन सुलभता अर्थात् परिवार में जितने भी परिवार मानव रहते हैं उन सबकी आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य होना परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था क्रम में सहज और सुलभ है । इस विधि से हर परिवार समृद्ध होने सहज समीचीनता सुलभ रहता ही है। इसी के साथ श्रम मूल्य के आधार पर विनिमय प्रणाली सर्वसुलभ होता ही है । इस विधि से लाभ-हानि मुक्त विनिमय सम्पन्न होना सहज है । फलस्वरूप लाभ से होने वाली अहम्ता (अहंकार) और हानि से होने वाली पीड़ा से मुक्त होना स्वाभाविक रहता ही है । समाधान, समृद्धि, शांति और सुख का सूत्र होना और न्याय सुलभता के साथ ही वर्तमान में विश्वास होना देखा गया है । बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक यह प्रणाली मानव कुल में प्रभावी नहीं हुई है। इस स्थिति में भी यह अनुभव किया गया है स्वायत्त विधि से किया गया उत्पादन कार्य से समृद्धि का और सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति विधि से न्याय का प्रमाण हमें सुलभ हो चुका है । अब रहा विनिमय प्रणाली अभी तक प्रचलित लाभोन्मादी के अंतर्गत ही हम लेन-देन जैसा उत्पादन और विनिमय मुद्रा के आधार पर करते हुए भी समृद्धि का अनुभव किया । इसलिये और कहा जा सकता है कि लाभ-हानि मुक्त विनिमय प्रणाली प्रत्येक परिवार में, से, के लिये शांति कारक सूत्र होना देखा गया ।

Accessibility to production, or production of goods more than the needs of the members of a family, is natural and straightforward by way of the family-based self-governing system. In this way, provision exists in the existence for every family to be prosperous. Along with this, accessibility for all to exchange procedures based on labour value also occurs naturally. In this manner, establishment of the exchange system free from profit or loss, is possible. As a result, it is natural to get rid of arrogance caused by profit, and the pain caused by loss. Trust in the present has been observed only with accessibility to justice and with resolution, prosperity, peace and happiness. Until the last decade of the twentieth century, it is still awaited by humankind. Even then, I can authenticate that as an autonomous person, I have evidenced and achieved prosperity from production work, and justice from relationships, values, evaluation and mutual happiness. On the exchange front too, I have experienced prosperity even while doing production work under the prevailing profit-obsessed systems based on symbolic currency. Therefore, it can be said that the exchange system free from profit or loss has been observed as the basis of peace in, by & for every family.

स्वास्थ्य-संयम जागृति विधि से अर्थात् अनुभव विधि से स्वायत्त होना सहज है । सम्बन्ध-मूल्य-मूल्यांकन- उभय तृप्तिकारी मानसिकता स्वयं का प्रमाण है और स्वास्थ्य समाधान, सह-अस्तित्व, वर्तमान में विश्वास, परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन-कार्य, न्याय-सुरक्षा में भागीदारी उसकी निरंतरता को बनाये रखने योग्य शरीर को संतुलित किये रहना स्वायत्तता के रूप में हर व्यक्ति में प्रमाणित होना समीचीन है । जीवन जागृति को मानव परंपरा में प्रमाणित करने के लिये शरीर की आवश्यकता और इसका उपयोग, सदुपयोग और प्रयोजनों के सम्बन्ध में हर व्यक्ति जागृत रहना आवश्यक होना है क्योंकि अनुभव की महिमा जागृति ही है । इसी सत्यतावश मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कारपूर्वक ही अथवा सुलभता से ही स्वायत्तता अपने आप संस्कारित होना पाया जाता है। स्वायत्त मानव ही परिवार मानव होना, परिवार मानव ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का धारक-वाहक होना, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था ही मानव में, से, के लिये परम सौभाग्य स्थिति, गति होना, फलस्वरूप मानव सहज सर्वशुभ, जीवन सहज नित्य शुभ, हर मानव में, से, के लिये प्रमाणित होता है ।

Moving on to health-discipline, it is natural for a person to be autonomous by way of awakening. Mindset of relationships-values-evaluation-mutual happiness is the evidence of one’s awakening; and resolution, coexistence, trust in the present, producing more than needs of the family, participation in justice-security, and to maintain healthy body so as to sustain continuity of all this - to become such an evidence of autonomy is within reach of every human being. It is essential for every person to be aware of the role of the body for producing evidence of the awakening of *jeevan* in human tradition, and to understand the use, right-use and purpose of the human body, because awakening indeed is the magnificence of realisation. It is because of this truth only that the humane education-*sanskar,* and its accessibility, plays a key role in nurturing autonomy. Only an autonomous person can be a family person, only a family person can be the bearer-holder of the indivisible society & universal system, and the indivisible society & universal system itself is the most fortunate state of being and participation in, by & for humans, leading to evidence of universal and eternal good.

जागृति विधि से ही संग्रह, सुविधा, पूंजी पर अधिकार की निरर्थकता स्पष्ट होती है और आकाश, खनिज, वन, समुद्र धरती पर अधिकार कल्पनाएँ भ्रामक सिद्ध हो जाती हैं। इसी क्रम में शरीर व्यापार, ज्ञान व्यापार, धर्म व्यापार, विचार व्यापार, मानव का व्यापार, बौद्धिक सम्पदा का व्यापार सम्बन्धी सभी प्रयास, प्रक्रिया, परिणाम का व्यर्थता हर मानव को समझ में आता है । यही अनुभव और जागृति सहज महिमा है । ऐसी जागृति का पहला प्रमाण स्वायत्त मानव ही होना देखा गया है।

It is by way of awakening only that the futility of accumulation, comforts and control on wealth becomes clear. The ambitions of control over skies, minerals, forests, oceans & land also prove to be deceptive. In this course, the futility of all efforts, procedures and outcomes related to making profits by trading in human labour, trading in knowledge, trading of religion, trading of ideas, trading of human beings, and trading of intellectual property becomes clear to every person. This itself is the magnificence of realisation and awakening. An autonomous person is the first evidence of such awakening.

स्वायत्त मानव का प्रमाण रूप मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार ही है । इसकी महिमा को स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन और व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वालंबन है । ऐसे स्वायत्त मानव ही परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होना पाया जाता है। हर परिवार मानव परस्परता में सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन और उभय तृप्ति को पाना देखा गया है । परिवार मानव ही परिवार सहज आवश्यकता के अनुसार अपनाया गया उत्पादन कार्य में एक दूसरे के पूरक होते हैं, भागीदारी का निर्वाह करते हैं, फलस्वरूप परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन होना देखा गया है । यही समृद्धि, समाधान, न्याय सूत्र होना देखा जाता है । परिवार में समाधान और समृद्धि सम्बन्धों के आधार पर पाये गये उभय तृप्ति सहज न्यायपूर्वक व्यवस्था में जीना सहज होता हुआ देखा गया है । इन्हीं सहजता की पुष्टि में आवश्यकता से अधिक उत्पादन समृद्धि को प्रमाणित कर देता है । व्यवस्था में जीना ही समाधान का प्रमाण है और वर्तमान में विश्वास है ।

Humane education-*sanskar* indeed is the living evidence of autonomous persons. Magnificence of an autonomous person is in the form of (1) self-confidence, (2) respect for excellence, (3) balance in talent & personality, (4) sociability in behaviour, and (5) self-reliance in occupation. It is these autonomous persons only who are evidenced as family persons. Every family person recognises relationships, fulfils values, does evaluation and achieves mutual happiness. To meet the physical needs of the family, family persons complement each other in production work undertaken by the family, play their respective roles in production, as a result of which such families are observed to be producing more than their needs. This indeed is the key to prosperity, resolution & justice. Resolution & prosperity are observed to be inherent in families in which members live effortlessly with justice & harmony in mutually fulfilling relationships. Producing more than the needs of the family, i.e., prosperity, is evidenced in such families as a testimony of this effortlessness. To live in systems is the evidence of resolution, and trust in the present.

अतएव स्वायत्त मानव स्वरूप अनुभव मूलक होना देखा गया है । फलस्वरूप परिवार मानव, समाज मानव और व्यवस्था मानव के रूप में होना नियति सहज अभ्युदय (सर्वतोमुखी समाधान) और प्रामाणिकता (अनुभव और पूर्ण जागृति) सहज मानव में सार्थक होना देखा गया है । इसी आधार पर यह ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ लोक मानस के लिये प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत है। मानव ही ज्ञानावस्था की इकाई होने के कारण जागृति और सर्वतोमुखी समाधान को स्वीकारता ही है। यह अनुभव मूलक विधि से ही सर्वसुलभ होता है । ऐसे अनुभव और जागृति विधि से ही इस धरती को सुरक्षित बनाये रखने में मानव की भागीदारी अपेक्षा रूप में स्वीकार हो चुकी है ।

Thus, it is observed that an autonomous person is rooted in realisation. As a result, being meaningful in family, society and systems is seen as the destiny for, and the true meaningfulness of, humans with enlightenment (comprehensive resolution) and authenticity (realisation and full awakening). It is on this basis that this book ‘Realisation Centred Spiritualism’ is presented as a proposal to humankind. Belonging to the knowledge order, humans are naturally receptive to awakening and comprehensive resolution. This awakening becomes accessible to all only by the realisation-rooted method. It has been accepted that participation of humans for continued preservation of this planet will occur only by way of such realisation and awakening.

भ्रम का कार्य रूप अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोष ही है । यही अधिमूल्यन, अवमूल्यन, निर्मूल्यन क्रियाओं के रूप में देखने को मिलता है । इसका मूल रूप (भ्रम का) बन्धन है । बन्धन स्वयं में जागृति क्रम है। उसके पहले जीवनी क्रम है । मूलत: जीवन ही है । जीवन अपने में गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई है । जीवन परमाणु भार और अणुबन्धन से मुक्त रहता है और आशा बन्धन से कार्यप्रणाली आरंभ होता है । जीवन में आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा और अनुभव प्रमाण जैसी शक्तियाँ और मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा रूपी बल अविरत रूप में विद्यमान रहता है । बल और शक्ति अविभाज्य रूप में रहते हैं । यह प्रकृति सहज प्रत्येक इकाई में प्रकाशित महिमा है । गठनपूर्ण परमाणु ही जीवन के रूप में कार्य करता हुआ समझ में आता है । गठनपूर्ण होने के पहले सभी परमाणु भौतिक-रासायनिक कार्यकलापों में भागीदारी निर्वाह करने में, देखने में आता है । रासायनिक और भौतिक संसार में जो कुछ दिखाई पड़ता है वह सब अनेक परमाणु से अणु, अनेक अणु से रचनाएँ वर्तमानित है ।

Expression of delusion is in the form of excessiveness flaw, deficiency flaw and omission flaw. This itself is seen in the form of over-evaluation, under-evaluation and mis-evaluation activities. Bondage is at the root of delusion. Bondage itself is the awakening progression. Evolutionary progression of animal bodies is a step prior to awakening progression. Basically, it is jeevan only. *Jeevan* in itself is a constitutionally complete atom, the sentient entity. The *jeevan*-atom remains devoid of molecular and gravitational bonds; its working starts with bondage of hope (hope-bondage). Powers of hope, thought, desire, resoluteness & evidence, and strengths of *mun, vritti, chitta, buddhi* and *atma* are always present in *jeevan*. Strength & power are inseparable from each other. This magnificence is demonstrated in each & every entity in nature. It also becomes clear that the constitutionally complete atom itself is working as the jeevan atom. It has been observed that all atoms play their role in physico-chemical activities before they become constitutionally complete. All that we see, and all that is present in the physico-chemical world, is formed from various types of atoms, molecules made of these atoms, and compositions thereof.

भौतिक संसार के रूप में पदार्थावस्था, और प्राणावस्था के रूप में वनस्पति संसार एवं सभी जीव शरीर तथा मानव शरीर रचना अर्थात् रासायनिक संसार होना दिखाई पड़ता है । यहाँ संसार का तात्पर्य सार रूप में अर्थात् प्रयोजन रूप में रचनाओं को प्रस्तुत करना ही है। इसका प्रमाण भौतिक-रासायनिक संसार में प्रत्येक इकाईयाँ अपने-अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में ही हैं। बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक मानव अपने ‘मानवत्व’ सहित व्यवस्था होने में प्रतीक्षारत है । प्रतीक्षारत रहना भ्रम मुक्ति की ओर गति अथवा दिशा सहज अपेक्षा का द्योतक है । भ्रमित रहना बंधन की प्रगाढ़ता का द्योतक है । इन दोनों स्थिति में अमानवीयता ही प्रचलित रहते हुए, बंधन की पीड़ावश अथवा भ्रम सहज कुण्ठावश जागृति की प्रतीक्षा होना देखा जाता है । प्रगाढ़ रूप में भ्रमित व्यक्ति, समुदाय अथ से इति तक शरीर को जीवन मानने-मनाने के लिये कटिबद्ध रहता है । यही जीवन सहज अनुभव और जागृति का निर्मूल्यन बिन्दु है । जीवन के स्थान पर शरीर को ही जीवन मान लेना प्रगाढ़ भ्रम का गवाही है । इसी भ्रमवश ही मानव जितने भी भ्रमात्मक क्रियाकलापों को कर पाता है वह सब समस्या में ही परिणित हो जाते हैं । जैसे, विज्ञान संसार की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ दूर संचार के रूप में और दूसरा उत्पादन कार्यों में गति के रूप में यंत्रों को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है । यह अपने में उपलब्धियाँ होते हुए मानव में जागृति, अनुभव परंपरा न होने के कारण इनके उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता के स्थान पर सुविधा-भोग-अतिभोग का साधन बनकर रह गया है ।

Material order is in the form of the physical world; and the chemical world consists of compositions of all vegetation in the plants order, and all animal bodies and human bodies. ‘World’ here means in a nutshell the purposefulness of the presentation of compositions or entities. Its evidence is that each & every entity in the physico-chemical world is naturally in harmony in accordance with their innateness. However, till the last decade of the twentieth century, humans still await to be in harmony in accordance with their innateness. ‘Await’ indicates expectation of the right direction or movement towards the delusion-less state. Remaining in delusion indicates intensity of the bondage. Inhumaneness is widespread in both these states; due to the pain of bondage, or rather the agony of delusion, humans are seen to be waiting for awakening. Extremely deluded humans or sects, from beginning to end, remain deeply committed to the belief, and spreading of this belief, that the body itself is jeevan. This is indeed the misevaluation point of realisation and awakening of jeevan. To assume the body itself to be jeevan, instead of clearly recognising jeevan as jeevan, is an indicator of extreme delusion. Under this delusion, all human actions result in problems. For example, science has provided us with important accomplishments like telecommunications, and also many machines for faster production. While these are certainly accomplishments in themselves, but in absence of tradition of realisation and awakening, instead of the use, right-use and purposefulness of these accomplishments, these have been reduced merely to means of comforts and indulgences.

आशा, विचार, इच्छा रूप में बन्धनों को देखा जाता है। जीवन में ही आशा, विचार, इच्छाएँ क्रियाशील रहती हैं । आशा-पूर्ति, विचार-पूर्ति एवं इच्छापूर्ति ही बन्धन का स्वरूप है। भ्रमवश सम्पूर्ण आशा, विचार, इच्छाओं को शरीर-कार्य, शरीर सुविधा, शरीर भोगों के आपूर्ति के लिये दौड़ा लिया । मानव में कर्म स्वतंत्रतावश वैज्ञानिक उपलब्धियों के रूप में यांत्रिकता प्रमाणित हो गई । इन यंत्रों को सदुपयोग करने के स्थान पर अपव्यय करना मानव परंपरा में बाध्यता के रूप में देखा गया, आवश्यकता माना गया है । इसी के परिणामस्वरूप धरती का स्वस्थ मुद्रा अस्वस्थ मुद्रा के रूप में परिणित हो गया है ।

Bondages are observed in the form of hopes, thoughts & desires. Hopes, thoughts, desires are active only in jeevan. Bondages manifest in the form of fulfilment of hopes, fulfilment of thoughts, and fulfilment of desires. Under delusion, humans have channelised all hopes, thoughts & desires towards bodily actions, bodily comforts and bodily pleasures. Machines & machinery in the form of scientific accomplishments have been developed due to freewill of humans. But instead of the right utilisation of these machines, it is observed that their wasteful use has become unavoidable in human tradition, even assumed to be necessary. As a result, Earth, which was in a healthy state earlier, is now in peril.

साथ ही जितने भी जीवन अनुभवमूलक विधि से जागृति होने के लिए उम्मीदें लेकर मानव परंपरा में मानव शरीर को संचालित करने के लिये तत्पर रहते हैं उन सबका जीवन आशा अथवा जीवन अपेक्षा ध्वस्त हो जाता है । इसके मूल में भ्रमित मानव परंपरा ही कारक तत्व है । इस प्रकार से भटकता हुआ जीवन संतुष्टि स्वाभाविक रूप में भोग मानसिकता को न्याय मानसिकता में, संग्रह मानसिकता को समृद्धि मानसिकता में, संघर्ष मानसिकता को समाधान मानसिकता में, द्रोह मानसिकता को पूरक मानसिकता में, विद्रोह मानसिकता को धीरता रूपी मानसिकता में, शोषण मानसिकता को विनियम मानसिकता में, युद्ध मानसिकता को सह-अस्तित्व मानसिकता में, शासन मानसिकता को सार्वभौम व्यवस्था मानसिकता में, समुदाय मानसिकता को अखण्ड समाज मानसिकता में प्रयोजित होना अनुभव मूलक विधि से सहज संभावना है । यह निरंतर समीचीन है । यही ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ (आदर्शवाद) का तात्पर्य है । आदर्श किसका है, भ्रमित मानव का ।

In addition, all the jeevans intent on driving human bodies in human tradition in hope & expectation of awakening, are thoroughly disappointed. Deluded human tradition indeed is at its root. By way of realisation-rooted method, it is readily possible to guide such aimless jeevan towards its natural fulfilment by directing - indulgence mentality to justice mentality, accumulation mentality to prosperity mentality, conflict mentality to resolution mentality, offence mentality to complementary mentality, revolt mentality to fortitude mentality, exploitation mentality to exchange mentality, war mentality to co-existential mentality, ruler mentality to universal systems mentality, and sectarian mentality to indivisible society mentality. This is always in close proximity. This is the meaning of Realisation Centred Spiritualism (Idealism). Whose ideal is this? Ideal of the deluded human being.

ऊपर कहे सम्पूर्ण परिवर्तन बिन्दुएँ सकारात्मक होने के कारण जीवन सहज रूप में स्वीकार है । यह सब नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य से ही सूत्रित वैभव है। दृष्टा पद प्रतिष्ठा जीवन में ही निहित है न कि शरीर में । इस तथ्य को पहले इंगित करा ही चुके हैं । इसलिये ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ परिचय विधि से ही आवश्यकता को उद्गमित करता है ।

All the above-mentioned transformation points are naturally acceptable to jeevan due to their positivity. All this grandeur is linked with law, regulation, balance, justice, dharma and truth. Eminence of the perceiver plane is inherent in the jeevan only, and not in the body. This has been mentioned earlier also. This book reintroduces it so that its need is felt.

अनुभवमूलक विधि से ही जीवन सहज सभी कार्यकलाप जैसे अनुभव और प्रामाणिकता के अनुरूप बोध और संकल्प, अनुभवमूलक विधि से प्राप्त बोध और संकल्प के अनुरूप चिंतन और चित्रण, ऐसे चिन्तन और चित्रण के अनुरूप तुलन और विश्लेषण तथा आस्वादन चयन है। यही अनुभव समुच्चय का तात्पर्य है। अनुभवमूलक विधि से शरीर संचालन विधि स्वयं ‘त्व’ सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी को प्रमाणित कर देता है । हर मानव व्यवस्था चाहता ही है । ऐसी व्यवस्था के लिये परंपरा स्वयं अनुभव मूलक विधि से जागृति सहज प्रमाण होना परमावश्यक है । इस क्रम में जीवन तथा शरीर का संयुक्त रूप में ही जीवन्त मानव के रूप में हर मानव प्रमाणित/मूल्यांकित होता है।

All the activities in & of jeevan e.g., enlightenment & resolve aligned with realisation & authenticity, contemplation & visualisation aligned with enlightenment & resolve (based on realisation-rooted method), deliberation & analysis aligned with such contemplation & visualisation, and finally tasting-selection, become active only by the realisation rooted method. This is the meaning of realisation collective. Driving the human body by realisation-rooted method itself evidences innateness in oneself, and participation in the overall system. Every human being desires orderliness. For such orderliness, it is very essential that the human tradition itself is awakened with evidence of awakening. On this course, every human being is evidenced or appraised only as a combined form of jeevan and body, in the form of an alive person.

शरीर में जीवन्तता अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों का क्रियाकलाप पूर्णतया जीवन का ही वैभव होना देखा गया, जीवन ही अस्तित्व में अनुभूत होना देखा गया है। अनुभवमूलक क्रम में जागृत जीवन क्रियाकलाप स्वाभाविक होना समझा गया। जलवायु, वन सहित जो धरती का शक्ल बिगड़ चुका है, जिसे विज्ञान जगत के मेधावी प्रतिभाएँ भले प्रकार से समझ चुके हैं। अनुभवमूलक पद्धति, प्रणाली, नीति को मानव परंपरा में अपनाना ही होगा, तभी धरती के ऐश्वर्य सहित मुद्रा-भंगिमाएं सुधरने की अर्थात् धरती अपने समृद्धि सहित यथा स्थिति को बनाए रखने योग्य पुन: हो पायेगी । मानव सहज सुधार और उसकी यथा स्थिति का प्रमाण अनुभवमूलक प्रणाली है । भ्रम का तात्पर्य ही बिगड़ा रहना है । मानव कुल ही कर्म स्वतंत्रतावश सम्पूर्ण गलती-अपराध करने के लिये विवश हुआ है । जैसे स्वनाश सहित धरती के नाश को निमंत्रित करने का एकमात्र इकाई मानव ही है ।

Aliveness in the body, or activities of the sensory organs, is entirely the grandeur of jeevan. It has been understood that it is the jeevan indeed which gets realisation in existence. It has been understood that activities of awakened jeevan are natural in a jeevan rooted in realisation. Talented persons in the scientific community have clearly understood the damage done to the environment and forests, and the harm done to Earth. Realisation-rooted procedure, processes & policies must be adapted in the human tradition to restore the opulence and grandeur of this earth. Improvement in humans, and its evidence, lies in the realisation-rooted method. Remaining in the state of no improvement denotes delusion. It is because of their freewill that humans have done all the mistakes & crimes under delusion. For example, humans are solely responsible for ruining the Earth as well as themselves.

मानव के अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रकृति में इस प्रकार का कोई उद्यम करता हुआ दिखता नहीं साथ ही मानव के अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रकृति अपने-अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था सहित वैभवित होना दिखता है । इसी साक्ष्य के आधार पर मानव अपने कर्म-स्वतंत्रता कल्पनाशीलता का विवेक सहित उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता को जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना एक अनिवार्यता बन चुका है । इसका मतलब यही है मानव सुधर के ही रहे अन्यथा मानव सहित जीव और वन-वनस्पति संसार संप्राणित जीवित रहता हुआ इस धरती पर दिखेगा नहीं यही धरती का शक्ल बिगड़ने का विकराल परिणाम है ।

It is apparent that no other entity in nature except humans is making any such efforts. Moreover, all entities of the rest of nature (except humans) are obviously in orderliness with their respective innateness and participation in overall orderliness. Thus, to know, believe, recognise & fulfil the use, right-use and purpose of their free will and imagination with wisdom - it has now become essential for humans. In other words, humans must mend their ways otherwise humans along with the animal order and plant order will disappear from the face of this planet. This will be the horrible outcome of ruining the Earth.

धरती के शक्ल को बिगाड़ने के लिये मानव का कर्म स्वतंत्रता का दुरूपयोग ही मूल कारण है । **‘‘जो जिसको अपव्यय करेगा उससे वह वंचित हो जायेगा’’** के सिद्धान्त के अनुसार धरती का अपव्ययतावश ही मानव में, से, के लिये इस सौभाग्यशाली धरती से वंचित होने का कारण बन चुका है। इसलिए आवश्यकीय सम्पूर्ण परिवर्तन अर्थात् अनुभव और जागृति सहज सम्पूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिपेक्ष्य और देश-काल में परंपरा के रूप में अनुभव मूलक विधि को अपना लेना ही सुख-सुन्दर-समाधानपूर्ण होगा । इसके लिए जागृतिपूर्ण मानव परंपरा ही एकमात्र उपाय है । जागृति सहज अधिकार सर्वमानव में, से, के लिये समान होना देखा गया है । इसके मूल में जीवन में देखा गया प्रत्येक जीवन रचना, शक्ति, बल और लक्ष्य समान है । इसे भले प्रकार से समझा गया है ।

Misuse of the freewill in humans is the main reason for their ruining the Earth. **“One will lose what one wastes”** - based on this principle, humans are the main factor in getting deprived of this beautiful planet due to wasting its resources. Therefore, to embrace all the necessary changes, i.e., all the dimensions, directions, angles and areas of realisation & awakening, and to embrace the realisation-rooted method in the form of human tradition, will indeed be the desirable, noble & correct thing to do. Fully-awakened human tradition is the only recourse available for this. It has been observed that the right to awakening is the same in, by & for all humans. At the root of this is the fact that the constitution, power, strength and goal in every jeevan is the same. It has been well-understood.

**‘‘भ्रम ही बंधन है एवं बंधन मुक्ति ही जीवन जागृति है ।’’** जीवन जागृति के लिये ही हर मानव आतुर-कातुर और आकुल-व्याकुल रहता है । अनुभव पूर्वक ही मानवापेक्षा-जीवनापेक्षा सफल होना देखा गया है । भ्रम बन्धन वश ही संग्रह सुविधा जैसी वितृष्णा में भटकना और शरीर यात्रा के अनन्तर स्वर्ग और मोक्ष के आश्वासन से ग्रसित रहना देखा गया है । इन दोनों स्थितियों में मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा प्रमाणित नहीं हो पाता है । देखा हुआ तथ्य यही है कि जीवनापेक्षा सफल होने की स्थिति में मानवापेक्षा और मानवापेक्षा सफल होने की स्थिति में जीवन-अपेक्षा सफल होता है । इस प्रकार जीवन और मानव अपेक्षा का संतुलन बिन्दु समझ में आया है । इन्हीं यथार्थता वश अनुभव मूलक विधि को मानव परंपरा अपनाना एक आवश्यकता है । इसलिये प्रस्ताव के रूप में यह ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ मानव के कर कमलों में अर्पित है ।

**“Delusion itself is bondage, and liberation from bondage itself is awakening”**. Every human is impatient & impetuous, and restless & anxious only for the awakening of jeevan. It is only by way of awakening that human-expectation and jeevan-expectation is fulfilled. It has been observed that only under the bondage of delusion, humans suffer and wander aimlessly while obsessed by accumulation & comforts during their lifetimes, and by assurances of heaven & moksha after death. In both these situations, human-expectation and jeevan-expectation is not evidenced. It is a verified fact that human-expectation is fulfilled when jeevan-expectation is fulfilled, and jeevan-expectation is fulfilled when human-expectation is fulfilled. In this manner, the equilibrium of human-expectation and jeevan-expectation becomes clear. Due to these facts, it is essential in human tradition to adapt the realisation-rooted method. Therefore, as a proposal, this book ‘Realisation Centred Spiritualism’ is offered to humankind.

**Chapter 3**

**अनुभव सहज प्रामाणिकता सर्व मानव में, से, के लिए समान है**

**Authenticity of realisation is same in, by & for all human beings**

इस ग्रन्थ के पूर्व के अध्यायों में इस तथ्य और घटना को स्पष्ट किया है कि मानव का जब से इस धरती पर उदय हुआ है तब से बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक व्यक्ति के रूप में, परिवार के रूप में, समुदायों के रूप में जो कुछ भी कर पाया, सोच पाया जिसके फलस्वरूप जो परिणाम आज की स्थिति में देखने को मिल रहा है उसे विविध प्रकार से हृदयंगम कराया गया है वह - (1) जो कुछ भी सोच पाया जिसको अधिकांश लोग अथवा समुदाय के अधिकांश लोग मान्यतापूर्वक आस्था रखते रहे हैं । वह रहस्यमय अध्यात्मवादी विचार, रहस्यमयी अधिदैवीय विचार और रहस्यमयी अधिभौतिक विचार बनाम आदर्शवाद एवं (2) अस्थिरता-अनिश्चयतामूलक वस्तुवाद बनाम भौतिकवाद है।

It has been emphasised in the previous chapters of this book (scripture) that since the appearance of humans on Earth until now, i.e., the last decade of the twentieth century, whatever humans could do and think as individuals, as families and as sects, and the apparent results and outcomes thereof, has been variously brought out and engrained as (1) whatever humans could think, and which was faithfully believed by the majority, or the majority of a sect, is mystery-based spiritual, mystery-based polytheism and mystery-based metaphysical thoughts, collectively called idealism, and (2) instability uncertainty based worldview, or materialism.

इस प्रकार भय, प्रलोभन, आस्थावादी विचारों के साथ ही मानव कुल अपना गति बनाये रखने में अभ्यास करता रहा । पहले विचार के मूल प्रतिपादन में ईश्वर से सब पैदा होता है । इसमें प्रमुख तथ्य आँखों में दिखने वाली वस्तुओं को माया कहा गया । दूसरे विचार के अनुसार ईश्वरीयता गौण हो गया, वस्तु प्रधान हो गया । वस्तुवादी मूल प्रतिपादन में वस्तु से चेतना पैदा होने की बात कही । उसका सूत्र रचना के साथ जोड़ा गया । रचना के अनुसार चेतना पैदा होने की बात कही । यही भौतिकवाद का मूल प्रतिपादन है ।

In this manner, humankind kept on managing its affairs with the thoughts of fear, temptation and faith. Basic postulation in the first thought is that God creates everything. The main point here is that all the physical world which can be seen with eyes, is categorised as illusion. In the second thought, God becomes secondary and matter becomes primary; it is also postulated here that matter gives rise to consciousness. Consciousness is linked with the constitution of the entity. This is the basic postulation of materialism.

विविध रचनाएँ मानव के सम्मुख देखने को मिलता ही रहा । इसी के साथ-साथ शरीरवाही यानों वस्तुवाही वाहनों, शब्दवाही, दश्यवाही यंत्रों-उपकरणों को मानव के सम्मुख प्रस्तुत किया । इसके प्रति सामान्य लोगों की भी आस्था जुड़ी । इसलिये इस ओर सर्वाधिक लोगों का ध्यान गया, स्वीकारा गया । इसी के साथ-साथ उत्पादन कार्यों में सहायक यंत्रोपकरणों को निर्मित किया गया । रचना के आधार पर ही वस्तुएँ काम किया रहता है । सम्पूर्ण रचनाओं को यंत्र के रूप में पहचानने के लिये प्रयत्न किया, कोशिश किया । कुछ को स्वीकार पाये, कुछ को नहीं स्वीकार पाये । जहाँ तक पदार्थावस्था की रचनाएँ हैं उनके उपयोग से ही सर्वाधिक अथवा सम्पूर्ण यंत्र निर्मित होते आया । हर यंत्र ईंधन संयोग से चलता रहा । विज्ञान के कथन के अनुसार रचना के अनुसार काम करता है जबकि ईंधन संयोग के बिना कोई यंत्र काम नहीं किया । वनस्पति एवं शरीर को यंत्र रचना के रूप में मानते हुए अंततोगत्वा हड्डी के आधार पर सम्पूर्ण रचना, सम्पूर्ण जीव शरीर, सम्पूर्ण मानव शरीर को मानते हुए नृतत्व (मानव तत्व) को उन्हीं किसी हड्डी में होने के अन्दाज पर खोजते आ रहे हैं । इसी के साथ प्रयोग दर प्रयोग के परिणिति को अंतिम सत्यता मानते हुए अबाध गति से प्रयोगों को बुलंद किये रहते हैं ।

Humans naturally came across various compositions in the course of their living. Also, science presented means of transportation for people & goods, and machines & equipment for telecommunications. Most people noticed it, accepted it and developed faith in it. Side by side, machines & equipment useful in production work were also developed. Machines and equipment work exactly as per their constitution; on this basis, humans tried to recognise and analyse all creations and entities as machines. This approach worked in some cases, and in some cases it did not. Nearly all machines are made from compositions of material order, All machines need energy. As per science, a machine works as per its constitution although no machine has ever worked without fuel. While believing that plants and all animal & human bodies are also machines, scientists kept on looking for the human-element (consciousness) also only in flesh & bones. Assuming the results & outcomes of the experiments already conducted to be the ultimate truth, the scientists keep on doing more and more experiments in the same direction, in an unrestrained manner.

इन दोनों की समीक्षा यही है कि चेतना से पदार्थ और पदार्थ से चेतना इस दशक तक प्रमाणित नहीं हुआ । भक्ति-विरक्ति प्रयोगों का अबाध गति, इन दोनों क्रम में सत्य सहज सुलभ होने का कोई मार्ग प्रशस्त नहीं हुआ । वस्तुवादी, यंत्रों को प्रमाण मानते हैं; आदर्शवादी, आदर्श व्यक्तियों को प्रमाण मानते आये है । आदर्श व्यक्तियों के पहचान का पृष्ठभूमि भक्ति-विरक्ति ही है । यंत्र प्रमाण मानने की पृष्ठभूमि प्रयोगशाला ही है - वह भी स्वयं यंत्रोपकरण ही है । आदर्श व्यक्तियों को ‘आप्त पुरूष’ नाम दिया है उनके वचनों को प्रमाण माना गया है । जबकि वस्तुवादी विधि से पारंगत यंत्रों को प्रमाण माना, प्रयोगों नियमों को प्रमाण माना और आदर्शवादियों ने व्यक्ति का सम्मान किया ।

Brief critique of both the thoughts is that consciousness from matter, and matter from consciousness, is yet to be evidenced. Devotion & renunciation on one side, and unabated scientific experiments on the other - yet, the truth has been eluding humankind in both these thoughts. Materialists believe that instruments are the evidence; idealists continue to believe that ideal persons are the evidence. Criteria of recognising ideal persons is devotion & renunciation itself. Criteria of assuming that instruments are the evidence, is the laboratory - which itself is instruments and equipment. Ideal persons are named ‘learned persons’, and their words are considered to be the evidence. On the other hand, materialism assumed instruments, experiments and laws to be the evidence; while idealism looked up to individual human beings.

इन दोनों प्रकार के मानव बहुसंख्या में इस धरती पर प्रसिद्ध हुए हैं। प्रसिद्ध होने का तात्पर्य है बहुत सारे लोगों को ज्ञात हुआ है । अभी भी दोनों विधा से ख्यात व्यक्ति इस दशक में भी देखने को मिलते हैं । इसी शताब्दी के अर्ध शतक से देखते भी आये हैं ।

Persons belonging to both the thoughts have become famous in large numbers on this planet. Famous means, large number of people came to know about them. Even today, in this last decade of the twentieth century, there are famous persons in both fields. I have observed this since the middle of this century.

इन्हीं दो प्रकार से बताए गये मनीषीयों के प्रेरणा से ही इस धरती के सभी सामान्य लोग कार्य-व्यवहार-विचार करते आये हैं । इसका परिणाम आज की स्थिति में अर्थात् बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक में मानव-मानव के साथ संघर्षशील, प्रदूषण रूपी विकृत पर्यावरण वश पीड़ा, संकट रोग, बढ़ती हुई जनसंख्या, बेरोजगारी, अनानुपाती सुविधा-संग्रह का होना, हर दिन कल के लिए अधिक मुद्रा की आवश्यकता, स्त्रोत की क्षीणता, धरती का शक्ल बिगाड़ना, पानी का संकट, सामान्य सुविधाएं सर्व देश सभी लोगों के लिए सुलभ नहीं हो पाना, शोषण का अनुपात बढ़ते जाना, मानव-मानव का शोषण प्राकृतिक संपदाओं का शोषण, बिगड़ा हुआ पर्यावरण और बिगड़ने की संभावना बढ़ते जा रही है । फलस्वरूप विविध प्रकार से सभी लोग कुण्ठाग्रसित रहते हैं ।

Common people on Earth have been working, behaving and thinking as per the inspirations of the learned persons from both these fields. However, it can be seen (in the last decade of the twentieth century) that human-human conflict, suffering due to pollution, menacing diseases, rising population, unemployment, disproportionate luxury-accumulation, inflation, resource depletion, soil erosion, water scarcity, poverty, increasing exploitation of humans and natural resources, degrading environment - all these are on the rise. As a result, all the people remain frustrated due to one reason or the other.

शिक्षा की विडम्बना यही है कि विज्ञान विधा से विशेषज्ञता से प्रभावित है । विशेषज्ञता किसी विधा के किसी अंश में अपने को प्रतिष्ठित करने के प्रत्यत्नों में कार्यरत होना पाया जाता है । पुन: उसका अंश और उसके अंश के रूप में प्रयासों का उदय देखने को मिल रहा है । फलस्वरूप विशेषज्ञता प्रयोजन विहीन काला-दीवाल के सम्मुख सभी विधाओं में आ चुके हैं । जैसे - मात्रा विज्ञान अस्थिरता-अनिश्चयता के काला दीवाल के सम्मुख है । इसके विशेषज्ञ अपना मूल्यांकन कराने में निरीह देखा गया है । दूसरा वंशानुषंगीय विज्ञान यह मानव को अध्ययन कराने में विश्लेषित करने में सर्वथा असमर्थ होकर काला-दीवाल के सम्मुख होना देखा गया ।

It is ironic that education is influenced by the science discipline and specialisation. Specialisation is observed to be in the form of efforts to gain expertise in some part of a discipline. Efforts for its further divisions and subdivisions are apparently on the rise. As a result, specialisation has come to a purposeless dead end in all disciplines. For example, quantum mechanics is facing the dead end of instability-uncertainty. Its specialists are seemingly helpless in getting themselves evaluated. Similarly, the laws of heredity have been completely inadequate in studying human beings, and reached a dead end.

तीसरा सापेक्षवाद अपने कल्पना को अज्ञात घटना के साथ वर्णित करने के रूप में विशेषज्ञों को देखा गया है । इन तीनों विधा के लिये अथवा इन विधाओं को पहचानने के लिये ऊर्जा की आवश्यकता को विज्ञान संसार में स्वीकारा गया है । यह अपने से गति ऊर्जा कहना आरम्भ करते हैं यथा चुम्बकीय धारा को विद्युत गति के रूप में परिणत करना इस गति को और गति विधा में चलकर तरंग का नाम लेते हैं । ऐसी तरंग वस्तु है या अवस्तु है इस तथ्य को उद्घाटित करने के लिये अभी भी प्रयोग करते जा रहे हैं । जो प्रयोग परिणीतियाँ आती है उसे अंतिम सत्य नहीं मानते हुए प्रयोगों के लिए मार्ग प्रशस्त किये रहते हैं । इस विधा में अनिश्चयता बनी ही है - वस्तु है या अवस्तु है।

As a third example, it is observed that specialists of the theory of relativity are using their imagination to explain the phenomenon not completely understood so far. The need for energy in all these three disciplines has been accepted by science. They start their discussion with kinetic energy; for example, conversion of magnetic field into electric current, which may be used as work energy. And then somewhere they start talking about waves. Experiments are still being conducted to conclude whether to categorise these waves as made of up particles or not. Results of such experiments are yet to be accepted as the final truth, but the results of such experiments pave the way for further experiments. Uncertainty still looms regarding whether waves are made up of particles or not.

*(From internet: The wave-particle duality is an important concept in quantum mechanics which describes that every particle, or more specifically, the quantum entity may be expressed as either a particle or a wave. This concept further helps to modify the inability of the classical mechanic’s approach or theories to fully describe the behaviour of the matter.)*

इसी अनिश्चयता के स्थिति पर मानव अपने को समझा हूँ, नहीं समझा हँ इस बात को लेकर कुंठित हो चुके हैं । इन्हीं सिद्धांतों के शाखा-प्रशाखा होने के कारण और अलग-अलग से समीक्षीत करने की आवश्यकता नहीं है । अतएव विज्ञान संसार में लगे हुए जितने भी मानव हैं वे अपने को समझदार सत्यापित करने में असमर्थ हैं क्योंकि विशेषज्ञता का चक्कर विचार के शुरुआत से काला दीवाल तक चलता है । दूसरी ओर शिक्षा के कला पक्ष के विशेषज्ञ कहलाने वाले, विविध समुदाय में पनपी हुई रुढ़ी-आदतों को शादी-विवाह, नाच-गाना, उत्सवों को मनाने के तरीकों को संस्कृति मानते हुए समाजशास्त्र के नाम से पढ़ाया करते हैं । वे विशेषज्ञ जिसको पढ़ाते हैं उसमें विश्वास नहीं रखते हैं । उससे भिन्न रुढ़ी, भिन्न आदतों के साथ भिन्न मानसिकता को बनाए रखते हुए दिखते हैं । अंतिम बात वर्तमान समाज एक संघर्षशील मानव समुदाय है । संघर्ष का आधार व्यक्ति-व्यक्ति में मानसिक मतभेद रूढ़ी-रूढ़ी के बीच आलोचना, नशा-पानी, नाच-गाने में विविधता, प्रतिस्पर्धा के रूप में होना देखा गया है ।

In all this uncertainty, humans are baffled and frustrated on the question - whether we have understood ourselves or not? As all the theories are divisions and subdivisions of the main disciplines, there is no need to present a critique individually for each of them. Noone in the field of science is able to give evidence of their understanding because the overwhelming importance to specialisation starts in thoughts and takes them to a dead end. On the other hand, the so-called experts of humanities in education teach rituals & customs of marriages, singing & dancing, festival celebrations in the name of sociology, assuming these to be culture. Whatever these experts teach, they themselves don’t believe in that. They themselves follow different rituals & customs, and have different mindsets too. Finally, the present human society is in the form of conflicting sects. At its roots, conflicts are seen in the form of mutually contradictory mindsets among humans, criticism of each others’ customs & rituals, eating & drinking habits, diversity in dance & songs, and competitions.

इसी प्रकार खेल-कूद, भाषण-प्रतियोगिताएँ-प्रतिस्पर्धा के आधार पर पहचानने की पंरपरा अभी तक है । प्रतिस्पर्धाएँ विरोध, द्वेष जैसी संकटों को झेलता हुआ घटना होना देखा गया है । धर्म और राज्य में संघर्ष है ही और यह भी कलात्मक शिक्षा प्रणाली पद्धत्ति में गण्य है । इसका समीक्षा यही है विज्ञान विधा से यंत्र प्रमाण के आधार पर अनिश्चियता-अस्थिरता का काला-दीवाल और कलात्मक शिक्षा-विधा से विरोध, विद्रोह-द्वेष जैसी अवांछनीय काला-दीवालें अथवा स्वीकृतियाँ मानव परंपरा को भ्रमित करने का आधार सूत्र के रूप में बनी । सारे लोग प्रयत्न करते हुए सही मार्ग प्रशस्त नहीं हुआ । अतएव अनुभव मूलक व्यवहार प्रमाण प्रस्ताव का अनिवार्यता बना ही रहा । इसलिये अभी प्रस्तावित होकर मानव स्वीकृत होना संभव हो गया ।

In a similar manner, the tradition of recognising humans based on sports & debate competitions-contests still prevails. It is seen that competitions have to go through the problems of rivalry and jealousy. Friction has always existed in religion and state, and it is included in the discipline of humanities in education. The overall critique is : instability & uncertainty based on the evidence of instruments in the discipline of science, and protests, revolts & jealousy in the discipline of humanities in education - all these undesirable dead-ends and conclusions are deep-rooted in the deluded human tradition. In spite of the untiring efforts of many learned people, the right path is still elusive. Thus, the necessity of a proposal for realisation-rooted evidence of behaviour was always there; and now that such a proposal is available to humankind, there is a good possibility of its acceptance.

यह प्रस्ताव मूलत: समानता के आधार पर प्रस्तुत है । समानता, निश्चयता और स्थिरता का प्रमाण है ।

This proposal is primarily based on equality. Equality is the evidence of certainty and stability.

स्थिरता और निश्चयता का स्वरूपों को अध्ययन करने के लिये

1. अस्तित्व
2. परमाणु में विकास
3. परमाणु ही व्यवस्था का आधार
4. सह-अस्तित्व में व्यवस्था
5. व्यवस्था सूत्र (‘‘त्व’’ सहित व्यवस्था)
6. पूरकता-उदात्तीकरण, रचना-विरचना
7. पूरकता-उदात्तीकरण और संक्रमण
8. परमाणु ही गठनपूर्णतापूर्वक जीवन पद (चैतन्य पद) में वैभवित होना
9. जीवन में जीवनी क्रम
10. बंधन सहित जीवन का कार्यक्रम और जागृतिक्रम
11. जीवन ही जागृति पूर्वक क्रियापूर्णता में संक्रमण
12. जीवन ही जागृतिपूर्णता पूर्वक आचरण पूर्णता में संक्रमण, प्रधान बिन्दु है ।

Main points for the study of true form of stability and certainty are

1. Existence
2. Development in atom
3. Atom itself is the basis of orderliness
4. Orderliness in coexistence
5. Maxims of orderliness (orderliness with innateness)
6. Complementariness & evolution, composition & decomposition
7. Complementariness & evolution, and transcendence
8. Establishment and grandeur of atom in jeevan-plane (conscious plane) due to constitution-completeness
9. Living-world progression in jeevan
10. Program of jeevan having bondages, and awakening-progression
11. Transcendence of jeevan to activity-completeness is solely based on awakening
12. Transcendence of jeevan to conduct-completeness is solely based on awakening-completeness.

इसमें से कोई भी बिन्दु यंत्र प्रमाण से प्रमाणित नहीं हो पाती जबकि हर मानव इसको समझ सकता है और व्यवहार में प्रमाणित कर सकता है । आदर्शवाद जिसका आधार आप्त पुरुषों के वचन हैं के आधार पर भी ये बारह बिन्दुओं में से कोई भी बिन्दु अध्ययन, बोध और प्रमाणगम्य नहीं हो पाते ।

None of these points can be proven by instruments although these can be understood and evidenced in behaviour by anyone. In idealism too, whose foundation lies in the words of the learned persons, none of these twelve points is studiable, understandable and proveable.

इसलिये अनुभव मूलक जागृतिपूर्ण विधि से सभी दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्य, आयामों में व्यवहार प्रमाण मानव कुल में अति आवश्यक है । अनुभव व्यवहार में प्रमाणित होना अपरिहार्य है और हर प्रयोग व्यवहार में सार्थक होना उतना ही अनिवार्य है । इस प्रकार अनुभव मूलक जागृति विधि पूर्ण प्रमाण सूत्रों पर आधारित विचारों और विचार सूत्रों पर आधारित संप्रेषणा और वांग्मय शैलियों से इंगित ‘वस्तु’ के रूप में अर्थों-प्रयोजनों के सार्थकता के रूप में व्यवहार, उत्पादन, व्यवहार-न्याय, व्यवहार और न्यायिक विनिमय, व्यवहारिक स्वास्थ्य-संयम और व्यवहारिक शिक्षा-संस्कार परंपरा की आवश्यकता है । और उसकी आपूर्ति ही स्वाभाविक रूप में अग्रिम पीढ़ियों के सहस्त्राबदियों तक इस धरती पर मानव परंपरा सहज वैभव और उसकी सार्थकता रूपी जागृति और व्यवस्था को प्रमाणित कर सकते हैं । यह हर व्यक्ति के लिये सहज सुलभ हो सकता है । सार्थक रूप में जीने की कला अर्थात् जीने की हर तरीकों का जागृतिसूत्र के अनुरूप मूल्यांकित होना संभव है। हर मानव में जागृति और मानवत्व प्रमाणित होने का अनुमान विद्यमान है ही।

Therefore the evidence of behaviour in all directions, angles, areas & dimensions is of utmost importance for humankind by way of realisation-rooted method, or the method of awakening. Evidence of realisation is inevitable in behaviour, and it is equally important that every experiment is meaningful in behaviour. In this manner, thoughts based on the realisation-rooted method or the method of awakening, communication based on such thoughts, and realities indicated by such communication in the form of scriptures & literature, for actualising the meanings & purpose of these realities in humane behaviour, production, justice, exchange, health-discipline and education-sanskar - tradition of all this is needed. This achievement indeed will naturally ensure, and give evidence of, the grandeur of human tradition, awakening and harmony on Earth from generation to generation, for millennia to come. This can be naturally accessible to all human beings. Evaluation of all aspects of human living, or of meaningful living, is possible with reference to the maxims of awakening. A sense of evidence of awakening and humaneness is, in any case, present in every human being.

मानवत्व के रूप में प्रमाणित होने के लिये मानवीयतापूर्ण स्वभाव यथा धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा सहज विधि से पुत्रेषणा, वित्तेषणा और लोकेषणा और जागृतिपूर्वक प्रमाणित होने में प्रवृत्ति सहित न्याय, धर्म, सत्य को प्रामाणिकता के रूप में प्रस्तुत करना/होना ही, मानवीयतापूर्ण मानव का स्वरूप है । **दूसरे विधि** से स्वायत्त मानव, परिवार मानव और अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करता हुआ स्थिति में, गति में, मानवीयता का वैभव अखण्ड, सार्वभौम, अक्षुण्ण प्रतिष्ठा के रूप में देखने को मिलता है। **तीसरे विधि** में मानवीयतापूर्ण मानव मानव का परिभाषा-सहज सार्थकता को प्रमाणित करने वाला है । यह समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व के रूप में प्रमाणित करना होता है क्योंकि मानव का परिभाषा ‘‘मनाकार को साकार करने वाला मन:स्वस्थता का आशावादी और इसे प्रमाणित करने वाला है।’’ इसीलिये व्यवहार में सामाजिक, फलत: सर्वतोमुखी समाधान, व्यवसाय में स्वावलंबन जिसका प्रमाण परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन से समृद्धि होना पाया जाता है। इस प्रकार हर परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक प्रमाणित होना मानवत्व का प्रमाण है। इसी विधि से हर परिवार का जीना ही इसका लोकव्यापीकरण है । यही अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था है ।

To be the evidence of humaneness, the desire-trio (progeny-desire, wealth-desire & and reputation-desire) by way of humane nature (fortitude, courage, generosity, kindness, grace, compassion), and propensity to be & present the evidence of justice, dharma & truth by way of awakening, along with authenticity - this indeed is the true form of a humane-human. **In another way**, a humane-human is an autonomous person, a family person, participating in the indivisible society, universal system wherein the grandeur of humaneness is observed to be firmly, universally and continuously established. **In yet another way**, a humane-human is the one who produces evidence as per the definition of human being. This evidence is in the form of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence because the definition of human being is “One who materialises ideas and aspires for mental well-being, and evidences it”. Such human beings are sociable in behaviour, and accomplished in comprehensive resolution and self-reliant in occupation whose evidence is prosperity in the form of producing more than the needs of the family. In this way, resolution and prosperity in each family is the evidence of humaneness. Every family living in this manner itself is its dissemination. This itself is the indivisible society and universal system.

‘मानवत्व’ सर्वमानव में, सर्वदेश में, सर्वकाल में वांछित प्रज्ञा, विचार, प्रबोधन, संबोधन, आचरण, व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी है ।

Humaneness is the participation in the sagacity, thoughts, teaching, mentoring, conduct, behaviour & systems desired by all human beings, at all places, at all times.

प्रज्ञा का सार्थक स्वरूप ‘जीवन ज्ञान’, ‘अस्तित्व दर्शन ज्ञान’ का संयुक्त रूप है । जीवन सहज ज्ञान सह-अस्तित्व सहज अस्तित्व में ही होना पाया गया है क्योंकि व्यापक सत्ता में संपृक्त अनंत प्रकृति सह-अस्तित्व के रूप में नित्य वर्तमान है। सत्ता स्वयं व्यापक, पारदर्शी, पारगामी, स्थिति पूर्ण होने के कारण इनमें गति दबाव न होते हुए नित्य वैभव होना दिखाई पड़ता है । हर दो इकाई के मध्य में, परस्परता में, सभी ओर में सत्ता दिखाई पड़ता है । वस्तु विहीन हर स्थली सत्तामय स्वरूप ही है । इसी नित्य साक्ष्य के आधार पर हर वस्तु सत्ता में ही होना सुस्पष्ट है । सत्ता में होने के आधार पर हर वस्तु सत्ता में डूबा, भीगा, घिरा दिखाई पड़ता है । ऐसे दिखने वाली वस्तु में स्वयं स्फूर्त विधि से क्रियाशीलता वर्तमान है यह क्रियाशीलता गति, दबाव, प्रभाव के रूप में देखने को मिलता है । दूसरे विधि से सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही स्थिति-गति, परस्परता में दबाव, तरंगपूर्वक आदान-प्रदान सहज विधि से पूरकता, उदात्तीकरण, रचना-विरचना के रूप में होना देखने को मिलता है। और परमाणु में विकास, परमाणु में गठन पूर्णता, चैतन्य पद में संक्रमण जीवन पद प्रतिष्ठा का होना देखा गया है । इस प्रकार जीवन पद और जीवन व रासायनिक-भौतिक पदों के लिये परमाणु ही मूल तत्व होना समझ में आता है ।

Sagacity (*pragya*) denotes the combined form of ‘knowledge of jeevan’ and ‘knowledge of holistic view of existence’. As coexistence is in the form of the ever-presence of all the nature saturated in the omnipresent Omnipotence, knowledge of jeevan has also been observed to exist in coexistence itself. The eternal grandeur of Omnipotence is observed as omnipresent, transparent, permeating and the absolute state, and having no motion and pressure. Omnipotence is observed to be between any two units, in their mutuality, and all around them. All places devoid of matter are nothing but Omnipotence. Based on this continuous evidence, it is absolutely clear that all realities are indeed in Omnipotence. On this basis, all realities are observed to be submerged, soaked and surrounded in Omnipotence. Activeness is always present in all such realities spontaneously, and this activeness is observed to be in the form of motion, pressure & effect. In other words, it is the nature soaked in Omnipotence which is observable as complementariness, evolution, and composition & decomposition, by way of give & take in the form of state & motion, pressure in mutuality, and waves. Evolution in the atom, constitution-fullness in the atom, transcendence to the conscious-plane being the establishment of the jeevan-plane, has also been observed. In this manner, the atom itself is understood to be the fundamental-unit for jeevan or jeevan-plane, as well as for physico-chemical planes.

सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति में व्यवस्था के मूल तत्व के रूप में परमाणु को देखा जाता है । जबकि अस्तित्व ही सम्पूर्ण अभिव्यक्ति या प्रकटन है । यहाँ मूलत: यह तथ्य ध्यान में रहना आवश्यक है कि सत्ता में संपृक्त प्रकृति अविभाज्य है । यह अविभाज्यता निरंतर है । इसीलिये सत्ता में संपृक्त प्रकृति नित्य वर्तमान ही है । अस्तित्व स्वयं भाग-विभाग नहीं होता है इसीलिये अस्तित्व अखंड अक्षत होना समझ में आता है । प्रमुख अनुभव यही है कि सत्ता में संपृक्त प्रकृति अनन्त रूप में दिखाई पड़ती है ये सब भाग-विभाग के रूप में ही सत्ता में दिखाई पड़ती हैं । इसे सटीक इस प्रकार देखा गया है व्यवस्था का भाग-विभाग होता नहीं । अस्तित्व ही व्यवस्था का स्वरूप है ।

The atom is observed to be the fundamental unit of orderliness in insentient and sentient nature soaked in Omnipotence whereas the existence itself is completely non-mysterious and manifest. Here, inseparability of all nature in Omnipotence needs to be kept in mind. This inseparability is perpetual. Thus, nature saturated in Omnipotence is eternally present. Existence doesn’t get divided into parts and divisions, therefore existence is understood to be indivisible and indestructible. Main point of realisation here is that nature saturated in Omnipotence is observed as uncountable, and this is nature itself which is seen in parts and divisions (and not the existence). It has been observed accurately that orderliness doesn’t get divided or partitioned. Existence itself manifests as orderliness.

आदिकाल से अभी तक के अथक प्रयास से भाग-विभाग को लेकर जितने भी अनुसंधान, प्रयोग और अनुमान किये हैं उन सब का समीक्षा इतना ही है कि किसी एक वस्तु को विखण्डन पूर्वक तिरोभाव किया नहीं जा सकता। यह गणित विधि से भी सुस्पष्ट है। गणितीय विधि से ही विखण्डन अनेक होने की क्रिया है।

From ancient times till now, all the research, experiments and conjectures regarding partitioning and divisions can be summarised as - nothing can be annihilated by progressive fragmentation. This is evident mathematically too, where the process of fragmentation of one to many is explained.

मूलभाव बनाम अस्तित्व नित्य वर्तमान ही है । अस्तित्व स्वयं में व्यवस्था सहज स्वरूप में होने के कारण और व्यवस्था ही नित्य भाव होना स्पष्ट है, शाश्वत् है । यही प्रधान-मुद्दा है। इसे हर मानव समझना चाहता है और हम समझा सकते हैं । अस्तित्व ही वर्तमान सहज होने के कारण जीवन सहज रूप में हर मानव अस्तित्व को स्वीकारा ही रहता है बनाम व्यवस्था को स्वीकारा ही रहता है । इस संक्षेप विधि से ही अस्तित्व सहज स्वीकृति सर्वेक्षित होता है और सत्यापनवादी सर्वेक्षण विधि से हर मानव व्यवस्था को वरना पाया गया है । साथ ही इस दशक में शरीर यात्रा करता हुआ मानव को यह पूछने पर कि आप क्या व्यवस्था को जानते है ? उत्तर नकारात्मक मिलता है। अन्ततोगत्वा अनिश्चियता और अस्थिरता का जनमानस में समावेश होते ही आया है । अस्थिरता, अनिश्चितावश ही मानव आतुर-कातुर होना, सुविधा संग्रह के लिये और पीड़ित होना भी देखा गया है ।

Existence, the fundamental experience, is eternally present. As the existence is orderliness in itself, thus it is clear that orderliness is the eternal and perpetual experience. This is the main point. All humans want to understand this, and I can explain this. As the existence is extant, jeevan in all humans naturally accepts existence; in other words, naturally accepts orderliness. By this brief explanation, universal acceptance of existence can be understood; and by way of testimony and survey, it has been observed that every human being embraces orderliness. However, in today’s times, when we ask any person whether they understand what orderliness is, the answer is clearly in the negative. Eventually, uncertainty and instability got established in the popular mindset. It has also been observed that humans become impatient & impetuous, chase comforts & accumulation, and undergo suffering only due to instability & uncertainty,

अनुभव जीवन में होता है या शरीर में होता है यही मुख्य बिन्दु है- यह तथ्य विदित हो चुका है - जीवन ही शरीर को जीवन्त बनाए रखता है । जीवन्त शरीर ही जीवन से संचालित होता है । इसी तथ्य-पुष्टि के क्रम में शरीर अपने-आप में कैसा है ? कैसे रचित और विरचित होता है इसे मानव आदिकाल से देखते आ रहा है। मुख्य मुद्दा- परमाणु में विकास, पूरकता, गठनपूर्णता, संक्रमण इन तथ्यों को भले प्रकार से समझ चुके हैं । अतएव इसे समझना हर व्यक्ति के लिये आवश्यक है । चैतन्य प्रकृति, जड़ प्रकृति यह प्रकृति समुच्चय है। जड़ प्रकृति रासायनिक-भौतिक वस्तु व द्रव्यों से संरचित रहते हैं। यह रचना-विरचना का स्रोत यह धरती ही है। स्वयं धरती भी एक रचना है। इस धरती पर जब तक विकास दिखती रहती है तब तक इसके स्वस्थता में कोई शंका नहीं है। विकास और उसकी निरंतरता की व्यवस्था अस्तित्व सहज रूप में विद्यमान है। पदार्थावस्था और प्राणावस्था की सम्पूर्ण रचना-विरचनाएँ परिणाम और बीज के आधार पर परंपरा के रूप में तत्पर रहना देखा जाता है। इसी आधार पर हर मानव अस्तित्व में अनुभूत होने की सूत्र जुड़ी हुई हैं।

The main question is whether realisation happens in the jeevan, or in the body, of a human being. It has been discussed already that it is jeevan indeed which keeps the body alive. Only an alive body is driven by jeevan. Regarding the fact of what the human body is, and the process of its composition & decomposition, humans have been observing it since ages. The main points - development in atom, complementariness, constitution completeness & transcendence - have all been understood in detail. And it is essential for everyone to understand these. Sentient nature and the insentient nature, this is all that nature consists of. Insentient nature is composed of physico-chemical entities & elements. Earth is indeed the source of all composition and decomposition. Earth in itself is also a composition. As long as we see development on Earth, we have no doubts on its health. Provision of development and its continuity is naturally available in existence. All the compositions & decompositions of the material order and plants order are seen in the form of tradition, on the basis of their constitution (in material order) and seed (in plants order). Every human being becoming realised in existence, is linked to this basis.

मानव शरीर द्वारा जीवन सहज पूर्ण जागृति प्रमाणित होने की व्यवस्था, आवश्यकता अस्तित्व सहज रूप में ही निहित है क्योंकि अस्तित्व स्थिर है, विकास एवं जागृति निश्चित है । जागृति को प्रमाणित करना जीवनापेक्षा है। जागृति सुख, शांति, संतोष, आनन्द है । इसे भले प्रकार से देखा गया है । इसकी जीवन सहज निरंतरता होती है क्योंकि जीवन नित्य है । जीवन सहज जागृति अक्षुण्ण होना भावी है । ऐसी जागृति और जागृति की अक्षुण्णता की प्यास हर व्यक्ति में निहित है । अतएव जीवन जागृति प्रणाली को परंपरा में अपनाना एक अनिवार्यता हैं ।

The provision and need for awakening of jeevan, by means of the human body, is inherent in existence because existence is stable, and development & awakening is certain. To evidence awakening is a jeevan expectation. Awakening is happiness, peace, contentment & bliss. It has been verified thoroughly. There is its natural continuity in jeevan because jeevan is eternal. Thus, the awakening of jeevan is, and will always be, also continuous. Thirst for such awakening and its continuity is inherent in all human beings. Therefore, it is essential to include the process of jeevan awakening in human tradition.

जीवन अपने में अनुभव, बोध, चिन्तन (साक्षात्कार) सहित ही किया गया चित्रण, विश्लेषण, तुलन, चयन और आस्वादन स्वाभाविक रूप में न्यायिक समाधानपूर्ण और प्रामाणिकता सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन सहज कार्य-व्यवहार होना देखा गया है । यही ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ की आवश्यकता, उपयोगिता, सदुपयोगिता और प्रयोजनीयता को पहचानने और व्यक्त होने का आधार हुआ ।

Jeevan in itself has been observed to be visualisation, analysis, deliberation, selection & taste activities done along with realisation, enlightenment & contemplation (direct perception), all this naturally leads to expression, communication & exposition of justice, resolution & authenticity, and work & behaviour consistent with this. This indeed became the basis of identifying and expounding the need, utilisation, righteous utilisation and purposefulness of ‘Realisation Centred Spiritualism’.

मूलत: इस अनुसंधान के मूल में रूढ़ियों के प्रति अविश्वास, कट्टरपंथ के प्रति अविश्वास रहा है । सार रूप में वेदान्त रूप में ‘‘मोक्ष और बंधन’’ पर जो कुछ भी वांग्मय उपलब्ध है इस पर हुई शंका । परिणामत: निदिध्यासन, समाधि, मनोनिरोध, दृष्टाविधि के लिये जो कुछ भी उपदेश है उसी के आधार पर प्रयत्न और अभ्यास किया गया । निर्विचार स्थिति को प्राप्त करने के बाद परंपरा जिसको समाधि, निदिध्यासन, पूर्णबोध निर्वाण कुछ भी नाम लिया है, इसी स्थली में मूल शंका का उत्तर नहीं मिल पाया । परिणामत: इसके विकल्प के लिये तत्पर हुए । पूर्वावर्ती इशारों के अनुसार ‘संयम’ का एक ध्वनि थी । उस ध्वनि को संयम में तत्परता को बनाया गया । आकाश (शून्य) में संयम किया । निर्विचार स्थिति में अस्तित्व स्वीकार/बोध सहित सभी ओर वस्तु सब आकाश में समायी हुई वस्तु दिखती रही इसलिये आकाश में संयम करने की तत्परता बनी। कुछ समय के उपरान्त ही अस्तित्व सह-अस्तित्व रूप में यथावत् देखने को मिला । अस्तित्व में ही ‘जीवन’ को देखा गया । अस्तित्व में अनुभूत होकर जागृत हुए । ऐसे अनुभव के पश्चात् अस्तित्व सहज विधि से ही हर व्यक्ति अनुभव योग्य होना देखा गया । अनुभव करने वाले वस्तु को ‘जीवन’ रूप में देखा गया । इसी आधार पर ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ को प्रस्तुत करने में सत्य सहज प्रवृत्ति उद्गमित हुई । यह मानव सम्मुख प्रस्तुत है ।

At the root of this exploration, there has been a lack of trust towards dogmas and towards fanaticism. Also, briefly speaking, doubts arose on whatever literature is available in *vedanta* on “*moksha* and bondage”. As a result, effort & practice was done based on whatever sermons are available for *nididhyasan* (unlocking the shackles of ignorance), *samadhi*, *manonirodh* (control on mind) and *drishtavidhi* (the method of perceiving & observing). Even after achieving the state of thoughtlessness, answers to the fundamental questions were not available in that state (which has been variously called *samadhi*, *nididhyasan,* complete enlightenment, *nirvaana, etc*). This was the motivation to seek alternatives. ‘*Sanyam*’ was one such alternative which has been formerly indicated, and was adapted. *Sanyam* was done in space (emptiness). In the state of thoughtlessness, along with the acceptance or enlightenment of the existence, all realities were seen to be ceaselessly immersed in space which prompted (me) to do *sanyam* in space. Soon after, existence presented itself in its true form - in the form of coexistence. It was the existence itself in which ‘jeevan' was also seen. The state of awakening was achieved upon realisation in existence. Upon achieving the realisation, the understanding developed that every human being has the potential for realisation. ‘Jeevan’ was recognised as the entity which achieves realisation. This gave rise to the veracious impetus to present ‘Realisation Centred Spiritualism’ to humankind. It is now available to humankind.

इसमें और एक भाग पर मेधावियों का जिज्ञासा हो सकता है आप पूर्वावर्ती पद्धतियों के आधार पर अभ्यास-विधि से पार पा गये, सबके लिये उन सभी विधियों को ओझिल क्यों कर रहे है ? उन अभ्यास विधाओं के प्रति प्रस्ताव क्यों प्रस्तुत नहीं कर रहे है ? उत्तर में अनुभव विधि से यही व्यवहार गम्य है । जागृति विधि से जागृत परंपरा, जागृत परंपरा विधि से मानवीय शिक्षा, मानवीय व्यवस्था में प्रमाणित होना इसके लिये आवश्यकीय व्यवहार कार्यों में पारंगत होना ही जागृत परंपरा होने का वैभव को देखा गया, समझा गया, प्रमाण के रूप में जीकर देखा गया । यह सटीक सिद्ध हुआ या इसकी सटीकता सिद्ध हुई अर्थात् अनुभव परंपरा की सटीकता सिद्ध हुई । आवश्यकता सुदूर विगत से ही होना रहा ।

A question may be raised here that if the author could achieve the state of awakening by following the formerly recommended methods, why are the same methods not being recommended for everyone else? Why is the author not recommending the traditional methods? The answer by the realisation rooted method is - this method (Madhyasth Darshan) is practicable. Evidencing the awakened human tradition by way of awakening, evidencing humane education by way of awakened human tradition, evidencing humane systems, and to gain expertise in the necessary work & behaviour to achieve all this has been observed, understood and verified in living to be the grandeur of awakened human tradition. This proved to be precise, or its precision was proven; in other words, precision of the awakened human tradition is proven. Its need has been there since ages.

अतएव जिस अभ्यास साधना परंपरा में चलकर समाधि स्थली में पहुँचने के उपरान्त भी स्वान्त: सुख में पहुँचने के उपरान्त भी सर्वशुभता का मार्ग प्रशस्त नहीं हुआ, समाधि के लिये अथवा निर्विकार स्थिति के लिये बोधपूर्ण होने के लिये, सत्य साक्षात्कार होने के लिये, आत्मसाक्षात्कार होने के लिये, देवसाक्षात्कार होने के लिये, संयोग से जागृत होने के लिये (जागृत व्यक्ति को छूने से) भी परंपरा अपने-अपने ढंग से चल रहे हैं उन सभी में प्रकारान्तर से समाधि का ही लक्ष्य बताया गया है । [Reading as: अभ्यास साधना परंपरा में चलकर समाधि स्थली में पहुँचने के उपरान्त भी, स्वान्त: सुख में पहुँचने के उपरान्त भी, सर्वशुभता का मार्ग प्रशस्त नहीं हुआ । समाधि के लिये, अथवा निर्विकार स्थिति के लिये, बोधपूर्ण होने के लिये, सत्य साक्षात्कार होने के लिये, आत्मसाक्षात्कार होने के लिये, देवसाक्षात्कार होने के लिये, संयोग से जागृत होने के लिये (जागृत व्यक्ति को छूने से) भी परंपरा अपने-अपने ढंग से चल रहे हैं । उन सभी में प्रकारान्तर से समाधि का ही लक्ष्य बताया गया है । ] उन सभी परंपरा के प्रति मेरा कृतज्ञता को अर्पित करते हुए, (क्योंकि उससे मुझे सहायता मिला है) सर्वशुभ मानव परंपरा में स्थापित होने का ज्ञान, दर्शन, आचरण, व्यवस्था, शिक्षा प्रवाह को स्थापित करना आवश्यक समझा गया है । इसका कारण मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) के अंगभूत ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ को प्रस्तुत करना एक आवश्यकता सदा-सदा से रही है । यह अवसर हमें प्राप्त होने का श्रेय, अथक प्रयास किया हुआ मानव परंपरा का ही देन है। **इसलिये विगत को धन्यवाद, वर्तमान में प्रस्ताव एवं भविष्य के लिये सर्वशुभ योजना प्रस्तुत है ।**

Therefore, despite achieving the state of samadhi by following the traditional practices and *sadhana*, and achieving the state of self-limited happiness, the path to universal well-being still eludes humankind. Recommendations for *samadhi*, flawlessness, enlightenment, truth realisation, self realisation, realisation deities, and awakening by proximity (by touching an awakened person) vary from sect to sect. In diverse ways, *samadhi* itself is proposed as the goal in all these. While expressing gratitude to all such traditions (because they helped me), it was felt necessary to establish the knowledge, holistic view, conduct, systems, and education for establishment of universal well-being in human tradition. This book “Realisation Centred Spiritualism” is presented as an integral part of Madhyasth Darshan (Co-existentialism) as its need has always been there. For this opportunity coming my way, the credit goes to all the untiring efforts of human tradition. **For this, acknowledgement to the past, proposal in the present, and plan for universal well-being to future generations is presented.**

यहाँ यह भी स्मरणार्थ प्रस्तुत कर रहे है कि ‘समाधि’ के उपरान्त भी सर्व शुभवादी कार्यक्रमों, उसके मूल में विचार शैली, उसके मूल में दर्शन, इन सबके धारक वाहक का ज्ञान को उद्घाटित करना संभव नहीं हो पाता है । समाधि और समाधि पर्यन्त मौन विधि साधना और सर्वाधिक मौन अवस्था को ही देखा गया है । क्योंकि निर्विचार स्थिति में शरीर, देश और काल का भास नहीं रहता है । इसमें अवश्य ही स्वान्त:सुख का आश्वासन पूरा होता है । उस स्थिति में यदि बोलना बनता है अर्थात् 10 घंटा, 15 घंटा, 20 घंटा समाधि के उपरान्त शरीर, देश, काल का बोध होने की स्थिति में बोलने पर यही लगता है जो कुछ भी रहस्यवादी वांग्मय लिखा गया है, उसी को दोहराया जा सकता है और सर्व शुभ का कामना ही बन पाती है । समाधि के लिये एक व्यक्ति जितना साधना-अभ्यास किया उतना सभी को करने की बात होती है। इसी के साथ यह भी देखा गया है समाधि हर व्यक्ति को एक ही शरीर-यात्रा में सफल हो पायेगा या नहीं इसे निश्चय करना सम्भव नहीं है ।

It is worth reminding here that even after achieving the state of *samadhi*, it is still not possible for the bearer-holder - of programs for universal well-being, thought process behind such programs, and holistic view behind such thoughts - to express this knowledge. In most cases, practice of complete or maximum silence is observed in the state of *samadhi*, or while progressing towards it. As one is without the sense of body, place and time in the state of thoughtlessness, it certainly fulfils the assurance of self-limited happiness. In this state, when one speaks after becoming aware of body, place and time (say, after *samadhi* of 10, 15 or 20 hours), it appears that one is only able to repeat what is already written in the mysterious literature, along with attaining the desire for universal well-being. It is also mentioned that whatever efforts one has made for achieving the state of *samadhi*, every seeker has to make those efforts. It has also been observed that it is not possible to ascertain if everyone will succeed in achieving the state of *samadhi* in one’s lifetime or not.

इस अनिश्चयता का मूल कारण इस प्रकार पहचाना गया है कि जीवन एक अनूस्युत क्रिया है । आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा, प्रमाण जैसी शक्तियाँ अनुभव पश्चात् सदा-सदा शरीर के माध्यम से अपने को प्रकाशित करता हुआ देखा गया है । मौन विधि साधना पूर्णतया जीवन विरोधी प्रणाली है । प्रकृति में जीवन-क्रियाकलाप कभी समाप्त नहीं होती । जीवन नित्य है, शरीर जीवन प्रकाशन के लिये एक घटना के रूप में समीचीन रहता है । शरीर रचना के बारे में वंशानुक्रमीय विधि से गर्भाशय में रचित होना देखा गया । इसलिये शरीर में आकार-प्रकार-रंग-रूप में विभिन्नता होना देखा गया है। जीवन रचना में परमाणु में गठनपूर्णता समान होना देखा गया है ।

Root cause of this uncertainty has been recognised like this. Jeevan is a continuous activity, and the forces like hopes, thoughts, desires, resoluteness & evidence, all of them manifest themselves after realisation, through the body. The method of silence is completely against the natural manifestation of jeevan. Activity of jeevan is incessant in nature. Jeevan is eternal, and body is a means of manifestation for jeevan. Regarding the body, it is formed in the womb as per the laws of species conformance. Therefore, diversity is observed in the constitution of bodies in the form of shape, type, colour & appearance. Constitution-completeness in the constitution of jeevan-atoms is similar in atoms.

जीवन रचना समानता का तात्पर्य जीवन क्रियाकलाप के लिये जितने भी अंशों का परमाणु गठन में समाना आवश्यक रहता है वह सब इसमें समाये रहने के फलस्वरूप जीवन रचना में समानता को विधिवत् देखा गया है, समझा गया है । जीवन में होने वाली सामान्य क्रियाएँ शक्ति और बल के रूप में अध्ययन से बोध और निश्चयन होती है । हरेक व्यक्ति अपने ‘‘स्व’’ जीवन क्रियाकलाप को अध्ययनपूर्वक बोध सम्पन्न हो जाते हैं उसी क्षण में यह निश्चयन होती है कि जीवन क्रियाएँ सभी जीवन में समान होना पाया जाता है । जीवन शक्ति और बल भी अपने में अक्षय होना जीवन क्रिया और उसकी अक्षुण्णता समझ में आते ही उसकी अक्षुण्णता का बोध होता है । अवधारणा सुदृढ़ हो जाती है । इसी तथ्य वश जीवन शक्तियों और बलों की अक्षयता इनको कितने भी उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता विधि से नियोजित करने के उपरांत भी जीवन शक्ति और बल यथावत रहना स्वयं में, से के लिए अनुभूत होता है । अनुभूत होना ही जागृत होना है । जीवन ज्ञान सहित ही अस्तित्व में अनुभूत होना स्वाभाविक होता है । फलस्वरूप जीवन सहज जागृति मानव सहज जीवन लक्ष्य समान होना विदित होता है ।

Similarity in the constitution of jeevan means - as a result of systematic coming together of all the particles which are needed for the working of jeevan, similarity in the constitution of jeevan has been clearly observed and understood. All the normal activities of jeevan are understood and ascertained, in the form of strength and powers. The moment a person completes the study & understanding of their own jeevan, it becomes absolutely clear that activities of jeevan are similar in every jeevan. Upon understanding that strength & powers of jeevan are inexhaustible, and upon understanding the activities of jeevan and their intactness, acceptance of its intactness happens, leading to the concept becoming firm. It is due to this fact that jeevan strength and powers remain intact or undiminished despite their getting deployed to whatever extent in utilisation, righteous utilisation, purposefulness; this realisation comes in, by & for jeevan. Realisation itself is awakening. It is only with knowledge of jeevan that one achieves realisation in the existence. As a result of this, one understands that awakening in jeevan, and the jeevan goal in humans - they are the same for all humans.

इस प्रकार जीवन लक्ष्य, जीवन शक्तियाँ, जीवन बल, जीवन सहज क्रियाकलाप और जीवन रचना प्रत्येक जीवन में समान होना अनुभव होता है । फलस्वरूप सह-अस्तित्व में विश्वास होना, अनुभव होना स्वाभाविक है । फलस्वरूप सर्वशुभ में, से, के लिए जीना स्वाभाविक प्रक्रिया बनती है । यही सार्वभौम व्यवस्था और अखण्ड समाज का मूल सूत्र होना पाया जाता है न कि शरीर रचना की विविधता ।

In this manner, one realises that the goal of jeevan, strength & powers of jeevan, activities of jeevan and constitution of jeevan - all of these are same in every jeevan. As a result, realisation and confidence in coexistence happens naturally. It naturally leads to the process of one’s living in, by & for universal well-being. This itself is the fundamental link to indivisible society and the universal system, not the diversity in body forms.

जागृत जीवन विधि से ही मानव परंपरा में अनुभव प्रमाण और प्रयोग प्रमाण व्यवहार में सार्थक विधि से प्रमाणित होता है । यही अनुभवमूलक जागृति सहज जीने की कला, उसकी महिमा है ।

It is only by way of awakening that evidence of realisation and evidence of experimentation in human tradition are evidenced in behaviour. This is indeed the art of awakened living rooted in realisation, and its magnificence.

अस्तित्व में दो ध्रुव पहले स्पष्ट किये जा चुके हैं - अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित । इन्हीं दो ध्रुवों के मध्य में मानव संचेतना और व्यवहार देखने को मिला है क्योंकि अस्तित्व में ही मानव परंपरा अविभाज्य वर्तमान है । अतएव मानव अपने जीवन सहज जागृतिपूर्वक समाधानित और समृद्धि सम्पन्न होना पाया जाता है।

Two distinct points regarding existence have already been explained earlier - existence is stable, and development & awakening is certain. Human conscience and behaviour is observed to be in between these two points only, because human tradition is the integral part of existence. Therefore, humans are observed to be accomplished in resolution & prosperity by way of awakening in jeevan.

अस्तित्व में अनुभव ही जागृति का परम प्रमाण है । यह व्यवहार में ही सार्थक एवं परंपरा सहज प्रयोजन सार्थक होना पाया जाता है । परंपरा सहज जागृति सर्वशुभ का सूत्र और स्त्रोत होना देखा गया है ।

Realisation in existence is indeed the ultimate evidence of awakening. This is meaningful in behaviour and is aligned with the purpose in human tradition. Awakening in human tradition has been observed to be the link and source of universal well-being.

परंपरा अपने में पीढ़ी से पीढ़ी के लिए सूत्र है ही-भले ही समुदाय विधि से हो या अखण्ड समाज विधि से हो । अखण्ड समाज विधि जागृति का द्योतक है एवं समुदाय विधि भ्रम का द्योतक है यह स्पष्ट है । समुदाय विधि से मानव स्वायत्त होना नहीं हो पाता है पराधीनता बना ही रहता है। अखण्ड समाज विधि से ही मानव में स्वायत्तता परंपरा शिक्षा-संस्कार विधि से संपन्न होता है । इसका प्रमाण अर्थात् स्वायत्तता का प्रमाण परिवार में होना देखा गया । परिवार मानव में सह-अस्तित्व सूत्र से स्वायत्तता का प्रमाण सिद्ध हो जाता है। यह प्रचलित होने के लिये परंपरा की आवश्यकता है । दूसरे भाषा से सर्वसुलभ होने के लिए अथवा लोक व्यापीकरण होने के लिए परंपरा की आवश्यकता है ।

Tradition in itself is the link from generation to generation, whether it is by way of sects or by way of indivisible society. It is clear that the way of indivisible society is an indication of awakening, while the sectarian way indicates delusion. In the sectarian way, a person is unable to become autonomous, and the feeling of dependency continues. It is only by way of indivisible society that the tradition of autonomy in humans is established by way of humane education-*sanskar*. Evidence of autonomy has been observed in the family. In a family person, testimony of the evidence of autonomy is provided by the thread of coexistence. Tradition is needed for it to prevail. In other words, tradition is needed for it to be within reach of everyone, or for its dissemination.

परंपराएँ अस्तित्व सहज है । अस्तित्व स्वयं सह-अस्तित्व होना ही परंपरा होने का नित्य सूत्र है । सह-अस्तित्व स्वयं नित्य विकास और परंपरा है । इस प्रकार देखा गया है कि परमाणुओं में अपने प्रजाति की परंपरा है। परमाणु में परमाणु अंशों की संख्या रचना विधि सहजता सहित प्रकाशमान है। अनेक परमाणु का सह-अस्तित्व में अणु रचना, उसमें निहित परमाणु संख्या और परमाणुओं में अंशों के संख्या में दूसरे प्रजाति सहित अणु प्रजातियाँ परंपरा के रूप में होना स्पष्ट है । अणुरचित रचनाओं में अनेक अणु प्रजाति और अणुओं का अनुपात के आधार पर ही रासायनिक-भौतिक रचनाएँ सम्पन्न होते हुए देखने को मिलता है । इसी क्रम में पदार्थावस्था प्राणावस्था जड़ प्रकृति के रूप में, जीवावस्था और ज्ञानावस्था चैतन्य प्रकृति के रूप में सह-अस्तित्व सहज विधि से प्रकाशित है । चैतन्य प्रकृति में जीवन और शरीर का सह-अस्तित्व होना देखा जाता है । जीवन अपने में गठनपूर्णता पद में संक्रमित चैतन्य इकाई है। यही चैतन्य प्रकृति है । जीवन सहित शरीर परंपरा ही दूसरे भाषा में जीवन से जीवंत शरीर परंपरा ही जड़-चैतन्य प्रकृति के संयुक्त रूप में गण्य होना पाया जाता है । अस्तित्व में सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी होने के कारण जड़-चैतन्य प्रकृति का सह-अस्तित्व होना सहज है । जीवन सहज वांछा (आशा, विचार, इच्छा के रूप में देखने को मिलता है) जीने की आशा, जीवन में ऐश्वर्य होने के कारण अपना महिमा होने के कारण सह-अस्तित्व में ही जीने का प्रमाण प्रस्तुत करना ही चैतन्य प्रकृति का कार्यकलाप होना देखा गया है ।

Traditions are inherent in existence. The fact that existence itself is coexistence is the eternal principle behind traditions. Coexistence itself is continuous development and tradition. In this manner, it has been seen that different types of atoms have their own traditions. The atoms exhibit themselves naturally as per the constitution based on the number of particles in the atom. Formation of molecules from multiple atoms, number of atoms in the molecule, and various types of atoms based on the number of particles in the atoms - in this manner, tradition of various types of molecules is apparent in coexistence. Various types of atomic structures in atoms, and formation of all physico-chemical entities in proportion to the atoms, is clearly observable. On this course, material order & plant order in the form of insentient nature, and animal order & knowledge order in the form of sentient nature, are naturally exhibited by way of coexistence. In sentient nature, coexistence of jeevan and the body is observed. Jeevan in itself is the sentient entity transcended to the constitution completeness plane. This is indeed the sentient nature. Tradition of body with jeevan, or the tradition of body’s aliveness by jeevan, itself is categorised as the combined form of insentient & sentient nature. As the existence is eternally effective as coexistence, the coexistence of insentient & sentient nature is but natural. As the expectation of jeevan (in the form of hope, thought, desire) as wanting to live is the opulence and magnificence of jeevan, to produce evidence of living in coexistence is the entire program of the sentient nature.

29 Sept

सह-अस्तित्व में अनुभव ही परम सत्य प्रकाशन है और अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है । फलस्वरूप परस्परता पहचान, निर्वाह सहज विधि है । इसी क्रम में चैतन्य प्रकृति भी अस्तित्व सहज है । परमाणु रचना कार्य और परिणाम भी सह-अस्तित्व सहज है । क्योंकि हर परमाणु में एक से अधिक परमाणु अंशों का होना पाया जाता है । यह परमाणु अंश ही स्वयं-स्फूर्त विधि से परमाणु गठन और निश्चित कार्य को प्रकाशित करते हैं । एक-दूसरे के साथ परमाणु अंश भी निश्चित कार्य करने के लिये तत्पर रहते हैं । मानव का हस्तक्षेप विहीन स्थिति में इनमें कोई बाधाएँ होती नहीं है । परमाणु में अंशों का आदान-प्रदान क्रिया जो सम्पन्न होता है वह भी सह-अस्तित्व विधि सूत्र के अनुसार है । सह-अस्तित्व ही स्वयं-स्फूर्त प्रकटन व्यवस्था होना उक्त प्रकार से सम्पूर्ण प्रकृति का मूलरूप साम्य ऊर्जा सम्पन्न परमाणु के रूप में व्यवस्था और व्यवस्था का स्रोत दिखाई पड़ता है । ऐसे स्वयं स्फूर्त परमाणु अंश व्यवस्था के रूप में व्यक्त होने में तत्परता सहित हर परमाणु रचना-गठन-क्रिया सम्पादित होते हुए देखने को मिलता है । इसी क्रिया के आधार पर श्रम, गति, परिणाम प्रकाशित है । अतएव इन्हीं की तृप्ति क्रम में तृप्ति के अर्थ में विकास क्रम विकास और जागृति प्रकाशित है और अभिव्यक्त है ।

Realisation in coexistence is the exposition of ultimate-truth, and existence itself is coexistence. As a result, mutuality is by way of recognising & fulfilling. Extending the logic, sentient nature too exists naturally in existence. Activity and the result of formation of an atom also occur naturally in existence. As every atom consists of more than one atomic particle, these atomic particles are the ones which exhibit the automatic constitution of an atom as well as its well-defined activity (characteristics). These atomic particles are always busy in their well-defined activity with one another, too. There is no disturbance in all this if the humans don’t interfere in this process. The exchange of particles that occurs in atoms is also according to the co-existential method and laws. Coexistence is by itself in orderliness, and it is the atoms endowed with uniform energy which is observed to be the basis and source of orderliness in all nature. All such atomic particles, ready to manifest and participate in orderliness, are observed to be indulging in formation-constitution-activity. It is on the basis of this activity indeed that effort, motion and result is exhibited. Therefore, in the process of their fulfilment or satisfaction development progression, development and awakening is exhibited and expressed.

अस्तित्व में जागृति निश्चित होने के प्रमाण में ज्ञानावस्था की अभिव्यक्ति है । ज्ञानावस्था में मानव ही गण्य है । मानव परंपरा संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता के संयुक्त रूप में तृप्त होना पाया जाता है । ज्ञान का मूल स्वरूप जीवन ज्ञान और अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व रूपी व्यवस्था का ज्ञान है । जीवन ज्ञान मानव स्वयं अपने जीवन सहज क्रियाकलापों के आधार पर विश्वास करना बन पाता है । यह मूलत: अनुभव सहज क्रिया है । इसको जानना-मानना एक आवश्यकता है ही । जीवन को जानने-मानने के क्रम में शरीर रचना और शरीर सीमाओं के संदर्भ में भले प्रकार से पारंगत होना एक आवश्यकता है ।

Expression of the knowledge order is the evidence that awakening in existence is certain. It is only the humans who are included in the knowledge order. Satisfaction in human tradition is attained in the combined form of cognisance and sensitivity. Knowledge basically consists of (a) knowledge of jeevan, and (b) knowledge of orderliness in existence. One develops confidence regarding the knowledge of jeevan by observing activities of jeevan in oneself. Realisation is at the core of this activity. It is of utmost importance to know & believe this. In the process of knowing & believing jeevan, it is essential to have a good understanding of the composition of the human body and its limits.

जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में ही ज्ञानावस्था प्रकाशमान होने के आधार पर ही मानव सहज विधि से ही (1) अपना ही कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता शरीर से भिन्न तरंग के रूप में अनुभव करना बनता है । (2) आशा, विचार, इच्छाएँ जीवन सहज क्रिया होने के रूप में स्वयं से, स्वयं के लिये परीक्षण-निरीक्षण कर सकता है । (3) आस्वादन, तुलन, चिन्तन, बोध क्रम में अध्ययन विधि से जो अनुभूतियाँ प्रतीत होते हैं या भास-आभास होते हैं इसका परीक्षण स्वयं ही हर मानव, हर काल में, हर देश में किया जाना समीचीन है । इन क्रियाकलापों के निरीक्षण से पता लगता है कि जीवन्त मानव में आस्वादन का अनुभव भास; न्याय, धर्म, सत्यरूपी नित्य वस्तु का भास होना, हर व्यक्ति अपने से निश्चय कर सकता है । चिन्तन में ही न्याय, धर्म, सत्य का आभास होना और प्रतीति होना प्रमाणित होता है ।

Only on the basis that the knowledge order manifests as the combined form of body and jeevan, all human beings can naturally (1) experience that one’s own imagination and freewill are faculties different from one’s body (2) examine & inspect in & for themselves that hopes, thoughts & desires are natural activities of jeevan, and (3) examine in themselves at all times and at all places the perception, cognition or intuition of whatever insights they have in the process of tasting, analysing, contemplating & enlightenment. It is concluded by observing these activities that every living person can perceive the experience of tasting, as well as perceive the eternal realities of justice, dharma & truth. Cognition & intuition of justice, dharma & truth is evidenced only in contemplation.

साक्षात्कार अपने में प्रयोजनों का निश्चयन सहित तृप्ति के लिये स्रोत रूप में अध्ययन विधि से पहचान लेता है । फलस्वरूप बोधपूर्वक अनुभव में सार्थकता सहित न्याय, धर्म, सत्य सहज स्वीकृति ही संस्कार और अनुभव बोध रूप में जीवन में अविभाज्य क्रिया रूपी बुद्धि में स्थापित हो जाता है । यही अध्ययन पूर्वक होने वाली अद्भुत उपलब्धि है । न्याय सहज साक्षात्कार सह-अस्तित्व सहज संबंधों का साक्षात्कार सहित मूल्यों का साक्षात्कार होना पाया जाता है । यही मुख्य बिन्दु है । सह-अस्तित्व सहज सम्बन्धो को पहचानने में भ्रम रह जाता है यही बन्धन का प्रमाण है । यही जीवन को शरीर समझने का घटना है ।

The activity of direct perception, in itself, recognises that the source of fulfilment lies in ascertainment of purpose by way of study. Consequently, by way of enlightenment, meaningfulness in realisation along with acceptance of justice, dharma & truth are firmly established as *sanskar* and enlightenment of realisation in *budhi* (which is an inseparable faculty in jeevan). This indeed is a remarkable achievement by way of study. It is observed that direct perception of values occurs along with direct perception of justice, and with direct perception of relationships in coexistence. This is the key point. The lack of understanding in recognising the relationships in coexistence, itself is the proof of bondage. This occurs due to the assumption that jeevan is the body itself.

बन्धन को जीवन क्रियाकलाप में जाँचा जाना एक आवश्यकता है। बन्धन का स्रोत भ्रमित जीवन क्रिया से ही समीचीन रहता है । यह प्रिय, हित, लाभ दृष्टियों के रूप में आहारादि विषय - प्रवृत्तियों दीनता, हीनता, क्रूरतावादी मानसिकता सहित प्रकाशित होती है । ऐसे क्रियाकलाप पर्यन्त जीवन भ्रमित रहना स्पष्ट होता है । जीवन अपने को भ्रमित स्वीकारना बनता नहीं, निर्भ्रम होने की चाहत जीवन में बना ही रहता है । यही भ्रम-मुक्ति का सूत्र बनता है । अतएव भ्रमवादी जितने भी क्रियाकलापों को फैलाए रहते हैं उसकी निरर्थकता का आंकलन होता है, सार्थकता के लिये प्रयासोदय होता है । यही जागृति क्रम में होने वाली सह-अस्तित्व सहज वैभवशाली कार्य है ।

It is essential to verify that bondage occurs in jeevan activities. The source of bondage lies solely in the activities of deluded jeevan. It manifests in the form of pleasant, health & profit perspectives together with the instincts of food etc., and the mentality of servileness, treacherousness & cruelness. It is clear that jeevan is deluded as long as it remains engaged in such activities. Although jeevan doesn’t accept itself to be deluded, the longing to be free from delusion is always there. This itself becomes the starting point of liberation from delusion. Thus, assessment of meaninglessness of whatever activities one has done in the state of delusion also happens, and the efforts commence for meaningfulness. This indeed is the grand activity in coexistence by humans while in the awakening progression.

मानव चैतन्य प्रकृति के ज्ञानावस्था सहज अस्तित्व और परंपरा है । ज्ञानावस्था स्वयं इसी बात को ध्वनित करता है । जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्नता ही ज्ञानावस्था की ध्वनि का अर्थ है और सार्थकता है। यह भी देखने को मिलता है कि हर मानव निर्भ्रम और जागृत होना चाहता है । एकता-अखण्डता जागृति सहज अभिव्यक्ति है । भ्रमवश ही विखण्डता, अनेकता में विवश होना देखने को मिला है। न्याय, धर्म, सत्यरूपी परम ज्ञान, दर्शन, आचरण, व्यवस्था में एकरूपता को पाते हैं । इसी को अखण्ड समाज-सार्वभौम व्यवस्था का नाम दिया है । **एकता सार्वभौम व्यवस्था सहज विधि से होता है । अखण्डता नियम और न्याय विधि से सम्पन्न होता है ।** समाज और व्यवस्था अविभाज्य होना स्पष्ट हो चुकी हैं । अस्तित्व में सह-अस्तित्व विधि से ही मानव जागृत परंपरा के रूप में वैभवशील हो सकता है । जागृत मानव परंपरा में सम्पूर्ण वैभव का नित्य प्रमाण समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण वर्तमान परंपरा ही है । यही जागृति सहज परंपरा का फलन है ।

Humans belong to, and are a tradition of, the knowledge order of sentient nature. The knowledge order precisely conveys this. Being accomplished with the knowledge of jeevan, knowledge of existence, and knowledge of humane conduct, is indeed the meaning and meaningfulness of the knowledge order. It is also observed that every human being wants to become delusion-less and awakened. Unity and indivisibility is the natural expression of awakening. It is only under delusion that humans are observed to be helpless in dividedness and disunity. They find unity or harmony in the ultimate knowledge, holistic view, conduct & orderliness in the form of justice, dharma & truth. This is what has been called indivisible society, universal systems. **Unity is accomplished by way of universal systems; indivisibility is accomplished by way of laws and justice.** It is already clear that society and systems are inseparable from each other. It is only by way of coexistence that humans can achieve the grandeur of the awakened tradition in existence. Running tradition of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence itself is the perpetual evidence of the complete grandeur of awakened human tradition. This is indeed the fruit of awakened tradition.

परस्पर पहचानना-निर्वाह करना शाश्वत् नियम है । उपयोगिता सहित पूरक होना शाश्वत् नियम है । पूरकता का तात्पर्य विकास और जागृति में प्रमाण सहित प्रेरक पूरक होने से है । विकास और जागृति में स्व शक्तियों का अर्पण समर्पण है। जड़ प्रकृति में पूरकता किसी एक के अंश को स्वयं स्फूर्त विधि से विस्थापित कर देने के रूप में ही है। मानव में समाधानपूर्वक समृद्ध होने की विधियों को देखा जाता है । यही पुन: जड़ प्रकृति में रचना-विरचना में भी देखने को मिलता है कि रचना विधि में पूरकता, विरचनाएं पुनर्रचना के लिये पूरकता के रूप में प्रस्तुत होना देखा जाता है । इस प्रकार पूरकता जड़ प्रकृति में भी देखने को मिलता है । परस्पर पूरक है इस तथ्य का साक्ष्य पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था और जीवावस्था से ज्ञानावस्था विकसित स्थिति में वर्तमान रहना ही है । सभी जीव संसार जीने की आशा से ही वंशानुषंगीय कार्य में तत्पर रहना पाया जाता है ।

Mutual recognition & fulfilment among units is the eternal law. Being complementary together with being useful is eternal law. The meaning of complementariness is to be a source of inspiration along with evidencing development & awakening, and to offer & dedicate one’s energies for development & awakening. Complementariness in insentient nature is in the form of natural expelling of atomic particles from an atom. Humans are observed to be engaged in attaining prosperity by way of resolution.This is also observed in the insentient nature which goes through the cycles of composition & decomposition; complementariness is apparent in compositions, while complementariness of decompositions is observed in the form of availability as raw material for the new compositions. In this manner, complementariness is observed in the insentient nature too. Development of material order to plants order, plants order to animal order and animal order to knowledge order, and ever-presence of all this, is indeed the evidence of mutual complementariness in nature. All the animals are driven by hope-to-live and are busy in their respective species-conformant activities.

ज्ञानावस्था के मानव उसी का अनुकरण-अनुसरण करने के जितने भी कार्यकलापों को अपनाया स्वपीड़ा-परपीड़ा, स्वशोषण-परशोषण, स्वयं के साथ वंचना और अन्य के साथ प्रवंचना और इन सबका सारभूत बात स्वयं के साथ समस्या और उसकी पीड़ा से पीड़ित रहना, अन्य को पीड़ित करना रहा । यही भ्रमित मानव परंपरा रूपी समुदायों में देखने को मिला । यही शिक्षा, संस्कार, संविधान और व्यवस्था इस दशक तक मानी जा रही है । ये सब समस्याकारी है । समस्या स्वयं पीड़ा के रूप में प्रभावित होना देखा गया । इसका निराकरण जागृति, उसका प्रमाण रूप में समाधान ही है ।

The knowledge order following and emulating the animal order led to their own suffering and the suffering of others, their own exploitation and the exploitation of others, their own betrayal and betrayal of others; in brief, facing problems and suffering from those problems, and causing suffering to others, and continuity of all this. All this is observed in sects in the deluded human tradition. This is assumed to be education-*sanskar*, constitution and system till this decade. All this gives rise to problems. Problem itself leads to suffering. Awakening is its remedy, and resolution is the evidence.

अनुभव, व्यवहार और प्रयोग इन तीनों प्रकार से मानव सहज विधि से प्रमाणों की आवश्यकता, सदा-सदा ही बनी रहती है । यही निरन्तर मानव कुल में अपेक्षा, प्रयास और प्रमाणों के स्थितियों में देखने में आता है । आदि काल से समाधान की अपेक्षा रही है । इस शताब्दी के उत्तरार्ध के तीन दशक में मानव में समाधान सहज अपेक्षा बलवती हुई । यह मानवाधिकार रूपी आवाज से आरंभ हुआ । यही अपेक्षा से पीड़ा तक पहुँचने का साक्ष्य देखने को मिला । मानवाधिकार, अपने विचार के अनुसार हर व्यक्ति को सामान्य सुविधा पहुँचना चाहिये, विपदाओं में सहायता और रक्षा होना चाहिये जैसे - भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल से पीड़ित लोगों को राहत पहुँचाना चाहिये । दण्ड के रूप में बहुत सारे दण्ड प्रणालियों को बंद करना चाहिये । दण्ड विधि में सुधार होना चाहिये । युद्ध मानसिकता को बदलना चाहिये । ये सब आवाज के रूप में होना देखा जाता है ।

There has been a perpetual need of evidences of realisation, behaviour and experimentation by way of human endeavours. This itself is seen in humankind in different stages, as expectations, efforts and evidence. Humans have had the expectation of resolution since ages. This expectation has become stronger in the last three decades of the twentieth century. It began with utterances of human rights, and these utterances are the evidence of the suffering due to unfulfilled expectation. Human rights, by their own definition, are in the form of providing basic means of living, assistance and safety to all human beings, providing help in times of calamities like earthquakes, floods, droughts & famines, discontinuing the various methods of punishment, reforms in methods of punishment, and doing away with the mentality of wars. All this is observed to be becoming more vocal & pronounced.

कार्यरूप में बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक आवश्यकता के अनुसार रोगग्रस्त स्थिति में दवाई, विपदाग्रस्त स्थिति में खाना-कपड़ा-सुरक्षित स्थान यही सब प्रधानत: सहायता के अर्थ में सुलभ करने के कार्य को किया जाना देखा गया । यद्यपि सुदूर विगत से हर राजगद्दी विपदाओं में ग्रसित लोगों को राहत देने के हित कोष और कार्यों को बनाए रखते रहे हैं । इनमें नया क्या हुआ पूछा जाय तो - इतना ही अंतर है कि राजदरबार की सभी सहायताएँ राजा के कृपावश होता था । मानवाधिकार संस्था का इस विधा में परिवर्तन स्वयं-स्फूर्त विधि से प्रस्तुत है । इनके कार्यकलापों का मूल्यांकन कर्तव्यों, दायित्वों के रूप में मूल्यांकित किया जाता है । इसलिये इसे मानवाधिकार विचारों का धारक-वाहक मानवों में विपदाग्रसित व्यक्ति पीड़ित होकर ही ऐसे संस्था को संचालित किया गया है, कहा गया है । इसके बावजूद इसमें शुभ का भाग अर्थात् सहायता भाग ही सार्थकता है।

Till the last decade of the twentieth century, these are practically seen as help in the form of distributing medicines in case of illness, and providing food, clothes & safe shelter in times of calamities. It may be noted that the seats of power since ages have been maintaining relief funds and activities to help the people struck by calamities. So when we ask the question what has changed, the only difference we find is that earlier it was at the discretion of the ruler, while now human rights organisations are leading these initiatives in a self-motivated manner. Their activities are evaluated in the form of duties and responsibilities. Thus, such organisations managed by the holders-bearers of thoughts of human rights are useful only when calamities strike. However, the commendable or meaningful part in these programs is the part of assistance or relief.

सम्पूर्ण प्रयोगों को उत्पादन कार्य प्रयोग, औषधि कार्य प्रयोग के रूप में सकारात्मक पक्ष में होना पाते हैं । सकारात्मक पक्ष का तात्पर्य है - नित्य समाधान के अर्थ में सूत्रित होने से है । ऐसे नित्य समाधान जागृतिपूर्ण मानव परंपरा में ही लोकव्यापीकरण सर्वशुभ होना स्पष्ट है । जागृति पूर्ण विधि से भ्रम जन्य जितने भी योजना कार्यकलाप है समाधान के अर्थ में परिवर्तित होना पाया जाता है ।

All the experimentation in the form of work related to production & medicines, falls within the domain of positive aspects. Positive aspect means its linkage with eternal resolution. Dissemination of such eternal resolution for universal good, is possible only in completely-awakened human tradition. All the plans & activities born out of delusion get converted to the objective of resolution by way of complete awakening.

उत्पादन वस्तुएँ सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा में प्रयोजित होना स्पष्ट किया जा चुका है। इन्हीं विधाओं में हर औषधि और उत्पादन प्रयोग क्रियाएँ व्यवहार में प्रमाणित हो जाती है । व्यवहार में प्रमाणित होने का स्वरूप इन दोनों विधा का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता का साक्ष्य ही है ।

It has already been clarified that the purpose of all produced goods is for common aspirations and special aspirations. It is in these domains only that the evidence in behaviour of all medicinal and production experimentation activities is seen. Utilisation, righteous utilisation & purpose of both these domains is indeed the true form of evidence in behaviour.

युद्ध, शोषण और उनका प्रभाव विलय अथवा समाप्त होता है क्योंकि शोषण और युद्ध उन्माद और भ्रमित कार्यकलाप होना सिद्ध हो चुकी है । अनुभव प्रमाण हर व्यक्ति में समान रूप में होने का वैभव ही है समाधान व्यवहार में प्रमाणित हो जाता है । अनुभव का माहिमा ही है सर्वतोमुखी समाधान । समाधान का तात्पर्य ही है क्यों, कैसे का उत्तर । ऐसी उत्तर में निष्ठा और उसकी अक्षुण्णता । अतएव व्यवहार में प्रयोग और अनुभव प्रमाणित होने की मर्यादा ही सार्वभौम व्यवस्था-अखण्ड समाज का स्वरूप है ।

Thus wars, exploitation and their effect gets minimised or ends, as the fact that obsession for exploitation and wars are deluded activities, is already proven. It is indeed the grandeur of uniformity of evidence of realisation in each person that resolution gets evidenced in behaviour. Comprehensive resolution itself is the magnificence of realisation. Meaning of resolution is answers to every why and how, and unwavering acceptance of those answers. Therefore, the dignity of evidencing experimentation & realisation in behaviour is indeed the true form of universal systems & indivisible society.

**Chapter 4**

**आत्मा जीवन में अविभाज्य है**

**Atma is inseparable in & from jeevan**

‘जीवन’ का स्वरूप विकासपूर्णता के फलन में चैतन्य पद प्रतिष्ठा सहज एक परमाणु है जो भार बन्धन और अणुबन्धन से मुक्त है । यही ‘जीवन’ के नाम से सम्बोधित है । भ्रम बंधन से मुक्त होना मोक्ष है यही जागृति सहज प्रमाण है ।

‘Jeevan’ is an atom which is established in the sentient plane as a consequence of development completeness, and is free from gravitational bondage and molecular bondage. This has been named ‘jeevan’. To be free from the bondage of delusion is *moksha*; this itself is the evidence of awakening.

जीवन में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा अविभाज्य रूप में क्रियाशील है । ये सब निश्चित क्रियाओं के नाम है। ‘वस्तु’ के रूप में मध्यांश सहित चार परिवेशों के रूप में क्रियाशील इकाई है । इस प्रकार ‘जीवन’ अपने में चैतन्य पद प्रतिष्ठा सहित मानव परंपरा में समझदारी सहित परावर्तन-प्रत्यावर्तन पूर्वक जीवन-सहज क्रियाओं को प्रकाशित करता ही रहता है । यही जागृति है ।

*Mun*, *vritti*, *chitta*, *buddhi* & *atma* are inseparably active in jeevan. All these are the names of well-defined activities. As a reality, jeevan is an active unit consisting of a nucleus and four orbits. In this manner, jeevan in itself, established in the sentient plane together with wisdom in human tradition along with projection & reflection, perpetually keeps on exhibiting activities of jeevan. This itself is awakening.

व्यवस्था की मूल वस्तु अस्तित्व में केवल परमाणु ही होना पाया गया है । सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही जड़-चैतन्य के रूप में वैभवित हैं । इनमें से जड़ प्रकृति भारबन्धन और अणुबन्धन के फलस्वरूप भौतिक-रासायनिक रचनाओं में भागीदारी करता हुआ देखने को मिलता है । यही प्रत्येक जड़ परमाणु अपने में व्यवस्था और रचना सहज समग्र व्यवस्था में भागीदारी का साक्ष्य प्रस्तुत करता है । जबकि चैतन्य इकाईयाँ भारबन्धन और अणुबन्धन से मुक्त, आशा बन्धन से युक्त, ‘आशानुरूप कार्य गति पथ’ सहित मनोवेग के अनुपात में गतिशील रहना पाया जाता है । ‘जीवन’ अपने में गठन पूर्णता के उपरान्त अक्षय शक्ति, अक्षय बल सम्पन्न होना देखा गया है। यह ‘परिणाम के अमरत्व’ प्रतिष्ठा का फलन ही है।

It has been observed that the atom is indeed the fundamental unit of orderliness in existence. Nature saturated in Omnipotence is grandiose in the form of insentient & sentient. Out of these, the insentient nature, as a result of gravitational bondage & molecular bondage, is observed to be participating in physico-chemical formations. In this manner, each insentient atom gives proof of orderliness in themselves, and participation in overall orderliness in the form of physico-chemical formations. On the other hand, the sentient atom, devoid of gravitational bondage and molecular bondage but replete with bondage of hope together with ‘the path of working according to hope’, is found to be active in proportion to their imagination. It has been seen that after constitution completeness, jeevan becomes endowed with inexhaustible power & inexhaustible strength. This is the result of endowment with ‘immortality of constitution’.

आशा बन्धन से ‘जीवनी क्रम’ परंपरा को आरंभ किया हुआ जीवन, आशा से विचार, विचार से इच्छा बन्धन तक भ्रमित विधि से मानव कार्यकलापों को प्रस्तुत करता है । इच्छाएँ चित्रण कार्य को, विचार विश्लेषण कार्य को और आशा चयन क्रिया को सम्पादित करता हुआ मानव परंपरा में भय, प्रलोभन और आस्था में जीता रहता है । प्रिय, हित, लाभ संबंधी संग्रह-सुविधा-भोग द्वारा प्रलोभन के अर्थ को; युद्ध, शोषण, द्रोह-विद्रोह-संघर्ष ये सब भय को और भक्ति-विरक्ति पूर्वक आस्था त्याग-वैराग्य को मानव ने प्रकाशित किया है । यह परंपरा सहज विधि से ही होना पाया जाता है । परंपरा में इसी के लिये शिक्षा-संस्कार, उपदेश, शासन-पद्धति, संविधान भी स्थापित रही है । इसी क्रम में सामान्य आकांक्षा और महत्वाकांक्षा संबंधी और सामरिक सामग्रियों के रूप में अनेकानेक चित्रण कार्य सम्पन्न हुआ । ऐसे कुछ यंत्र संचार के लिये मार्ग और सेतु का चित्रण हुआ। इसी से सम्बन्धित अनेकानेक वस्तु, सामग्री, यंत्रों का चित्रण मानव ने किया है ।

Having started its journey from bondage of hope in the tradition of ‘living-world progression’, jeevan moves on to bondage of thoughts, and then to bondage of desire; exhibiting eventually leading to human deeds in deluded manner. With desires fulfilling the visualisation activity, thoughts fulfilling the analysing activity and hopes fulfilling the selecting activity, it (jeevan) continues to live in human tradition in fear, temptation & faith. Temptation in the form of accumulation, comforts & indulgences related to pleasant, health & profit perspectives; fear in the form of wars, exploitation, offence, revolt & conflict; and faith in the form of devotion & detachment and renunciation & reclusion; all this has been exhibited by humans. All this happens by way of tradition only. Education, preachings, methods of governance and constitutions have also been established in human tradition precisely for these. On this course, various visualisations of common aspirations, special aspirations and war apparatus got formed in human tradition. Humans also formed images of telecommunications, roads and bridges. Humans accomplished visualisation related to all such objects, apparatus and equipment.

जीवनी क्रम जीवों में वंशानुषंगीय स्वीकृति के रूप में देखने को मिलता है । यही आशा बन्धन का कार्यकलाप है। वंशानुषंगीय कार्य में उस-उस वंश का कार्यकलाप निश्चित रहता है । तभी जीवावस्था व्यवस्था के रूप में गण्य हो पाता है। ऐसे जीव शरीर जो वंशानुषंगीय निश्चित आचरण को प्रस्तुत करते है उनमें समृद्ध मेधस का होना पाया जाता है । ऐसी वंशानुषंगीय रचना क्रम में मानव शरीर भी स्थापित है । इसकी परंपरा भी देखने को मिलती है । उल्लेखनीय मुद्दा यही है, मानव परंपरा में निश्चित आचरण स्पष्ट नहीं हो पाया । इसका कारण मानव ने तीनों प्रकार के बंधन वश जीवों के सदृश्य जीने का प्रयत्न किया । जबकि मानव अपने मौलिक विधि से ही जीने की प्रेरणा बना रहा । इसी क्रम में आचरणों की विविधता, विचारों की विविधता, इच्छाओं की विविधता, अनेकता का कारण बना । **इसलिये केवल आशा, विचार, इच्छा से मानव में मानवीयता की स्थापना नहीं हो सकी।** अथक प्रयास अवश्य किया गया । ‘जीवन’ के और आयामों का प्रयुक्ति मानव परंपरा में अवश्यंभावी होने के आधार पर ही अनुभवमूलक विधि का स्थापित होना अनिवार्यतम स्थिति बन चुकी है ।

Living-world progression, in animal order, is seen in the form of acceptance to species conformance. This is the activity of bondage of hope. In species conformance, activities of the respective species remain well-defined. It is because of this definiteness indeed that animal order is mentioned to be in orderliness. All such animal bodies which exhibit their respective species-conformant definite conduct, invariably have a developed brain. Human body is also part of such species-conformance. Its tradition also is apparent. It is noteworthy that there is no clarity yet about the well-defined conduct (or, humane conduct) in human tradition. The reason behind this is that due to the influence of the above mentioned three types of bondages, humans have been living like animals. However, the natural inspiration to live with humaneness persisted. On this course, diversity of actions, diversity of thoughts and diversity of desires resulted in divisions and fragmentation. **Thus hope, thought & desire alone could not establish humaneness in human tradition**, although untiring efforts were surely made. Usage of the remaining dimensions of ‘jeevan’ in human tradition is essential to accomplish that; thus establishment of the realisation-rooted method is now inevitable.

मुख्यत: न्याय, धर्म, सत्य रूपी दृष्टियों की क्रियाशीलता वृत्ति में एवं फलन स्वरूप इनका साक्षात्कार चित्त में, बुद्धि में बोध और अनुभव की स्वीकृति, आत्मा में इनका अनुभव और अनुभव बोध तथा साक्षात्कार की पुष्टि चिंतन में सम्पन्न होना ही अनुभवमूलक जागृतिपूर्ण स्थिति गति होना स्पष्ट है । अतएव जीवन को विधिवत् चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद का अध्ययन एवं समझ लेना जीवन ज्ञान का तात्पर्य है । जीवन ही दृष्टा पद में होने के कारण अस्तित्व सहज सम्पूर्ण दृश्य का दृष्टा होना सहज है । इस प्रकार अनुभव करने वाली वस्तु जीवन है । अनुभव करने योग्य वस्तु अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व है । प्रमाणित करने योग्य वस्तु हरेक मानव है । प्रमाणित होने के लिये वस्तु अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था है । **अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में अनुभव ही परम सत्य में अनुभव ।**

Mainly, the activation of the perspectives of justice, dharma & truth in *vritti*, and consequently their direct-perception in *chitta*, acceptance of enlightenment and realisation in *buddhi*, their realisation in *atma*, and corroboration /verification of enlightenment of realisation and of direct-perception in contemplation; it is clear that this is indeed the realisation-rooted completely awakened state and motion. Thus, knowledge of jeevan means - to systematically study and understand jeevan by way of consciousness development value education as defined by Madhyasth Darshan, Co-existentialism. As jeevan itself is in the perceiver plane, it is natural for it to holistically see (understand) the complete scene in the form of existence. In this manner, the jeevan is the reality which attains realisation. The reality which is realised is existence in the form of coexistence. The reality which evidences it, can be every human being. The reality which needs to be evidenced is the indivisible society, universal system. **Realisation in existence as coexistence indeed is the realisation in ultimate truth.**

**जीवन रचना (चैतन्य पद) + जीवन क्रियाकलापों का निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण = जीवन ज्ञान ।**

**Constitution of jeevan (sentient plane) + inspection, examination & survey of activities of jeevan = Knowledge of jeevan.**

जीवन ज्ञान के सम्बन्ध में निर्भ्रम और जागृत होने के पहले बुद्धिजीवी, विद्वान कहलाने वाले व्यक्तियों में यह शंका होना, उनकी अवस्था के अनुसार स्वाभाविक है कि जीवन ही जीवन को कैसे देख पायेगा और इसका प्रमाण क्या होगा ? इसके उत्तर में यह देखा गया है कि जीवन रचना अपने स्वरूप में गठनपूर्ण परमाणु में परमाणु के रूप में चार परिवेशीय और केन्द्रीय अंशों सहित एक निश्चित और सार्थक रचना है । इसमें हर परिवेश और केन्द्रीय अंश सभी क्रियाशील रहते हैं । इस तथ्य के रूप में नाम के लिए मध्यांश (केन्द्रीय अंश) को ‘आत्मा’, प्रथम परिवेशीय अंशों को ‘बुद्धि’, द्वितीय परिवेशीय अंशों को ‘चित्त’, तृतीय परिवेशीय अंशों को ‘वृत्ति’ और चतुर्थ परिवेशीय अंशों को ‘मन’ नाम दिया है ।

Before becoming delusion-less and awakened about the knowledge of jeevan, some so-called learned people and scholars, depending on their state, may have a doubt regarding how indeed will jeevan be able to see the jeevan, and what will be its evidence ? Its answer is that jeevan in itself is a definite and meaningful entity, in the form of a constitutionally-complete atom having particles in the nucleus and in four orbits. In this, all the orbital and central particles remain active. For the purpose of nomenclature, the nucleus (central particle) has been named as *atma*, particles in first orbit as *buddhi*, particles in second orbit as *chitta*, particles in third orbit as *vritti*, and particles in fourth orbit as *mun*.

अस्तित्व सहज रूप में ये सब वस्तुएँ जो सदा सदा वास्तविकता को प्रकाशित किया करते हैं । जीवन अस्तित्व सहज वस्तु हैं । जीवन रचना-सूत्र भी सह-अस्तित्व सहज विधि से ही रचित रहना देखा गया है और हर व्यक्ति अध्ययन पूर्वक समझ सकता है । देखने का तात्पर्य समझना ही है ।

All the realities in existence ceaselessly exhibit realness in a non-mysterious way. Jeevan is also an existential reality. It has been seen that the constitution of jeevan also happens naturally by way of coexistence and every person can understand it by way of study. To see means to understand.

जागृत मानव में ही (चार परिवेशीय और केन्द्रीय अंश सहज विधि से रचित रचना स्वरूप में) क्रम से मन वृत्ति में, वृत्ति चित्त में, चित्त बुद्धि में, बुद्धि आत्मा में और आत्मा सह-अस्तित्व में अनुभूत होना देखा गया है । अनुभूत होना ही समझदारी की परिपूर्णता और उसकी निरंतरता है ।

Only in awakened jeevan (naturally constituted entity in the form of four orbits and the central particle), it is seen that sequentially *mun* achieves realisation in *vritti*, *vritti* in *chitta*, *chitta* in *buddhi*, *buddhi* in *atma*, and *atma* achieves realisation in coexistence. Achieving realisation is the accomplishment of wisdom and its continuity.

बंधन-भय पर्यन्त मन शरीर के आकार में सम्मोहन विधि से प्रभावित रहता है । ऐसे भ्रमित मन के पक्ष में ही विचार, इच्छा साथ ही तुलन में से प्रिय, हित, लाभ प्रवृत्त हो जाता है। फलत: भ्रम और भय का पुष्टि होकर, हर शरीर यात्रा में प्रभावित होता है । इसको हर व्यक्ति सर्वेक्षण पूर्वक प्रमाणित कर सकता है । उक्त विधि से शरीर केन्द्रित मानसिकता और उसके अनुरूप जीने की आशा और उसके समर्थन में जीवन शक्तियों में से मन के समर्थन में होने के फलस्वरूप स्वर्ग, नर्क, पाप, पुण्य की कल्पना को स्वीकारा गया। जिसके आधार पर भय और प्रलोभन को आवश्यक समझा गया । जिसकी सफलता के लिए आस्थावादी मानसिकता पर बल दिया गया। फलस्वरूप समुदाय परंपराओं में प्रकारान्तर से आस्थावादी मानसिकता पनपते आया । सर्वाधिक भय और प्रलोभन के आधार पर ही आस्थाएँ मानव में कार्यरत मनोकामना के रूप में अथवा मनमानी के रूप में रहना मिला । आस्थाएँ अधिकांश रहस्यमय रहा । अतएव आस्थाओं को व्यवहार में प्रमाणित करना संभव नहीं हुआ ।

While in bondage & fear, *mun* is affected and captivated by the body. In this state, all the desires and thoughts with perspectives of pleasant, health & profit become supportive of such deluded *mun*. It breeds delusion & fear, and this affects each subsequent bodily-journey. Everyone can verify it by way of survey. In this method, body-centred mentality and hope to live in accordance to that, and *mun* (from the faculties of jeevan) being in its support - all this resulted in acceptance of the fictions of heaven, hell, sins & virtues. Fear and temptation were felt necessary on this basis. Mentality of faith was emphasised for its success. Consequently, in one way or the other, the mentality of faith kept on flourishing in sectarian traditions. Predominantly, faiths based on fear & temptation were observed to be in the form of desire for fulfilment of wishes, or in the form of arbitrary actions. Mostly, the faiths remained mysterious; so expectedly, the evidence of faiths could not be established.

अनुभव सम्पन्न जीवन से ही जीवन सहज अभिव्यक्ति है । जबकि भ्रम भी ‘जीवन-भ्रम’ के आधार पर ही होना देखा गया है । अनुभव और जागृति, जीवन तृप्ति की अभिव्यक्ति होना पाया जाता है जबकि भ्रम अतृप्ति का ही द्योतक होना देखा गया । भ्रमित होने का, रहने का, कार्य करने का मूल रूप जीवन ही है । शरीर को जीवन समझने के आधार पर भ्रम है । जीवन को स्वत्व के रूप में समझ लेना और उसकी अभिव्यक्ति में जीवन जागृति प्रमाणित रहना ही अनुभव सहज प्रमाण एवं जागृति है । अतएव यह स्पष्ट हुआ जीवन ही भ्रमित, जीवन ही जागृत होना नियति सहज क्रिया है ।

It is only through a ‘realised jeevan’ that the natural expression takes place; similarly, the occurrence of delusion has also been seen on the basis of ‘deluded jeevan’. Realisation and awakening, both are expressions of fulfilment of jeevan, while delusion is representative of unfulfillment. It is jeevan itself which is at the root of becoming deluded, remaining deluded and acting under delusion. Delusion is on the basis of assuming the body to be jeevan. The understanding of the innateness of jeevan, and evidence of its awakening in expression, is indeed the evidence of realisation and awakening. In this manner, it becomes clear that it is jeevan itself which is deluded, or awakened; and delusion and awakening are natural activities in the course of destiny.

भ्रमित स्थिति में मानवीयता के विपरीत, जीवों के सदृश्य (प्रिय, हित, लाभ प्रवृत्ति) जीना देखने को मिलता है । जबकि मानव सहज मौलिकता मानवीयता ही है । जागृति सहज विधि से मानवीयता स्वयं-स्फूर्त विधि से प्रमाणित होती है । यही जागृति और भ्रम मुक्ति सहज प्रमाण है । इसी के आधार पर मानवीयतापूर्वक व्यवस्था में जीना बनता है, भ्रम पूर्वक अमानवीयता अर्थात् पशु मानव एवं राक्षस मानव के रूप में जीना आंकलित होता है, जबकि हर व्यक्ति मानवीयता से परिपूर्ण होकर जीना चाहता है । इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर आते हैं परंपरा जागृत होने की आवश्यकता है क्योंकि हर मानव संतान किसी अभिभावक के कोख में होता ही है । इसके उपरांत किसी धर्म संस्थान, राज्य संस्थान और किसी शिक्षा संस्थान में अर्पित होता ही है । यही संस्थाएँ जागृति का धारक-वाहक होने पर जागृत परंपरा है अन्यथा भ्रमित परंपरा है ही । जागृति सबका वर है । जागृति का स्वरूप है स्वयं व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी, दूसरे विधि से मानवीयतापूर्ण आचरण जागृति है और तीसरे विधि से परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में जीना जागृति है ।

In the state of delusion, human living is seen to be contrary to humaneness, and similar to animal-kind (tendencies of pleasant, health & profit); while actually it is humaneness which is the essential nature of humans. Humaneness gets evidenced effortlessly by way of awakening. This is indeed the evidence of awakening and liberation from delusion. It is only on this basis that living in orderliness by way of humaneness becomes possible, while living in delusion in the form of animalistic human and demonic human gets appraised as inhumane living, although every human wants to live entirely with humaneness. Thus, we conclude that human tradition needs to awaken because every child is born to some parents; and subsequently gets admitted invariably to some religious institution, some state institution and some educational institution. These institutions, if they are bearers-carriers of awakening, are awakened traditions; else, they are of course the deluded tradition. All humans naturally embrace awakening. Awakening in its true form is harmony in oneself and participation in the overall system; in other words, humane conduct is awakening; in yet other words, living in the family based self governance system is awakening.

इंगित किये गये तथ्यों और उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि जीवन ही भ्रमित रहता है, जीवन ही जागृत रहता है । जीवन जागृति और भ्रम का स्त्रोत प्रधानत: मानव परंपरा ही है। परंपरा स्वयं जागृत रहने की स्थिति में जागृति का लोकव्यापीकरण होता है। भ्रमित परंपरा होने की स्थिति में भ्रम का ही लोकव्यापीकरण होता है । इस दशक तक यही हाथ लगा है । ऐसे स्थिति में भी किसी न किसी मानव में अनुसंधानिक आवश्यकता उत्पन्न होकर स्वयं जागृत होने के उपरांत जागृत परंपरा के लिए स्त्रोत बन जाता है । भ्रमात्मक विधि से भी चित्रण-विश्लेषण के आधार पर बहुत अनुसंधान हुए हैं । जबकि जागृति सहज अनुसंधान मानव, मानव व्यवस्था मानव संचेतना सहज विधि से प्रस्तावित होना परंपरा में स्वीकृत होना, लोकव्यापीकरण होना एक आवश्यकीय स्थिति रही ।

By the highlighted facts and analysis, it is clear that it is jeevan itself which remains deluded, or awakened. Predominantly, the human tradition itself is the source of awakening and delusion in jeevan. The awakened tradition disseminates awakening while the deluded tradition disseminates delusion; this is what has happened so far, till the last decade of the twentieth century. In such a situation, the need for original or inventive exploration is certain to arise in some person who upon getting awakened becomes the source for awakened tradition. Even in the deluded way, many explorations have been undertaken based on imaging & analysing activities; because the need for exploration for awakening and humane systems, its presentation to humankind, its acceptance by human tradition, and its dissemination has always been there.

जीवन रचना के आधार पर जीवन में आत्मा अविभाज्य क्रिया होना स्पष्ट हो गई है। अस्तित्व में अनुभव ही आत्मा सहज क्रिया है । अनुभव ही दूसरे नाम से प्रत्यावर्तन क्रिया है और इसका परावर्तन क्रिया को प्रामाणिकता-प्रमाण नाम दिया है । अनुभव मूलकता आत्मा में होने वाली क्रिया है । यही जागृति है । यह जागृति सह-अस्तित्व में अनुभव मूलकता आत्मा में होने वाली जागृति ही है । जागृति सह-अस्तित्व में अनुभव हुई है। इसी जागृत स्थिति में होने वाली गति को प्रत्यावर्तन नाम दिया गया है। सम्पूर्ण प्रत्यावर्तन दर्शन और ज्ञान नाम से प्रतिष्ठित हैं । ज्ञान और दर्शन स्वाभाविक रूप में ओत-प्रोत रूप में वर्तमान है । सम्पूर्ण अस्तित्व सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति ही सह-अस्तित्व का मूल स्वरूप है । इसका सामान्य कल्पना हर मानव में होना संभव है । कल्पना का मूल स्त्रोत आशा, विचार, इच्छा का अस्पष्ट गति रूप है क्योंकि सम्पूर्ण कल्पनाएँ परावर्तन में कार्यरूप रहना देखा जाता है । मानव ही कल्पनाशीलता का प्रयोग करता है । इसे ऐसा भी कहा जा सकता है कि हर व्यक्ति प्रकारान्तर से कल्पनाशीलता का प्रयोग करता है । भ्रमित मानव द्वारा कल्पनाशीलता का सर्वाधिक प्रयोग शरीर और इन्द्रिय सन्निकर्ष के रूप में ही स्वाभाविक है । यह भ्रम विवशता है । यही कल्पनाएँ चिन्हित रूप में स्पष्ट होने के लिए तत्पर होते हैं । तभी विधिवत विश्लेषण और निश्चित चित्रण विचार रूप में सम्भावनाओं को स्वीकारना बनता है । संभावनाओं का लक्ष्य प्रिय, हित, लाभ सीमाओं में सीमित रहना पाया जाता है । यही भ्रमात्मक कार्य सीमा का अथ इति है ।

By now, on the basis of the constitution of jeevan, it is clear that atma is an inseparable activity in jeevan. Realisation in existence is indeed the natural activity of jeevan. Realisation itself, by another name, is the activity of reflection, and its projection activity has been named as authenticity & evidence. Realisation is an activity which basically takes place in *atma*; this itself is awakening. In other words, this awakening is realisation in coexistence, which happens in *atma*. The endeavour to achieve this state of awakening has been named as reflection. All reflection is collectively named as holistic view and knowledge. Knowledge and holistic view are naturally present in the commingled form. Whole existence is basically the coexistence of insentient and sentient nature saturated in Omnipotence. It is possible for everyone to have this conceptual understanding. Haphazard motion of hope, thought & desire is the main source of imagination because all imaginations are seen to be engaged in projection. Humans use imagination; or in other words, every person uses imagination in diverse ways. Deluded humans use imagination by focusing predominantly on body and sensory proximity. This is the helplessness under delusion. These imaginations are definitely eager to become systematic. Only then, acceptance of the possibility of methodical analysis and definite visualisation & thoughts occurs. Until then, the focus of possibilities is within the boundaries of pleasant, health & profit. This is the boundary within which the deluded actions begin and end.

3 Nov

Table - 1

**जागृत जीवन के 122 आचरण**

**122 conducts of awakened jeevan**

2 x (1 + 2 + 8 + 18 + 32) = 2 x 61 = 122

| अक्षय बल की क्रियाएं  (प्रत्यावर्तन)  Activities of inexhaustible power (reflection) | | अक्षय बल का नाम  Name of inexhaustible power | जीवन का अवयव  Constituent of jeevan | अक्षय शक्ति का नाम  Name of inexhaustible force | अक्षय शक्ति की क्रियाएं  (परावर्तन)  Activities of inexhaustible power  (manifestation) | |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| **अनुभव**  **Realisation** | | आत्मा  Atma | मध्यांश  Nucleus | प्रमाण  Evidence | **प्रामाणिकता**  **Authenticity** | |
| **बोध**  **Enlightenmen**t | | बुद्धि  Buddhi | प्रथम परिवेश  First orbit | ऋतंभरा  Resoluteness | **संकल्प**  **Resolve** | |
| 1. आनन्द (Bliss) | | 1. धी (Dhee) | |
| 2. अस्तित्व  Existence | | 2. धृति (Dhruti) | |
| **चिंतन**  **Contemplation** | | चित्त  Chitta | द्वितीय परिवेश  Second orbit | इच्छा  Desire | **चित्रण**  **Visualisation** | |
| 1. श्रुति (Revelation) | | 1. स्मृति (Memory) | |
| 2. मेधा (Intellect) | | 2. कला (Art) | |
| 3. कांति (Radiance) | | 3. रूप (Form) | |
| 4. निरीक्षण (inspection) | | 4. गुण (Attributes) | |
| 5. संतोष (contentment) | | 5. श्री (abundance) | |
| 6. प्रेम (love) | | 6. अनन्यता (non-dualness) | |
| 7. वात्सल्य (guidance) | | 7. सहजता (effortlessness) | |
| 8. श्रद्धा (reverence) | | 8. पूज्यता (devoutness) | |
| **तुलन**  **Deliberation** | | वृत्ति  Vritti | तृतीय परिवेश  Third orbit | विचार  Thought | **विश्लेषण**  **Analysis** | |
| 1. विद्या (Learning) | | 1. प्रज्ञा (Intelligence) | |
| 2. कीर्ति (Repute) | | 2. विचार (thought) | |
| 3. निश्चय (determination) | | 3. धैर्य (patience) | |
| 4. शांति (Peace) | | 4. दया (kindness) | |
| 5. कृपा (Grace) | | 5. करुणा (Compassion) | |
| 6. दम (uprightness) | | 6. क्षमा (forgiveness) | |
| 7. तत्परता (readiness) | | 7. उत्साह (enthusiasm) | |
| 8. कृतज्ञता (gratitude) | | 8. सौम्यता (humility) | |
| 9. गौरव (Glory) | | 9. सरलता (Simplicity) | |
| 10. विश्वास (Trust) | | 10. सौजन्यता (concordance) | |
| 11. सत्य (Truth) | | 11. धर्म (Dharma) | |
| 12. न्याय (Justice) | | 12. संवेदना (Sensitivity) | |
| 13. तादात्मता (absolute-oneness) | | 13. साहस (Intrepidity) | |
| 14. संयम (restraint) | | 14. नियम (law) | |
| 15. वीरता (courage) | | 15. धीरता (fortitude) | |
| 16. भाव (value) | | 16. संवेग (impetus) | |
| 17. जाति (species) | | 17. काल (time) | |
| 18. तुष्टि (satiation) | | 18. पुष्टि (validation) | |
| **आस्वादन**  **Taste** | | मन  Mun | चतुर्थ परिवेश  Fourth orbit | आशा  Hope | **चयन**  **Selection** | |
| 1. भक्ति (devotion) | | 1. तन्मयता (immersion) | |
| 2. ममता (care) | | 2. उदारता (generosity) | |
| 3. सम्मान (respect) | | 3. सौहाद्र (cordiality) | |
| 4. स्नेह (affection) | | 4. निष्ठा (dedication) | |
| 5. पुत्र-पुत्री (son-daughter) | | 5. अनुराग (devotedness) | |
| 6. स्वामी/साथी (master) | | 6. दायित्व (responsibility) | |
| 7. सेवक/सहयोगी (associate) | | 7. कर्तव्य (duty) | |
| 8. स्वायत्त (self-reliance) | | 8. समृद्धि (Prosperity) | |
| 9. हित (health) | | 9. स्वास्थ्य (wellness) | |
| 10. प्रिय (pleasant) | | 10. प्रवृत्तियाँ (tendencies) | |
| 11. उल्लास (elation) | | 11. हास (merriness) | |
| 12. शील (modesty) | | 12. संकोच (politeness) | |
| 13. गुरु (guru) | | 13. प्रामाणिक (authentic) | |
| 14. शिष्य (disciple) | | 14. जिज्ञासु (inquirer) | |
| 15. भाई-मित्र (brother-friend) | | 15. प्रगति (progress) | |
| 16. बहन (sister) | | 16. उन्नति (advancement) | |
| 17. स्वीकृति (acceptance) | | 17. स्वागत (reception) | |
| 18. रूचि (interest) | | 18. पहचान (recognition) | |
| 19. सुख (happiness) | | 19. स्फूर्ति (motivation) | |
| 20. पति/पत्नि (husband, wife) | | 20. यतीत्व/सतीत्व (diligence, steadfastness | |
| 21. माता (mother) | | 21. पोषण (nurturing) | |
| 22. पिता (father) | | 22. संरक्षण (protection) | |
| 23. मृदु/कठोर (soft, hard) | | 23. वहन/संवहन (bearability) | |
| 24. शीत-उष्ण (cold, hot) | | 24. पोषण (nourishing) | |
| 25. खट्टा | | 25. पोषण (nourishing) | |
| 26. मीठा | | 26. पोषण (nourishing) | |
| 27. चिरचिरा | | 27. पोषण (nourishing) | |
| 28. कडुआ | | 28. पोषण (nourishing) | |
| 29. कसैला | | 29. पोषण (nourishing) | |
| 30. खारा | | 30. पोषण (nourishing) | |
| 31. सुगन्ध/दुर्गन्ध | | 31. श्वसन/निःश्वसन (nourishing) | |
| 32. सुरूप/कुरूप | | 32. स्वागत/अस्वागत (affinity, otherness) | |

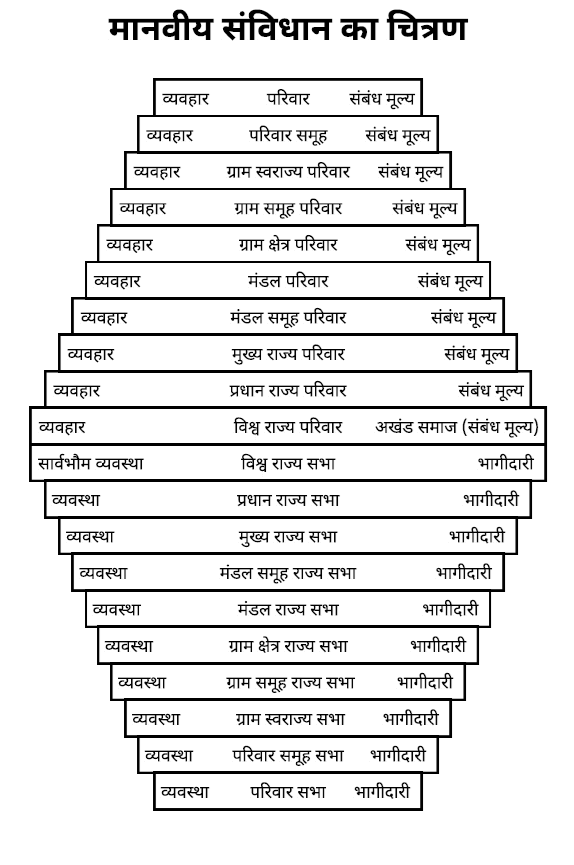


Table - 2

**Visualisation of humane constitution**

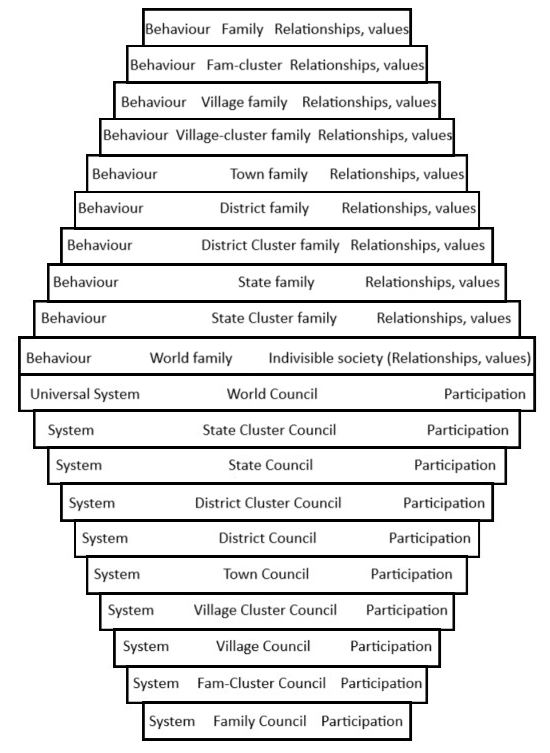


Table - 2

Visualisation of humane constitution

| Behaviour | Family | Relationships, values |
| --- | --- | --- |
| Behaviour | Family cluster | Relationships, values |
| Behaviour | Village family | Relationships, values |
| Behaviour | Village cluster family | Relationships, values |
| Behaviour | Town family | Relationships, values |
| Behaviour | District family | Relationships, values |
| Behaviour | District cluster family | Relationships, values |
| Behaviour | State family | Relationships, values |
| Behaviour | State cluster family | Relationships, values |
| Behaviour | World family | Relationships, values |
| Universal System | World governance council | Participation |
| System | State cluster governance council | Participation |
| System | State governance council | Participation |
| System | District cluster governance council | Participation |
| System | District governance council | Participation |
| System | Town governance council | Participation |
| System | Village cluster governance council | Participation |
| System | Village self-governance council | Participation |
| System | Family cluster council | Participation |
| System | Family council | Participation |

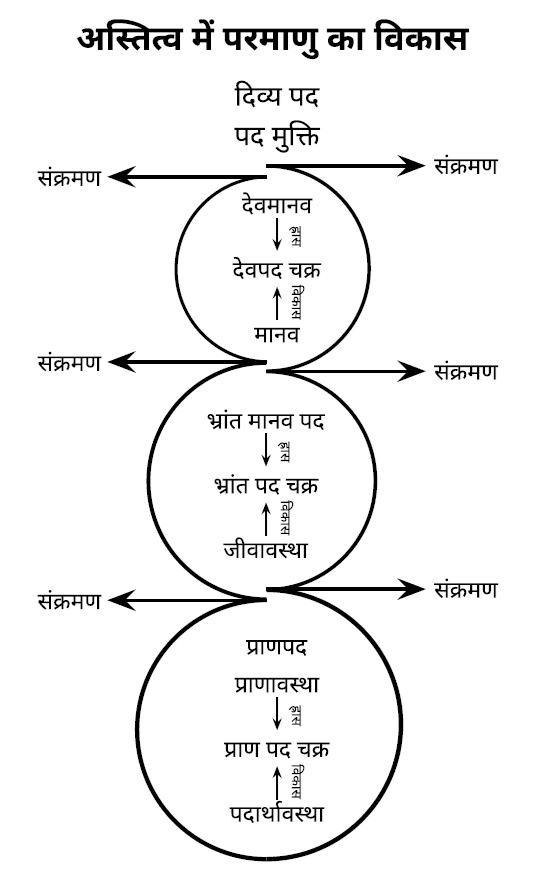


Table - 3

Progression of atom in existence

जागृतिपूर्ण जीवन चित्रण में यह तथ्य सुस्पष्ट है कि न्याय, धर्म, सत्य उसका साक्षात्कार, बोध, अनुभव ही अध्ययन और अनुसंधान का लक्ष्य और कार्य है । इन्हीं कार्य रूप के आधार पर अस्तित्व और जीवन अवधारणा में स्थापित होना सफल अध्ययन का द्योतक और कसौटी भी है । इसी के आधार पर स्वायत्त मानव का सर्वेक्षण, निरीक्षण और परीक्षण होना स्पष्ट हो जाता है । स्वायत्त मानव ही अस्तित्व में अनुभव सहज जागृति का धारक-वाहक होना स्पष्ट है । इस प्रकार अध्ययन सहज रूप में जीवन और सह-अस्तित्व में अनुभव बोध की अभिव्यक्ति और प्रमणित होने के क्रम में आत्मा अस्तित्व में अनुभूत होना, जीवन में केन्द्रीय होना, मध्यस्थ क्रिया और मध्यस्थ बल सम्पन्नता का स्वीकृत होना, परम तृप्त होना है । जीवन रचना मध्यांश सहज मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति संतुलन के अर्थ में सदा-सदा प्रयुक्त रहता ही है । यही जागृत मानव परंपरा में प्रमाण है । मध्यस्थ क्रिया समुच्चय क्रम से जीवनी क्रम और जीवन जागृति क्रम व्यक्त होता है । इसी क्रम में जागृत होना जीवन सहज प्रवृत्ति, प्रयास, आवश्यकता के योग-संयोग विधि से सम्पन्न होता है । यही अनुसंधान शोध और अध्ययन के लिए भी संयोजक तत्व है । यह तत्व सदा-सदा जीवन प्रतिष्ठा में कार्यरत रहता ही है। इसकी प्रखरता के आधार पर ही अनुसंधान, शोध, अध्ययन सहज हो जाता है । इस प्रकार यह सुस्पष्ट हो जाता है कि आत्मा अध्ययन विधि से अस्तित्व में अनुभूत होता है । दूसरा, अनुसंधान विधि से भी अस्तित्व में अनुभूत होना पाया जाता है।

It is very clear in the visualisation activity of the completely awakened jeevan that direct perception, enlightenment & realisation of justice, *dharma* & truth is indeed the goal and occupation of study and exploration. Based on this occupation, the establishment of existence and jeevan in concept is indication, as well as the test, of successful study. It is on this basis that the survey, inspection and examination of autonomous humans becomes clear. It is clear that only autonomous humans are the bearer-holder of awakening, or realisation in existence. In this manner, enlightenment of realisation of jeevan and coexistence is achieved in the course of study; and in course of expression and evidence thereof, realisation in existence by *atma*, acceptance of its being central in jeevan, its being endowed with mediative activity and mediative strength, and ultimate bliss, is attained. Mediative activity of the nucleus of jeevan is always working for balance of mediative strength & mediative power. This itself is the evidence in awakened human tradition. In the course of mediative activity aggregation, living-order progression and awakening progression is expressed. On this course itself, awakening is accomplished by confluence of natural inclination, endeavour and need. This itself is the connecting element for exploration, inquiry and study. This element is always active in jeevan. Exploration, inquiry & study is indeed facilitated by its intensity. Thus, it becomes abundantly clear that *atma* attains realisation in existence by the method of study. This realisation can be attained by the method of exploration also.

अनुसंधान विधि से भी सर्वप्रथम अस्तित्व में बोध होना देखा गया है इसके उपरान्त ही आत्मा अस्तित्व में अनुभूत होना देखा गया है । अध्ययन विधि से भी यही स्थिति अर्थात् पहले बोध तदोपरांत अनुभव होना पाया जाता है । इन दोनों विधियों में से अध्ययन विधि लोकव्यापीकरण के लिए कम समय में बोध होने की स्थिति बनती है । अनुसंधान विधि में प्रवृत्त होने के लिए व्यक्ति में लक्ष्य सम्मत जिज्ञासा का होना अनिवार्य है । जब अध्ययन विधि से सम्पूर्ण प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है । प्रश्न स्थली रिक्त होना, उसी स्थली में सम्पूर्ण उत्तर स्थापित होना, अध्ययन और अध्यापन का संयोग और फलन है । प्रश्न विहीन स्थिति में अनुसंधान का आधार नहीं बनता । इस प्रकार परंपरा में सभी प्रश्नों का उत्तर अध्ययन विधि से हर मानव में हर स्थिति, परिस्थितियों में सम्पूर्ण प्रश्नों का उत्तर सह-अस्तित्व सहज विधि से समीचीन है ।

Even in the exploration method, it has been seen that enlightenment of the existence happens first; and only after that, the realisation of *atma* in existence happens. Same is observed while following the study method also, that is, the enlightenment first, and thereafter the realisation. Out of these two methods, during dissemination, it takes less time for enlightenment when the study method is followed. To opt for the method of exploration, it is essential for the person to have curiosity in accordance with the goal. By the method of study, when one gets answers to all their questions, there are no unanswered questions. In place of questions, now one has all the answers; it is the result & concurrence of studying & teaching. By the method of study too, answers to all the questions can be obtained; it is the result of study and teaching. In the absence of questions, the need for exploration does not arise. In this manner, answers to all the questions in tradition are in close proximity to every human by the co-existential method, under all situations and circumstances.

अनुसंधान विधि एवं अध्ययन विधि से पहले बोध ही होता है, तदोपरांत ‘‘बोध’’ का आत्मा में अनुभव होता है । अनुभव के उपरान्त ‘‘अनुभव सहज बोध’’ अध्ययन एवं अनुसंधान विधि में एक जैसा होता है एवं एक ही होता है । इसमें मुख्य तथ्य यही है यथार्थता, वास्वतिकता, सत्यतापूर्ण विधि से अध्यापन सामग्री, वस्तु, प्रक्रिया परिपूर्ण रहना आवश्यक है । अनुसंधान के लिये अज्ञात प्रश्न चिन्ह अति आवश्यक है । हर अनुसंधान को अध्ययन और अध्यापन कार्य विधि से लोक व्यापीकरण होना सुगम हो जाता है । इस प्रकार अनुभव के अनन्तर ही अनुभव ‘बोध’ होना देखा गया है । यह हर व्यक्ति में होना समीचीन है ।

Both, by exploration method and by study method, the enlightenment happens first; thereafter, realisation of this enlightenment happens in *atma*. After realisation, the “enlightenment of realisation” is similar, or same, in both the methods. The main point here is that the material, content & process of teaching must be replete with reality, actuality & truth. For exploration, it is most essential to have unanswered questions. Dissemination of every exploration can be achieved naturally by activities of studying and teaching. In this manner, the state of “enlightenment of realisation” has been observed only after the state of realisation. This can be achieved by every person.

जीवन सहज जागृतिपूर्ण प्रक्रिया में देखा गया है कि सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व में आत्मा ही अनुभूत होता है । **फलस्वरूप आत्मा सहज मध्यस्थ क्रिया ही मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति के रूप में प्रभाव क्षेत्र का होना देखा गया है । इसी प्रभाव क्षेत्र वश ‘अनुभव’ का बोध बुद्धि में ‘अनुभव’ का साक्षात्कार चित्त में ‘अनुभव’ का सार्थकता तुलन रूपी वृत्ति में (न्याय, धर्म, सत्य) और ‘अनुभव’ का आस्वादन (मूल्य रूप में) मन में प्रभावित और स्वीकृत होता है । उसी क्षण से ‘निष्ठा’ की निरन्तरता पायी जाती है । ‘निष्ठा’ का तात्पर्य अनुभव प्रभाव का निरंतरता में ही जीवन की सभी क्रियाएँ अभिभूत रहने से है।** अनुभव प्रभाव क्षेत्र स्वयं ही निरंतर होना पाया जाता है क्योंकि अस्तित्व में अनुभव से अधिक कुछ शेष नहीं है । सम्पूर्ण अस्तित्व ही अनुभव गम्य होने के आधार पर मध्यस्थ क्रिया का प्रभाव क्षेत्र सदा-सदा के लिए जीवन क्रिया रूपी समस्त परावर्तन-प्रत्यावर्तन क्रिया में संतुष्ट, तृप्त, समाधानित होना देखा गया है । यही जीवनापेक्षा सहज सुख, शांति, संतोष, आनंद से भी इंगित है ।

In the activities of complete-awakening, it has been seen that it is the *atma* indeed which attains realisation in coexistence. **Consequently, the field of mediative activity of *atma* itself has been seen to manifest as mediative strength & mediative power. It is due to this field indeed that enlightenment of ‘realisation’ in *buddhi*, direct perception of ‘realisation’ in *chitta*, meaningfulness of ‘realisation’ in *vritti* in the form of deliberation (justice, dharma, truth) and tasting (in the form of values) of ‘realisation’ in *mun* becomes effective and accepted. There is continuity of ‘dedication’ from that very moment. ‘Dedication’ means - all activities of jeevan remaining ceaselessly influenced under the effect of realisation.** Field of realisation itself is ceaseless as there is nothing more in existence than realisation. As the whole existence is realisable by jeevan, the field of mediative activity is seen to be contended, fulfilled & resolved in activities of jeevan as all the activities of manifestation & reflection. Whole existence is realisable by jeevan due to which, the field of mediative activity, all manifestation & reflection in the form of activities of jeevan, is seen to be contended, fulfilled and resolved. This itself is jeevan expectation, and is also denoted by happiness, peace, contentment & bliss.

जीवन जागृति सहज महिमा ही है मानवापेक्षाओं को परंपरा में साक्षित कर देता है । परंपरा में साक्षित करने का एक ही उपाय है - व्यवहार । मानव परंपरा में व्यवहार प्रमाण को प्रस्तुत करते समय शरीर का होना सह-अस्तित्व सहज व्यवस्था है । इसीलिये जागृत जीवन परंपरा में ही अथवा जागृतिपूर्ण परंपरा में ही हर परिवार मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को साक्षित कर देता है, सत्यापित कर पाता है । हर व्यवहार में ऐसा सत्यापन मूल्यांकित होता है । इन तथ्यों के आधार पर जागृतिपूर्ण मानव परंपरा की आवश्यकता, उसकी संभावना और इन दोनों का संयोग विधि समीचीन है ।

It is the magnificence of awakening of jeevan which produces the evidence of fulfilment of human-expectations in tradition. There is only one way to achieve this - behaviour. While producing evidence of behaviour in human tradition, availability of the human body is provisioned in coexistence. Thus, it is in the awakened tradition only that every family person produces evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, and is able to truthfully declare so. Such declaration is verifiable in all behaviour. Based on these facts, the need and possibility of awakened human tradition exists and confluence of both (need and possibility) also exists in existence.

ऊपर कहे गये तथ्यों, विश्लेषणों, संप्रेषणा के अनुसार यह सुस्पष्ट है कि मानव कुल का शरण और रक्षा अनुभव मूलक परंपरा पर ही आधारित है । इसमें और चूकने की स्थिति में मानव का इस धरती पर होने के मुद्दे पर ही प्रश्न चिन्ह लग चुका है ।

Based on the above-mentioned facts, analysis & communication, it is clear that the refuge and protection of humankind lies solely in the realisation-rooted tradition. In case of any more negligence, it is doubtful if the humans will survive on this planet.

अनुभव मूलक परंपरा ही न्याय, धर्म (अखण्ड समाजिकता), सत्यपूर्ण प्रणाली, पद्धति, नीति सहित विधि से सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी होना स्वाभाविक है । मानव कुल में यह तीनों स्त्रोत अर्थात् न्याय, धर्म, सत्य अक्षुण्ण रूप में मध्यस्थ नित्य वैभव होना देखा गया है । अस्तित्व अक्षुण्ण रूप में मध्यस्थ विधि से ही कार्यरत है। इसीलिये अस्तित्व में अनुभव सहज फलन ही है मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्तियों का प्रभावित होना । मूलत: मध्यस्थ प्रभाव क्या है ? इसका उत्तर अस्तित्व में यही है सम-विषमात्मक अतिरेकों को सामान्य बनाए रखने में नियोजित बल और शक्ति। बल और शक्ति अविभाज्य हैं । ऐसी बल और शक्ति क्रिया का ही स्वरूप होना देखा गया है ।

It is only in the realisation-rooted tradition that participation in the universal system happens naturally by way of process, procedure & policy based on justice, dharma (indivisible sociality) & truth. In humankind, all these three sources, e.g., justice, dharma & truth, have been seen as the ceaseless, eternal grandeur of the mediative. Existence is ceaselessly functional only by way of the mediative. Thus, realisation in existence naturally leads to mediative activity, mediative strength & mediative power becoming effective. So what really is the mediative effect ? Its answer is - strength & power for normalising the generative & degenerative excesses in existence. Strength & power are inseparable. It has been seen that such strength and power are in reality the activity itself.

सम और विषम का नियंत्रण अथवा अतिरेकों का नियंत्रण परमाणु में निहित नाभिकीय अंश का वैभव होना स्पष्ट है । हर परमाणु में परिवेशीय अंशों का निश्चित दूरी से अधिक या कम होना ही सम-विषम संज्ञा है । यह सदा-सदा नाभिकीय बल और शक्ति के प्रयोग विधि से संतुलित रहना दिखाई पड़ता है -समझ में आता है । यह संतुलन परमाणु-गठन रूपी इकाई पर होने वाला ‘प्रभाव’ है । यही मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल और मध्यस्थ शक्ति का परिचय और प्रमाण है । क्योंकि हर परमाणु संतुलित होने की स्थिति में ही स्वभाव गति के रूप में वर्तमान होना, फलस्वरूप उपयोगिता-पूरकता विधि से परस्परता में विकास, उदात्तीकरण, रासायनिक उर्मि और रचना-विरचनाएँ स्पष्ट हुई । हर विरचना भी पूरकता क्रम में ही होना और पुनर्रचना के लिए पूरक होना देखा गया है । यह प्राणावस्था में बीजानुषंगीय विधि से स्पष्ट है ।

The regulation of generation and degeneration, or the regulation of excesses, is clearly the grandeur of the central particle of the atom. Increase or decrease in the precise distance of orbital particles in an atom is referred to as generation or degeneration. It is seen - or understood - that it remains always in equilibrium by the application of the strength and power of the nucleus. This equilibrium is the ‘effect’ on the entity which is constituted as an atom. This is indeed the first clue to, and evidence of, the mediative activity, mediative strength and mediative power. Every atom is present in its natural motion only in a state of equilibrium, leading to mutual development, evolution, chemical ripple, and compositions & decompositions, by way of usefulness & complementariness - all this became clear. It has been seen that all decompositions are also in the chain of complementariness, and are useful for future compositions. In the plant order, this is apparent as seed-conformance.

भौतिक रचना में संतुलन का स्वरूप भार बंधन और अणुबन्धन के वैभववश अथवा वैभव के रूप में देखने को मिलता है । यही अणुएँ रासायनिक उर्मि सहित रासायनिक रचनाओं के रूप में प्रवृत्त रहना देखा गया है । ऊपर ‘बंधन’ का जो शब्द प्रयोग किया गया है यह चैतन्य प्रकृति में ही होने वाली भ्रम बन्धन के अनुरूप में नाम दिया गया है । नाम मानव ही देता है । किसी भी नाम का सृजेता मानव ही है । जबकि हर परमाणु स्वयं स्फूर्त विधि से अणु के रूप में, हर अणुएँ स्वयं स्फूर्त विधि से रचना के रूप में वैभवित रहना देखा गया है । परमाणुओं में स्वभाव गति अंशों का स्वयं-स्फूर्त गठन (एक से अधिक अंश स्वयं स्फूर्त विधि से परस्पर अच्छी दूरी में रहकर कार्यशील रहना) उसके संतुलन सहित आंकलित होती है। स्वभाव गति का परिभाषा ही है यथा स्थिति में संतुलन, विकास में प्रवृत्ति । यही भौतिक-रासायनिक संसार में सम्पूर्ण क्रियाकलाप देखने को मिलता है । यह हर रचना-विरचना में होने वाला अध्ययन है । और विरचना भी पूरकता क्रम में सार्थक होना देखा जाता है । यह पूरकता भौतिक-रासायनिक रचना-विरचना के संबंध में है । क्योंकि अणु और अणु रचित रचनाएँ सम्पूर्ण अस्तित्व में यह दो ही प्रकार के रचना-विरचना होना सुस्पष्ट है । परमाणु का नियंत्रण तत्व परमाणु में निहित है और अणु का नियंत्रण तत्व अणु में ही निहित रहता है । रचनाओं का नियंत्रण तत्व रचनाओं में ही निहित रहता है । पूरकता विधि परस्परता में प्रभावशील रहता ही है । नियम से रचना, नियम से विरचना होना सुस्पष्ट है । यह पूरकता नियम रचना-विरचना रत रासायनिक-भौतिक संसार में देखने को मिलता है । सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी है ।

Equilibrium in physical compositions is seen to be due to the grandeur of, or as the grandeur of, gravitational bondage and molecular bondage. It has been seen that these same molecules, along with the chemical ripple, are inclined towards chemical compositions. The word ‘bondage’ which has been used above, has been named analogous to the delusion-bondage state of the sentient-nature. Name is given only by humans. Humans are the creator of all names, while development into molecules, and molecules into compositions, in a self-driven manner has been seen as continuous grandeur of the atoms. Natural motion of an atom is evaluated as its self-driven constitution (more than one particle with mutually specific distance, and active in this form) together with its equilibrium. Equilibrium in its state of being, and inclination for development - this itself is the definition of natural motion. This is all the activity that is seen in the physico-chemical world. This is the study of each composition & decomposition. Decomposition, too, is seen to be meaningful in the chain of complementariness. This complementariness is in the context of physico-chemical compositions & decompositions because it is absolutely clear that atoms and compositions made up of atoms, only these two types of composition & decomposition happen in existence. ‘Regulating element’ of an atom is inherent in the atom itself, and the ‘regulating element’ of a molecule is inherent in the molecule itself. ‘Regulating element’ of the compositions is inherent in the compositions. Complementariness is always effective in mutual interactions. It is absolutely clear that compositions and decompositions both follow laws. This law of complementariness is visible in the physico-chemical world which is ever engaged in composition & decomposition. Coexistence is ever-effective.

भौतिक-रासायनिक संसार क्रम में विकास क्रम को प्रकाशित करने के लिये सर्वाधिक पदार्थ रूपी द्रव्य और वस्तु प्रवृत्त रहना दिखाई पड़ता है । इसी क्रम में अत्यल्प वस्तु परमाणु भी गठनपूर्णता के लक्ष्य की ओर होना अस्तित्व के साक्ष्य के आधार पर स्पष्ट होता है । गठनपूर्णता का महिमावश ही चैतन्य पद, चैतन्य इकाई के रूप में जीवन होना स्पष्ट हो चुका है ।

Most of the material in the form of objects & atoms, in the cycle of the physico-chemical world, tend to exhibit the development progression. In this chain, a very small proportion of atoms are towards the goal of constitution completeness - this becomes clear by understanding the existence. It has become clear that sentient plane is due to the magnificence of constitution completeness and jeevan is the sentient entity.

रचनाओं में विकास (श्रेष्ठता) का व्याख्या इस धरती पर विविध स्वरूप में प्रमाणित हो चुकी है । यह सब रासायनिक ऊर्मी उत्सव सहज रचनाएँ अण्डज, पिण्डज और उद्भिज परंपरा के रूप में वर्तमानित है । यह सब रासायनिक संसार के रचना वैभव होना दिखाई पड़ती है । जबकि पदार्थावस्था की सभी रचनाएँ परिणामानुषंगीय विधि से सम्पन्न होते हुए देखने को मिलता है । परिणाम मूलत: परमाणु में ही अंशों के संख्या भेद से देखने को मिलता है । ऐसे परिणाम के आधार पर परमाणुओं की प्रजाति होना, फलस्वरूप रचनाएँ होना सुस्पष्ट है । इस विश्लेषण और अध्ययन से यह स्पष्ट हो गई कि स्वभाव-गति प्रतिष्ठा में ही रचना प्रवृत्ति होती है और विरचना प्रवृत्ति होती है । हर विरचनाएँ पुनर्रचना की वस्तु रहता ही है । रचनाएँ विरचित वस्तुओं-द्रव्यों से रचित ही है । Development in compositions (excellence) has been evidenced on this earth in various forms. All these compositions which are the rejoice of chemical ripple, are present in tradition in the form of oviparous, viviparous and ovoviviparous. It is seen that all these compositions are the grandeur of the chemical world, while all compositions of the material order are formed by way of constitution conformance. Result (constitution) is seen basically as the difference in the number of particles in an atom. It is absolutely clear that various types of atoms, eventually the various compositions, are based on such result. By this analysis and study, it has become clear that the inclination for compositions as well as for decompositions, is there only in natural motion. Each decomposition is the source of re-composition. All compositions are composed from the material of decomposed objects only.

इस प्रकार से विरचनाएँ पूरकता विधि-नियम, कार्य, महिमा और प्रतिष्ठा को अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में प्रकाशित किये हुए हैं । इसका दृष्टा मानव ही है । आवेशित गति में विरचना प्रवृत्ति होती है, रचना प्रवृत्ति नहीं होती । इससे यह भी स्पष्ट हो गई कि हर विरचना प्रवृत्ति रचना प्रवृत्ति की पोषक होना पाया जाता है । यह आवश्यक भी है । सह-अस्तित्व नियम के अनुसार, प्रभाव के अनुसार समृद्ध धरती, तभी स्वरूपित होती है अथवा समृद्धि के रूप में धरती जब सजती है, रचना, विरचना रूपी कार्य अनूस्युत विधि से एक-दूसरे के पूरक होते हुए समृद्ध होता हुआ और समृद्धि सहज यथा स्थिति को देखने में आता है । इस धरती में यह पूर्णतया प्रमाणित है ही क्योंकि भौतिक संसार की सम्पूर्ण रचनाएँ परिणामानुषंगीय विधि से, प्राणावस्था की सम्पूर्ण रचनाएँ बीजानुषंगीय विधि से और जीवावस्था और ज्ञानावस्था की शरीर रचनाएँ वंशानुषंगीय विधि से परंपरा के रूप में वैभवित रहना हर सामान्य व्यक्ति की समझ में आता है । In this manner, decompositions exhibit method & law of complementariness, activity, magnificence and eminence of existence as coexistence. Only humans are its perceiver. In excited motion, there is a tendency for decomposition, not for composition. From this, it also becomes clear that each tendency for decompositions eventually caters to the tendency for compositions. It is essential, too. According to the law of coexistence, and the effect of coexistence, when an enriched earth is formed, or when the earth is decorated in the form of enrichment, (then) the ceaseless activity of composition & decomposition being complementary to each other, getting enriched, and being in state of enrichment, is seen. All this is completely evidenced on Earth because continuous grandeur in the form of tradition - of all compositions of the physical world by constitution conformance, all compositions of the plants order by seed conformance, and body-compositions of animal order & knowledge order by species conformance - all this can be understood by any common man.

चैतन्य प्रकृति में गति प्रतिष्ठा जीवनी क्रम विधि से जीवसंसार में, वंशानुषंगीय कार्यकलापों को प्रमाणित करने के क्रम में सार्थक दिखाई पड़ती है । इसका तात्पर्य यही हुआ कि वंशानुषंगीय विधि से निश्चित कार्यकलाप को अनुमोदित करने वाला जीवन प्रवृत्ति ही जीने की आशा का स्वरूप होना स्पष्ट हुआ । वंशानुषंगीय शरीर पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों के रूप में रचित रहता ही है । उसी कार्य के प्रति अनुमोदन ही जीवनी क्रम और जीने की आशा सहज अपेक्षा और प्रतिबद्धता है । इसी विधि से जीवन और शरीर सहित जीव संसार के शरीरों का संयोग, सह-अस्तित्व कार्र्यकलाप स्पष्टतया दिखाई पड़ता है । इस विधि से हम यह अध्ययन कर पाते हैं कि जीव शरीरों में वंशानुषंगीय क्रियाकलापों को प्रमाणित करने में, कार्यरत होने में कोई न कोई उसके योग्य जीवन अपने में स्वीकार लेता है । ऐसे स्वीकृति को प्रमाणित भी कर देता है । अतएव जीवसंसार में जो वंशानुषंगीय विधि है उसके अनुसार जागृति की संभावना ही नहीं है न आवश्यकता है न ही प्रवृत्ति है फलत: प्रयासरत होने का प्रश्न नहीं है उत्तर नहीं है ।

Eminence of the motion in sentient-nature is seen to be meaningful by way of living world progression in animal order, in the chain of evidencing species-conforming activities. In other words, it thus becomes clear that the tendency of jeevan - in consenting to specific, predefined activities as per species conformance - itself is the true form of ‘hope of living’. Composition of the species conformant body is in the form of five sensory organs and five work organs. Consent to such (species-conforming) activity is indeed the living-world progression and expectation of, and commitment for, the ‘hope of living’. It is in this manner that activities of the animal order as coexistence of jeevan & body, and their activities in coexistence as such, are clearly seen. In this manner, activities of animal-order as coexistence of jeevan and body, and their activities in existence are clearly seen. In this manner, we humans are able to study that to evidence species conforming activities in animal bodies, there is always some jeevan who accepts the responsibility for such activities; and is even able to produce evidence of such acceptance. Thus, the species conformance method which exists in the animal order has no possibility of awakening, neither there is a need, nor tendency; as a result, even the question doesn’t arise regarding lack of effort for the same, so there are no answers also.

ज्ञानावस्था की इकाई सह-अस्तित्व में केवल मानव है । ज्ञानावस्था का तात्पर्य ही है जीवन्त मानव शरीर रचना पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेेन्द्रियों सीमागत कार्यकलापों के अतिरिक्त तथ्य को उद्घाटित करना । मानव शरीर रचना गर्भाशय विधि से होना देखा गया है । गर्भाशय में भ्रूण रचना डिम्ब और शुक्र कीट संयोग विधि से होना भी ज्ञात हो चुका है । डिम्ब और शुक्रकीट मूलत: प्राण-कोषाओं में नीहित प्राण सूत्रों का ही रचना है । इस रचना में अर्थात् उभय कीट रचना संयुक्त रूप में ही शरीर रचना सूत्र रूप में स्थापित रहती है । इसी कारण वश उभयलिंगी (स्त्री व पुरूष शरीर) क्रम बना ही रहता है । इसका गवाही उभयलिंगी शरीर रचना होती है । इस प्रकार वंशानुषंगीय रचना मूलत: उभय कीट में समायी हुई शरीर रचना सूत्र पर आधारित रहना स्पष्ट है । इसी क्रम में मानव शरीर का भी रचना सम्पन्न हुआ रहता है । मानव शरीर रचना में अंतर यही है समृद्धिपूर्ण मेधस रचना रहता है इसी के आधार पर जीवन, जीवनी क्रम से आगे जागृति क्रम में आरूढ़ होता है । आदिकालीन मानव से अभी तक किये गये कृत्यों और परम्पराओं को देखने से यह साक्षित होता है । जागृति क्रम में आरूढ़ होने का साक्ष्य, शरीर को जीवन समझते हुए भी शरीर कृत्यों से तृप्त न होना, अव्यवस्था की समझ से पीड़ा होना, अन्याय और समस्या की पीड़ा से पीड़ित होना । एक भाग इन पीड़ाओं से विस्मृत होने के लिये प्रलोभनों-आस्थाओं को अपनाता हुआ देखा गया ।

The only units in the knowledge order in coexistence are humans. In addition to the activities bordering the five sensory and five work organs in an alive human body, to unveil something beyond it - this is the meaning of knowledge order. It has been seen that the human body gets formed in the womb by way of pregnancy. It is also known that the embryo gets formed in the womb as a result of the fusion of ovum (egg) and sperm gametes. Basically, ovum and sperm are the compositions of *prana sutras* inherent in the biological cells. The code of human body composition lies in the conjunction of both these gametes. It is due to this that the continuity of tradition of both the genders (female and male bodies) is maintained. Continuity of formation of bodies of both the genders in tradition is its evidence. In this manner, it is clear that the formation of the species conformant bodies are based on the code contained in both the gametes. On this course, formation of human bodies also continues. The only difference is that the human body has a fully developed brain due to which jeevan moves ahead from living-world progression to awakening progression. All the actions and traditions of humans since ancient times till now, is its testimony. Assuming the body to be the jeevan, but still not getting fulfilled by bodily actions; being in anguish due to prevailing disorderliness; and being in anguish due to injustice and problems, all this is the testimony of moving ahead in awakening progression. To forget this anguish, one section (of humans) is seen to be clinging to temptations and faiths.

परंपरा के रूप में मानव बहुमुखी प्रवृत्तियाँ, कल्पनाशीलता और कर्म-स्वतंत्रता जैसी मौलिक स्वत्व के आधार पर फैलता ही गया । ऐसा विविध आयामों, दिशा, कोणों, परिपेक्ष्यों के क्रम में फैला हुआ परंपरा में, से, के लिये शिक्षा, संस्कार, संविधान, व्यवस्था दूसरे भाषा में समुदाय के संस्कृति, सभ्यता, विधि-व्यवस्था के रूपों में परंपराओं का होना देखा गया है ।

Humans kept on expanding in the form of tradition on the basis of unique innateness like versatile aptitudes, imagination and free-will. Education, *sanskar*, constitution and systems in, by & for traditions expanding in such diverse dimensions, directions, angles & areas - in other words, traditions in the form of culture, civility, law & systems of sects - has been seen.

मानव शरीर का संचालन भी जीवन ही सम्पन्न करने का तथ्य सुस्पष्ट है । मानव शरीर संचालन संस्कारानुषंगीय होने के अर्थ में ही बहुमुखी परंपराएँ देखने को मिला, यह केवल मानव परंपरा में ही मिला । इसमें यह भी देखने को मिला मानव ही अपने विभूतियों का सदुपयोग और दुरूपयोग कर सकता है । क्योंकि सम्पूर्ण मानव में शुभाकांक्षा उमड़ती ही रहती है । इन उमड़ती हुई शुभाकांक्षा ध्रुवीकृत होने के ओर ही सुदूर विगत से इस दशक तक किये गये प्रयास और अभिव्यक्तियों से इसी तथ्य की पुष्टि होती है । सर्वशुभ और उसकी प्रतिष्ठा सर्वसुलभ रूप में तभी संभव होना देखा गया है कि हर बच्चे-बड़े जागृति को प्रमाणित कर दे । ऐसी लोकव्यापीकृत जागृति, लोक व्यापीकृत सर्वशुभ प्रमाण योग्य जागृति, जागृत परंपरा में, से, के लिये होना भी सुस्पष्ट हो चुकी है । जागृत जीवन में मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ शक्ति, मध्यस्थ बल के स्वरूप को समझने की विधि सहित उसका कार्य, कार्य-स्वरूप और प्रयोजनों को ज्ञात कर लेना आवश्यक है । यही शिक्षा-संस्कार का प्रयोजन है । इससे लोकव्यापीकरण कार्यक्रम में सहज गति सुलभ होगा ही।

The fact that jeevan drives the human body is absolutely clear. It has been seen that versatile traditions are there due to driving of the human body in accordance with sanskar-conformity; this is seen only in human tradition. In this, another observation is that it is only the humans who can put their powers to good-use or misuse. As the aspiration for good keeps on gushing in all human beings, all the endeavours and expressions from ancient times till this last decade of the twentieth century support the fact that these gushes of aspirations for good are in this direction only. It has been seen that universal availability of universal-good and its eminence becomes possible only when all young and old produce evidence of awakening. It is also absolutely clear by now that such accessible awakening, or the awakening capable of the evidence of universal-good, is in, by & for the awakened tradition. It is essential to figure out the method of understanding of the true form of mediative activity, mediative power and mediative strength in the awakened jeevan along with its working, way of working and purposes. This is indeed the purpose of education-sanskar. This will naturally accelerate the program of dissemination.

मध्यस्थ क्रिया को परमाणु के मध्यांश के रूप में पहचाना गया है । चैतन्य परमाणु में भी मध्यांश का होना स्वाभाविक है क्योंकि चैतन्य इकाई मूलत: एक गठनपूर्ण परमाणु ही है । इस परमाणु में विशेषता ‘गठनपूर्णता’ है । गठनपूर्णता की मौलिकता है-अणुबन्धन और भारबन्धन मुक्ति और आशा, विचार, इच्छा बन्धन का प्रकाशन और इसी क्रम में आशा, विचार, इच्छा बंधन मुक्ति ही जागृति का स्वरूप है । फलस्वरूप जागृत जीवन का निश्चित कार्यकलाप मानवीयता और मानवीयता पूर्ण परंपरा है । ऐसी चैतन्य इकाई में मध्यस्थ क्रिया का स्वरूप और कार्य भी यथा स्थिति को बनाए रखने और जीवनी क्रम, जागृति क्रम और जागृति को अक्षुण्ण बनाये रखते हुए नित्य वैभव को नियंत्रित किये रहना ही परंपरा के रूप में मध्यस्थ क्रिया सहज मौलिकता है ।

Mediative activity has been recognised as the nucleus of the atom. As the sentient entity in itself is basically a completely-constituted atom only, it is natural for the sentient atom to have a nucleus. ‘Constitution completeness’ is the distinctive feature of this atom. Freedom from molecular bonds and gravitational bonds, and exposition of bondage of hopes, thoughts and desires is the uniqueness of constitution completeness; and on this course, the liberation from bondage of hopes, thoughts and desires is the true form of awakening. Humaneness and humane tradition are the definite activities of the awakened jeevan. True form, and activity, in such a sentient unit is maintaining the state-of-being and continuity of living-world progression, awakening progression & awakening, and keeping the eternal grandeur intact - this indeed is the essence of the mediative activity in the form of tradition.

अस्तित्व में विकासक्रम विधि से सम्पूर्ण भौतिक और रासायनिक वस्तुओं और द्रव्यों का रचना लक्ष्य उसके पुष्टि में विरचना कार्य; परंपरा के रूप में होना स्पष्ट किया जा चुका है। सम्पूर्ण रचना में अणु, अणु रचित और कोषा रचित रचनाओं में अपने-अपने ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में वंशानुषंगीय मध्यस्थ क्रिया को प्रकाशित, प्रमाणित करता हुआ देखने को मिला है । इसी क्रम में परिणामानुषंगीय, बीजानुषंगीय और वंशानुषंगीय रचना एवं कार्यों के रूप में स्पष्ट है । जीवनी क्रम में ‘जीवन’ वंशानुषंगीय संतुलन और ‘त्व’ सहित व्यवस्था अर्थात् वंशानुषंगीयता के ‘त्व’ सहित व्यवस्था को प्रमाणित करने के अर्थ को स्पष्ट हुआ है और अध्ययन गम्य है । यही संतुलन और व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण ही मध्यस्थ क्रिया का होना है । मूलत: जीवन सहज चैतन्य प्रकृति में से चैतन्य पद प्रतिष्ठा को संतुलित बनाये रखना तात्विक रूप में मध्यस्थ क्रिया है क्योंकि मध्यस्थ क्रिया मध्यांश या नाभिकीय क्रिया की महिमा होना पहले से स्पष्ट है। By way of development-progression in existence, the goal of all physical and chemical objects and matter is composition, and decomposition is complementary to that; all this is in the form of tradition, has been already clarified. In all compositions, molecules, molecular compositions and cellular compositions are seen to be exhibiting and producing evidence of mediative activity in the form of orderliness along with their respective innateness. On this course, constitution conformance, seed conformance and species conformance is apparent by way of formations and activities. In living-world progression, jeevan produces evidence of balance in species as well as of innateness with orderliness of species; this fact became clear, and it is studiable. This balance, and orderliness & evidence of participation in the overall orderliness - this itself is the mediative activity. Basically, to maintain the balance of eminence in & of the sentient plane in the sentient entity, is in true sense, the mediative activity; because the fact that mediative activity is the magnificence of nucleus or the central activity, is already clear.

चैतन्य इकाई में मध्यस्थ क्रिया गठन पूर्णता और उसकी निरन्तरता को बनाये रखने में कार्यरत रहता है । इस संतुलन में आशा बन्धनरत सम्पूर्ण जीवन जो जीवनी क्रम में अपने को प्रमाणित करने में प्रवृत्त रहते हैं उनमें नियंत्रण सहित ही शरीर को जीवन्त रखने, आशानुरूप जीने की प्रतिष्ठा बनती है । यहाँ शरीर को जीवन्त बनाये रखने में ‘मध्यस्थ क्रिया’ व्यक्त होता है। जीवसंसार में यही मौलिकता है कि वंशानुषंगीयता से भिन्न और कोई कार्य एवं आचरण उस-उस शरीर को संचालित करते तक जीवन नहीं करता है अर्थात वंशानुरूप कार्य करता है । जबकि मानव संस्कारनुषंगी इकाई होने के कारण वंश विधि शरीर रचना तक ही सार्थक होना स्पष्टतया देखा गया है । अतएव मानव के सम्बन्ध में सम्पूर्ण अध्ययन जीवन सहज और संस्कार सहज क्रम में ही होता है । तभी मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी होता है ।

In the sentient entity, mediative activity is engaged in maintaining the constitution completeness and its continuity. In this balance, capability develops in all the jeevans - engrossed in bondage-of-hope, and wanting to produce evidence in living-world progression - for keeping the body alive with regulation, and to live according to hope. Here, mediative activity expresses itself in & by keeping the body alive. Uniqueness of the animal-world is that jeevan does not indulge in any activity or conduct different than that of the species to which the body belongs; in other words, indulges in activities according to the species. On the other hand, it has been clearly seen that in humans, due to their being *sanskar* conformant entities, the role of species is only within the ambits of composition of human bodies. Thus, all the study related to humans is with reference to only jeevan and *sanskar*. Only this leads to orderliness with humaneness, and participation in the overall system.

मध्यस्थ क्रिया उसकी महिमा और उसकी अक्षुण्णता को जानना-मानना-पहचानना, तद्नुसार निर्वाह करना मानव सहज मौलिकता है । मध्यस्थ क्रिया अपने आप में स्वभावगति का नित्य स्त्रोत होना सभी अवस्थाओं में पहचाना जाता है । इसी क्रम में ज्ञानावस्था में कार्यरत जीवन में भी स्वभावगति और आवेशित गति को पहचानना सहज है । इस सहजता को इस प्रकार पहचाना गया है कि मानवत्व सहित अभिव्यक्त और प्रकाशित होना मानव सहज स्वभाव गति है । अमानवीयता वादी प्रकाशन और कार्यकलाप आवेशित गति के रूप में दिखाई पड़ती है । अमानवीयतावादी प्रवृत्तियाँ संघर्ष, युद्ध, शोषण, द्रोह, विद्रोहरत रहना पाया जाता है जबकि मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार और व्यवस्था गतियाँ स्वभावगति समाधान के रूप में देखने को मिलता है ।

Knowing, believing, recognising, and fulfilling accordingly, the mediative activity, its magnificence and ceaselessness, is the uniqueness of humans. Mediative activity in itself is recognised as the eternal source of natural motion in all the four orders. Thus, recognition of the natural motion and excited motion in jeevans active in the knowledge order also is not difficult, it’s quite easy. This ease has been recognised in this way that expression and exposition with humaneness is the natural motion of humans. Inhumane expressions and activities are visible in the form of excited motion. Inhumane tendencies are in the form of being engrossed in conflicts, wars, exploitation, rebellion, revolt, while humane conduct, behaviour and orderliness are seen as the natural motions in the form of resolution.

जागृतिक्रम में आशा, विचार, इच्छा बन्धन रहते हुए मानव प्रिय, हित, लाभवादी कार्यकलापों में व्यस्त रहते हुए भी जीवन सहज नियंत्रण, शरीर को जीवंत और नियंत्रित बनाये रखने में ‘मध्यस्थ क्रिया’ कार्यरत रहता है । इसी के साथ-साथ अव्यवस्था की पीड़ा, व्यवस्था की भासपूर्वक आवश्यकता, और पाने की आशा ‘मध्यस्थ क्रिया’ के रूप में ही निर्गमित होती है । अतएव **जागृति की संभावना की ओर ध्यानाकर्षण होना ‘मध्यस्थ क्रिया’ की ही महिमा है ।**

Even in awakening-progression, while a person is in a state of bondage of hopes, thoughts & desires, and is busy in the activities pertaining to pleasant, health & profit, jeevan still controls the body, and the ‘mediative activity’ is busy in maintaining that control and in keeping the body alive. Along with this, the anguish of chaos, intuitive need & expectation of systems, flows in the form of ‘mediative activity’. Thus, **it is indeed the magnificence of ‘mediative activity’ that the attention is drawn towards the possibility of awakening.**

जागृति की आवश्यकता स्वयं ‘मध्यस्थ क्रिया’ का ही वैभव होना देखा गया है । आवश्यकता की आपूर्ति जीवन सहज अक्षय बल, अक्षय शक्ति सम्पन्नता सहित नियंत्रण रूपी ‘मध्यस्थ क्रिया’ में समाहित रहता है । इसका प्रमाणीकरण विधि और इसके उपयोग विधि और तृप्ति विधियों जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन सहज अध्ययन क्रम में लोकव्यापीकरण होना देखा गया ।

The need of awakening itself has been seen as the grandeur of ‘mediative activity’. Fulfilment of this need is inherent in the endowment with inexhaustible strength & inexhaustible power together with regulation in the form of ‘mediative activity’. It has been seen that dissemination of the methods of evidence, use and fulfilment of ‘mediative activity’ occurs when the study is pursued of the holistic view of jeevan and of holistic view of existence.

जागृति क्रम तक ‘मध्यस्थ क्रिया’ की महिमा ही है जो जागृति के लिये आवश्यकता, अनिवार्यता को स्वयं स्फूर्त विधि से स्पष्ट करता आया है। सबसे समीचीन और सुलभ तथ्य यही है पदार्थावस्था से ज्ञानावस्था तक ज्ञानावस्था में जागृतिपूर्णता तक मानव को अध्ययन करने का अवसर और स्वयं का मूल्यांकन करने का अर्हता ये दोनों ऐश्वर्य एक साथ सर्वमानव के लिये सुलभ हो गया है । जागृति में, से, के लिये अध्ययन और उसकी आवश्यकता एवं अनिवार्यता मानव सम्मुख हो चुकी है ।

While in awakening-progression, it is indeed the magnificence of the ‘mediative activity’ which has been highlighting the need and necessity of awakening in a self-driven manner. The readily available fact for its verification is that from material order to the knowledge order, and till the awakening-completeness in the knowledge order, the opportunity to study and ability to do self-evaluation - both of these are now available to all humans. Study in, by & for awakening and its need and necessity has now been presented to humankind.

जागृतिपूर्वक ही न्याय एवं समाधान पूर्ण आचरण में हर व्यक्ति पारंगत होना सहज प्रमाण है । मानवीयता मानव का वांछित वस्तु है । इसी आधार पर जीवन जागृति के सभी आयामों को, विधियों को, कार्य प्रणाली को पहले स्पष्ट किया जा चुका है जिसमें जीवन की रचना, कार्यरूप, उद्देश्य अथवा अंतिम उद्देश्य, अक्षय बल, अक्षय शक्ति, जीवन में पाँचों अवयव समुच्चय की अविभाज्यता, अस्तित्व में जीवन (चैतन्य प्रकृति) की अविभाज्यता, सह-अस्तित्व में जड़-चैतन्य प्रकृति का सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति के रूप में नित्य वर्तमान होना स्पष्ट किया गया है । यह भी स्पष्ट किया गया है अस्तित्व न तो घटता है न बढ़ता है ।

It is naturally evident that humans become proficient in justice & humane conduct only by way of awakening. Humaneness is an essential desire of humans. It is for this reason that all the dimensions, methods & processes of jeevan-awakening have been explained earlier, in which jeevan’s constitution, activities, goal and ultimate goal, inexhaustible strength, inexhaustible power, inseparability of the collective of all the five constituents of jeevan, inseparability of jeevan in existence, and ever presence of insentient-sentient nature in coexistence in the form of insentient-sentient nature saturated in the omnipotence - all this has been explained earlier. It has also been explained that existence neither reduces, nor increases.

मानव द्वारा ही भ्रमवश किये गये कार्यकलापों, कृत्यों के परिणाम स्वरूप धरती मानव निवास के लिये अयोग्य होने का क्रम आरंभ है। जागृत होने की आवश्यकता है और जीवन सहज रूप में हर व्यक्ति जागृति को स्वीकारता है । इन दोनों आवश्यकतावश जागृति और जागृति पूर्णता की ओर गतित होना अनिवार्य हुआ है । जागृत स्थिति में जीवन में कार्यरत मध्यस्थ क्रिया गठनपूर्णता सहज ऐश्वर्य को संतुलित रखते हुए न्यायपूर्ण विधि से व्यक्त होने के रूप में संतुलित, नियंत्रित और सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज, सर्वतोमुखी समाधान में, से, के लिये भास, आभास, प्रतीति अनुभूति सहज प्रमाण होनेे के रूप में कार्यरत रहता है ।

It is only the activities and actions of humans, under delusion, due to which Earth is becoming uninhabitable for human living. It is necessary to be awakened and every person, as jeevan, accepts awakening. Due to both these necessities, it has become essential for humans to move towards awakening & awakening completeness. In the state of awakening, the mediative activity of jeevan remains active for producing evidence of perception, cognition, intuition & realisation in, by & for universal systems, indivisible society & comprehensive resolution by way of expressions based on justice, while maintaining the balance of magnificence of constitution completeness.

इसी बिन्दु में सह-अस्तित्व सहज विधि से वर्तमान में विश्वास होना मध्यस्थ क्रिया का वैभव होता है । संघर्ष का तिरोभाव, सह-अस्तित्व में विश्वास होना मध्यस्थ क्रिया का प्रभाव है । ये सब प्रतीतियाँ अनुभव बोध रूप में होना देखा गया है । यह बोध जागृत परंपरापूर्वक सर्वसुलभ होता है । मध्यस्थ क्रिया सहज न्याय और धर्म (सर्वतोमुखी समाधान) व्यवहार में फलित होना स्वाभाविक होता है और प्रामाणिकता के लिये अपरिहार्यता निर्मित हो जाती है । ‘क्रिया पूर्णता’ की स्थिति में ‘मध्यस्थ क्रिया’ की महिमा है । तात्विक रूप में इस को इस प्रकार से देखा गया है न्यायान्याय, धर्माधर्म, सत्यासत्य दृष्टियाँ भ्रम बन्धन से मुक्ति; श्रम का विश्राम; न्याय, धर्म, सत्यानुभूति प्रमाण बोध होते ही स्वाभाविक रूप में कार्य व्यवहार में प्रमाणित हो जाता है । इसी के साथ-साथ अनुभव का प्रयोजन अपने आप बलवती होता है । जीवन अपने में से व्यवस्था में भागीदारी सहज विधि को स्वीकार लेता है । यह सर्वदा के लिये परंपरा में संस्कार और उपकार के प्रयोजन बोध होना पाया जाता है । यही श्रम का विश्राम स्थिति है ।

Thus by way of coexistence, this is the point of grandeur of mediative activity in the form of assurance in the present. Disappearance of conflict, and trust in coexistence is the effect of mediative activity. All these intuitions have been seen as enlightenment of realisation. This enlightenment becomes readily available to everyone by way of awakened tradition. Justice and dharma (comprehensive resolution) which emanate from mediative activity naturally become part of the behaviour, leading to strong-need for authenticity. Magnificence of ‘mediative activity’ is in the state of ‘activity-completeness’. In existential form, it has been seen like this - perspectives of justice-injustice, dharma-adharma & truth-untruth become naturally evident in work & behaviour immediately upon liberation from bondage of delusion, effortlessness of effort, and on completion of evidence of enlightenment of realisation in justice, dharma & truth. Along with this, the purpose of realisation becomes stronger in a self-driven manner. Jeevan accepts in & by itself the true form of participation in the overall system. This is forever the enlightenment of the purpose of sanskar and benevolence. This is indeed the state of effortlessness of effort.

‘आचरणपूर्णता’ चैतन्य इकाई में व्यक्त होना, प्रमाणित होना नियति सहज अभिव्यक्ति होने के कारण ही है । परिणाम का अमरत्व, श्रम का विश्राम और गति का गंतव्य सह-अस्तित्व सहज जागृति विधि सहित अभिव्यक्त होना, इसी धरती पर सुस्पष्ट हो जाता है । ‘आचरणपूर्णता’ स्थिति में मध्यस्थ क्रिया का जागृति पूर्णता सहज अर्थात् सह-अस्तित्व में अनुभव सहित प्रभाव क्षेत्र में सम्पूर्ण जीवन अभिभूत हो जाता है । इसको ऐसा देखा गया है कि जागृतिपूर्ण होते ही अर्थात् अस्तित्व में अनुभव होते ही जीवन के सभी अवयव पूर्णतया अनुप्राणित हो जाते है अर्थात् अनुभव सहज विधि से अनुप्राणित हो जाते हैं । यही बुद्धि में ‘सहज बोध’ चित में ‘सहज साक्षात्कार’, वृत्ति में ‘सहज तुलन’ एवं मन में ‘सहज आस्वादन’ नित्य प्रतिष्ठा के रूप में होना देखा गया है । इस जागृति प्रतिष्ठा सम्पन्न जीवन में चयन प्रक्रिया प्रामाणिकता से, विश्लेषण प्रक्रिया प्रामाणिकता से, चित्रण प्रक्रिया प्रामाणिकता से, संकल्प प्रक्रिया प्रामाणिकता से अभिभूत अनुप्राणित रहना देखा गया है । यही जागृति पूर्ण जीवन में मध्यस्थ क्रिया की महिमा है । जिसकी आवश्यकता, अनिवार्यता, प्रयोजनीयता कितना है, कहाँ तक है? यह हर व्यक्ति मूल्याकंन कर सकता है।

‘Conduct-completeness’ is expressed in & by the sentient entity, because such expression is aligned with destiny. Expression of immortality of result, restfulness of effort and destination of motion, along with the method of awakening in coexistence, all this becomes absolutely clear only on this planet. In the state of ‘conduct-completeness’, jeevan gets overwhelmed in & by the field of awakening-completeness, or the field of realisation of coexistence, of the mediative activity. It has been seen like this - immediately upon complete-awakening (that is, upon realisation in coexistence), all the constituents of jeevan become completely active; in other words, become active by realisation. These indeed have been seen as the continuous establishment of ‘natural enlightenment’ in *buddhi*, ‘natural direct perception’ in *chitta,* ‘natural deliberation’ in *vritti* and ‘natural tasting’ in *mun*. It has been seen that in the jeevan established in such awakening, selection activity, analysing activity, imaging activity, and resolve activity, all these are overwhelmed & inspired by authenticity. This is indeed the magnificence of mediative activity in fully-awakened jeevan. How much, and till when, is its need, necessity, and purpose ? Every person can evaluate this.

तात्विक रूप में ‘आचरण पूर्णता’ ही गंतव्य होने के कारण अस्तित्व ही नित्य वर्तमान और स्थिर होना अस्तित्व में अनुभव के फलन में सत्यापित होता है । यही सत्यापन सम्पूर्ण जीवन क्रियाकलापों में अनुप्राणन विधि में स्थापित हो जाता है अर्थात् आत्मा में हुई अनुभव से जीवन सहज सभी क्रियाएँ अनुप्राणित हो जाते हैं और अनुभव के फलन में तृप्ति अथवा आनन्द आत्मा में होना स्वाभाविक है । यही तृप्ति जीवन के सभी क्रियाओं में जैसे पाँचों शक्तियाँ और चारों बलों में तत्काल ही अनुप्राणित हो जाती है । इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन ही अनुभव सहज प्रतिध्वनि बन जाता है। यही तृप्त जीवन, ‘दिव्य जीवन’, ‘भ्रम मुक्त जीवन’, ‘जागृतिपूर्ण जीवन’ होना देखा गया है, समझा गया है । **अस्तु, मध्यस्थ क्रिया के अनुरूप समूचा जीवन क्रियाकलाप होना ही जागृतिपूर्णता होना देखा गया है।** इसी महिमावश जीवन में सम-विषमात्मक कार्यकलाप शून्य हो जाता है। इसी के लिये हर जीवन आतुर-कातुर, आकुल-व्याकुल रहता है। अतएव, मानव परंपरा में क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता सहज परंपरा की आवश्यकता है।

Due to ‘conduct completeness’ being the real goal, the fact that existence itself is ever present & stable, gets affirmed as a result of realisation in existence. This affirmation itself gets established in all activities of jeevan by way of inspiration; in other words, all the activities of jeevan get inspired & overwhelmed by the realisation in *atma*; and *atma* remaining in a state of satisfaction and bliss is the natural result of realisation. It is this satisfaction indeed which instantaneously gets instituted in all the activities, e.g. the five powerss and four strengths, of jeevan. In this manner, the complete jeevan becomes the echo of realisation. This satisfied jeevan is what has been seen as, and understood as the ‘divine jeevan’, ‘delusion-less jeevan’, or ‘completely awakened jeevan’. **Thus, all activities of jeevan remaining in accordance with the meditative activity, itself has been understood as awakening completeness.** It is due to this magnificence that the generative & degenerative activities in jeevan disappear completely. Every jeevan is impatient-impetuous, distressed-anxious only for this. Therefore, the tradition of activity completeness and conduct completeness is needed in human tradition.

अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में जड़-चैतन्यात्मक प्रकृति नित्य वैभवित होने का स्वरूप, क्रिया श्रम, गति, परिणाम प्रकाशन सहज क्रियाकलाप और परिणाम का अमरत्व, श्रम का विश्राम, गति का गंतव्य सहज लक्ष्य निहित क्रिया, उपयोगिता पूरकता-उदात्तीकरण नियमों के अनुरूप सम्पूर्ण भौतिक-रासायनिक जीवन रूपी प्रकृति में नित्य रचना-विरचना, ‘त्व’ सहित व्यवस्था और उसकी परंपरा भले प्रकार से बोध कराने की सहज-क्रिया सम्पन्न किया जा चुका है ।

In existence as coexistence, the true form & activity of the eternal grandeur of sentient insentient nature; activities pertaining to exposition of effort, motion, result; and activity inherent in the goal of immortality of constitution, effortlessness of effort and destination of motion; composition & decomposition in all nature, physico-chemical and jeevan, in accordance with the laws of usefulness, complementariness & evolution; orderliness with ‘essence’, and its tradition - the process of imparting all this understanding has been completed.

इसी क्रम में श्रम का विश्राम, गति का गंतव्य रूपी प्रमाणों को मानव परंपरा में प्रमाणित करने की आवश्यकता रहा है । इसे सर्वसुलभ लोकगम्य करने के लिए अध्ययनपूर्वक जागृति विधि और इसके प्रमाण में बोध प्रणाली को पहचाना गया । यह भी अनुभव किया गया है कि बोध होना समझदारी का ही दूसरा नाम है अथवा बोध का ही दूसरा नाम समझदारी है । ऐसे समझदारी अध्ययनमूलक प्रणाली से अवधारणा में स्थापति होना, ऐसी अनुभव मूलक अवधारणाओं को अभिव्यक्त संप्रेषित प्रकाशित करने के क्रम में अस्तित्व में अनुभव एक अवश्यंभावी प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट हुई है । इस क्रम में अस्तित्व में अनुभव नित्य है। यही मानव का प्रयोजन है । जीवन नित्य है । अस्तित्व स्थिर है । इसी आधार पर अनुभव और अनुभव क्रम अभिव्यक्ति सहित जागृति सहज जीवन का गन्तव्य अर्थात् जीवन में जागृति पूर्णता ही जीवन गति का गंतव्य स्थली होना, उसकी निरन्तरता सदा-सदा के लिये बना ही रहना देखा गया । इन्हीं आधारों पर ‘अस्तित्व’ सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति के रूप में प्रतिपादित हुई, सह- अस्तित्व विधि से व्याख्यायित हुई । यह महिमा जागृति पूर्ण जीवन सहज अभिव्यक्ति है ।

On this course, there remained a need to produce evidence in human tradition in the form of evidences of effortlessness of effort, and destination of motion. To make it commonly available and accessible to everyone, the method of awakening by way of study, and the process of enlightenment as its evidence, has been devised (envisaged). It has also been concluded that ‘understanding’ is another name for ‘enlightenment’, or ‘enlightenment’ itself is ‘understanding’ by another name. It has become clear that such ‘understanding’ gets established in *buddhi* by realisation-rooted approach, and the realisation in existence is inevitable in the process of expressing, communicating, exhibiting such realisation-rooted concepts. Thus, realisation is eternally extant in existence. This is indeed the human purpose. Jeevan is eternal. Existence is stable. On this basis, it has been observed that awakening-completeness in jeevan is the eternal destination of jeevan’s activity, in other words, the expression of realisation and realisation-progression along with destination of the awakened jeevan is the unwavering destination of jeevan’s activity. Based on all this, ‘existence’ is proposed as insentient-sentient nature saturated in omnipresence, and is elucidated by way of coexistence. This magnificence is the expression of completely-awakened jeevan. This expression is the magnificence of completely-awakened jeevan.

अस्तित्व में सत्ता स्वयं ही मध्यस्थ है क्योंकि सम्पूर्ण प्रकृति सत्ता में संपृक्त विधि से ही नित्य वर्तमान है । इसी विधि से अस्तित्व सहज पूर्णता, सह-अस्तित्व रूप में नित्य वर्तमान होना स्पष्ट है । सत्ता स्थिति पूर्ण होना देखा गया है । स्थिति पूर्णता का वैभव व्यापक पारगामी-पारदर्शिता के रूप में दृष्टव्य है । सम्पूर्ण प्रकृति में अर्थात् जड़-चैतन्य प्रकृति में स्थिति पूर्ण सत्ता पारगामी होने का फलन ही है कि संपूर्ण प्रकृति सत्ता में भीगी है । फलस्वरूप बल सम्पन्नता के रूप में प्रमाणित है । सत्तामयता का प्रभाव पारगामीयता और पारदर्शिता के रूप में व्यक्त है । इसी विधि से एक परमाणु अंश के रूप में और बड़े से बड़े ग्रह-गोल जितने भी स्वरूप दिखाई पड़ते है, उन सबमें स्थिति पूर्ण सत्ता पारगामी होने के फलस्वरूप उनमें प्रकाशमानता, क्रियाशीलता और उसके मूल में बल सम्पन्नता का होना मानव सहज प्रज्ञा में (ज्ञान-गोचर विधि से) देखना-समझना बन चुका हैं।

Omnipotence itself is mediative in existence because whole nature is ever-extant by way of being saturated in Omnipotence. In this manner, it is clear that completeness of existence as coexistence is ever-extant. It has been observed that Omnipotence is the absolute-state. Grandeur of the absoluteness of state is visible in the form of permeative-ness & transparency. It is indeed the result of the absolute-state Omnipotence being permeative in the whole nature, i.e., insentient & sentient nature, that whole nature is soaked in Omnipotence. As a result, the whole nature is evident as endowed with strength. The effect of Omnipotence is manifest in the form of permeation and transparency. In this manner, as a result of the absolute-state Omnipotence being permeative in all the objects in the form of atomic particles to large planets, their exposition and activeness, and endowment with strength at its root, has been observed & understood by humans in their cognisance.

दृष्टा पद प्रतिष्ठा की अभिव्यक्ति जागृत जीवन एवं जागृति पूर्ण मानव परंपरा में प्रमाणित होना ही ज्ञानावस्था की मौलिकता है । अर्थात् जागृतिपूर्ण जीवन मानव परंपरा में ही व्यक्त होता है । इसी अभिव्यक्ति में दृष्टा पद प्रतिष्ठा प्रमाणित होता है । दृष्टा पद जागृति का स्वरूप है । शरीर के द्वारा ‘जीवन’ व्यक्त होना जीवावस्था से ही प्रमाणित है जबकि मानव शरीर द्वारा जीवन लक्ष्य सहज जागृति प्रमाणित हो जाता है । इस अभिव्यक्ति में मध्यस्थ सत्ता, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति, मध्यस्थ जीवन सहज प्रमाण ही मानव परंपरा का एकमात्र सहज मार्ग है । अतएव मानव परंपरा की अनिवार्यता सहज ही विदित होता है । अस्तित्व स्वयं नित्य सह-अस्तित्व है इसलिये जागृत जीवन सह-अस्तित्व में तृप्त होता है । ऐसी तृप्ति का बहुमुखी अभिव्यक्ति ही परंपरा के नाम से ख्यात होता है । अस्तु, मध्यस्थ जीवन, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ सत्ता, बल और शक्ति सहज वैभव के संबंध में प्रतिपादन और व्याख्याएँ प्रस्तुत है । यही मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद है ।

Awakened jeevan is the expression of the perceiver-plane status, and becoming evidence in the fully-awakened human tradition is the uniqueness of the knowledge order. In other words, it is possible for a fully-awakened jeevan to express itself only in the knowledge order. It is in this expression only that perceiver plane status is evidenced. Awakening is the true form of the perceiver plane. Evidence of the expression of ‘jeevan’ through the body begins with the animal order itself, while evidence of the jeevan goal of awakening is possible only with the human body. Evidence of the mediative Omnipotence, mediative activity, mediative strength, mediative power, mediative jeevan in such expression is the sole road ahead for human tradition. Thus, the imperativeness of human tradition becomes naturally clear. Existence is eternal coexistence, therefore the awakened jeevan becomes fulfilled only in coexistence. Versatile expression of such fulfilment itself is known as tradition. Therefore, explanations and descriptions related to the grandeur of mediative jeevan, mediative activity, mediative Omnipotence, mediative strength & mediative power have been presented. This itself is Madhyasth Darshan, Co-existentialism.

अनुभव परंपरा में यह देखा गया है कि मानव ही प्रमाण का आधार और गति है । अभिव्यक्ति संप्रेषणा क्रम में वांग्मय एक साधन है । वांग्मय में कहा हुआ, सुना हुआ, इंगित किया हुआ और इंगित हुआ, अनुमान प्रस्तुत किया गया, अनुमान सम्पन्न हुआ गया बोध गामी हुआ और बोध गम्य हुआ । इन वांग्मय में कहा-सुना ही जा सकता है । इससे अधिक कुछ होता है - अवधारणा और बोध संबंधी अनुमान ही बन सकते हैं । इसी अनुमान के पुष्टि में चित्रण-चित्र को देखने का स्वीकृति भी होना पाया जाता है । इसी प्रकार संपूर्ण चित्रण और वांग्मय सुनने देखने की क्रिया को पूरा करता है। पढ़ना भी सुनना ही है । यह जिम्मेदारी के साथ पढ़ने पर सुनना बनता है, इसको देखा गया है ।

It has been seen that in the realised (awakened) tradition, only humans are the basis and propeller of evidence. Literature is only a means or instrument in the process of expression and communication. Whatever has been understood upon realisation, or in the process of realisation, only that much is said, heard, indicated & hypothesised, and inferences presented in literature. Only this much can be done by way of literature. More than this, only hypotheses on concepts & understanding can be made. Acceptance for imaging & images confirming or aligned with these hypotheses, also occurs. In this manner, all imaging and literature accomplishes the process of listening & reading. Reading is equivalent to listening. It has been seen that when one reads with this objective, one is able to listen also.

चित्रण विधि का अनेक विधियाँ बनते हैं । जागृत व्यक्ति अपने उद्गार को चित्रित कर सकते है और भाषा-साहित्य को कला सहित सत्य आस्वादन सूत्र से सूत्रित कर सकते हैं । विचार और चिन्तनशीलता के लिये अबोध व्यक्ति में अनुमान सहज मानसिक परिस्थितियाँ बनता है और जागृत व्यक्ति के सम्मुख अनुभव सहज कसौटी में परीक्षण करने के लिये सहज वस्तु के रूप में होते है । अतएव सत्यबोध और अनुभव जिनमें सम्पन्न हुआ रहता है उनका अनुमोदन और मूल्यांकन सदा-सदा उपलब्ध रहता है । इसी प्रामाणिकता पूर्ण परंपरा क्रम में हर बिन्दुओं, हर आयामों, दिशा, कोण, परिप्रेक्षयों में सार्थकता सहज मूल्यांकन होता है फलस्वरूप समाधान केन्द्रित विधि से सम्पूर्ण आयामों में मानव सहज जागृति सार्थक होना स्वाभाविक है । इसलिये जागृत परंपरा की आवश्यकता है।

Images are made in many ways. Awakened humans are able to portray their proclamations, and can make language & literature attractively interweaved with truth. This creates mental conditions in ignorant minds for thoughts and contemplation aligned with the hypotheses; while to other awakened humans, they readily present themselves to be examined on the benchmark of realisation. Hence, the approval and evaluation of those who have become realised and enlightened with truth, is perpetually available. In such a perpetually authentic tradition, all points, dimensions, directions, angles & areas are meaningfully evaluated; as a result, awakening is natural in all dimensions by way of resolution-centred method. This is why the awakened tradition is necessary.

स्पष्ट रूप में यह विदित है कि अस्तित्व में व्यवस्था का मूल स्रोत और आधार परमाणु ही है । हर प्रजाति सहज परमाणु में मध्य में अंश अथवा अंशों का होना देखा गया है । इसी के साथ जड़-चैतन्य प्रकृति के रूप में मूलत: परमाणुएँ विभाजित है । जड़ परमाणुएँ अणु और अणु-रचित रचना सहित भौतिक-रासायनिक क्रियाकलापों में भागीदारी करना देखा जाता है । चैतन्य प्रकृति जीवनी क्रम, जागृति क्रम, जागृति और जागृति पूर्णता को प्रकाशित करने, व्यक्त करने और संप्रेषित करने/होने के क्रम में दृष्टव्य है । चैतन्य परमाणु में भी मध्यांश का होना स्वाभाविक है और देखा गया है । चैतन्य परमाणु में मध्य में एक ही अंश होता है और मध्यस्थ क्रिया के रूप में वह सतत् कार्यरत रहता है । जबकि जड़ परमाणुओं में भी मध्यस्थ क्रिया सहज कार्य करने वाला एक ही अंश होता है, परन्तु मध्य में एक से अधिक अंशों का समावेश भी रहता है । इसमें खूबी यही है जड़-परमाणुओं में मध्यांश के मध्यस्थ क्रिया सहज कार्य करने वाले और भी अंश उसके साथ जुड़े रहते है, कुछ अंश मध्य भाग में रहते हुए सम-विषमात्मक कार्य के लिये संतुलित बनाने के लिए सहायक बने रहते हैं । यही मुख्य कारण है जड़ परमाणुओं में प्रस्थापन-विस्थापन होने का । इसकी आवश्यकता इसलिये अनिवार्य है कि परमाणुओं में ही विकास क्रम, विकास प्रमाणित होता है और विकास प्रमाणित होने के लिये प्रस्थापन-विस्थापन अनिवार्य रहता ही है और अनेक यथास्थितियों के लिए सार्थक है ।

It is absolutely clear by now that atoms are the basic source and basis of orderliness in existence. The fact that there are particle(s) at the centre of all varieties of atoms, has been understood. Atoms are further divided in the categories of insentient & sentient nature. Insentient atoms are seen to be participating in physico-chemical activities in the form of molecules or molecular compositions. Sentient nature is visibly in - or engaged in exhibiting, expressing & communicating - living world progression, awakening progression, awakening and awakening completeness. It is natural for the sentient-atom too to have a nucleus, and it has been seen. There is only one particle in the centre of the sentient atom, and it is continuously active in the form of mediative activity. Even in the insentient atoms also, only one particle in the centre is busy in mediative activity, although there are more than one particle in the centre. Its salient feature is that in the nucleus of insentient atoms, there are other particles also in the centre which assist this particle, and are engaged in the meditative activity; some particles, while being in the centre, are assisting in the balancing of attraction-repulsion activity. This is the main reason for insertion & expulsion in insentient atoms. It is essential because development progression & development is evident only in atoms; and for development to be evident, insertion & expulsion is essential, and it is helpful for the continuity of many statuses.

चैतन्य इकाई रूपी परमाणु ‘जीवन’ में प्रस्थापन, विस्थापन सदा-सदा के लिये शून्य रहता है । इसी आधार पर मध्यांश रूप में एक ही अंश कार्यरत रहता है । फलस्वरूप भारबन्धन से मुक्त रहता है । भारबन्धन से मुक्त होने का फलन है अणुबन्धन से मुक्त होने का सूत्र । गठनपूर्णता के अनन्तर स्वाभाविक रूप में परिणाम का अमरत्व जो परमाणु में क्रिया का आशय अथवा दिशा बनी रहती है, जिसके आधार पर ही विकास के साथ जागृति सुनिश्चित बनी रहती है । विकास का मंजिल ही परिणाम का अमरत्व होना देखा गया है । यह भी देखा गया है परावर्तन, प्रत्यावर्तन मध्यस्थ क्रिया का नित्य कार्य है । क्रिया पूर्णता व आचरण पूर्णता, जागृति का द्योतक होना स्पष्ट हो चुकी है। क्रिया पूर्णता पूर्वक ही मानवीयतापूर्ण संचेतना (जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना) सार्थक हो जाता है। आचरण पूर्णता में जागृति पूर्णता, गति का गंतव्य सार्थक होना देखा गया है । यही मुक्ति पद का प्रमाण है । दिव्य मानव का स्वरूप यही है ।

There is no insertion or expulsion ever in the ‘jeevan’ atom, or the sentient unit. It is on this basis that only one particle remains active as the nucleus. As a result, jeevan atom remains free from gravitational bondage. Being free from gravitational bondage leads to the formula of liberation from molecular bondage. In the state of constitution completeness, immortality of constitution is also there which is the intent & direction of the activity in the atom, on the basis of which awakening remains assured along with development. It has been observed that immortality of the constitution indeed is the goal of development. It has also been seen that manifestation & reflection is the incessant work of mediative activity. The fact that activity completeness and conduct completeness are characteristics of awakening is already clear. It is only by activity completeness that humane cognition (knowing, believing, recognising & fulfilling) becomes meaningful. It has been observed that awakening completeness & destination of motion is actualised in conduct completeness. This is the evidence of the liberation plane. This is indeed the true form of divine humans.

‘दिव्य मानव’ पद में दृष्टा-पद प्रतिष्ठा सार्थक अर्थात् सम्पूर्ण अभिव्यक्ति हो जाता है । यही ‘दिव्यमानव’-देवमानव और मानव के लिये प्रेरक होते है । सभी दिव्यमानव का समान कारकता, प्रेरकता प्रमाणित होती है । क्योंकि सम्पूर्ण सार्थक प्रेरणाएँ मानवापेक्षा, जीवनापेक्षा के अर्थ में ही होता है । यही ‘दिव्यमानव’ अमानव को मानव पद में स्वत्व, स्वतंत्रता अधिकार पूर्वक जीने की कला सहित प्रेरक होना पाया जाता है। इस धरती में एक भी आदमी पशु मानव-राक्षस मानव पद को स्वीकारते नहीं है । यही जागृति पूर्णता की अपेक्षा बनी ही रहती है। जागृति और जागृतिपूर्णता की सहज संभावना जागृत परंपरा के रूप में समीचीन रहना आवश्यक है । अनुसंधान के रूप में समीचीन रहता ही है ।

Eminence of the perceiver plane is actualised in the ‘divine human’ status, in other words, it is completely expressed. These ‘divine humans’ are inspiration for deific humans and humane humans. Guidance and inspiration of the highest order is equally evidenced in all divine humans because all meaningful inspirations are only for human expectation and jeevan expectation. Indeed, this ‘divine human’ has authority over the art of living with innateness & independence, and is observed to be an inspiration to inhumane humans, so that they may get inspired to live as humane-humans. On this planet, not even a single person agrees to be belonging to animalistic human or demonic human status. This itself is the expectation for awakening completeness. It is essential that the possibility of awakening as well as awakening completeness in the form of awakened tradition is within reach. In any case, it is always within reach by way of exploration.

जीवन में आत्मा अविभाज्य स्वरूप है । यह मध्यस्थ क्रिया होने के कारण ही जीवन सहज संपूर्ण क्रियाकलाप को नियंत्रित, संतुलित और प्रेरित करता ही है । यह भी स्पष्ट हो चुका है आत्मा ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहित अनुभव क्रिया के रूप में वैभवित होना फलस्वरूप जीवन के क्रियाकलापों में अनुभव ही प्रभावशील होना देखा गया है । यही अनुभव जागृतिपूर्णता का स्वरूप होने के कारण स्वाभाविक रूप में अनुभव को संप्रेषित करना सहज सुलभ, अनिवार्य और परम प्रमाण होना स्पष्ट है ।

*Atma* is inseparable from jeevan. As *atma* is the mediative activity, it naturally controls, balances & inspires all the functioning of jeevan. It is also clear by now, and it has been observed, that *atma* itself becomes the harmonious tradition in the form of realisation together with establishment in the perceiver plane, as a result of which realisation is fully effective in all the activities of jeevan. Due to the fact that this realisation is in the form of awakening completeness, it is clear that communicating the ‘realisation’ in a natural way is effortless, essential and the ultimate evidence.

जागृति पूर्णता पूर्वक ही अस्तित्व में दृष्टा वैभव मानव परंपरा में ही समीचीन होने की सत्यता को स्पष्ट किया जा चुका है । ऐसी महिमा सम्पन्न जागृति अर्थात् अनुभव से यह सत्यापन स्वाभाविक है कि मूलत: अस्तित्व ही सम्पूर्ण दृश्य है और दृश्यमान है । दृश्यमानता देखने का तात्पर्य में, समझने के विधि से सम्पूर्णता समझ में आता है ।

It is indeed by way of awakening completeness only that the truth of the grandeur of perceiver status in existence is possible only in human tradition (knowledge order) has been put forward. By the magnificence of this awakening, or realisation, this affirmation is natural that basically existence itself is the complete view, and is visible (non-mysterious). Visible means it can be observed, and by way of understanding, one can understand it (existence) completely.

अस्तित्व ही सह-अस्तित्व सहज परम सत्य है । इसे स्थिति सत्य के रूप में देखा गया है । स्थिति सत्य अपने स्वरूप में ही दृष्टा सहित सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति है। इस प्रकार सम्पूर्ण अस्तित्व ही दृश्य, दृश्यमान फलत: समझ में आने में, अनुभव में स्पष्ट होती है जिसका सत्यापन स्वाभाविक है । यही अनुभव प्रमाण अभिव्यक्त, संप्रेषित, प्रकाशित होने का सूत्र है ।

Existence is coexistence, is the ultimate truth. It has been understood in the form of absolute truth. In its true form, absolute truth is the insentient and sentient nature, including the perceiver, saturated in Omnipotence. In this manner, complete existence is the view, and visible; as a result, it becomes clear in understanding and in realisation - and its affirmation is but natural. This evidence of realisation is the link to expression, communication and exposition.

सह-अस्तित्व सहज अस्तित्व नित्य वर्तमान और व्यक्त है । अव्यक्त के रूप में कोई वस्तु अस्तित्व में नहीं है । अस्तित्व में ‘अव्यक्त’ नाम से इंगित कोई वस्तु है ऐसा मानना, समझना भ्रम है ।

Existence as coexistence is eternally present and describable. There is nothing indescribable in existence. Believing that there is some reality in existence by the name ‘indescribable’, is delusion.

‘अनुभव’ अस्तित्व में, से, के लिये होने के आधार पर संपूर्ण अनुभव संप्रेषणा योग्य है । इसके विपरीत अनुभव एक दूसरे को बताने योग्य नहीं है ऐसा मानना भ्रम है, भ्रम की पराकाष्ठा है ।

On the basis of ‘realisation’ being in, by & for existence, complete realisation is worth communicating, and can be communicated. Contrary to this, to assume that realisation is not meant to be, or cannot be, communicated is delusion, is extreme delusion.

‘अनुभव’ अस्तित्व में, अस्तित्व से और अस्तित्व के लिये ही होता है । इसके पुष्टि में चैतन्य इकाई रूपी जीवन अस्तित्व में अविभाज्य है, सत्ता में संपृक्त है । सत्ता पारदर्शी और पारगामी होना-अनुभव में स्पष्ट होती है । इसके विपरीत कोई भी सम्पूर्णता को देख सके, सत्यापित कर सके, यह संभव नहीं है । सत्ता सहज व्यापकता, पारगामीयता-पारदर्शीयता को जागृत जीवन अनुभवपूर्वक सत्यापित करता है, सभी जागृत जीवन सत्यापित कर सकते हैं । इसके विपरीत सत्ता सहज वस्तु के लिये प्रयोजित ब्रह्म, ईश्वर, परमात्मा नाम लेकर इसे अव्यक्त मानना, इसे वाणी से उद्घाटित नहीं किया जा सकता है-ऐसा मानना भ्रम की पराकाष्ठा है ।

‘Realisation’ is only in existence, by existence and for existence. Jeevan as a sentient entity is an integral part of existence, and is saturated in Omnipresence, corroborates it. The fact that Omnipresence is transparent and permeative becomes clear in realisation. Short of this, it is not possible for anyone to understand and truthfully describe completeness (of existence). All-pervasiveness, permeative-ness & transparency of Omnipotence is truthfully described by an awakened jeevan by way of realisation. All awakened jeevans can do so. Contrary to this, to believe that the reality of Omnipotence is indescribable, and calling it by various names like Brahma, God, and to assume that it can not be communicated by the spoken word, is extreme delusion.

‘जीवन’ नित्य होने के कारण अर्थात् ‘जीवन’ अपने स्वरूप में नित्य और अमर होने के कारण अस्तित्व में ही वर्तमान रहता है । यही शरीर यात्रा समय में मानव कहलाते हैं, शरीर त्यागने के उपरांत यही देवी देवता, भूत-प्रेत कहलाते हैं । इसके विपरीत देवी-देवताओं को अव्यक्त, अदृश्य, नहीं समझ में आने योग्य मानना, इसे समझने के लिये अनिश्चित समय तक ध्यान, उपासना, आराधना प्रार्थना करना है-ऐसा प्रमाण विहीन उपदेश देते हैं । यह सर्वथा भ्रम है ।

Due to ‘jeevan’ being eternal, in other words ‘jeevan’ being eternal and immortal in its true form, it remains always present in existence. During the lifetime of the body, these are called humans; and after leaving the body (upon death of the body), these are called deities (gods-goddesses) or ghosts (evil spirits). Contrary to this, to assume deities to be indescribable, invisible or imperceptible; and to understand them one has to do meditation, worship, idolization & prayer for an indefinite period of time - all such advice devoid of evidence, is complete myth and delusion.

अस्तित्व में अनुभव ही परम प्रमाण के रूप में सर्वतोमुखी समाधान सहज विधि से प्रमाणित होता है । हर व्यक्ति जागृतिपूर्वक इसे प्रमाणित कर सकता है । इसकी आवश्यकता सब में विद्यमान है यही सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज है । इसके विपरीत यह मानना सर्वथा भ्रम है कि समाधान अपना-अपना और सत्य अपना-अपना होता है ।

By way of comprehensive resolution, it is the realisation in existence itself which is evidenced as the ultimate evidence. All humans can produce this evidence by way of awakening. Its need exists in all humans, and this itself is the universal system, indivisible society. Contrary to this, the belief that resolution varies from person to person and so does the truth, is utter delusion.

हर मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व व उसकी निरंतरता विधि से जीना चाहता है । इसके लिये अनुभवमूलक शिक्षा-संस्कार विधि समीचीन है । इसके विपरीत यह मानना कि मानव कभी सुधर नहीं सकता यह सर्वथा भ्रम है।

All humans want to live by way of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence and their continuity. For this, realisation-rooted education-*sanskar* method is in close proximity. Contrary to this, the belief that humans are incorrigible and can never be reformed, is utter delusion.

हर मानव संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति पूर्वक परिवार मानव होना चाहता है इसके नित्य सफलता के लिये मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार समीचीन है । यह अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना पाया जाता है । मानव सम्बन्धों में निरंतर मूल्यों का अनुभव कर सकता है । इसे सफल बनाने का कार्य-विचार-व्यवहार विधि को अनदेखी करते हुए यह मानना कि बैर विहीन परिवार नहीं हो सकता और बैर रहेगा ही, दुख रहेगा ही इन्हें सत्य कहकर अपने भ्रम को दूर-दूर तक फैलाना है।

Every human being wants to be a family-person by way of relationship, values, evaluation and mutual fulfilment; and for its continuous success, humane education *sanskar* is in close proximity. This is evidenced by the realisation-rooted method. It is possible for humans to continuously realise values in relationships. Disregarding the actions, thoughts & behaviour for making it successful, and believing that there can be no family without animosity, and animosity will always be there, miseries will be always there, declaring all these as truths, is spreading one’s delusion far and wide.

यह देखा गया है कि जागृत प्रमाणित व्यक्ति से हम प्रेरणा पाकर स्वयं जागृत होना नियति सहज है, इसकी संभावना नित्य समीचीन है । इसे पहचानने के स्थान पर और व्यवहार में न्याय प्रमाणित करने के स्थान पर यह मानना कि देवी, देवता, सिद्ध लोग ही हमको तारेगें, हम स्वयं से तरने योग्य नहीं है, सर्वथा भ्रम है ।

It has been seen that upon getting inspiration from an awakened authentic person, our becoming awakened is as per the ways of destiny; its possibility is always within reach. Instead of recognising this, and instead of evidencing justice in behaviour, to believe that gods-goddesses & saints will emancipate us, we ourselves are incapable of emancipation, is altogether a delusion.

हर परिवार मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व पूर्वक परिवार परंपरा को निर्वाह करने योग्य है, चाहते है और इसे एक-दूसरे के पूरक विधि से निर्वाह करते है, और कर सकते हैं । इसके लिए अनुभव मूलक प्रमाण, पद्धति, प्रणाली समीचीन है । इसे अनदेखी करते हुए यह मानना कि मूलत: मानव पराधीन है, वह सामान्य आकांक्षा (आहार, आवास, अलंकार) सम्बन्धी वस्तुओं से ही सम्पन्न हो सकता है इसलिये इसमें विपन्नता बना ही रहेगा । इनको सहायता की आवश्यकता है इसी मुद्दे पर नेतृत्व विधि से हर व्यक्ति की विपन्नता को जताना, लादना, मनवाना भ्रम है ही ।

All family-persons have the capability and desire to fulfil the role in the family by way of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. They fulfil, or want to fulfil this by complimenting each other. For this, realisation-rooted evidence, path and approach is close proximity. Disregarding this, and believing that human beings are basically subservient, and can become fulfilled solely by common aspirations (food, shelter, clothing), and thus there will always be shortage of these. By way of leadership, to suggest, convince and persuade everyone that they always need aid and help on these issues, is delusion.

मानव जन्म से ही न्याय का याचक, सही कार्य-व्यवहार करने का इच्छुक और सत्य वक्ता होता है । परंपरा सहज विधि से (शिक्षा-संस्कार, संविधान और व्यवस्थापूर्वक) हर व्यक्ति में न्याय प्रदायी क्षमता, सही कार्य व्यवहार करने की योग्यता सत्यबोध करने-कराने की परमावश्यकता है । यह अनुभवमूलक मानव परंपरा में ही सार्थक होता है । इसे अनदेखी करते हुए हर व्यक्ति को जन्म से ही स्वार्थी, अज्ञानी और पापी इतना ही नहीं अपराधी, गलती करने वाला मानना, कहना, कहलाना, करने के लिये सम्मति देना भ्रम की पराकाष्ठा है ।

Every human being, right from their birth, desires or expects justice, is desirous of doing the right work & behaviour, and speaks truth. There is dire need of Inculcating & instilling the capacity to do justice, ability to work and behave correctly, and awareness of truth in every human by way of tradition (of education-sanskar, constitution and institutions), This is actualised only in the realisation-rooted human tradition. Disregarding this and believing, calling, telling others to call every person to be not only selfish, ignorant and sinner since birth but also criminal, and prone to making mistakes, and endorsing all this is extreme delusion.

हर व्यक्ति परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में भागीदारी करने के लिये इच्छुक है, उत्साहित है । इसी के साथ बैरविहीन, सामरस्यता पूर्ण ‘परिवार मानव’ के रूप में जीने देकर, जीना चाहता है । यह मानव सहज स्वतंत्रता और स्वराज्य का उद्गार रूप में सर्वेक्षित है । इसे सफल बनाने के लिये अनुभवमूलक विधि से समीचीन है । इसके विपरीत शक्ति केन्द्रित शासन-संविधान जिसकी मानसिकता यथास्थिति की अपेक्षा गलती और अपराध के लिये दण्ड विधान, पड़ोसी देश और धर्म को अपना विरोधी और शत्रु होना मानते हुए इसका प्रचार पूर्वक प्रतिबद्धताओं को अर्थात् गलत मान्यताओं को हर प्रकार से मनवाना, मानने के लिये मत देना, यह समूल भ्रम पाया गया ।

Every human being is desirous of, and enthusiastic about, participating in the family based self governance system. Along with this, wants to let others live, and to live, as a ‘family person’ without animosity, and full of harmony. This is commonly seen in the form of proclamations of independence & self-governance. The realisation rooted method is available to actualise it. Contrary to this, power centric rule & constitution where the mindset of continuation of status quo, provision of punishment for mistakes & crimes, believing the other countries & religions to be opponents & enemies, spreading these wrong assumptions and getting them accepted by all means, and to endorse them - all this has been found to be rooted in deep delusion.

हर मानव परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में कार्यरत, व्यवहाररत, परिवार और समग्र व्यवस्था में भागीदारीरत होने योग्य है और जागृति पूर्ण विधि से प्रमाणित होने योग्य है । इसके लिये अनुभव मूलक परंपरा विधि आवश्यक एवं समीचीन है । आवश्यकतानुसार अनुसंधान न करते हुए और इसके विपरीत दासता अर्थात् ईश्वर के प्रति दासता और सामुदायिक-धर्म और सामुदायिक राज्य के प्रति दासता को स्वीकार करने के लिये परंपरागत विधि से कार्यक्रमों को प्रस्तुत करना अथ से इति तक भ्रम है ।

All humans are capable of engaging in work & behaviour in the family-based self-governance system, and participating in family & the overall system; and are capable of producing evidence by way of awakening. Tradition of the realisation-rooted method is essential, and within reach, for this. Not doing the exploration needed for this, and contrary to this, putting forward programs prescribed in tradition for acceptance of subjugation (to God, and to sectarian-religion and sectarian-state) - is delusion, from beginning to end.

जागृति सहज प्रमाण यही है हर व्यक्ति में पाये जाने वाले कल्पनाशीलता के तृप्ति बिन्दु रूपी परिवार मूलक व्यवस्था में पारंगत बनना और बनाने के लिए सहमत होना और कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिंदु रूपी स्वानुशासन सहज स्वतंत्रता प्रमाणों के रूप में प्रमाणित होता है । इसे करना, कराना ही एकमात्र उपाय है । यह इस दशक से समीचीन हो गया है ।

To become, and consenting to make, expert in the satiation point of imagination found in every human in the form of the family-rooted self governance system, and to produce evidence of the satiation point of free will in the form of independence in accordance with self-discipline - this is indeed the evidence of awakening. To do it, and to get it done, is the only remedy. It has become possible since this decade.

हर मानव में जागृतिपूर्वक चारों अवस्था में वैभवित वस्तुओं को उन-उन के स्वभाव-गति प्रतिष्ठा में जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने का अर्हता रहता ही है । उस अर्हता के अनुसार शिक्षा-संस्कार को संपन्न करने की योग्यता से वंचित रहकर उसके विपरीत आवेशित गति को ही ‘‘वैभव और आवश्यक’’ मानते हुए, मनाने का जितना भी कार्यकलाप है (शिक्षा, संस्कार सहित) वे सभी अथ से इति तक भ्रम है । क्योंकि सम्पूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व के रूप में विकास, जीवन, जीवन-जागृति प्रतिष्ठा ही है ।

By way of awakening, every human is qualified to know, believe, recognise & fulfil the entities in the harmonious tradition of four orders as per their respective natural motion. Being deprived of the ability to inculcate the education-sanskar leading to such qualification, and contrary to this, all the activity of believing and persuading (including by way of education *sanskar*) that excited motion itself is the “grandeur and essential” - all this is delusion, from beginning to end. It is so because the whole existence in the form of coexistence is nothing but development, jeevan, and awakening in jeevan.

हर व्यक्ति स्वयं में स्थिति और गति की अविभाज्यता और स्वभाव गति प्रतिष्ठा में परम जागृति होना एवं दूसरे के लिये पूरक होना चाहता है और ऐसा होने के लिये अर्थात् प्रमाणित होने के लिये सम्पूर्ण अनुभव मूलक विधि सहज पारंगत प्रणाली समीचीन है । इसे अनदेखी करते हुए आवेशित गति और संघर्ष के लिये मानव परंपरा को प्रेरित और विवश करना और रहना अथ से इति तक भ्रम है ।

Every human being wants to understand the inseparability of one’s own state & motion, and wants to be awakened in one’s normal motion, and wants to be complementary to others; and for its accomplishment, in other words for its evidence, the realisation rooted method is in close proximity. Disregarding this, and to persuade and compel the human tradition for excited motion & struggle, and to remain in such a state, is delusion, from beginning to end.

हर मानव चारों अवस्थाओं को उन-उनके स्वभाव गति प्रतिष्ठा को जानने-मानने और पहचानने-निर्वाह करने योग्य हैं । साथ ही रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना को स्वीकारने और जीवन के अमरत्व को समझने, स्वीकारने योग्य और सत्य बोधपूर्ण होने योग्य और अनुभव मूलक विधि से प्रमाणित करने-कराने योग्य हैं । इन्हें अनदेखी करते हुए शरीर को ही जीवन समझते हुए, समझदार होने का दावा करते हुए इस पर लिये गये निर्णयों के अनुसार स्थापित किये गये परंपरा अथ से इति तक भ्रम है । इतना ही नहीं शरीर को ही जीवन समझाने के क्रम में ही मानव को जीव-जानवर सम्बोधित किया यह अत्यंत भ्रम, गलती है । जबकि जीवन और शरीर के सह-अस्तित्व में ही मानव परंपरा वैभवित है ।

Every human being has the potential of knowing, believing and recognising, fulfilling the four orders and the eminence of their respective normal motion. They also have the potential to understand & accept physico-chemical composition & decomposition, to understand & accept the immortality of jeevan, to be enlightened with truth, and to evidence & inspire by the realisation-rooted method. Disregarding this, and assuming the body itself to be the jeevan, claiming to be wise, and traditions established on such conclusions, all this is delusion, from beginning to end. Not only this, but in the process of assuming the body itself to be the jeevan, they called human beings as animals which is an extreme delusion. In reality, the grandeur of human tradition is in the coexistence of jeevan and body.

हर मानव ‘त्व’ सहित व्यवस्था विधि-नियम से हर इकाई में, से, के लिये मौलिकता को जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने योग्य है । यह जागृतिपूर्ण शिक्षा परंपरा से लोक-व्यापीकरण होता है । इसे अनदेखी करते हुए सापेक्षता को स्वीकारना स्वीकारने के लिये परंपरा को मजबूर करना अथ इति तक भ्रम है और गलती है ।

Every human being has the potential of knowing, believing, recognising & fulfilling the uniqueness in, by & for every unit by the method & law of ‘orderliness with essence’. It is disseminated by the tradition of completely awakened education. Disregarding this, and to accept relativity, and to compel the tradition for the same, is delusion and mistake, from beginning to end.

मानव प्रकृति की प्रत्येक इकाई में अविभाज्य रूप, गुण, स्वभाव, धर्म रूपी मात्रा को जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने योग्य इकाई है । यह जागृतिपूर्वक हर व्यक्ति में, से, के लिये समान है । इसके लिये मानव परंपरा जागृत रहना अनिवार्य है । परंपरा इससे वंचित, विमुख, अनदेखी करते हुए विखण्डन के आधार पर अथवा गति रत वस्तु का ध्रुव बिंदु न पहचानने के आधार पर मूलत: वस्तु अस्थिर, अनिश्चित मान लेना और मना लेना आमूलत: भ्रम है और गलती है जबकि अस्तित्व स्थिर, अस्तित्व में विकास और जागृति निश्चित है ।

Human beings, as an entity, have the potential of knowing, believing, recognising & fulfilling the inseparable form, attributes, intrinsic-nature & dharma of every entity in nature. This is equal in, by & for every human being by way of awakening. Human tradition remaining awakened is essential for this. Tradition deprived of this, indifferent to this, and disregarding this; and based on fragmentation, in other words, not recognising the origin of motion in things, and based on that to conclude, and convince others, that the things are basically unstable & uncertain, all this is delusion and mistake. As a matter of fact, existence is steady, and development & awakening in existence is certain.

इन्द्रिय सन्निकर्ष में ही ‘अनुभव होता है’ ऐसा मानना और मनवाना, इसको लोकव्यापीकरण करने का सभी उपाय तैयार करना, साथ ही लाभोन्माद, कामोन्माद और भोगोन्मादी मानसिकता को कार्यशील, प्रगतिशील, विकासशील और अत्याधुनिक मानना और मनाना अथ से इति तक भ्रम है । जबकि जीवन्त शरीर में ही इन्द्रिय सन्निकर्ष होना देखा गया है। जीवन ही शरीर को जीवन्त बनाए रखता है । सत्य भासने के लिये शरीर और जीवन का सह-अस्तित्व आवश्यक है । इसी क्रम में जीवन, जागृति और जागृति पूर्णता को प्रमाणित करता है । जागृति को प्रमाणित करने की इच्छा प्रत्येक मानव में समाहित रहता ही है । इसे सार्थक और लोकव्यापीकरण करने के लिये परंपरा का जागृत होना अनिवार्य है । इसी विधि से अर्थात् जागृतिपूर्ण परंपरा विधि से ही जीवन में अविभाज्य वर्तमान मध्यस्थ क्रियारत ‘आत्मा’ ही अस्तित्व में अनुभव करता है, करने योग्य है ।

Believing and convincing that ‘Realisation is attained only in the sensory proximity’, propagation of this by all means, and to believe and convince that mentality of profit-obsession, sex-obsession, consumption-obsession is progressive, developmental & ultra-modern, is delusion, from beginning to end. Actually, proximity to sensory organs has been observed only in an alive body. Jeevan itself keeps the body alive. Coexistence of the body and jeevan is essential for perceiving the truth. In this process, jeevan evidences awakening and awakening completeness. The desire to evidence awakening is contained in every human being. To actualise and disseminate it, it is essential that the tradition is awakened. It is in this way only, that is by way of completely awakened tradition only, that ‘atma’ doing its mediative activity with inseparable presence in jeevan and having the potential of realisation, becomes realised in existence.

विज्ञान और भोग, अतिभोग, संग्रह, सुविधा मानसिकता में आँखों में देखा हुआ को सत्य मान लेना और मनाता हुआ परंपरा को देखा गया है। यह अथ से इति तक भ्रम और गलत है क्योंकि गणित आँखों से अधिक और समझ से कम होता है। समझ ही प्रमाणपूर्वक परंपरा में लोकव्यापीकरण होने की वस्तु है और अनुभव ही व्यवहार में न्याय, धर्म और सत्य सहज विधि से प्रमाणित होती है । यह लोकव्यापीकरण होने के लिये परंपरा को जागृत रहना आवश्यक है ।

Tradition of believing, and convincing others, what is seen by eyes as true, has been observed in science, and in the mentality of consumption, over-consumption, accumulation & luxuries. This is delusion and mistake, from beginning to end, because mathematics is more than what can be seen by eyes, but is not the complete understanding. Understanding indeed is what needs dissemination in tradition by way of evidence, and realisation itself gets evidenced in behaviour by way of justice, dharma and truth. Tradition remaining awakened is essential for its dissemination.

आँखों से जो कुछ भी दिखता है वह किसी वस्तु के रूप (आकार, आयतन, घन) में से आंशिक भाग दिखाई पड़ता है । रूप का भी सम्पूर्ण भाग आँखों में आता नहीं । जबकि हर वस्तु, रूप, गुण, स्वभाव, धर्म के रूप में अविभाज्य वर्तमान है । यह जागृतिपूर्ण शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण होता है ।

Whatever is seen with the eyes is only a partial view of the form (shape, volume & density) of an object. Even the form in its entirety is not captured by the eyes; whereas each object is present inseparably as form, attributes, intrinsic-nature & dharma. This disseminates by way of completely-awakened education.

**मानव से रचित यंत्र और मापदण्ड से मानव को प्रमाणित करना संभव नहीं है।** परन्तु यह संभव है ऐसा मानना और शिक्षापूर्वक मनाना अत्यंत भ्रम और गलती है । जबकि मानव ही यंत्र और मापदण्ड को प्रमाणित करता है । इसके मूल में भी मानव की मान्यता ही रहती है । उल्लेखनीय घटना यह है कि विज्ञान अपने यंत्र प्रमाण के आधार पर अपने सभी बातों को मनवाता आया । इसके पहले आदर्शवादियों ने प्राकृतिक घटनाओं और विपदाओं के आधार पर ईश्वर और ईश्वरीयता को मनवाया । जबकि यह दोनों भ्रम ही रहा । क्योंकि हर मानव जागृतिपूर्ण स्थिति में सम्पूर्ण यंत्रों और मापदण्डों से बहुत बड़ा दिखाई पड़ता है । सभी यंत्रों का चित्रण और रचना मानव ने ही किया है, यह स्पष्ट है । एक मानव जो किया है उसे हर मानव कर सकता है, जो सीखा है सभी व्यक्ति सीख सकता है । इस प्रकार इन दोनों से सभी मानव का समानता समझ में आता है । इस धरती पर अनेकानेक शताब्दियों से मानव का आवास होते हुए अभी तक यह वर्गीकृत, रेखाकरण सम्भव नहीं हो पाया कि एक व्यक्ति जो करता है, सीखता है उसे दूसरे वर्ग, संप्रदाय, मत, पंथ, धर्म कहलाने वाले सीखता नहीं है, कर नहीं सकते हैं । यह स्पष्टतया परंपरा में देखने के उपरान्त भी गोरे-काले का आवाज पंथ, संप्रदाय, मतों और धर्म के नाम से द्वेष और संघर्ष को निर्मित करने वाला आवाज देखने-सुनने में आ ही रहा है । यह अथ से इति तक भ्रम और गलती है ।

**It is not possible to authenticate humans by human-made instruments and standards.** To believe that it is possible, and to convince it by way of education is delusion and mistake. It is the humans only who authenticate instruments and standards. It is the human belief which is at its root. It is pertinent to note here that science, based on the evidence of instruments, has been successful in convincing humankind about its proposals. Prior to that, the idealists, based on natural events and calamities, were very convincing about god and godliness. However, both of these have remained only delusional, because each human in the state of complete awakening, is seen to be much bigger than all the instruments & standards. It is clear that all the instruments have been visualised and manufactured by humans only. Whatever has been done by one person, can be done by all; whatever skills one person has learnt, can be learnt by all. In this manner, with both these examples, equality among all humans is understood. Although humans have been on this planet for several centuries, whatever has been done or learnt by one person, the same can’t be done or learnt by persons of other class, community, belief, creed or religion - it has not been possible to draw such a line of demarcation. In spite of this being so clearly visible in tradition, voices of colour-based racism, and voices promoting hatred and conflict based on creed, sects, beliefs & religions continue to be heard. This is out and out delusion and mistake.

मानव धर्म अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान पर आधारित व्यवस्था में जीने देकर जीना है। इसकी सार्वभौमता सर्व स्वीकृत है । समुदाय परंपराओं में धर्म के नाम पर अनेक मान्यताओं को द्वेष सहित समुदाय के जनमानस को मनाना और स्वयं माने रहना, ऐसे मानने के लिये सम्मति देना, ये सब मूलत: अथ से इति तक भ्रम और गलतियाँ है ।

In systems based on human dharma or comprehensive resolution, the principle of ‘letting live and live’ is followed. Its universality is accepted by all. In sectarian traditions, convincing people of the sect to accept various beliefs together with hatred, in the name of religion, assuming such beliefs to be true, and giving consent for the same - all this is delusion and mistake, from beginning to end.

जागृतिपूर्ण परंपरा में ही सार्वभौम धर्म-कर्म (मानवीयतापूर्ण धर्म-कर्म) तद्नुरूप विचार शैली और व्यवहार तथा अनुभव ही संतुलित रूप और गति है । यह सर्वमानव में समान रूप से वर्तमान होना समीचीन है । यही जागृति परंपरा का स्वत्व है ।

It is only in the completely awakened tradition that universal (humane) dharma & deeds, thinking and behaviour aligned with that, and realisation - all this is manifest, and in balanced form. Its presence is seen in all human beings equally. This is the essence of awakened tradition.

सम्पूर्ण भ्रम-निर्भ्रमता में और सम्पूर्ण गलती-सुधार में ही विलय को प्राप्त करते हैं । नेक इरादे से सम्पूर्ण आदर्शवादी परिकल्पना, दास और दासतावादी मानसिकता और यात्रा; सम्पूर्ण विज्ञान और भौतिक विचार, सुविधावादी मानसिकता के साथ-साथ प्रकृति पर शासन, दासतावादी मानसिकता से मानव पर शासन, अंततोगत्वा संघर्ष युग में अंत होता रहा । यही सभी गलतियों का अंतिम परिणाम रहा । इस दशक तक पुन: भाषा में इंगित कराए सुविधा और युद्ध ही मानव परंपरा को अपने पंजे में जकड़ लिया है । यही सम्पूर्ण गलती का फल है ।

All delusions disappear in non-delusion, and in reformation do all the mistakes. All well-intentioned idealistic imagination, subjugation & subjugation-oriented mindset and living; all science and material thoughts, mentality of luxury-comforts together with ruling over the nature, and ruling over the humans by way of subjugation-oriented mindset - all this eventually continued to lead to era of conflicts. This has been the final outcome of all the mistakes. By this last decade of the twentieth century, luxury-comforts (as explained earlier) and wars have again taken hold of the human tradition. This is the outcome of all the mistakes.

इन समस्त गलतियों का सुधार अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही है ।

Reformation of all these mistakes is in existence-based human-centred contemplation.

**Chapter 5**

**Bondage and liberation**

**(बन्धन और मुक्ति)**

बन्धन और मोक्ष शब्द लोक प्रसिद्ध है । इन दोनों मुद्दे पर बहुत कुछ कथन, वांग्मय, सर्वोपरि पावन ग्रन्थ के रूप में और विभिन्न परम्परा में मान्यताओं के रूप में देखा गया । पहला, वस्तु के रूप में कौन सी चीज है जो बन्धन में पड़ा रहता हैं-मानव में सभी प्रकार के संकट का कारण है । दूसरा, वस्तु के रूप में ऐसा कौन-सा चीज है जो बाँधकर रखता है ? तीसरा, वस्तु के रूप में वह कौन-सी चीज है जो मुक्ति दिलाता है?

यह तीनों ‘वस्तु’ के रूप में कहाँ है ? क्यों ऐसे बन्धन कृत्य को करता है ? जो बन्धन में था मुक्ति पाने के बाद उसका प्रयोजन क्या है ?

The words, bondage and liberation, are well known. On both these topics, a lot has been said and seen in the form of utterances, literature, supreme scriptures, and in the form of beliefs in various traditions. There are some important questions here. First, which is the reality which remains in bondage, causing all the troubles to a human being. Second, which is the reality which keeps a human being in bondage. Third, which is the reality which liberates?

Where are all these three ‘realities’? The one which keeps a human being in bondage, why does it do so ? After liberation, what is the purpose of the one who was in bondage?

स्वाभाविक तर्क है बन्धन में आने वाला यदि कोई वस्तु है, बाँधकर रखने वाला वस्तु उससे शक्तिशाली होना आवश्यक है । यदि बन्धन से मुक्त करने वाली कोई चीज है वह बाँधकर रखने वाले से भिन्न हो ऐसे स्थिति में वह उससे शक्तिशाली होना अनिवार्य है। इससे आगे की तर्क स्वयं स्फूर्त होकर प्रस्तुत होता है जो बाँधता है वही खोल सकता (मुक्त करता) है । इस क्रम में बाँधने का क्या प्रयोजन है ? अथ से इति तक बन्धन को क्लेश और दुख ही दुख बताया गया है ।

It is simple logic that if some entity is under bondage, the one which keeps it in bondage must be more powerful. If the one which liberates is different from the one that keeps in bondage, then the one which liberates must be even more powerful. Next part of the logic emerges naturally - the one who keeps in bondage, can also liberate. But then, what was the purpose of keeping in bondage in the first place? From beginning to end, bondage has been described as misery and torment only.

यदि बाँधने वाले से भिन्न वस्तु बन्धन में आने वाला हो उसको क्लेश देकर क्या पाना है? क्लेशित होने वाले वस्तुओं को देखकर प्रसन्न होने वाली कोई वस्तु है वह बन्धन में आयी हुई वस्तुओं के क्लेशों को देखकर प्रसन्न होने की स्थिति में यही उदाहरण आता है । पशु मानव को जैसा राक्षस मानव प्रताड़ित करे, क्लेश उत्पन्न कर स्वयं अट्टहास करता है। ऐसे दृश्य को साहित्य, कथा, परिकथा, पुण्यकथा, चित्रकथा और अभिनयों के रूप में दूरदर्शन, मंचन और प्रकाशनों के रूप में भरपूर देखने को मिलता है । यह सब मानव की कल्पना, परिकल्पना प्रकारान्तर से मानव कृत्यों का आंकलन है और मानव से रचित कथा, परिकथा, पुण्य कथाओं के रूप में स्वीकारा हुआ स्थितियाँ देखने को मिलता ही है । यदि इसी तरीके की कोई वस्तु, कोई चीज को बन्धन में डालता है वह राक्षस से तो कम हो नहीं सकता है ।

If the entity which keeps in bondage, is different from the one which is under bondage, then what does it achieve by tormenting? One possibility is that it enjoys looking at those getting tormented, very similar to a demonic human torturing and tormenting animalistic humans, and laughing evilly. Literature, stories, fables, television and theatre are full of such scenes and depictions. In diverse ways of imagination and visualisation, it is an appraisal of human deeds; and is seen as acceptance of real situations in stories, folk-tales, legends & mythology. If there is some entity which torments another in this manner, then it cannot be anything less than a demon.

राक्षसीयता और पाशवीयता दोनों मानव सहज विधि से स्वीकार नहीं है । इस तर्क विधि से पता लगता है कि कोई सही वस्तु अस्तित्व में हो, वह बन्धन का कारण हो नहीं सकता क्योंकि हर मुहूर्त में, हर दिन में, हर वर्ष में, हर शताब्दी में, अच्छे आदमी देखने को मिलता है । अच्छा आदमी होने का सबसे पहला और आखरी मूल्यांकन भाषा के रूप में अहिंसक, सहयोगी, सहकारी, सहगामियों के रूप में पहचाना जाता है । किसी न किसी अंश में हर आदमी में यह गुण होता ही है । ऐसे गुण कार्य जिनसे अधिकाधिक सम्पन्न होता है ऐसे आदमी को हम भले आदमी कहते हैं । ऐसे भले आदमी को तंग, परेशान, पीड़ित करने का कोई इरादा नहीं रखता है । तब अस्तित्व में अत्याधिक भला वस्तु यदि हो वह किसी को बंधनों से बांधकर क्लेशित कर प्रसन्न होने की कोई विधि व्यवहारिक तर्क के रूप में स्पष्ट नहीं होती । व्यवहारिक तर्क का मतलब मानव, मानव के साथ जो तर्क करता है। उसी में जो भलमनसाहत मूल्यांकित होता है इस दायरे में समुचित उत्तर निकलता नहीं है ।

Demonic nature and animalistic nature, both are not acceptable to humans. By this logic, it can be concluded that no righteous entity in existence can be a cause of bondage. Righteous persons can be found at all times and in each generation. Non-violence, cooperation & collaboration are generally accepted as the defining qualities of righteous persons. Such qualities are found in each person at least to some extent. Those who are accomplished in these qualities & deeds are known as righteous persons. Noone intends to trouble or harass such a righteous person. Thus, were there to be an extremely righteous entity in existence, there is no practical logic for it to keep others in bondage and derive sadistic pleasure from such bondage. Practical logic means the logic which a person normally uses with other persons. Thus, the way in which we appraise righteousness, no satisfactory answer is found in this manner.

दूसरे विधि से बाँधने वाला बहुत दुष्ट, राक्षस और जीवों का क्लेश, दुख, पीड़ाओं को देखकर बड़ा अट्टहास करने वाला है । उनसे कोई ताकतवर वस्तु अस्तित्व में होगा जो उसके शिकंजे से छुड़ा देता है । यदि ऐसा कोई घटना, संयोग होती ऐसे ताकतवर चीज, ऐसे दुष्ट राक्षस को रहने ही नहीं देता, सबको मुक्त कर देता । ऐसा भी कुछ इस धरती में मानव के साथ प्रमाण रूप में घटित हुआ नहीं है । ऐसा होने की स्थिति में हर व्यक्ति मुक्त ही मिलता । हर व्यक्ति को परंपरा यह मूल्यांकन करता हुआ मिलता है पापी, अज्ञानी और स्वार्थी, यही बंधन का गवाही है, क्लेश का स्वरूप है। हर समुदाय परंपराएँ धार्मिक कार्यक्रमों के मूल में दोहराया करते हैं । इस तर्क विधि से भी कोई व्यवहारिक उत्तर सुलभ नहीं होती है ।

For the sake of discussion, let us now assume that the one who keeps in bondage is very cruel, a demon who laughs evilly by seeing others in misery, pain and distress. Were there a more powerful entity in existence, it would ensure release of the one who is in the clutches of bondage. If such a powerful entity existed, it would not allow the cruel demon to flourish, and would have liberated everyone. But nothing like this has happened on this planet; there is no such evidence. Had it been so, every person would be found in the state of liberation only. However, the tradition continues to appraise everyone as sinner, ignorant and selfish; this itself is the testimony of bondage & torment. All this is repeatedly mentioned in sectarian traditions and programs. Thus, no practical answer is found in this manner too.

इन दोनों विधि से बन्धन का कारण ही स्पष्ट नहीं हो पाता है । मोक्ष (मुक्ति) के लिये जितने भी उपाय कहे गये हैं उनमें शंका स्वाभाविक रूप में रह ही जाती है । इसलिये मोक्ष किसको हुआ, कोई प्रमाण नहीं है। मोक्ष के लिये जितने भी उपाय बताये गये हैं, उसमें से कोई एक भी विधि सबको स्वीकार हुआ नहीं और कोई भी विधि स्वीकार हुआ हो, उसका फलन अर्थात् ‘मोक्ष रूप’ होने का प्रमाण किसी भी परंपरा से निकल नहीं पाया। इसीलिये मोक्ष किसी को समझ में आया है, नहीं आया है, इसको कहना अथवा निश्चय करना उक्त दोनों विधि से सम्भव नहीं हुआ ।

In both these ways (as discussed in the above paragraphs), even the cause of bondage does not become clear. Lingering doubts remain on all the remedies or methods which have been recommended for attaining *moksha* (liberation). There is therefore no evidence regarding who really attained *moksha*. Of all the methods which have been recommended for *moksha*, there is no single method which is acceptable to all; and from all the methods that have been tried out, no tradition has been able to produce evidence of the outcome in the form of *moksha*. Therefore, it has not been possible to say with certainty that someone has understood, or not understood, *moksha* in these two ways.

‘वस्तु’ के रूप में बन्धनकारी वस्तु जिसका कार्यक्रम बन्धन में डालते रहना है, बन्धन में आने वाली वस्तु और बाँधने वाले के साथ इनका संयोग विधि स्पष्ट नहीं हो पाया । इसमें सदा-सदा तर्क और कल्पना का दोहराना, नवीनीकरण करने की संभावना बना ही रहा । इसलिये अवसरानुसार नवीनीकरण करते रहे । दूसरा यह भी है विभिन्न जलवायु में रहकर कल्पना सहज तर्क को विभिन्न विधि से प्रस्तुत किया । यह सब एक जगह में देखने सुनने की स्थिति में मानव अपने पुरुषार्थ से एक दूसरे-देश, द्वीप पहुँच कर एक दूसरे का भाषा, विचारों को समझने की कोशिश किया ।

No clarity could be achieved regarding what is the ‘reality’ which has a program to keep others in bondage, the ‘reality’ which comes under bondage, and the manner of its relationship with the one which keeps in bondage. Repetition of argument and imagination, and possibility for innovation always remained in this. Thus, humans kept on innovating (on descriptions of bondage and liberation) depending on the circumstances. Moreover, diverse geographical & climatic conditions also resulted in presentation of all this imagination and argument in diverse ways. Having seen and heard all this at one place (where they live), humans made efforts to travel to other countries & islands and tried to exchange their thoughts on these topics.

अनेक समुदाय परिकल्पना और उसकी समीचीनता के मुद्दे पर समीक्षा के लिये, स्मरण के लिये इतिहास भी आवश्यक है । मानव इतिहास के अनुसार नस्ल-रंग के आधार पर समुदायों को पहचाना । इसके अनन्तर वस्तु संग्रह और विपन्नता के आधार पर समुदायों को पहचाना । उसके अनन्तर आजीविका के कार्यों के आधार पर समुदायों को पहचाना गया। उसके अनन्तर भाषा, देश और विभिन्न आस्थाओं के आधार पर समुदायों को पहचाना गया । अभी, इस दशक में देशों के अर्थ में विकसित, विकासशील और अविकसित के रूप में पहचाना जा रहा है । मानव के रूप में संग्रह, सुविधा, भोग, अतिभोग, बहुभोग, इसके विपरीत विपन्नता के रूप में अधिकांश समुदायों को पहचाना जाता है । जब कभी भी लड़ाई करना होता है तब परस्पर कट्टर पंथी जाति, मत, संप्रदाय और धर्म की दुहाई दी जाती है । सभी प्रकार के समुदाय वैचारिक मतभेदों, सविपरीत अथवा परस्पर प्रतिकूल मान्यताओं के रूप में गण्य है ।

For a critique of the assumptions in any sect, refreshing the human history is essential. Sects were recognised based on race and colour as per the human history. Subsequently, sects were recognised based on accumulation of physical objects, or the lack thereof. Further on, sects were recognised based on the means of livelihood. Subsequently, language, countries & diverse beliefs became the basis of recognition of sects. Presently, in this last decade of the twentieth century, countries are being recognised as developed, developing and undeveloped. Most sects are recognised based on accumulation, luxuries, consumption, over- and multi-consumption, or on the other hand, based on deprivation. Whenever they want to initiate a conflict, a fanatical appeal for caste, belief, sect & religion is made by both the sides. All sects categorically have differences in opinions, divergent and mutually contradictory beliefs.

ऐसे पहचाने गये सभी समुदाय बंधन और मोक्ष की चर्चा अवश्य करते हैं । बंधन के कारण को स्पष्ट न कर पाना, मोक्ष को स्पष्ट न कर पाना और मोक्ष के लिये सार्वभौम उपाय का प्रतिपादन नहीं हो पाना यही मतभेद विभिन्न संस्कृति का आधार मानने का भ्रम जाल बन गया । इस बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक पूर्ववर्ती दोनों विचार धाराओं के अनुसार एक सार्वभौम दिशा, मार्ग स्पष्ट नहीं हुई-जबकि आवश्यकता बलवती होती आई है।

All these sects surely discuss about bondage and *moksha*. Inability to explain the cause of bondage, inability to explain *moksha*, and inability to propose a universal approach to attain *moksha*, these differences indeed became the assumed basis of diverse cultures, and resulted in all the delusion. Until this last decade of the twentieth century, both the erstwhile ideologies could not propose a universal direction & way, while its need became stronger & stronger.

अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन धारा विधि से सम्पूर्ण अस्तित्व के रूप में अनुभव करने के फलस्वरूप बन्धन का स्वरूप, कारण तथा मोक्ष (मुक्ति) की आवश्यकता उसके लिये सहज और सार्वभौम उपाय अध्ययन गम्य होता है । यही अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था का आधार सूत्र और व्याख्या भी जागृत मानव का ही आचरण है ।

As a result of realising the whole existence by way of the ideology of existence based human centred contemplation, the nature & cause of bondage, and need of *moksha* (liberation) along with practical and universal plan, becomes studiable. This is indeed the basic formula & description for indivisible society and universal systems, and also is the conduct of the awakened human being.

इस अध्याय के आरंभ से ही ‘बन्धन’ और ‘मोक्ष’ नाम के मुद्दे पर छ: (6) प्रश्न है :-

1. ‘वस्तु’ के रूप में कौन सी चीज है जो बन्धन में पड़ा रहता है ?
2. ‘वस्तु’ के रूप में कौन सी चीज है जो बांध कर रखती है ?
3. ‘वस्तु’ के रूप में कौन सी चीज है जो मुक्ति दिला देता है ?
4. ‘वस्तु’ के रूप में ऊपर कहे गये ‘तीनों’ कहाँ है ?
5. क्यों ऐसे बन्धन कृत्य को करता है?
6. जो बन्धन था, मुक्ति पाने के बाद उसका प्रयोजन क्या है ?

Right from the beginning of this chapter, six questions have been posed on the topic of ‘bondage’ and ‘*moksha*’ :

1. Which is the ‘reality’ which remains in bondage?
2. Which is the ‘reality’ which keeps in bondage?
3. Which is the ‘reality’ which liberates?
4. As ‘reality’, where are all these ‘three’?
5. The one which keeps in bondage, why does it do so?
6. What is the purpose of the one who was in bondage, after liberation?

इसी के साथ-साथ ‘वस्तु’ क्या है ? ‘अवस्तु’ क्या है? यह अस्तित्व में कहाँ, कैसे और क्यों है ? इन सबका सार्थक उत्तर मानव आदिकाल से ही ढूंढ़ता रहा है अथवा जब से आदर्शवाद का आरंभ हुआ है उसी समय से ही विविध प्रकार से प्रश्न-उत्तर होते रहे ।

Side by side, what is ‘reality’? What is ‘unreal’? How, why and where is it in existence? Humans have been trying to find answers to these questions since ancient times, or have been debating on these since the beginning of idealistic thoughts.

जागृति के अनन्तर यह देखा गया है अस्तित्व में ही अभिव्यक्ति है, दूसरे भाषा में अस्तित्व ही सम्पूर्ण अभिव्यक्ति है । सह-अस्तित्व स्वयं अनन्त रचना के रूप व्यापक सत्ता में सम्पृक्त है । ऐसे रचनाओं में से एक रचना यह धरती है । इस धरती जैसी अनेक धरती हैं । इस धरती में जो चार अवस्थाएँ अभिव्यक्त हुई है ये अस्तित्व में थी ही, इसलिये इस धरती पर भी व्यक्त हुई। इस धरती में जो कुछ भी अभिव्यक्तियाँ समायी हुई हैं उनकी कार्य विधि, स्वरूप विधि, रचना विधि इसी धरती में ही समायी थी, इसीलिये चारों अवस्थाओं की अभिव्यक्ति स्पष्ट हुई है । इस विधि से भी स्वाभाविक रूप में परमाणु ही व्यवस्था का मूल स्वरूप कार्य रचना है यह तथ्य स्पष्ट हुआ। इसके साथ यह भी निश्चयन होता है, विघटन और विखण्डन विधि से व्यवस्था का स्वरूप और कार्य-सूत्र निष्पन्न नहीं होता । इसीलिये गठन, संगठन, रचना के लिए द्रव्य की आवश्यकता बना ही रहता है, इसलिए विरचना परंपरा होना स्पष्ट है, ऐसे विरचना प्राकृतिक है ।

It has been seen in the state of awakening it is in existence itself that the expression occurs; in other words, existence indeed is the complete expression. Coexistence in itself is in the form of countless compositions submerged in omnipresent Omnipotence. This planet is also one such composition; there are many such planets in existence. The four orders which appeared on Earth, already existed in existence, that’s how they manifested on this planet too. It became clear that all the manifestations which appeared on Earth, their way of working, way of manifestation, way of composition (design), already existed and were contained in this planet; that’s how the appearance of the four orders occurred on Earth. In this manner, this fact got corroborated that the atom itself is the fundamental unit, activity & composition of orderliness. With this, a conclusion emerged that the true form & working (operating manual) of orderliness does not become clear by way of disintegration and fragmentation. For every constitution, construction & formation, raw material is always needed; thus the tradition & role of deconstruction & deformation becomes clear. All such deconstructions are natural.

परमाणु में गठन ही गठनपूर्णता और उसकी अक्षुण्णता, निरंतरता क्रम में चैतन्य इकाई जीवनपद, जीवनीक्रम, जागृतिक्रम और जागृति को व्यक्त, अभिव्यक्त करने के लिए ही सतत कार्यरत है । गठनपूर्णतावश ‘जीवन’ नित्य होना ही चैतन्य पद की मौलिक स्थिति और गति है । रासायनिक-भौतिक द्रव्य रूपी वस्तुओं में, से, के लिए रचना-विरचना मौलिक कार्य हैं । सम्पूर्ण द्रव्य और रासायनिक-भौतिक द्रव्य विकासशील, विकासक्रम में कार्यरत रहना, भागीदारी करना और सार्थक होना देखा गया है। भौतिक वस्तुएँ अपने-अपने परमाणु प्रजाति के अनुसार ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में व्यक्त है । प्राणावस्था भौतिक-रासायनिक रचना के रूप में ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में व्यक्त है । संपूर्ण जीव संसार जड़-चैतन्य के सह-अस्तित्व में जीवनीय क्रम विधि से अर्थात् वंशानुक्रम विधि से हर प्रजाति की जीव प्रकृति वंशानुषंगीय विधि से ‘त्व’ सहित व्यवस्था होना और मानव ‘मानवत्व’ सहित व्यवस्था होने के लिए जीवन जागृति आवश्यक रहे आया है । अभी तक मानव नाम से इंगित वस्तु की सार्वभौमता को पहचानना ही शेष था- अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन विधि से यह सम्भव हो गया है ।

Constitution in atom is persistently active for constitution completeness; and in course of its ceaselessness & continuity, the sentient entity is persistently active for the expression & manifestation of jeevan plane, living-world progression, awakening progression, and awakening. Eternality of ‘jeevan’ due to constitution completeness is indeed the unique state and motion of the sentient plane. Composition decomposition is the unique activity in, by & for matter in the form of physico-chemical objects. All matter & physico-chemical objects have been seen to be development oriented, and active in, participating in and meaningful in development progression. Physical objects manifest themselves according to their respective type of atoms, as orderliness with ‘essence’. Entities of the plant order manifest themselves in the form of physico-chemical objects, as orderliness with ‘essence’. All species of the animal order, as coexistence of insentient & sentient by way of living-world progression, manifest themselves as orderliness with ‘essence’. Necessity of jeevan awakening has always been there for orderliness with ‘humaneness’ in humans. It is only the universality of the entity called ‘human being’ which is yet to be recognised. This has now become possible with existence based human-centred contemplation.

मानव परंपरा में हर संतान अथवा हर मानव कल्पना सहज स्वीकृति के रूप में जागृति को वरना देखा गया है । हर मानव रूपी वस्तु, हर स्थिति, हर गति के प्रति जागृत होना चाहता है, हर सम्बंधों को पहचानना चाहता है जागृत होना चाहता है और इन सबके मूल में सुखी होना चाहता है । इस क्रम में इन्द्रिय सन्निकर्ष विधि से सुखी होने के लिये तमाम विधियों को अपनाते हुए संग्रह सुविधा के चक्कर में आदमी फँस गया । संग्रह विहीन स्थिति में व्यक्ति अपने को निरीह अकेले पाता है । संग्रह के आधार पर ही भोग, अतिभोग का आस्वादन किया जाना मान लिया गया है । फलस्वरूप संग्रह का आवश्यकता और विस्तार उसके अनुकूल शोषण प्रवृत्ति, कार्य, तरीके तैयार होते गये । बंधन के व्यवहार रूप को इसी स्वरूप में देखा गया है । हर कार्य और तरीके के मूल में मानसिकता (आशा, विचार, इच्छा) का होना सुस्पष्ट है । जीवन ही मानसिकता के रूप में कार्य करना स्पष्ट है ।

It has been seen that every child or every human being in human tradition has acceptance in their imagination for embracing awakening. All humans want to understand everything that exists, and everything that is happening, want to recognise all relationships, want to become awakened; and at the root of all this, want to be happy. On this course, while attempting to become happy by sensory gratification in diverse ways, humans got trapped in the cycle of accumulation & comforts. And if devoid of accumulation, they feel helpless and alone. It is a strong belief that consumption and over-consumption on the basis of accumulation is the way to enjoyment. As a result, accumulation became more & more prevalent, along with tendency to exploit, and innovative actions and methods aligned with all this. This is how the practical form of bondage has been seen. At the root of all actions and approaches, the presence of mentality (hopes, thoughts & desires) is explicit. It is clear that it is jeevan indeed which acts in the form of mentality.

1. **वस्तु के रूप में कौन सी चीज है जो बन्धन में पड़ा रहता है?**

भ्रमित जीवन ही बन्धन के रूप में अपने को चार विषय पाँच संवेदनाओं को राजी करने के रूप में व्यक्त करता है । यही मानव परंपरा में मानसिकता का अर्थ है । जीवन में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा अक्षय बलों के रूप में कार्यरत रहना और आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा और प्रमाण अक्षय शक्ति के रूप में कार्यरत रहना स्पष्ट हो चुकी है ।

1. **Which is the ‘reality’ which remains in bondage?**

It is the deluded jeevan which manifests itself in the form of bondage while trying to gratify the four instincts and five senses. In human tradition, this is the meaning of mentality. It is already clear that in jeevan, *mun, vritti, chitta buddhi* & *atma* remain active in the form of inexhaustible strengths and hope, thoughts, desires, resoluteness & evidence remain active in the form of inexhaustible powers.

2 **‘वस्तु’ के रूप में कौन सी चीज है जो बाँधकर रखती है ?**

उत्तर में यही मिलता है कि कोई वस्तु अस्तित्व में ऐसी नहीं है जो जीवन को बंधन में डालती हो । अस्तित्व स्वयं ही सह-अस्तित्व होने के कारण नित्य व्यवस्था सहज प्रेरणा सूत्र है । जीवन जागृति के अनन्तर व्यवस्था में जीने की संभावना हर मानव के लिए समीचीन है ।

इससे स्पष्ट है जीवन लक्ष्य रूपी जागृति और जागृति पूर्णता के पहले जो स्थिति-गतियाँ आशा, विचार और इच्छा-प्रिय, हित, लाभ, भय, प्रलोभन और आस्था और इनके संयोग योग से जितने भी क्रियाकलाप होते हैं ये भ्रम रूप होना देखा गया है । यही बन्धन है । अनुभव रूपी सह-अस्तित्व में प्रमाण - मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना क्रम है ।

1. **Which is the ‘reality’ which keeps in bondage?**

The answer we get is - there is nothing in existence which puts jeevan in bondage. Existence, by virtue of being coexistence, is a continuous source of inspiration for orderliness. After the awakening of jeevan, the possibility to live in orderliness is available to all humans.

Thus, before achieving the goal of jeevan in the form of awakening and awakening completeness, the state & motion, hopes, thoughts & desires; perspectives of pleasant, health & profit; fear, temptation & faith, and all the activities in their permutations & combinations, all of them have been seen as delusion. This itself is bondage. Humane consciousness, deific consciousness & divine consciousness, this is the progression of evidence of realisation in coexistence.

3. **वस्तु के रूप में कौन सी चीज है जो मुक्ति दिला दे ?**

जीवन जागृति अर्थात् तीनों विकसित चेतना पूर्वक स्वयं में, स्वयं से, स्वयं के लिये भ्रम-मुक्ति पा लेता है । जीवन अस्तित्व सहज वस्तु होना सुस्पष्ट है क्योंकि मूल में सम्पूर्ण परमाणु वस्तु है जीवन भी एक गठनपूर्ण परमाणु होना स्पष्ट है । मुक्ति दिला सकने वाला जीवन से भिन्न कोई वस्तु नहीं है । ‘जीवन’ के लिए प्रेरक वस्तु सह-अस्तित्व में स्वयं जागृत जीवन ही है क्योंकि सह-अस्तित्व स्थिर है, जागृति निश्चित है।

1. **Which is the ‘reality’ which liberates?**

Jeevan, by way of awakening, in other words, by way of the above-mentioned three consciousness development stages, achieves liberation from delusion in itself, by itself, for itself. It is absolutely clear that jeevan is a reality in existence because basically all atoms are realities, and it is clear that jeevan is also a constitutionally complete atom. The reality which is capable of liberating is not something other than jeevan. In coexistence, awakened jeevan is indeed the inspiration for ‘jeevan’ because coexistence is steady, and awakening is certain.

4. **‘वस्तु’ के रूप में ऊपर कहे गये तीनों कहाँ है ?**

अस्तित्व में ही जीवन है । जीवन अपने लक्ष्य रूपी जागृति को प्रमाणित करने के पहले भ्रमित रहता है । जैसे सही करने के पहले गलती करता है । परम जागृति जीवन का लक्ष्य है और परम जागृति अस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण ही है । इस प्रकार जीवन जागृति क्रम में भ्रम बन्धन को व्यक्त करता है, पीड़ित होता है, फलस्वरूप जागृत होने की आवश्यकता बनती है । इस प्रकार अस्तित्व नित्य वर्तमान, अस्तित्व में जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति और जागृति पूर्णता अस्तित्व सहज जीवन में, से, के लिए सम्पूर्ण प्रमाण सहज क्रियाकलाप है ।

1. **As ‘reality’, where are all these three?**

Jeevan is in existence only. Jeevan is deluded before evidencing its goal of awakening. It is very similar to someone fumbling before learning the correct way of doing something. Absolute awakening is the goal of jeevan as well as the evidence of realisation in existence. In this manner, in awakening progression, jeevan manifests bondage of delusion, suffers due to this; and as a result, the need for awakening gets established. In this manner, existence is eternally present; and living-world progression in existence, awakening progression of jeevan, awakening & awakening completeness, all the activities in existence are for evidence in, by & for jeevan (which is also inseparable in existence).

5. **क्यों ऐसे बन्धन कृत्य को करता है ?**

जीवन जागृति क्रम सहज विधि से भ्रम बन्धन का पीड़ा अपने आप स्पष्ट होता है । इसे जीवन ही स्वीकारता है । भ्रमात्मक कार्यकलाप जीवन में से साढ़े चार क्रिया के रूप में ही निष्पन्न होती है । जीवन में जागृति दस क्रिया के रूप में होना एक आवश्यक मंजिल होना, उसकी निरंतरता प्रमाण रूप में स्वाभाविक होना देखा गया । भ्रमबन्धन पूर्वक मानव परंपरा अनेक समुदायों में है, जागृति और जागृति पूर्णता उसकी निरन्तरता सहज वैभव के रूप में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था वैभवित होती है । इस प्रकार अस्तित्व में भ्रम बन्धन को व्यक्त करने का वस्तु जीवन है । भ्रम को स्वीकारने वाला वस्तु जीवन ही है और भ्रम बन्धन से पीड़ित होने वाला वस्तु जीवन ही है एवं जागृत होने वाले वस्तु जीवन ही है । उसकी जागृति की निरन्तरता को व्यक्त करने वाला भी जीवन ही है । जीवन सह-अस्तित्व में अविभाज्य है । जागृति क्रम में भ्रम बंधन रूप में, जागृति भ्रम-मुक्ति है ।

1. **The one which keeps in bondage, why does it do so?**

By way of awakening progression in jeevan, the suffering of bondage in delusion becomes clear by itself, naturally. Jeevan is indeed the entity which accepts it. Deluded actions emanate from jeevan in the form of only four and a half activities. It has been seen that awakening in jeevan in the form of ten activities is an important goal, and its continuity occurs naturally as evidence. Human tradition is divided into many sects due to the bondage of delusion, while awakening, awakening completeness and its continuity establishes & maintains the grandeur of indivisible society & universal system. In this manner, in existence, jeevan is indeed the reality which expresses the bondage of delusion. The reality which concedes to bondage is jeevan, so is the reality which suffers from bondage, and the reality which gets awakened is also jeevan. The reality which expresses the continuity of awakening is also jeevan. Jeevan is inseparable in existence. In awakening progression, delusion is in the form of bondage, while awakening is liberation from delusion.

6. **जो बन्धन था, मुक्ति पाने के बाद उसका प्रयोजन क्या है ?**

जीवन जागृति अर्थात् मानव चेतना, देव चेतना पूर्णता में, दिव्य-चेतना सहज प्रमाण और जागृति पूर्णता के अनन्तर उसकी निरंतरता का परंपरा के रूप में होना नियति क्रम व्यवस्था है । इस सत्यता के आधार पर जागृति पूर्णता विधि से मानव परंपरा वैभवित होना ही इसका प्रयोजन है । जीवन नित्य होने के कारण जागृति भी नित्य होना स्वाभाविक है । इन क्रम में बन्धन, भ्रम, समस्या से ग्रसित बुद्धिजीवी बनाम शब्दजीवी में यह तर्क उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि जागृति क्रम की भी निरंतरता होना चाहिए । इसके लिए जागृति पूर्ण प्रणाली से उत्तर यही है कि जागृति क्रम विधि से जीवन अथवा भ्रम बन्धन विधि से जीवन शैशवकाल से शरीर संचालन करता हुआ मानव संतान जागृत होने का अभिलाषा सहित व्यक्त होने के आधार पर अथवा प्रकाशित होने के आधार पर जागृति क्रम और जागृति पूर्ण परंपरा स्वाभाविक रूप में सहज विधि से ही जागृति प्रतिष्ठा स्थापित करना सहज है । क्योंकि जागृत परंपरा में स्वायत्त मानव के लिए अति आवश्यकीय शिक्षा-संस्कार सहज रूप में उपलब्ध रहता ही है । अतएव भ्रमबन्धन का निरन्तरता केवल जीवावस्था में ही प्रमाणित होता है। मानवीयतापूर्ण मानव परंपरा में, से, के लिए भ्रमबन्धन की आवश्यकता सर्वथा निरर्थक, अनावश्यक होना पाया गया है ।

1. **After liberation, what is the purpose of the one who was in bondage?**

Upon accomplishment of awakening of jeevan in humane consciousness & deific consciousness, and evidence of divine consciousness and its continuity upon awakening completeness in the form of human tradition, is provisioned in the course of destiny. Based on this truth, human tradition becoming accomplished with the grandeur of awakening completeness itself is its purpose. As jeevan is eternal, it is natural that awakening too is eternal. In this discussion, it is possible to face a question from intellectuals, or bookish scholars besieged with bondage, delusion & problems, that there should be continuity of awakening progression too. Answer to this from the standpoint of awakening is that jeevan is driving the human body since childhood, in awakening progression or delusion bondage, and has the aspiration to express itself along with aspiration to become awakened; on this basis, the establishment of awakening is natural in awakening progression as well as in the awakened tradition. It is so because the necessary education-*sanskar* for autonomous humans is readily available in awakened tradition. Thus, continuity of delusion bondage is evidenced only in the animal order. The need for delusion bondage in, by & for the humane tradition is absolutely meaningless & unnecessary.

सर्वप्रथम भ्रम और बन्धन का कार्य रूप, परमाणु में अणु बंधन, भार बन्धन से मुक्ति के अनन्तर; भ्रम ही आशा बन्धन रूप में व्यक्त होना जीव संसार में प्रमाणित होता है । चैतन्य पद में प्रतिष्ठित होने पर आशा, विचार का क्रियाशीलता, कम से कम आशा की क्रियाशीलता होना पाया जाता है । इसका प्रमाण रूप जीवन स्वयं अपने कार्य गतिपथ को अपने ही आशानुरूप स्थापित कर लेता है । आशा का मूल सूत्र जीने की आशा ही है। जीने की आशा जीवनगत मन सहज आस्वादनापेक्षा का प्रकाशन है । यही जीवावस्था में स्पष्ट है ।

The first instance of delusion & bondage is seen in the atom upon its liberation from molecular & gravitational bondage, where delusion manifests itself as the bondage of hope in the animal order. Upon getting established in the sentient plane, the activation of hope & thoughts, or at least the activation of hope, is obvious. That the jeevan establishes its path of working according to its own ‘hope’, is its evidence. In its basic form, ‘hope’ means ‘hope to live’. Hope to live is an exhibition of expectation of taste in mun. This is apparent in the animal order.

गठनशील से गठनपूर्ण परमाणु बनना ही संक्रमण है । संक्रमण का स्वरूप और कार्य निश्चित बिंदु के पहले और बाद की मध्य रेखा ही है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई-मोटाई कुछ भी नहीं रहती है । इस संक्रमण गामी परिणाम को केवल मानव अपने दृष्टा पद प्रतिष्ठा महिमावश समझना परम सहज और परम आवश्यक है । यह संक्रमण के अनन्तर जीवन सहज कार्य प्रतिष्ठा को किसी भी यंत्र से या मानव आँखों से देखना सम्भव नहीं है क्योंकि आँखों से गणितीय भाषा अधिक है अर्थात् आँखों से जितना इंगित हो पाता है उससे अधिक गणितीय भाषा से इंगित होना देखा गया है। गणितीय भाषा से अधिक गुणात्मक भाषाओं से परस्पर मानव में इंगित होना देखा गया है और गुणात्मक भाषा से तथा गणितात्मक भाषा से जितना इंगित हुआ है उससे अधिक और सम्पूर्णता कारणात्मक भाषा से इंगित होना पाया गया है । इंगित होने का तात्पर्य, प्रयोजन सहित वस्तु स्वरूप सर्वस्व को जानना-मानना और पहचानने से है इसलिए मानव भाषा कारण-गुण-गणितात्मक है।

Attainment of the state of complete constitution by an atom, from the state of evolving constitution, is transcendence. The dividing line before and after transcendence is the true form & process of transcendence; this dividing line does not have any length, width or thickness. It is only by virtue of being established in the perceiver plane that one can effortlessly understand the final result of this transcendence, and it is absolutely important to understand this. Upon transcendence, it is not possible to see the activities of jeevan with any instrument, or with naked eyes, because mathematics is more precise (accurate) than the eye; in other words, whatever precision (accuracy) is indicated by the eye, mathematics has the capability to be more precise than that. It has been seen that in the mutuality of human beings, qualitative language indicates more than what the mathematical language is capable of. And finally, whatever can be indicated by qualitative language & mathematical language, the causal language is able to indicate more than that; actually it is able to indicate absolute completeness. The meaning of ‘indicate’ (capture) here is to know, believe & recognise an entity, in its entirety, along with its purpose. Therefore, human language is causal, qualitative and mathematical.

रूप सहज अस्तित्व में, से आंशिक भाग आँखों से इंगित होता है । गणित के द्वारा सम्पूर्ण रूप और आंशिक गुण इंगित होता है, गुण का तात्पर्य प्रभाव सहित गति है । सम्पूर्ण गुण और स्वभाव गुणात्मक भाषा से इंगित होता है । कारणात्मक भाषा विधि से स्वभाव-धर्म इंगित होता है और ‘अस्तित्व समग्र’ इंगित होता है। इस विधि से मानव भाषा अपने आप सुस्पष्ट है ।

Only a part of the formful world is indicated (captured) by the eye. It becomes possible to indicate all of the formful world and part of the qualities aspect with the help of mathematics; meaning of attributes is - effect along with motion. All the attributes, and the intrinsic nature is indicated by qualitative language. Intrinsic nature and *dharma* is indicated by the causal language which covers the ‘entire existence’. In this manner, the human language becomes clear in its completeness.

इससे यह पता चलता है कि प्रकृति ही जड़-चैतन्य स्वरूप में है तथा जड़ प्रकृति ही चैतन्य प्रकृति में संक्रमित होता है । चैतन्य प्रकृति जब तक जीने की आशा से सीमित रहती है तब तक जीवनी क्रम के रूप में ही प्रिय, हित, लाभात्मक दृष्टियों का आंशिक प्रयोग करते हुए जीवनी क्रम के परम्पराओं को बनाये रखने के रूप में साक्षित है । यही भ्रम का प्रथम चरण है । इस चरण में भ्रम की पीड़ा या बन्धन की पीड़ा प्रभावित प्रमाणित नहीं होती है। इसके साथ तर्क रूप में यह संशय हो सकता है कि भ्रम की पीड़ा के बिना किस विधि से जागृति क्रम में मानव ने आरंभ किया ?

It has been already explained that nature itself is in the form of insentient & sentient, and the insentient nature itself transcends to the sentient nature. Till the time the sentient nature is governed by the ‘hope to live’, it is evident in the form of living-world progression while partially using the perspectives of pleasant, health & profit, and maintaining the traditions of living-world progression. This is the first stage of delusion. In this stage, the agony of delusion or the misery of bondage is not evident. At this point, a doubt may come up that how did the humans begin the awakening progression without the agony of delusion ?

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि इसके पहले प्राणकोषाओं में रचना-विधि सूत्रित रहना एक रचना विधि परंपरा के रूप में स्थापित होने के उपरांत रचनासूत्र अपने ही उत्सव सहज अनुसंधान क्रम में अन्य प्रकार की रचना विधि को स्वीकारा रहता है । इसी आधार पर पहले किसी न किसी शरीर और वंश के माध्यम से अग्रिम वंश के लिए योग्य शरीर निष्पन्न हो जाती है । इसका मूल तत्व रचनासूत्र में होने वाली तृप्ति का उत्कर्ष ही है । रचनाक्रम और विधियाँ जब वंश और बीज के रूप में स्थापित हो जाती है, वह रचना सूत्र अपने आप में तृप्त होना स्वाभाविक ही है । इसी प्रकार रचनासूत्र अपने कार्य कलापों के साथ अग्रिम कार्यकलापों के लिए अपने तत्परता को अर्पित करते हैं फलस्वरूप अनुसंधानात्मक रचना सूत्र स्वीकृति सम्पन्न हो जाता है । यही अनुसंधानित बिन्दु है यह अनुसंधान रचना क्रम में ही समृद्ध होता हुआ देखने को मिला।

The answer is that initially the design of a composition is coded in its cells, and after a design of composition is established in tradition, the composition code is on the lookout for other types of designs of compositions as its own natural celebration. On this basis, physical bodies for the next advanced species emerge through the already existing physical bodies and species. Main factor in this is the elation out of the settlement of composition code. When the composition methods are established as tradition in the form of species and seeds, it is natural that such composition codes are well-settled. In this manner, while remaining engaged in their own activities, the composition codes show their readiness to participate in further quests for composition codes. This is how newer & newer composition codes are formed in nature. This is the main finding of the exploration, and it has been observed that the exploration becomes mature with the maturity in tradition.

इसी विधि से मानव शरीर रचना अन्य परंपरा में से निष्पन्न होने के उपरान्त मानव परंपरा सहज शरीर रचनाएँ वंशानुक्रम विधि से स्थापित हुई । मानव शरीर रचना परिष्कृत रचना होना इस प्रकार से स्पष्ट हुआ कि मानव शरीर द्वारा मानव परंपरा में सुखाभिलाषा बलवती होती आई, जबकि आरंभिक समय में जीवों के सदृश्य ही भ्रम बन्धन पूर्वक जीने की आशा सहित ही व्यक्त होना हुआ । सुख की चाह बलवती होने के फलस्वरूप ही जीवों से भिन्न तरीकों से शरीर संरक्षण विधियाँ, शरीर पोषण विधियाँ परंपरा में स्थापित हुई । इसमें विविधताएँ अवश्य रही । शरीर पोषण संरक्षण का लक्ष्य समान रहा।

In a similar manner, after the emergence of the human body from other traditions, the tradition of human body composition also got established as a species. The fact that the human body is a more refined composition became clear by observing that in human tradition, the appetite for happiness kept on becoming stronger with time, while in ancient times, due to delusion bondage, only the ‘hope to live’ was manifest, very similar to animals. It is only as a result of strengthening the appetite for happiness that protecting and nourishing the human body in ways different than how the animals accomplish these, got established in human tradition. Although there have been diversities in these, the objective of protecting and nourishing the body remained the same.

इसीलिये शरीर से सुखी होने की तत्परता बढ़ी । भ्रम बन्धन पहले से जीवन में समायी रही । शरीर से ही सुखी होने की तत्परता बढ़ी । सुखाभिलाषा का तृप्ति बिन्दु नहीं मिल पाया । पुरजोर से इसके लिये प्रयत्न हुआ । अतिभोग-बहुभोग के ओर पहुँचने के लिए धरती की बलि चढाई गई । इस दशक तक धरती को सर्वाधिक रूप में घायल कर चुके हैं। इसमें सर्वाधिक सक्रियता से भागीदार विज्ञान संसार एवं प्रौद्योगिकी कार्यक्रम रहा और भोगवाद के आधार हर व्यक्ति का आंशिक भागीदारी होना देखा गया । इस विधि से भ्रम बन्धन के परिणाम स्वरूप अव्यवस्थावश पीड़ा बढ़ी। यह पीड़ा भी मानव द्वारा किये गये कार्यों, व्यवहारों, सूझ-बूझों के परिणाम से निष्पन्न हुई है इसमें और किसी वस्तु का हाथ नहीं है ।

Thus increased the efforts to become happy through sensory gratification. Delusion bondage already prevailed in jeevan. The efforts to become happy by focusing on sensory gratification kept on increasing, but the point of satisfaction for happiness still eluded humans. Therefore, more & more efforts are being made with renewed vigour. Humans have caused enough damage to Earth in order to get satisfaction from multi-consumption and over-consumption. Till this last decade of the twentieth century, maximum harm has been done to Earth. Scientific community and the technological programs have played the most active role in all this, while due to consumerism, everyone has played at least a partial role. In this manner, the suffering due to chaos resulting from delusion bondage has increased. All this suffering is due to the result of human deeds, behaviour and so-called wisdom; no one or nothing else shares this blame.

इसी जागृति क्रम में भय, प्रलोभन, आस्था को पहचानना बना । आस्थाएँ विरोध-विद्रोह से छूटी नहीं । युद्ध घटनाएँ बारंबार दोहराई गई किन्तु युद्ध लोकमानस में पचा नहीं। समर वाद, समर शक्ति, समर विज्ञान को बनाये रखने के लिये द्रोह, विद्रोह, शोषण, अपना-पराया का होना देखा गया । यह भी पीड़ा का एक भाग हुआ । शासन विधि में अपनाई गई (धर्मशासन, राज्यशासन) दंड विधान भी दर्द, यंत्रणा का कारण हुआ। धर्म संविधान के अनुसार महिला और पुरुषों में अधिकार भेद सर्वाधिक यंत्रणा का आधार हुआ । परिवार में जितने भी सदस्य होते हैं उनमें अधिकार भेद ही यंत्रणा और अविश्वास का आधार हुआ ।

It was in this awakening progression that humans got associated with fear, temptation & faith. Faiths were not bereft of resistance & rebellion. Although the incidents of wars happened again & again, wars remained unpalatable to the public mind. The presence of revolt, rebellion, exploitation, appeasement & hostility has been observed for strengthening the philosophy, power and science of the military. This also caused agony to humans. Penal codes adopted by rulers (religious order, state governance) also became factors for pain and torment. Gender inequality imposed by religions caused the maximum torment. Differences of rights among family members also caused torment and distrust.

व्यापार और प्रौद्योगिकी प्रतीक मुद्रा रूपी पूंजी के आधार पर चंगुल में आ गई । इस दशक तक अधिकांश प्रौद्योगिकी, कारखानाएँ स्वचालित विधि को अपनाया गया है । इसमें सर्वाधिक पूँजी निवेशी विधि को अपनायी गई। पूँजी का संग्रहण, ब्याज प्रथा, शोषण, लाभांश के रूप में गण्य होना पाया गया । पूँजी-पूँजी से बढ़ता गया । पूँजीहीनता भी और बढ़ता गया । ये सब परिवार और प्रौद्योगिकी संस्था में भागीदारी करता हुआ लोगों में द्वेष का ज्यादा-कम का आधार हुआ । अभी तक द्वेष, विरोध, विद्रोह विहीन परिवार परंपरा नहीं बन पाई थी । स्वायत्त मानव के रूप में प्रमाणित होने का अधिकार सम्पन्नता उसका प्रभाव नवें दशक से प्रमाणित होना शुरू हुआ । दसवें दशक में स्वायत्त मानव के उम्मीदवार बढ़ चुके हैं। ये सब पीड़ा क्रम में परिवर्तन की आवश्यकता और परिवर्तन की संभावना और परिवर्तन के प्रमाण तक पहुँचने का एक अध्याय सम्पन्न हुआ है ।

Due to symbolic currency, commerce and industry are under the clutches of capital. By this last decade of the twentieth century, most of the industries and factories have adapted automatic machinery. Most of these have been set up by way of shareholders’ funds. It has been observed that accumulation of capital accrued due to interest payments, dividends & exploitation. Capital helped in creating more capital. It created more poverty also. All these resulted in hatred and unequal distribution among family members as well as among those participating in industries. Before the proposal of Madhyasth Darshan, a family tradition devoid of hatred, dissent and rebellion was still awaited. Evidence of being accomplished as an autonomous person, and evidence of its impact commenced in the ninth decade of the twentieth century. By the tenth decade, the number of candidates for autonomous humans has increased. Having gone through all this, humankind has reached the end-stage of a chapter regarding the need, possibility and evidence of change in all this suffering.

जागृति क्रम विधि से पारिवारिक और सामूहिक रूप में किये गये कृत्यों के आधार पर पीड़ा बलवती होने का स्वरूप को स्पष्ट किया गया । इसी से व्यवहारिक रूप में भ्रम और बन्धन परस्पर मानव के बीच में द्वेष के रूप में, परिवार-परिवार एवं समुदाय-समुदाय के बीच में वैचारिक मतभेद, ईर्ष्या, द्वेष, भय, संघर्ष के रूप में होना देखा गया । मानसिकता के रूप में अर्थात् आशा, विचार, इच्छा के रूप में व्यक्तिवादी अहमताएँ श्रेष्ठता, संग्रह, भोग के आधार पर गण्य हुई । जीवन अपने क्रिया के रूप में आस्वादन, विश्लेषण से अधिकाधिक चित्रण क्रिया को सम्पादित किया । सम्पूर्ण चित्रण इसी धरती के वस्तुओं को उपयोग करते हुए प्रमाणित करने की विधि तैयार हुई । इस प्रकार से धरती के वस्तुओं को सर्वाधिक दोहन करने के फलस्वरूप धरती का ही संतुलन, भाँति-भाँति विधि से खंडित होना आंकलित हुआ । यही सर्वाधिक पीड़ा का आधार हुआ । अभी भी बुद्धिजीवी और विज्ञानियों में से बुद्धिजीवी अपने बुद्धिवादिता के आधार पर धरती और धरती के वातावरण के असंतुलन में अपनी भागीदारी को कम स्वीकारते हैं । दूसरी ओर विज्ञान और प्रौद्योगिकी संसार में भागीदारी करता हुआ विज्ञानी, मनीषीयों में अपने को धरती के असंतुलन में प्रधान कारक तत्व होने की स्थिति को कम लोग स्वीकारते हैं । इस मुद्दे पर पीड़ित लोगों की संख्या अभी भी न्यूनतम ही है । फिर भी पीड़ित लोगो का संख्या बढ़ रही है ।

The true form of increase in suffering due to human deeds at family and social levels, has been explained by way of awakening progression. In practical form, delusion and bondage has been seen as hatred among individuals, and as dissent, jealousy, hatred, fear & struggle among families and sects. In the form of mindsets, that is in the form of hope, thoughts & desires, individual-based egos get categorised on the basis of superiority, accumulation and consumption. Using the activities of taste and analysis, jeevan engaged in the visualisation activity to the fullest extent. For evidence of all visualisation, resources already available on this planet have been used. As a result of such extreme exploitation of natural resources on Earth, its balance got disturbed in many ways. This has been at the root of tremendous suffering. Even now, between so-called intellectuals and scientists, the intellectuals acknowledge to a lesser extent their own role in disturbing the balance on Earth and its environment. On the other hand, among the scientists and other learned people active in the world of science & technology, lesser people acknowledge them to be the main factor in disturbing the balance of this earth. On this point, the number of distressed people is still very low, although this number is increasing.

तात्विक रूप में अर्थात जीवन अपने तत्व रूप में न्याय दृष्टि की क्रियाशीलता के लिए एक तड़प अथवा प्यास उत्पन्न हो चुकी है । विगत 50 वर्ष से शैशवकालीन मानसिकता में जन्म से ही न्याय का अपेक्षा बना रहना सर्वेक्षित हुआ । कुछ समाज सेवी संस्था भी न्याय के नाम से अपेक्षाओं को व्यक्त करते ही है । इस दशक तक न्यायालयों में न्याय का स्वरूप स्पष्ट नहीं है । लोक मानसिकता में न्याय सहज अपेक्षा बढ़ता हुआ देखने को मिलता है । प्रिय, हित, लाभ दृष्टियों से अभी तक किये गये क्रिया-कलापों से अधिकांश पराभव, विरक्ति ही हाथ लगा है । यहाँ विरक्ति का तात्पर्य किया गया का व्यर्थता को स्वीकारने से है । यह जीवन क्रिया सहज जागृति क्रम का एक सूत्र है ।

An appetite or thirst for activating the perspective of justice has arisen in jeevan at a very fundamental level. In the last 50 years, it has been recognised that there is expectation of justice in every child since birth. Some institutions dedicated to social service also use the word ‘justice’ while expressing human expectations. However, till this last decade of the twentieth century, even the courts are not clear about the true form of justice. In the public mind, expectation for justice is apparently increasing. By the deeds based on the perspectives of pleasant, health & profit, in most cases, only achievement has been failure & disappointment. Here, the meaning of disappointment is to acknowledge the futility of the deeds. It is a key observation regarding awakening progression in light of the activities of jeevan.

भ्रमित मानव क्रियाकलाप के कारण धरती का असंतुलित होना प्रदूषण का अत्याधिक बढ़ना जिसके परिणाम स्वरूप धरती के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगना हुआ। जनसंख्या का दबाव, मानव में प्रलोभन की पराकाष्ठा, भोग, अतिभोग मानसिकता और परस्पर द्वेष, शोषण, छीना-झपटी, लूटमार, युद्ध, बलात्कार जैसी अनेक घटनाएँ मानव के लिए पीड़ा की पराकाष्ठा बन चुकी है । मानव ने पीड़ा से मुक्ति के लिए प्रयत्न और अनुसंधान किया जिसके फलस्वरूप जागृति का मार्ग प्रशस्त हुआ । इसी आशय से ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ प्रस्तुत है ।

Disturbing the balance on Earth and increase in pollution due to which now there are questions regarding the survival of this planet, all of this is the result of the deeds of deluded humans. Increasing population, extreme greed in humans, mindset of hedonism, and mutual hatred, exploitation, snatching, plundering, wars, rape and many other such incidents have caused extreme suffering to humans. Humans made efforts and did exploration to get rid of suffering, as a result of which the way to awakening is now available. ‘Realisation Centred Spiritualism’ is presented with this intent.

आशा बन्धन के साक्ष्य में जीने की आशा विधि से सुखी होने के उद्देश्य से इन्द्रिय आस्वादन के लिए चार विषयों को लक्ष्य मान लेना बनता है । इसी के साथ जीवन शक्तियों को लगाने में तत्परता ही बन्धन के स्वरूप में होना देखा जाता है । इस स्थिति में किया जाने वाला भोग विधि भ्रम के रूप में गण्य होता है । आशा और विचार बन्धन के रूप में जब जीवन शक्तियाँ कार्यरत होते हैं तमाम तर्क और वांग्मय व्यक्त होना आरंभ होता है । जो जिस वांग्मय को प्रस्तुत करता है उसे सर्वाधिक सत्य मान लेता है । ऐसे ही भ्रमावस्था में दूसरे विधि से लिखे गये सभी वांग्मय को अपना विरोधी मान लेता है । जो मूल व्यक्ति वांग्मय स्थापित किया, जिसके प्रति लोगों की आस्था हो गई यही एक समुदाय और ऐसे अनेक समुदाय इस धरती पर होना देखा गया है ।

For tasting of sensory happiness through ‘hope to live’ with an objective to be happy under the bondage of hope, the deluded humans assume instincts-quad to be their goal. The eagerness to deploy powers of jeevan for this is seen as bondage. Indulgence in such a state is categorised as delusion. When the powers of jeevan are active in the form of bondage of hope and bondage of thought, tendency to be vocal about all types of logic and recital of scriptures becomes pronounced. Whichever scriptures or texts someone narrates, they assume it to be the ultimate truth. In such a state of delusion, they assume other scriptures to be their opponents. When people develop faith in the founder of a philosophy or scripture, such people are seen in the form of a sect; and many such sects have been seen on Earth.

ऐसी परम्पराएँ किताब को प्रमाण माना । ऐसी अनेक आदर्श किताबें स्थापित हुई । उस-उस परंपरा में उन-उन किताबों का अनुमोदन, समर्थन करने वाले व्यक्ति आदर्श, शिष्ट व्यक्ति के रूप में मानने के लिए लोक मानस तत्पर रही है । इस दशक में भी इस प्रकार की मान्याताओं पर आधारित शिष्टता और आदर्शता देखने को मिल रहा है । यह विविध प्रकार से समुदायगत आस्थाओं के रूप में प्रवाहित होते हुए अभी तक अन्तर्विरोध और परस्पर समुदायों का विरोध समाप्त नहीं हो पाया। ये सभी परम्पराएँ उपदेश व आश्वासनों के बलबूते पर सम्मानित होना देखा जाता है । यह आशा-विचार बन्धन का ही स्वरूप है क्योंकि इन सभी समुदायों में सम्मानित विविध वांग्मय जो आज इस दशक में प्रस्तुत हैं, सर्वसम्मत समझदारी का निश्चयन नहीं कर पाते हैं । इसका कारण मानव का अध्ययन स्पष्ट नहीं हो पाया, अस्तित्व सहज सत्य सह-अस्तित्व के रूप में स्पष्ट नहीं हो पाया ।

Such traditions considered books to be the evidence. Many such ideal books, or scriptures, are available in human tradition. In all such traditions, followers have been eager to recognise those who abided by a particular book, as ideal, respected persons. Even in this last decade of the twentieth century too, respectability and ideality based on such beliefs can be seen. This has been going on in the form of sectarian beliefs in multiple ways, but there has not been any end to the intra-sectarian and inter-sectarian conflicts. All these traditions are seen to be respected on the basis of sermons and assurances. All this is nothing but hope & thought bondage only, because the sacred literature available in all these sects till this decade, is unable to determine what is universal wisdom. Root cause behind this is that the definitive study of the human being is still awaited, and the existential reality in the form of coexistence has not been clearly understood.

आशा, विचार, इच्छा बन्धन को जागृति क्रम में व्यक्त होना अति आवश्यक रहा है क्योंकि इनके परिणाम में पीड़ाओं का आंकलन होना आवश्यक रहा है । इच्छा बन्धन की अभिव्यक्ति इच्छा पूर्ति के लिये धरती का शोषण, वन का शोषण, मानव का शोषण के रूप में देखने को मिलता है । यही वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी तंत्र का चमत्कार रहा । सभी सामुदायिक शासन अपने विवशता सहित अपने सामरिक सामर्थ्य को बुलंद करने के लिये देशवासियों को एकता अखण्डता का नारा सहित किये जाने वाले सत्ता संघर्ष भी इच्छा बंधन क्रम में एक बुलंद प्रयास और आवाज सहित प्राप्तियाँ होना देखा जाता है ।

Expressions of hope, thought & desire bondage have been very essential in the awakening progression because only as their result could the sufferings be measured. Desire bondage manifests in the form of exploitation of Earth, forests and humans, for fulfilment of desires. It has been the marvel of scientific and technological systems. Struggle for power with war cries of unity & indivisibility to their countrymen are seen in all sectarian regimes, with their inherent compulsions, in order to raise their military capability; all these are also the results of valiant efforts & voices of desire bondage.

इसी क्रम में यह भी देखा गया विरक्ति, असंग्रहता का दुहाई देने वाले सभी धर्मगद्दी इच्छा बन्धन के तहत अनेक सुविधाओं को इक्ट्ठा करता हुआ शोषणपूर्वक अथवा परिश्रम के बलबूते पर विविध प्रकार से अपने-अपने वैभव को (इच्छा बन्धन रूपी वैभवों को) व्यक्त करता हुआ देखा गया है । इसमें जो असफल रहते हैं वे सब कुण्ठित और चिन्तित रहता हुआ देखने को मिलता है । इसी प्रकार शिक्षा गद्दी भी इच्छा बन्धन के अनुरूप ही शैक्षणिक कार्य, वांग्मयअभीप्साओं को स्थापित करने के कार्य में व्यस्त रहता हुआ देखने को मिला । इस दशक तक स्थापित, संचालित तथा कार्यरत शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत व्यक्ति, प्राध्यापक, आचार्य वेतनभोगी होते हुए देखा जाता है । यह इच्छा बंधन का ही प्रमाण है और हर विद्यार्थी को नौकरी (वेतनभोगी) अथवा व्यापारी (शोषणकर्ता) के रूप में स्थापित करता है और इन दोनों क्रियाकलाप का लक्ष्य सुविधा, संग्रह, भोग ही है । यह इच्छा बन्धन का इस दसवीं दशक तक मानव परंपरा का समीक्षा है ।

On this course, all the seats of power reminding the people of devotion detachment are seen accumulating various comforts under desire bondage, and displaying their own respective grandeur (grandeur of desire bondage) by exploitation or hard work. All those who are unsuccessful in this, are seen to be frustrated or worried. In a similar manner, it is only under the bondage of desire that the seat of power is also seen to be busy in setting up educational programs and sermons of scriptures. Till this decade, staff, teachers and scholars working in educational institutions are seen to be drawing salaries. It is indeed an evidence of desire bondage, and it establishes every student in the category of either employed (salaried) or business person (exploiter); and the goal of both of these is comforts, accumulation, consumption only. This is the critique of bondage of desires in human tradition till this tenth decade.

‘भ्रम और बन्धन’ की पीड़ा की पराकाष्ठा किसी न किसी को होना आवश्यक था। यह नियतिक्रम में विधिवत घटित हो ही जाता है क्योंकि अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में परम लक्ष्य स्थिति निश्चित और स्थिर है । क्योंकि अस्तित्व स्थिर है, जागृति निश्चित है। इसे प्रमाणित होने के लिये, करने के लिये सह-अस्तित्व सहज क्रिया, प्रक्रिया, प्रणाली, पद्धतियाँ अस्तित्व और जागृति के मध्य में सुस्पष्ट है । अस्तित्व का होना नित्य वर्तमान के रूप में दृष्टव्य है । सह-अस्तित्व में ही ज्ञानावस्था सहज मानव प्रकृति जड़-चैतन्य के संयुक्त रूप में परम्परा सहज विधि से जागृति सहज प्रमाण होना पाया जाता है।

The extreme suffering of delusion and bondage had to be felt by someone. It is destined and happens in a well-defined manner because the ultimate goal in coexistence is definite and steady. As the existence is steady and awakening is certain, the activities, processes, mechanisms & procedures in coexistence are explicit in the core of existence and awakening. Existence of existence in the form of ever presence is clearly visible. It is indeed in coexistence only that humans belonging to the knowledge order, in the combined form of insentient-sentient, become evidence of awakening by way of tradition.

मानव परंपरा जागृति क्रम में इस शताब्दी के अंतिम दशक तक जूझता ही रहा है । अब जागृत परंपरा के रूप में प्रमाणित होने का सहज समीचीनता देखने को मिल रहा है क्योंकि **अनुभवमूलक संप्रेषणा सुलभ हो गया है । इसी के प्रमाण में यह ग्रंथ सूचना के रूप में प्रस्तुत है ।** प्रमाण का स्त्रोत हर जागृत मानव ही है । अनुभव प्रमाण परंपरा में मानव ही मानव के लिये प्रेरक, कारक होने की विधि से लोकव्यापीकरण करता है ।

Human tradition has been struggling in the awakening progression till the last decade of the twentieth century. Now, the evidence in the form of awakened tradition is apparently in close vicinity because **realisation-rooted communication has become possible. As evidence, this book is presented for information.** Every awakened human is indeed the source of evidence. In the tradition of evidence of realisation, dissemination of realisation is done only by humans for humans, as they themselves are the inspirers, or the main factor in inspiration.

भ्रम मुक्ति की कल्पना मानव परंपरा में आदिकाल से अथवा सुदूर विगत से रही है। अर्थात् भ्रम से मुक्त होने का आश्वासन वांग्मयों में सुदूर विगत से सुनने को मिलता है, उनका भाषा जीवन मुक्ति रही है । भाषा के रूप में यह प्रचलित है ही । मुख्य रूप में बंधन का स्वरूप, मुक्ति की आवश्यकता, उसकी समीचीनता और लोकव्यापीकरण यही मुख्य मुद्दा जागृतिपूर्ण अभिव्यक्ति के लिये वस्तु रहा आया । यही अभी अनुभवमूलक विधि से अनुभवगामी प्रणाली पूर्वक अस्तित्व बोध, सह-अस्तित्व बोध में, विकास बोध, जीवन बोध, जीवन जागृति बोध, रासायनिक-भौतिक रचना-विरचना बोध संभव हो गया । ऐसे बोध कराने के क्रम में एक से अधिक मानव बोध सम्पन्न हो चुके हैं । इसी प्रमाण से यह पता लगता है कि इसका लोकव्यापीकरण संभव है ।

The idea of liberation from delusion has been in human tradition since ancient times. In other words, the assurance of liberation from delusion has been mentioned in scriptures since ancient times; their language has been ‘liberation of jeevan’. Such phrases are already popular. Mainly, what is bondage, the need of liberation, this being in vicinity and its dissemination, have always been the points which the completely awakened expression needed to address. All this, that is the enlightenment of development, enlightenment of jeevan, enlightenment of awakening in jeevan, and enlightenment of physico-chemical composition decomposition by virtue of enlightenment in existence & coexistence, has now become possible by way of realisation oriented path based on the realisation rooted method. Multiple people are now competent for imparting such enlightenment. It is clear by this evidence that its dissemination is possible.

मूल व्यक्ति, जो अनुसंधान पूर्वक सत्यापित करता है, वह सत्य, समाधान, न्याय और जागृति के सम्बंधों में स्वयं को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करता है । ऐसे सत्यापन को ही वांग्मय कहा जा सकता है । यह दोनों स्थिति घटित होने के उपरान्त मूल व्यक्ति के रूप में प्रामाणिकता सहित प्रस्तुतियाँ बोधगम्य हो जाना ही, मूल व्यक्ति के रूप में और व्यक्ति भी जागृत बोध सम्पन्न होने का प्रमाण होता है । बोध सहज अभिव्यक्ति प्रयास में सह-अस्तित्व में ही संपूर्ण वस्तु होना स्वयं मानव में, से, के लिए अनुभव होता ही है । इस विधि से अनुभव मूलक अध्ययनप्रणाली अनुभवगामी विधि को सत्यापित करती है । अध्ययन की सार्थक मंजिल अध्ययनपूर्वक इंगित वस्तुएँ विधिवत बोध होने के रूप में सार्थक हो जाता है । यह अनुभव सम्पन्न मानव से ही सफल होता है । ऐसी स्थिति के लिए इस ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ के रूप में प्रस्तुत है ।

The original person, who explores and truthfully reveals the discovery, presents himself or herself as the evidence of truth, resolution, justice & awakening. Only this revelation can be called a philosophy. Upon fulfilment of both these conditions, when the presentations along with authenticity of this original person are understood by others, this is indeed the evidence of other persons becoming enlightened and becoming awakened, just the way the original person did. In their efforts for expression based on enlightenment, the fact that all the realities exist in the coexistence is certainly realised in, by & for such persons. In this manner, the program of study based on the realisation rooted method gives assurance about (guarantees) the realisation oriented path. The goal of study is achieved when one completely understands the realities indicated in the study. It is accomplished only by a person who has attained realisation. ‘Realisation Centred Spiritualism’ is presented to achieve such a state.

जागृति के अनन्तर मानव परंपरा में, से, के लिए प्रयोजन सर्वशुभ चाहने वाले मानव सहज और जागृत जीवन सहज विधि से प्रमाण रूप में सार्थक होना देखा गया । मानव सहज विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व, स्वायत्त मानव, परिवार मानव, व्यवस्था मानव और समाज मानव प्रमाणित करता है । इसमें सर्व मानव का स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार होना देखा गया है इसीलिये इसका लोक व्यापीकरण समीचीन हो गया है । जीवन सहज प्रयोजन, जागृति और जागृतिपूर्णता ही है । जागृतिपूर्णता, उसकी निरन्तरता क्रम में सुख, शांति, संतोष, आनन्द अक्षुण्ण होना पाया जाता है । यह जागृतिपूर्ण मानव (दिव्यमानव) में, से, के लिए प्रमाण और प्रामाणिकता पूर्वक वैभवित होना स्वाभाविक है । यही स्वानुशासन और परम स्वतंत्रता है । यही गति का गंतव्य स्वरूप है । यह प्रमाणित होना नियति सहज विधि है । ऐसे प्रमाण मानव परंपरा में सार्थक होना देखा गया है इसलिये और प्रकार की शरीर रचना को प्रतीक्षीत करने की कोई आवश्यकता नहीं है । मानव परंपरा में इस दशक में जितने भी नस्ल है उन सभी नस्लों में रचना का प्रधान भाग मेधस होना और वह पूर्णतया समृद्ध होना देखा गया है । अब केवल जागृतिपूर्ण परंपरा की ही आवश्यकता है। यह अनुभवमूलक प्रमाणों को लोकव्यापीकरण विधि से सार्थक होना स्वाभाविक है । यही भ्रम और बंधन मुक्ति का प्रयोजन मानव परंपरा में सुलभ होती है ।

It has been seen that humans upon awakening are meaningful in the form of evidence of humaneness and of awakened jeevan, desirous of purposefulness and well-being of all in, by & for human tradition. It is the autonomous person, family person, systems person and societal person who produce evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence by way of humaneness. It has been seen that innateness, independence & authority of all humans is included in this, therefore its dissemination is now possible. Awakening and awakening completeness is indeed the natural purpose of jeevan. Happiness, peace, contentment & bliss are found to be continuous in awakening completeness and its continuity. Evidence with authenticity of its grandeur happens naturally in, by & for the completely awakened (divine) human. This itself is self-discipline and ultimate independence. It is the true form of the destination of all activity. This getting evidenced is the way of destiny. It has been clearly seen that such evidence occurs in human tradition, therefore there is no need to further wait for development of some other type of body. It has been observed that in all the human ethnicities till this decade, the brain is the main part of the body, and it is fully developed. Now, only a fully awakened tradition is needed. It is natural that these realisation-rooted evidences shall be useful by way of dissemination. This is how the purpose of liberation from delusion & bondage, becomes possible in human tradition.

जागृतिपूर्ण परंपरा में ही सर्वमानव व्यवस्था में जीना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह करना स्वाभाविक है, अनिवार्य है और आवश्यक है। व्यवस्था में जीने देकर जीना परिवार में ही प्रमाणित होता है । इसके मूल में मानव में स्वायत्तता अति अनिवार्य स्थिति है। व्यवस्था में जीने का फलन ही समाधान, समृद्धि का प्रमाण और अभय, सह-अस्तित्व का सूत्र होना देखा गया है । स्वायत्त मानव का स्वरूप पहले स्पष्ट किया जा चुका है। ऐसे स्वायत्त मानव से जागृतिपूर्ण शिक्षा प्रणाली, पद्धति, नीतिपूर्वक सर्वसुलभ हो जाती है । यही भ्रम (बन्धन) मुक्त मानव परंपरा का सूत्र है । इसके क्रियान्वयन क्रम में परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, ग्राम परिवार और विश्व परिवार के रूप में गठित होने, साकार होने और क्रियारत होने की पूर्ण संभावना, आवश्यकता का संयोग होता है ।

It is only in the fully-awakened tradition that the living of all humans in orderliness and their participation in overall orderliness is possible, natural and essential. Let live and live in orderliness is evidenced only in a family. Autonomy in humans is very essential and a prerequisite for this. Living in orderliness itself has been observed as leading to the evidence of resolution & prosperity, and the link to fearlessness & coexistence. The nature of an autonomous human being has been explained earlier. Such autonomous humans are instrumental in making the fully-awakened education system & method available to everyone by way of policy. This itself is the key to human tradition liberated from delusion (bondage). Combination of the possibility as well as the need of the constitution, materialisation and activation of village family and world family as the family-rooted self-governance system, is at the root of its implementation.

यह स्पष्ट हो गया कि बन्धन किसको, क्यों, कैसे होता है? बन्धन में होता कैसा है? भ्रम बन्धन का पीड़ा किस विधि से बलवती होती है । कौन-कैसे भ्रम-बन्धन से मुक्त होता है? इसमें मुख्य बिन्दु जीवन ही जागृतिपूर्वक भ्रम-बन्धन से मुक्त होता है, यह स्पष्ट हो चुका है ।

By now, it is clear who is in bondage, why and how. What happens in bondage? In which way does the suffering from bondage become stronger? Who and how does one become liberated from delusion or bondage? In all this, the main point that jeevan itself becomes liberated from delusion & bondage by way of awakening, has become very clear.

जीवन सहज दस क्रिया क्रियाओं में जिसका विशद् विस्तार स्वरूप 122 आचरणों के रूप में तालिका में स्पष्ट किया जा चुका है । उक्त तालिका के अनुसार जागृत आचरणों के विधिवत अध्ययन के लिए **‘‘मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान’’** के नाम से शास्त्र प्रस्तुत हो चुकी है । यहाँ जीवन के दस क्रिया सहज कार्य विधि से और ये परस्पर प्रेरित, संयोजित कार्य विधि में जागृति का स्वरूप क्रम और बन्धन मुक्ति क्रम को जैसा देखा गया है वैसा ही प्रस्तुत किया गया है ।

Ten activities of jeevan, which are detailed & elaborated in the form of 122 activities, have already been explained with the help of an elaborate Table (in Chapter 4). For methodical study of the awakened activities according to this Table, the book titled ‘Human Consciousness based Psychology’ has been presented. Here, based on the overall functioning of the ten activities of jeevan, the awakening progression and liberation from bondage has been presented exactly the way it has been observed.

जीवन में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा पाँच अक्षय बल तथा आशा, विचार, इच्छा, ऋतम्भरा और प्रामाणिकता रूपी पाँच अक्षय शक्तियाँ प्रमाणित होने के लिए तत्पर है। जिनमें से आशा, विचार, इच्छा रूपी शक्तियाँ शरीर को जीवन मानते हुए शरीर को ही सुख का स्त्रोत मानते हुए, बँटवारा को व्यवस्था का आधार मानते हुए और वस्तुओं को ज्यादा से ज्यादा संग्रह करना सुख का साधन मानना यही सब प्रधानत: भ्रम रूपी कार्य कलाप का स्वरूप बतायी रहती है । इस क्रम में प्रधानत: शरीर के आयु के अनुसार प्रलोभन विधि से उत्साहित करना-होना, पराभावित होना देखा गया है ।

Five inexhaustible powers of *mun, vritti, chitta buddhi* & atma, and five inexhaustible forces of hope, thought, desire, resoluteness & authenticity in jeevan, are ever eager to become evidence. Out of these, the powers of hope, thought & desire assume that the body itself is jeevan, that body is the source of all happiness, that equal distribution of physical resources is at the root of orderliness, and that maximisation of accumulation leads to happiness; all these are primarily the signs of deluded activities. On this course, attempts to enthuse others & oneself, predominantly on the basis of allurements based on one’s physical age & condition, and not succeeding in them (going astray), have been noticed.

जागृति ‘चिन्तन बल’ विधि से आरंभ होता है जबकि भ्रम बन्धन ‘आशा, विचार, इच्छा शक्ति’ विधि से होना साक्षित हुई है । यही प्रधान बिन्दु है जिसे हर व्यक्ति को समझना संभव है । क्योंकि आस्वादन, तुलन, चिन्तन, बोध और अनुभव ये पाँच बल जीवन में सदा-सदा व्यक्त होने के लिये हैं ।

Awakening begins with the use of the ‘strength of contemplation’ while it has been observed that bondage of delusion is due to the ‘powers of hope, thought & desire’. This is the main point and it can be understood by everyone because the five powers of taste, deliberation, contemplation, enlightenment & realisation are always there in jeevan for the purpose of manifestation.

शरीर को जीवन मानने के आधार पर शरीरोपयोगी यथा शरीर के लिए प्रिय, हितकारी वस्तुओं को चयन करने जाते हैं तब लाभापेक्षा होता ही है । इस विधि से जब प्रिय, हित, लाभकारी वस्तुओं को मानव चयन करता है, यह कार्य चित्रण तक सम्पादित होता है ।

Under the assumption that the body itself is jeevan, humans start selecting the things useful for the body, i.e. the things they like, or which are pleasant & beneficial to the body; and then, the obsession for profit becomes unavoidable. In this manner, when humans do selection on the basis of pleasant, health & profit, all this gets accomplished within the confines of four and half activities (till the visualisation activity).

चयन के अनुरूप आस्वादन क्योंकि शरीर को ही जीवन मानने के आधार पर आस्वादन के अनुसार विश्लेषण, विश्लेषण के अनुसार शरीर सीमावर्ती और शरीरोपयोगी वस्तुओं के सम्बंध में विश्लेषण और उसी का चित्रण सम्पादित होना पाया गया । प्रिय, हित, लाभ सीमावर्ती तुलन, चिन्तन का वस्तु नहीं बनती क्योंकि ये सब रुचिमूलक होने के आधार पर पुन: यह सब आस्वादन या भोगमूलक ही होती है । सम्पूर्ण भोग विधि भी आस्वादन के अर्थ में समीचीन है । सभी आस्वादन पंच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा होता है । दूसरे शब्दों में सभी आस्वादन पंच ज्ञानेन्द्रियों-पंच कर्मेन्द्रियों में, से, के लिए होता है । इसी को मानव जाति का सम्पूर्ण कार्यक्रम स्वीकारना ही भ्रम का द्योतक है। इस सीमा के मानव सर्वशुभ रूपी दिशा से विमुख रहता ही है । फलस्वरूप अनगिनत प्रताड़नों से क्लेशित होना; दु:ख, शोकादि पीड़ाओं से पीड़ित होने के रूप में देखा गया है । यह सब भ्रम को ही सत्य मानने का फलन रहा। यथा मृगतृष्णा-मरीचीकावत् अथवा रज्जू-सर्पवत् पराभव का सूत्र बनता है । इसी क्रम में जीवन को जीवन और शरीर को शरीर समझना अति अनिवार्य है । हर मानव को यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को यथावत् समझना अति अनिवार्य है । इसमें तीन ही मुद्दा प्रधान रूप में आते हैं - अस्तित्व, जीवन और मानवीयतापूर्ण आचरण। यही मानव में, से, के लिए मौलिक आचरण के रूप में पहचाना गया ।

It has been discovered that tasting in accordance with selection, analysis in accordance with tasting, and analysis & visualisation in accordance with things related & beneficial to the body, happens under the assumption that the body itself is jeevan. Deliberation related to pleasant, health & profit does not become the content of contemplation because all these are senses-based, and lead to repeated tasting or indulgence. The whole process of indulgences is within the periphery of tasting. All tasting happens through the five sensory organs; or rather, all tasting happens in, by & for the five sensory and five work organs. To assume that only this is the complete program of humans is an indication of delusion. Persons living within the limits of this program remain indifferent & ignorant to the direction of universal well-being. It has been observed that such persons suffer from countless miseries and remain in distress. All this has been happening only because of believing delusion to be the truth. This gives rise to the maxims of *fata morgana*, mirage and mistakenly assuming rope to be snake in darkness, which imply failure of humans (to live with happiness and prosperity). In this background, it is very essential for humans to understand that jeevan is jeevan, and body is body. It is essential for everyone to understand reality, actuality & truth as they are. There are mainly three points to understand here - existence, jeevan and the humane conduct. This itself is recognised as the definite conduct in, by & for humans.

हर वस्तु को उसके आचरण के आधार पर मानव पहचानता है । इसी पहचान के आधार पर निर्वाह होना होता है। निर्वाह का ही फल-परिणाम होना पाया जाता है । यह सामान्यत: सबको ज्ञात है । सह-अस्तित्व सहज विधि से हर अवस्था की वस्तुओं को उन-उन के रूप, गुण, स्वभाव, धर्म के रूप में जानना-मानना अति अनिवार्य स्थिति है इसी के आधार पर पहचानना संभव हो जाता है । सही पहचानना ही निर्वाह करना है और उसके फल में वांछित परिणाम निकलना स्वाभाविक है । बिना जाने-माने किसी चीज को पहचानने जाते हैं आधार विहीन होना पाया जाता है । समझ के करने में हर स्थितियाँ संतुष्टि का कारण बनती है । बिना समझे कुछ भी करते हैं चाहे वह आस्थावादी, प्रलोभनवादी या भयवादी हो वह सदा-सदा पराभव और प्रताड़ना का कारण ही बनता है । इस विधि से सम्पूर्ण भ्रम कार्य व्याख्यायित होता है । कितने भी पीढ़ी भ्रम को बारंबार दोहराते रहें भ्रम का परिणाम पीड़ा ही होना पाया जाता है । भ्रमित परिणाम से मानव संतुष्ट नहीं रह पाता ।

Humans recognise everything on the basis of its conduct. Their own actions depend on this recognition. These actions lead to results & consequences. This much is generally known to everyone. It is essential to know & believe all entities of the four orders in coexistence by their respective form, attributes, intrinsic nature & dharma; and it is only on this basis that recognition is possible. Correct recognition itself is the right action, which naturally leads to the desired outcome. It is irrational & illogical to try to recognise something without knowing & believing. Actions based on knowing lead to satisfaction in all respects. On the other hand, whenever something is done without knowing whether based on faith, or temptation, or fear, it leads to failure and suffering. All the actions under delusion get explained in this manner. Even if delusion is repeated over many generations, delusion always results in suffering. Deluded outcomes are unable to satisfy humans.

मानव भ्रमित कार्य विधियों, कल्पना विधियों से हताश होता है तब भ्रम की पीड़ा अपने पराकाष्ठा में होता है । तभी भ्रम मुक्ति अथवा जागृति विधि का आवश्यकता निर्मित होती है । यह संक्रमण काल में प्रौढ़ और वृद्ध मानवों के साथ गुजरता हुआ स्थितियाँ है ।

When a person becomes frustrated due to deluded actions and ideas, the agony of delusion is at its peak at that point. This itself creates the need of liberation from delusion and to the way of awakening. In the time of transition (from deluded tradition to awakened tradition), elderly people go through this phase.

मानव में तीनों बन्धन की अलग-अलग स्थितियाँ स्पष्ट हो जाती है। इच्छा बन्धन की पराकाष्ठा में बन्धन की पीड़ा, कुण्ठा, प्रताड़ना के रूप में होना देखा गया है । यह मानव परंपरा सहज कार्य-प्रणाली में भ्रमित परंपराओं के रूप में घटित होने वाले परिणाम है। इसमें मुख्य रूप में वैचारिक और व्यवहारिक सामरस्यता की उपेक्षा, उसमें होने वाले विरोधाभास की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि चित्रण कार्य इच्छा बन्धन का सर्वोपरि अहम्ता के रूप में कार्य को मानव में प्रदर्शित होता है बीसवीं शताब्दी के अन्त तक आजीविका का आधार माना । यह सभी सफलता-विफलताएँ, भय, प्रलोभन, आस्था रूपी आदर्शो और आदर्श के केन्द्रों के रूप में होते आये । इस अवस्था में इस धरती के संपूर्ण मानव में, से केवल आस्थावादी में, से कुछ लोग (कम से कम) होना दिखाई पड़ते है । कुछ अधिक लोग प्रलोभन और आस्था विधि से ही अपनी सार्थकता को माना करते हैं । कुछ कम लोग ही केवल प्रलोभन, भय से प्रताड़ित रहते हैं, इसमें आशा बंधन प्रधान होना पाया गया है । आशा और विचार बंधनपूर्वक ही आस्था, प्रलोभन और भय से पीड़ित होना रहता है और केवल आस्था में सफलता को खोजने वाले लोग न्यूनतम रहते हैं इनका अंतिम लक्ष्य स्वांत: सुख ही रहता है । ये सब जब तक लोक सम्मान मिलता हुआ स्थिति में प्रसन्नता को और न मिलने की स्थिति में अप्रसन्न रहता हुआ देखने को मिलता है ।

The three different states of bondages can be clearly seen in humans. The agony of bondage at the peak of bondage of desires has been observed to be in the form of frustration & torment. This outcome is observed in the human tradition in the form of deluded human traditions. Paying no attention to the harmony in thoughts and practice, and the inherent contradictions due to that, plays the main role here because the visualisation activity is seen in human actions at the topmost level of ego when they are in bondage of desires. Till the end of the twentieth century, humans used the visualisation activity entirely for livelihood. All these successes & failures have occurred in tradition in the form of fear, temptation & faith as ideals or centres of ideals. Of all the people on this planet, there are only a few (very few) who are observed to be living in & by way of faith. A slightly more number of people consider them to be useful only by way of temptation & faith. Some suffer from only temptation & fear; it has been found that the bondage of hope remains dominant here. Suffering due to faith, temptation & fear occurs only due to bondage of hope & thoughts; and the number of persons in search of success only by way of faith is minimum, self-limited happiness being their ultimate goal. Such persons appear to be happy when they get recognition from others, and appear to be unhappy otherwise.

आशा बन्धन इन्द्रियों द्वारा सुखी होने के लिए दौड़ लगाने के लिये सभी क्रियाकलाप के रूप में गण्य है । विचार बन्धन कोई भी व्यक्ति अथवा समुदाय अपने विचार को श्रेष्ठ मानने की विधि से स्पष्ट होता है । इच्छा बन्धन, ज्यादा से ज्यादा रचना कार्य की श्रेष्ठता को स्पष्ट करने के क्रम में स्पष्ट होता है । यह भी चित्रण विधि से स्पष्ट होता है ।

All the activities directed towards efforts for sensory happiness are categorised as bondage of hope. Bondage of thoughts becomes clear by way of individuals or sects assuming their own thoughts to be superior. Bondage of desires is apparent when maximisation of (physical) creation is assumed to be superior. This becomes clear in the activity of visualisation.

ऊपर स्पष्ट किये गये विश्लेषणों से भ्रम का स्वरूप और भ्रम का पीड़ा कैसे हो पाता है इन तथ्यों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है । निर्भ्रमता और जागृति के सम्बंध में भी अनुभवमूलक प्रणाली और पद्धति से संबंधित सभी मुद्दों पर प्रकाश डाला है । इसी को आगे और स्पष्ट करने के लिये व्यवहारिक प्रमाणों में प्रमाणित करने योग्य संप्रेषणा प्रस्तुत है।

The above analysis provides clarity about the form of delusion and how the suffering from delusion is triggered. It is essential to keep these in mind. Regarding the awakening and absence of delusion, all aspects related to the realisation rooted method have also been explained. Guidance to enable evidencing these aspects in practical life is presented here for giving further clarity.

अनुभवगामी विधि में न्याय, धर्म (समाधान) और सत्य साक्षात्कार एक साथ ही होना पाया जाता है । यह इस छोर से जुड़ा हुआ देखा गया है कि भ्रम से पीड़ित होने के साथ ही जीवन स्वीकृति सहज वस्तुओं की अति अनिवार्यता बन जाती है । इसी अनिवार्यतावश जीवन में इन्द्रिय लिप्सा से मुक्ति चाहने की आवश्यकता अपने पराकाष्ठा में बलवती हुआ रहता ही है । इसे योग-संयोग विधि से ही देखा गया है । यह संयोग अपने आप अस्तित्व सहज विधि से सह-अस्तित्व प्रणाली से नियति क्रम के रूप में समीचीन रहता है । यह पीड़ा और नियति सहज समीचीनता का संयोग ही है । ऐसी घटना सर्वप्रथम किसी एक व्यक्ति के साथ घटित होता है अथवा एक व्यक्ति के द्वारा उद्घाटित हो पाता है । इसी को हम अनुसंधान या अभ्यास का फलन नाम दिया करते हैं ।

The direct-perception of justice, dharma (resolution) & truth occurs simultaneously in the realisation-oriented method. It has been seen to be linked with the fact that when suffering due to delusion is felt, the absolute necessity of realities acceptable to jeevan is also felt. Due to this necessity, the need in jeevan to get liberated from dependency on sensory pleasures is at its peak. It has been observed to be occurring by way of incidents & coincidence. By way of coexistence, this coincidence is always in close vicinity as the course of destiny. This is nothing but the coincidence of suffering, and the course of destiny. Such an incident happens initially with one person, or is unveiled by one person. This is being called here as exploration, or the outcome of practice.

उक्त विधि से घटित अनुसंधान को शैक्षणिक विधि से लोकव्यापीकरण करना-कराना आवश्यकीय कार्य रहता ही है । अनुसंधान के अनन्तर यही अग्रिम-प्रक्रिया है । यह सर्वविदित है।

Dissemination by way of education of the exploration explained above is always an important activity. This is obviously the way forward after the exploration.

मूलत: यह घटना स्वयं अनुभव ही है । अनुभव सहज विधि से ही जागृति और जागृति का प्रमाण सहज रूप में समीचीन रहता है । इसलिये अनुभव के अनन्तर अनुभव की निरन्तरता होती ही है । यही अस्तित्व सहज वैभव के रूप में न्याय, धर्म, सत्य रूपी जीवन स्वीकृत वस्तु को देखा गया । सटीक देखने का भाषा ही है अनुभव क्रिया । ऐसे अनुभव में समाधान और न्याय समाहित रहता ही है । इसी प्रकार चिन्तन में अर्थात् साक्षात्कार किया में समाधान और सत्य साक्षात्कारित रहता ही है । इतना ही नहीं व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में जीने की स्थिति में न्याय, समाधान और सत्य व्यवहार में प्रमाणित रहता ही है । यही अनुभवमूलक अध्ययन है । अनुभवमूलक जीने की सम्पूर्णता मानव परंपरा में ही परमावश्यकता के रूप में दिखाई पड़ती है । इसकी समीचीनता अर्थात् भ्रम की पीड़ा और निर्भ्रमता या जागृति की समीचीनता, योग, संयोग की घटना विधि से सम्पन्न होना भी आवश्यक रहा। इसके अनन्तर ही इसके लोकव्यापीकरण की गति अपने आप शुरु होती है । यह स्वाभाविक रूप में सर्वमानव में स्वीकृत रहता ही है । जैसे न्याय सबको चाहिये, धर्म अर्थात् सार्वभौम व्यवस्था अखण्ड समाज होना चाहिये, सत्य समझ में आना चाहिये । क्योंकि ये जीवन सहज स्वीकृति होने के कारण इन्हें बिना समझे जीवन स्वीकारा ही रहता है । इसीलिये यह सबके लिए आवश्यक है ।

Basically, this incident itself is (or leads to) the incident of realisation. It is only by way of realisation that awakening and the evidence of awakening remains in close vicinity. Therefore, after realisation, continuity of realisation is always there. It is in the grandeur of existence itself that justice, dharma & truth have been seen as the realities acceptable to jeevan. Seeing precisely is indeed the activity of realisation. Resolution and justice is inherently included in such realisation. In a similar manner, there is direct perception of resolution & truth in the activity of contemplation, i.e., in the activity of direct perception. Not only this, living in a state of orderliness and participating in the overall system naturally evidences justice, dharma & truth in behaviour. This itself is the realisation-rooted study. The completeness of realisation-rooted living as an essential need is obvious only in human tradition. Possibility of its attainmentment, that is the suffering from delusion and the proximity to awakening, occurred essentially by way of incidents & coincidences. It is in this phase indeed that its dissemination begins effortlessly. It is naturally acceptable to everyone. For example, everyone wants justice; everyone wants establishment of dharma, that is the universal system & indivisible society; and everyone wants to understand the truth. Jeevan has acceptance for these as these are acceptable to jeevan even in the absence of clear understanding; therefore, these needs are universal needs, or are common for everyone.

**मुक्ति का स्वरूप और प्रमाण**

**True form of liberation and its evidence**

प्राचीन समय से अथवा सुदूर विगत से बन्धन और मोक्ष की चर्चाएं हुई हैं । बन्धन मूलत: भ्रम का ही स्वरूप होना स्पष्ट हो चुका है । ऐसा भ्रम भयवश जागृति की अपेक्षा रहते हुए भी जागृति होने पर्यन्त रहता है यह भी मुद्दा स्पष्ट हो चुका है । इसके उपरान्त जागृति और जागृतिपूर्णता ही मंजिलों के रूप में देखने को मिलता है । यह मूलत: विचार, चित्रण, अवधारणा, अनुभव और चिन्तन का ही वैभव रूपी मानसिकता के रूप में देखा गया है । भ्रम का सम्पूर्ण स्वरूप आशा, विचार, इच्छा (चित्रण) का प्रिय, हित, लाभात्मक दृष्टियों की क्रियाशीलता ही है । भय, प्रलोभनात्मक प्रणाली में व्यवस्था की परिकल्पना मानव को स्वार्थी, अज्ञानी, पापी, गलती और अपराध करने वाला है; ऐसा मानते हुए सम्पूर्ण योजनाओं को स्थापित करना ये भ्रमात्मक कार्यकलापों का विस्तार है । यही परम्परा के रूप में अनुवर्ती होने की प्रेरणा देना जिसमें से स्वार्थ, पाप, अज्ञान मुक्ति धर्मगद्दियों के कार्यक्रम के रूप में और गलती को गलती से रोकना, अपराध को अपराध से रोकना और युद्ध को युद्ध से रोकना यह राजगद्दियों के कार्यक्रम के रूप में दृष्टव्य है।

Discussions about bondage and moksha have been going on since ages. It is clear by now that bondage is nothing but a form of delusion. It is also clear that such delusion persists due to fear until one attains the state of awakening although the anticipation of awakening is there. Awakening and awakening completeness indeed are seen as the next goals. It has been seen basically as the grandeur of thoughts, visualisation, knowledge, realisation and contemplation, in the form of mindset. Entire delusion is in the form of activeness of the perspectives of pleasant, health & profit in hope, thoughts & desires (visualisation). In systems based on fear & temptation, humans are presumed to be selfish, ignorant, sinners, wrong-doers & criminals; and implementation of various programs based on such assumptions, is an extension of deluded functioning. Such conclusions are repeatedly passed on to the future generations in human tradition, in which to get rid of selfishness, sin & ignorance are seen as programs of the seats of religion, and to eliminate mistake with mistake, crime with crime and war with war, as programs of the seats of power,

धर्मगद्दियों से मोक्ष और बंधन की चर्चा हरेक पीढ़ी सुनते ही आया है । मोक्ष सर्वोपरि अथवा परम उपलब्धि अथवा परम घटना के रूप में बताते हैं । इसे बताते समय में भले ही विभिन्नता हो, हर धर्मगद्दियाँ मोक्ष को सर्वोपरि प्रतिपादित करते हैं । इसी के साथ-साथ स्वर्ग-नर्क की परिकल्पना भी मानव मानस में समाहित कर चुके हैं । इस मुद्दे पर बन्धन का स्वरूप अध्ययनगम्य होने की विधि से जीवन क्रियाकलापों में भ्रमवश पीड़ित होना ही है । जीवन में ही जागृति की सम्भावना नित्य समीचीन रहता ही है । मौलिक तथ्य यही है हर मानव जागृति पूर्वक ही समाधानित होना देखा गया ।

Each generation has been hearing about moksha and bondage from the seats of religion. Moksha is described as the best or ultimate achievement, or as the ultimate phenomenon. Although there may be differences in its description, all seats of religion present moksha as the ultimate. Along with this, they have also established the concept of heaven & hell in human imagination. On this point, upon the true form of bondage becoming studiable, the inevitability of suffering due to delusion in the activities of jeevan becomes clear. It is in jeevan that the possibility of awakening is always in close vicinity. The main point here is that the fact that all humans become resolved only by way of awakening, has been understood.

ऐसा जागृति बिन्दुएँ:-

Such points of awakening are :

1. अस्तित्व में जागृत होने के रूप में और यह सर्वसुलभ होने के रूप में देखा गया। इसीलिये यह अनुभवात्मक अध्यात्मवाद अध्ययनगम्य होने की विधि से प्रस्तुत किया गया है ।

1. It has been seen in the form of awakening in existence, and is within reach of everyone. That’s why this book has been presented in such a way that it is studiable.

2. अनुभव जीवन में ही, जीवन से ही, जीवन के लिये ही समीचीन है । जैसा-मानव जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में है एवम् शरीर को जीवन संचालित करता है यह दोनों तथ्य स्पष्ट हो चुकी है । जीवन ही भ्रमित अवस्था में भ्रमित रहकर बन्धन के पीड़ाओं से पीड़ित होता है । शरीर और संसार के साथ इन्द्रिय सन्निकर्ष और कल्पनापूर्वक समस्त प्रकार के अव्यवस्था का पीड़ा होना अथवा अव्यवस्था के समझ के अनुपात में पीड़ित होना देखा गया । इस तथ्य को हर मानव अपने में निरीक्षण-परीक्षण पूर्वक पहचानना सहज है ।

1. Realisation is in close proximity in jeevan, by jeevan, and for jeevan. For example, a human being is the combined form of jeevan and body, and jeevan itself drives the body, both these facts are already clear. It is the jeevan itself which suffers in the state of delusion due to sufferings of bondage. It has been seen that suffering occurs due to disharmony while focusing on the body and the world by way of sensory proximity, and this suffering is in proportion to the extent of disharmony or delusion. This fact can be easily verified by everyone by way of inspection & examination.

सर्वमानव पीड़ा से मुक्ति चाहता ही है । यही जागृति सहज अपेक्षा का स्रोत और सम्भावना है । जीवन सहज क्रियाकलापों में, से न्याय, धर्म, सत्य का साक्षात्कार और दृष्टा होना और उसका प्रमाण सिद्ध होना ही सम्पूर्ण जागृति है । दृष्टापद में होने वाली सम्पूर्ण क्रियाकलाप जीवन सहज विधि से जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने के रूप में होना पाया गया है । जानने-मानने की सम्पूर्ण वस्तु जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान ही है । अस्तित्व में अनन्त ग्रह-गोल व्यापक वस्तु में समायी हुई है - जिनका दृष्टा केवल मानव ही है । भले ही कैसे हैं, कितने है, क्या है ? इन तथ्यों का स्पष्टीकरण न हो।

All humans want liberation from suffering. This is indeed the source and possibility of expectation of awakening. Being the perceiver and direct perceiver of justice, dharma & truth, and their evidence itself is complete awakening. All the activities of jeevan in the perceiver plane have been found to be in the form of knowing, believing, recognising & fulfilling. All the content of knowing & believing is the knowledge of jeevan, knowledge of coexistence, and knowledge of humane conduct only. In existence, countless numbers of planets are contained in the reality called space, and only humans are their perceiver even if what they are, and how many, this may not be sufficiently clear.

इसी प्रकार धरती में चारों अवस्थाओं के यथा पदार्थ, प्राण, जीव व ज्ञानावस्था सहज वस्तुओं का दृष्टा भी मानव ही है । प्रकारान्तर से इन सभी चीजों को हर मानव देखता ही है । साथ-साथ हर कार्यशील वस्तुओं को व्यापक में समायी हुई देखना समझना समीचीन है। जितने भी अचल वस्तुएँ हैं वे सब धरती के साथ ही गतिशील रहना देखने को मिलता है । धरती स्वयं व्यापक में समायी हुई होना कल्पना में आता है, अध्ययन से स्पष्ट होता है । कल्पनाएँ जीवन सहज कार्य महिमा है । कल्पना में सम्पूर्ण अस्तित्व समाने की क्रिया स्पष्ट हुई । कल्पना का तात्पर्य अस्पष्ट आशा, विचार, इच्छा का ही गतिशीलता है । इस प्रकार मानव की कल्पना से स्पष्टीकरण की ओर ही जागृति चिन्हित हो पाता है।

Similarly, only humans are the perceiver of all the things belonging to the four orders in nature on Earth, which are the material order, plants order, animal order & the knowledge order. In one way or the other, all humans observe these things. Along with this, it is easy to understand that all such things are active, and are submerged in space. All the immovable things are seen to be moving along with Earth. It also comes into the imagination that Earth itself is in space, and it becomes clear by studying. Imaginations are a natural activity in jeevan. It became clear that the whole existence can be contained in imagination. Imagination means movement of directionless hope, thoughts & desire. Thus, it becomes possible to recognise awakening with clarity in human imagination.

अस्तित्व कैसा है इस तथ्य को ‘अस्तित्व एवं अस्तित्व में परमाणु का विकास’ में स्पष्ट किया जा चुका है । कितना है का उत्तर हर मानव के जागृति सहज विधि से उदय होता ही रहता है । सम्पूर्ण अस्तित्व मानव की आवश्यकता के अर्थ में समाहित नहीं होता। दूसरी भाषा में सम्पूर्ण अस्तित्व मानव सहज भाषा की सीमा में समाता नहीं है । इससे यह भी पता लगता है सम्पूर्ण अस्तित्व मानव की आवश्यकता से अधिक है ही । अस्तित्व में ही व्यापक और अनन्त इकाईयाँ अविभाज्य रूप में होना दिखाई पड़ता है समझ में आता है । इसे देख पाना मानव जागृति क्रम सहज समीचीनता है । इस प्रकार कितना है का स्पष्टीकरण समझ में आता है । क्यों है का उत्तर इस प्रकार स्पष्ट है कि सम्पूर्ण घटना स्वरूप ही सह-अस्तित्व में होना स्पष्ट होती है । व्यापक वस्तु में ही अनन्त वस्तुओं की अविभाज्यता अनुस्यूत है । ऐसे सदा-सदा वर्तमान रूपी अस्तित्व क्यों वाला प्रश्न को भी मानव ही प्रस्तुत करता है । मानव भी अस्तित्व में अविभाज्य इकाई है । वर्तमान में जो कुछ भी देखने-समझने को मिल रहा है इसको वर्तमान में प्रकाशित करना ही अस्तित्व सहज सार्थकता स्पष्ट होती है । अस्तित्व में जो कुछ भी है इसकी निरंतरता ही इसका प्रयोजन है । इस प्रकार तीनो प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट हो जाता है ।

‘What is the true form of existence’ has already been explained under the heading ‘Existence and development of the atom in existence’. The answer to ‘how much’ keeps on emerging with the progress of awakening in each human being. It is not feasible to define the whole existence in the context of human needs, In other words, the whole existence is indescribable within the boundaries of human language. This also points to the fact that the whole existence certainly is much more than what humans need. It is in existence only that inseparability of space and countless entities can be seen, can be understood. Ability to understand this depends on the person’s state in awakening progression. In this manner, the understanding about ‘how much’ becomes clear. Answer to ‘why’ becomes clear by understanding that all incidents happen in coexistence. Inseparability of all the countless realities in the omnipresent reality is eternal. The question ‘why this ever present existence’ is also posed by humans only. Humans are also an inseparable entity in existence. It becomes clear that exposition of whatever is currently available to see and understand in existence, is indeed the meaningfulness in existence. Whatever exists in existence, its continuity indeed is its purpose. In this manner, answers to all the three questions become clear.

‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’ भी इसी तथ्य को इंगित करने के लिये तत्पर है । अनुभव अस्तित्व में ही होना पाया जाता है । अनुभव के पहले समझदारी जानने-मानने-पहचानने के रूप में होना पाया जाता है । यह सच्चाई का अध्ययनपूर्वक होने वाला अवधारणा, संस्कार है । इसके पूर्व रूप में विचार और चित्रण ही रहता है । यही श्रुति, स्मृति, शब्द और चित्रण है । शब्द और चित्रण के आधार पर कितने भी क्रियाकलापों को मानव संपादित करता है यह सब अस्थिरता के साथ ही जूझता हुआ देखा गया है अस्थिरता में भ्रम ही प्रधान कारण है। इसीलिये ही स्मरण और चित्रण के उपरान्त कहीं न कहीं अस्थिरता-अनिश्चयता को प्रकाशित करता ही है । इसी सीमा तक हम इस बीसवीं सदी के अंत तक झेलते आये हैं । स्थिरता की स्वीकृति बोध रूप में ही होना फलस्वरूप व्यवहार में न्याय-समाधान-सत्य प्रमाणित होना पाया जाता है । ऐसा बोध जानने-मानने-पहचानने का ही महिमा है । यह क्रिया जीवन में ही जागृति सहज विधि से होने वाली वांछित प्रक्रिया है ।

‘Realisation centred spiritualism’ is presented to highlight this fact. Realisation happens only in existence. Before realisation, understanding is in the form of knowing, believing & recognising. This is conceptual understanding, or sanskar of truth by way of study. Prior to this, only thoughts and visualisation are active. This itself is revelation, memory, word & visualisation. All the actions by humans based on words & visualisation, have been observed to be leading to humans struggling with instability. Delusion is the main reason behind instability. That’s why in one way or the other, humans invariably exhibit instability & uncertainty when living based on memory & visualisation. Humans have remained in this vicious circle till the end of the twentieth century. Acceptance of stability is in enlightenment, and it leads to the evidence of justice, dharma & truth in behaviour. This enlightenment is indeed the magnificence of knowing, believing & recognising. This activity is an essential process which occurs in jeevan only by way of awakening.

अस्तित्व में अनुभव सत्ता में (व्यापक में) संपृक्त प्रकृति के रूप में ही देखा गया है। सत्ता में संपृक्त रहने के आधार पर ही क्रियाशीलता नियंत्रण, संतुलन, संरक्षण साम्य ऊर्जा स्रोत होना देखा गया है । इसीलिये प्रकृति में नियंत्रण, संरक्षण निरंतर बना ही रहता है । अत: सत्ता में नियंत्रण स्पष्ट है । इसे ही अध्यात्म संज्ञा दी गयी है या सत्ता का दूसरा नाम ही अध्यात्म है । दूसरे नाम से अध्यात्म साम्य ऊर्जा सहज अस्तित्व का स्वरूप है । सह-अस्तित्व ही मूल ध्रुव स्थिर और निश्चय होने के कारण मानव भी निश्चयता, स्थिरता और उसकी निरंतरता सहज विधि से परंपरा के रूप में वैभवित होना चाहता है, यह नित्य समीचीन है । इसे स्पष्ट कर देना ही अनुभवात्मक अध्यात्मवाद का अभीष्ट है ।

Realisation in existence has been seen in the form of nature saturated in Omnipotence (in Omnipresence). It has been seen that activeness, regulation, balance, protection, and source of uniform energy is only because of being saturated in Omnipotence. It is only due to this reason that regulation & balance in nature continues to be there. Thus, regulation in Omnipotence is evident. This itself is called the spirit, or Omnipotence itself is called the spirit. In other words, spirit is nothing but the existence of uniform energy. There is stability & certainty in coexistence; and due to this, humans too want to be established in the grandeur of tradition by way of stability & certainty; this is an eternal truth. To provide its clarity is the intent of Realisation Centred Spiritualism.

अस्तित्व में अनुभव ही भ्रम मुक्ति का नित्य स्रोत है । इसका क्रम अनुभवगामी विधि से अध्ययनपूर्वक, अनुभवमूलक विधि से अभिव्यक्त होना ही एक मात्र दिशा और उपाय है । सम्पूर्ण अस्तित्व को चार अवस्था में अध्ययन करने की व्यवस्था ‘‘मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद’’ में प्रावधानित हुआ है ।

Realisation in existence is the eternal source of liberation from delusion. It can be achieved only by studying according to the realisation oriented method, and expressing by the realisation-rooted method. Systematic study of the whole existence in the form of four orders, has been provided for in ‘Madhyasth Darshan Co-existentialism’.

अनुभव करने के लिये वस्तु चारों अवस्था सहज सह-अस्तित्व रूप में वर्तमान सह-अस्तित्व ही है । अस्तित्व में अनुभूत होना अनुभवमूलक विधि से बोधगम्य कराना इस विधि से सहज हुआ है कि स्थिति सत्य के रूप में अस्तित्व बोध होना जो स्वयं में, सत्ता में संपृक्त प्रकृति मानव भी है । सह-अस्तित्व के रूप में जड़-चैतन्य प्रकृति वर्तमान सहज रूप में बोध होना अध्ययन प्रक्रिया सहज विधि से होता है । अस्तित्व में पाये जाने वाले प्रकृति सहज वस्तुओं के परस्परता में दिशा और कोणों को पहचाना जाता है । जैसा दो वस्तुओं को कहीं भी स्थापित कर देखें इनमें परस्परता साभिमुख विधि से वर्तमान रहता है। साभिमुखता का तात्पर्य एक-दूसरे के सम्मुख रहने से है । ऐसी सभी सम्मुखताएँ अभ्युदय के अर्थ में ही होना पाया जाता है । इसका मूल सूत्र प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था के रूप में होना ही है, ऐसे प्रत्येक सम्मुखताएँ सविपरीत दिशा-बोध कराता है ।

Coexistence in the form of four orders in nature is indeed the content of realisation. Realisation in existence, and making it studiable by the realisation rooted method became possible only after the existence was understood as absolute truth which in itself is the nature saturated in Omnipotence, and includes humans too. Enlightenment in the coexistence in the form of insentient & sentient nature becomes possible by the method of study. In the mutuality of units of nature found in existence, directions and angles are recognised. For example, if two objects are placed anywhere, they enface each other. Enfacing means facing each other. All such facings are only for enlightenment. Each entity being in orderliness with its essence is the key here. All such facings indicate mutually opposite directions.

प्रत्येक एक अपने में अनन्त कोण सम्पन्न रहता ही है । किसी एक में एक बिन्दु के साथ सभी ओर कोणों को बनाते जाएँ, कितने भी बनाए और भी बनाये ही जा सकते हैं। ऐसी स्थिति समीचीन रहती है । इस प्रकार इकाई में अनन्त कोण और परस्परता में दिशा स्पष्ट होना पाया जाता है क्योंकि सभी ओर से हर वस्तु दिखता है ।

Each entity in itself comprises countless angles. If angles are made from any point on an entity, more angles can always be made irrespective of how many angles have already been made. In this manner, uncountable angles and direction in mutuality becomes clear in each entity because every entity is visible from all directions.

**आदर्शवादी विचार के अनुसार मोक्ष का स्वरूप**

**Form of moksha as per the thoughts of idealism**

ईश्वर को रहस्यमय और सर्वशक्तिमान सृष्टि, स्थिति और लय कार्यों पर/में अधिकार रखने वाला माना गया है । यह मूलभूत मान्यता विविध प्रकार से दिखने वाली विविध धार्मिक मूल ग्रन्थों में प्रतिपादित किया गया । इनमें से अधिकांश रहस्यमयी ईश्वर केन्द्रित विचारों के अनुसार जीव और जगत का उत्पत्ति होना, स्थिति होना, लय होना माना गया । उनमें से कुछ विचार और दर्शन इस बात को भी स्वीकारता है, प्रतिपादन करता है जीवों के हृदय में ईश्वर जैसे ही वस्तु निहित या समाहित रहता है । जिसको आत्मा कहा गया है। कुछ लोग जीव का ही होना मानते हैं, कुछ लोग जीवों में आत्मा भी मानते हैं। मूल ग्रंथ में इन दोनों को न मानने वालों को शुद्धतः शरीरवादी कहते हैं। इसीलिये शरीरवादी भी अपने ढंग से धर्म-विचार रखते हैं क्योंकि शरीर को ईश्वर बनाता है ऐसी उनकी मान्यता है । धरती, जल, खनिज सब ईश्वर से ही बना हुआ वस्तुएँ हैं । ईश्वर की इच्छा जब तक रहती है तब तक ये बने रहते हैं । ईश्वर की इच्छा से ही ये सब लय को प्राप्त करते हैं । *(लय is clearly defined on page 129)*

God is believed to be mysterious and almighty, having control of & over the creation of the cosmic order, its state and destruction. This fundamental belief has been proposed in various ways by apparently diverse religious scriptures. In most of these mysterious God-centred thoughts, creation of the world & the living beings (*jeeva*), their presence, and destruction has been accepted. Some of these thoughts & philosophies go further and accept & propagate that some god-like entity is present in the living beings which is called the soul. Some people believe only in the living beings, while some believe that there is a soul in the living being. In religious scriptures, those who do not believe in any of these beliefs are called non-believers. The non-believers also have their own religious thoughts because they also believe that the human body is made by God. Earth, water, minerals, all of these are created by God; they remain in existence till God wants. By God’s will only, all these are destroyed.

मुक्ति का मुद्दा जीवों से सम्बन्धित है । जीव ही शरीर को धारण करता है । जन्म-मृत्यु के चक्कर में आता है । कर्मफल बन्धनवश स्वर्ग-नर्क में आवागमन करता है अथवा शरीर को छोड़कर जब तक ईश्वर मुक्त नहीं करता है तब तक ईश्वर का इंतजार करता है। ऐसे विविध प्रकार से प्रतिपादन करते हुए ईश्वर कृपा होनेे पर ही मोक्ष होने का आश्वासन है । ईश्वर कृपा पाने के लिये हर सम्प्रदाय में कार्य, विधि, कर्मकाण्ड और संस्कार विधियों को लिखा हुआ है । उसे संस्कारित करने वाले को उन-उन धर्मों का धारक-वाहक मानेे जाते हैं । संस्कारित होने वाले भी संस्कारित होकर उन धर्मों में निष्ठा मान लेते हैं । प्रधानत: संस्कारों का पहचान, नाम, संस्कार, जाति, शिक्षा-दीक्षा, धर्म और कर्म संस्कार ये प्रमुखत: हर धर्म परंपरा में उन-उन परम्परा के अनुयायियों को स्वीकृत होता है ।

The concept of liberation is related to living beings. Only a living being occupies the body, and goes through the cycles of birth and death. It travels to & from heaven or hell bound by the fruits of their deeds; or after leaving the body, waits for God till God liberates it. Various such discourses convey that moksha is possible only by the grace of God. Each sect has well-defined deeds, methods, rituals and rites to get the grace of God. Those who perform such rites are accepted as bearers-holders of their respective religions. Those on whom such rites are performed, also accept allegiance to their religions upon performance of such rites on themselves. Mainly, the name, method & rituals of these rites are all acceptable in each religious tradition by their followers.

जहाँ तक शिक्षा की बात है यह प्रचलित विज्ञान युग के अनन्तर धर्म-कर्म शास्त्रों से भिन्न भी शिक्षा-स्वरूप और कार्य समाहित हुई । इसे विज्ञान शिक्षा अथवा व्यापार शिक्षा कह सकते हैं । शिक्षा जगत में तकनीकी विज्ञान इस धरती के सभी भाषा, सम्प्रदाय, धर्म, जाति, मत, पंथ वाले अपना चुके हैं । धर्म परंपराओं का जो कुछ भी चिन्हित लक्षण अथवा पहचान हुआ वह किसी का जन्म होने से उत्सव मनाने के रूप में, किसी के शादी-विवाह अवसर में उत्सव मनाने के तरीके से और किसी की मृत्यु होने से बंधुजन शोक संवेदना को व्यक्त करने के तरीके से होता है । सभी सम्प्रदाय अपने-अपने तरीके को श्रेष्ठ मानते ही रहते हैं ।

As far as education is concerned, in the prevailing age of science, its form & content has inclusions different from the religious-ritual prescriptions. We may call it science education or commerce education. Technology & science has been accepted in education by people of all languages, sects, castes, beliefs & creeds. All the identity and distinctions of religious traditions are based on the customs and methods of celebrations during births & marriages, or mournings during deaths. All sects believe their respective customs to be superior.

हर समुदाय ईश्वर कृपा को पाने के लिये विभिन्न प्रकार के साधना-अभ्यास परम्पराओं को बनाए रखे हैं । इसमें सबका गम्यस्थली ध्यान और समाधि मानी गई है । ऐसे निश्चित ध्यान के लिये विविध उपायों को अपने-अपने परंपरा के अनुसार स्थापित किये हुए हैं । सम्पूर्ण प्रकार से प्रस्तावित ध्यान क्रियाएँ विचारों को सीमित और एक बिन्दुगत होने के उद्देश्य से किया जाता है । इसमें कोई-कोई सफल भी हो जाते हैं । सफल होने का तात्पर्य विचारों का उपज न्यूनतम अथवा शून्य अर्थ में मानी जाती है । ऐसे मानसिकता को मौन होना भी माना जाता है । निर्विचार होना भी माना जाता है । इसी को कैवल्य अवस्था या परम सुखद अवस्था मानी गई है । उल्लेखनीय तथ्य यही है ऐसे स्थिति में उनके पास कोई कार्यक्रम होना संभव नहीं होता ।

In one way or the other, all the sects have preserved the various traditions of *sadhana* & practice for getting the grace of God. In this, meditation and *samadhi* are believed by all to be helpful. Various methods have been established in respective traditions for such meditation. The objective of all types of the recommended meditation activities is to limit the thoughts, and to focus on one particular point. Occasionally, some people become successful in this. Here, becoming successful means having minimum or no thoughts. This state of mind is often believed to be the state of silence, it is believed to be a state of thoughtlessness too. This state indeed is believed to be emancipation or the state of ultimate happiness. Main point to be highlighted here is that in this state, it is not possible for such persons to have any program.

इस मुद्दे पर यह अनुभव किया गया है कि निर्विचार (समाधि) के अनंतर किसी प्रकार का व्यवहारिक आशा, विचार, इच्छा अनुसार भी कोई कार्यक्रम उपजता नहीं है । फलस्वरूप समाधि के अनंतर उस व्यक्ति का उपयोग सिद्ध होना भी नहीं बनता है । इसके मूल तत्व को इस प्रकार पहचाना गया कि विचारों का उद्गम किसी न किसी चित्रण क्रिया के आधार पर सम्पन्न होना देखा गया है । सम्पूर्ण विचारों का उद्गमन ‘‘है, चाहिए और करना’’ इन्हीं मूल ध्रुवों के आधार पर निर्भर रहता है । यह ‘‘मुझे कुछ करना है, मेरे पास कुछ है और मुझे कुछ चाहिये’’ यही ध्रुव है । सम्पूर्ण व्यक्तियों में विचारों का उद्गमन हो पाता है । विचार शून्यता के अनंतर आदमी जीवित रहने का कोई कड़ी नहीं बनता है । इसीलिये ऐसे समाधि के अनन्तर अथवा समाधि में रहते ही शरीर शान्त होने का सूचनाओँ को कथाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यदि कुछ दिन, मास, वर्ष समाधिस्थ व्यक्ति जीवित रहता है (शरीर के साथ) ऐसे स्थिति में उन्हीं-उन्हीं परंपरा के मूल ग्रन्थों का प्रतिपादन का समर्थन करते हुए देखने को मिलता है । इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि **‘‘है, करना है, चाहिये’’ के साथ निषेध लगाना ही निर्विचार होने का सूत्र बना ।** अस्तु, सम्पूर्ण विचार जब तक चित्रण मूलक विधि से परिसीमित रहता है, कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय व्यापार और उससे सम्बन्धित नैसर्गिकता ही ‘‘है, करना है, चाहिए’’ का आधार बना रहता है ।

On this point, it has been realised that no practical program arises from hope, thought & desire while one is in the state of thoughtless (*samadhi*). Thus, in the state of samadhi, no practical use of such a person is evident. This recognition is related to the fact that the source of all thoughts is based on some or the other visualisation activity. All thoughts emerge based on these main points “have, need, will do”. This “I have something, I need something, I will do something” is the main point. Thoughts originate in all people. It is difficult to find a connecting element with day-to-day life in, by & for a person who is in a state of thoughtlessness. It is for this reason indeed that the stories of bodies being still while in a state of such *samadhi*, or immediately upon attaining such *samadhi*, have been narrated often. If such a person in a state of samadhi remains alive for a few days, months or years, they are seen to be rendering the scriptures of their respective traditions in such a state. Thus it becomes clear that **forbidding of “have, need, will do” itself is the connecting link to being thoughtless.** Therefore, till the time the thoughts are limited by the visualisation activity, remaining engaged (busyness) with work organs, sensory organs and related activities remains the basis for “have, need, will do”.

ऐसे विचारों में से कोई समाधान प्रतिपादित नहीं होती अपितु समाधान के विपरीत समस्याओं का संकट ही हर विचार और कार्यक्रमों के परिणाम में देखने को मिलता है । इसलिये संसार को दुख रूप मानते ही आये हैं । इससे यह सुस्पष्ट हुआ कि जो कुछ भी अभी तक वांग्मय, पावन ग्रन्थों से सामान्य ग्रन्थों तक रचित हुआ है यह सब चित्रण मूलक प्रकाशन ही है। इस क्रम में यह भी स्पष्ट हो गया है कि समाधि और समाधिस्थ व्यक्ति के आधार पर कोई स्वस्थ परिवार ही नहीं बन पाया है, समाज तो बहुत दूर है । साधनारत व्यक्ति भी साधना काल में परिवार, समाज अथवा व्यवस्था का भागीदार होना संभव नहीं होता । इस प्रकार से साधनारत समय में एवं साधना सफल होने के उपरान्त विचार शून्यता को ही ज्ञानी होने का एक मात्र उपाय प्रकारान्तर से सभी धर्म वाले बताते हैं । वह मानव उपयोगी होना देखने को नहीं मिला ।

No resolution emerges from such thoughts; on the contrary, only problems are seen as the outcome of all such thoughts & programs. This is the reason they believe this world to be full of miseries. Thus it becomes clear that all the bodies of knowledge created till today, from holy scriptures to normal literature, are all expressions based primarily on visualisation activity. In this background, it is also clear by now that based on *samadhi*, or a person who has achieved the state of *samadhi*, not even a single family has attained harmony, the society is a far cry. Even for the seeker, it is not possible to participate in the family, society or the system during the period of undergoing *sadhana* as well as after successful completion of *sadhana*. In this manner, in diverse ways, all religions proclaim the thoughtlessness during *sadhana* as well as after successful completion of *sadhana*, to be the sole method to gain knowledge. However, such persons are not found to be useful.

इसी घटना के साथ जुड़ी हुई और घटना तैयार हुई-स्वर्ग के लिये अनुकूल कार्यकलापों को मानव कर सकता है । इसके लिये ईश्वरीय नियमों-कानूनों को बताया गया। हर जाति, हर वर्ण, हर आश्रम जो नियम-कानून, धर्म ग्रन्थों में लिखी हुई है उसको पालन करना ही स्वर्ग में जाने के लिये एक मात्र उपाय बताये हैं । ऐसे नियम कानूनों को पालन करना ही पुण्य कर्म बताया गया । ऐसे नियम कानून विभिन्न प्रकार से धर्म कहलाने वालों के पुस्तिका में विभिन्न प्रकार से सूत्रित, व्याख्यायित हुई। जो जिस जाति धर्म के नियम कानून रूपी (ईश्वरीय नियम कानून रूपी) कार्यकलापों को उन्हीं-उन्हीं को स्वर्ग मिलने का स्वीकृति हो पाती है । अन्य प्रकार के धर्म वालों को वह स्वर्ग मिल नहीं सकती है । ऐसा हर सामुदायिक धर्म वाले जो अनुसरण करते हैं और जो आर्षेय ग्रंथों का अनुमोदन करते हैं ये सब कहते भी हैं, मानते भी है । उल्लेखनीय घटना यही है विविध समुदाय, विभिन्न पवित्र ग्रन्थों के आधार पर मान्यताओं को सुदृढ़ किये रहते हैं । ऊपर कहे गये अस्मिता को भी बनाये रखते हैं । इसके बावजूद ऐसा कोई एक आचरण सार्वभौम होना प्रमाणित नहीं हो पाया, जिसको सभी धर्म वाले स्वीकार लिये हो । इसलिये आदिकाल से अभी तक परस्पर समुदायों में अपना-पराया का दीवाल, प्रत्येक परिवार की परस्परता में अपना-पराया का दीवाल, प्रत्येक व्यक्ति की परस्परता में अपना-पराया का दीवाल बना ही रहता है ।

Along with this, something else happened - humans can do deeds which assist in getting a place in heaven. Divine laws have been spelt out for this. All castes and classes endorse that all such laws which are mentioned in their respective religious scriptures are the only method to ensure a place in heaven. It is also mentioned that only the deeds which abide by such laws are the divine deeds. Such laws have been coded and explained differently in the books of the so-called religions. Only those who follow the programs in the form of laws of their respective castes or religions (in the form of divine laws), are eligible to find a place in heaven. People following other religions can not get a place in this heaven. All this is said and believed by the followers of all sectarian religions and by those who endorse the holy scriptures. The main point to be highlighted here is that different sects keep on reinforcing the beliefs based on their respective holy scriptures. They even keep on nurturing the haughtiness mentioned above. Despite all this, no single universal conduct has been evidenced so far which is acceptable to all religions. For this reason, the walls of us & them among sects, the walls of us & them among families, and the walls of us & them among individuals have remained as they are from ancient times till today.

इसी के साथ-साथ उपासना, पूजा-पाठ और उसके तरीके के विभिन्नताएँ अपने-अपने श्रेष्ठता और अहम्ता के साथ पनपते आया । इस क्रम में भी मानव और समुदाय व्यक्तिवादी हैं, क्योंकि सभी उपासना, प्रार्थना, पूजा-पाठ व्यक्तिवादी होता ही है । समूहगत प्रार्थना-पूजा में भी हर व्यक्ति अपनी प्रमुखता और श्रेष्ठता के साथ ही प्रस्तुत होना पाया जाता है । प्रार्थना में अधिकतर ईश्वर की महिमा, विश्व कल्याण, स्वयं का उद्धार, शत्रुओं का नाश की कामना समाहित रहती है । जबकि विश्व कल्याण में व्यक्ति का कल्याण समाया हुआ है और मानव के उद्धार का स्वरूप अभी तक इस धरती पर किसी परंपरागत विधि से अध्ययनगम्य नहीं हो पाया । यह सम्पूर्ण क्रियाकलाप आर्षेय ग्रंथ कथन और आस्था का संयोग से चक्कर काटते ही आया । **आस्था का तात्पर्य है ‘‘न जानते हुए मान लेने से’’ है ।** इसमें और भी उल्लेखनीय तथ्य यही है कि ‘स्व’ का अध्ययन होना अभी भी प्रतीक्षित है । इस मुद्दे पर पहले बता चुके हैं कोई-कोई परंपरा, पावन ग्रन्थ केवल शरीर ही जीवन है ऐसा मानते हैं । कोई-कोई शरीर और जीव होना मानते हैं । कोई-कोई शरीर, जीव, जीव में आत्मा होना मानते हैं । ये सब ईश्वर तंत्र से अथवा ईश्वरेच्छा से निर्मित, वैभवित और प्रलय को प्राप्त होते हैं ।

Along with this, worships & prayers kept on developing in different ways based on respective wisdom or deluded mindsets. Here also, humans and sects are undoubtedly individualistic because all worships and prayers are always individualistic. In group prayers too, it is observed that everyone presents themselves with excellence and prominence. In prayers, mostly the magnificence of God, and the wish for well-being of everyone, upliftment of oneself, and destruction of enemies is included. However, well-being of oneself is included in the well-being of everyone, and the true form of upliftment of a human being has not yet become studiable on this earth by any method in tradition. All this continues to happen due to the combined effect of statements in holy scriptures, and faith. **Meaning of faith is “to believe in something without knowing”.** Another noteworthy point here is that the study of ‘self’ is still awaited. It has already been mentioned that some traditions and scriptures believe that the body itself is jeevan. Some believe that there is the body and the spirit. Some believe that there is the body, the spirit, and atma in spirit. All these are created, sustained and reach the stage of dissolution by the act of God or will of God.

जबकि इस मुद्दे पर अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन विधि से सह-अस्तित्व में ही विकासक्रम और विकास जागृति क्रम, जागृति के रूप में देखा गया है जिसे पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था के रूप में होना स्पष्ट किया जा चुका है । इसी के साथ ज्ञानावस्था में भ्रमवश बन्धन और जागृतिवश मोक्ष होता है । जिसमें से बंधन को विस्तार से आशा बन्धन, विचार बन्धन और इच्छा बन्धन के रूप में विश्लेषित कर चुके हैं ।

On this issue, however, development progression, development, awakening progression & awakening have been seen in coexistence by way of the existence-based human centred contemplation; which has been explained in the form of material order, plant order, animal order and the knowledge order. It is in the knowledge order that bondage is seen under delusion, and *moksha* in the state of awakening. Bondage has been analysed in detail as the bondage of hope, bondage of thoughts and bondage of desires.

यह तीनों प्रकार का बन्धन शरीर को जीवन मान लेने से और इन्द्रिय सन्निकर्ष से ही सम्पूर्ण सुख का स्रोत मानने के परिणाम में भ्रम सिद्ध होना पाया गया । जबकि जीवन अपने जागृति को व्यक्त करने के लिये शरीर एक साधन है, इन्द्रिय सन्निकर्ष ही एक माध्यम है । मानव परंपरा ही जीवन जागृति प्रमाण का सूत्र और व्याख्या है । यही भ्रम और निर्भ्रम का, जागृति और अजागृति का निश्चित रेखाकरण सहज बिन्दु है । इन यथार्थों को शिक्षा गद्दी, राजगद्दी और धर्मगद्दी अपने में बीते हुए विधियों से आत्मसात करने में असमर्थ रहे हैं । दूसरे विधि से इनका धारक वाहक मेधावी इन मुद्दों पर अनुसंधान करने से वंचित रहे हैं । इसीलिये यह तथ्य मानव परंपरा में ओझिल रही है। इसे परंपरा में समाहित कराना ही इस ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ का उद्देश्य है ।

These three types of bondage occur due to the belief that the body itself is jeevan, and that the source of all happiness lies in sensory organs; it has proven to be delusion. In reality, the body is a means for jeevan to express its awakening, and body organs are a medium to that end. Human tradition is indeed the definition & description of the evidence of awakening. This itself is the line of demarcation between delusion & non-delusion, and awakening & un-awakening. Seats of education, power and religion have been unable to assimilate these facts by the methods relied upon so far. In other words, learned people carrying such knowledge could not deeply explore these points. Therefore, these facts remained obscure in human tradition. It is the objective of this book ‘Realisation Centred Spiritualism’ to include it in tradition.

जीवन में सतत् कार्यकारी तीन दृष्टियाँ यथा प्रिय, हित, लाभ बन्धन के रूप में पीड़ा का कारण हुआ इसे हर व्यक्ति अपने में परिशीलन कर सत्यापित कर सकता है ।

It can be reflected within oneself, and can be validated, by every person that the three continuously active perspectives in jeevan (pleasant, health & profit) lead to misery in the form of bondage.

जीवन में ही क्रियारत न्याय, धर्म और सत्यात्मक दृष्टियाँ जागृति बन्धन मुक्ति का सूत्र है । न्याय स्वभाविक रूप में परस्पर मानव के सम्बन्धों में प्रमाणित होने वाले तथ्य हैं। यह प्रत्येक मानव के अविभाज्य वर्तमान रूपी मूल्य, चरित्र, नैतिकता से प्रमाणित हो जाता है। मानवीयतापूर्ण आचरण में उक्त तीनों आयाम सम्पन्न आचरण देखने को मिलता है। यह आचरण मानवीयता से परिपूर्ण होते तक यह तीनों आयाम एक दूसरे में पूरक होना संभव नहीं है । यह इस तथ्य का द्योतक है कि मानव जागृतिपूर्वक ही मानवीयतापूर्ण आचरण करने में समर्थ होता है । इसको भले प्रकार से परीक्षण, निरीक्षण कर देखा गया है । जागृति का तात्पर्य जीवन ज्ञान और अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान में पारंगत होने से है । मानवीयतापूर्ण आचरण हर विद्यार्थी में, से, के लिये सुलभ होने से है । सह-अस्तित्व ही परम सत्य होने के कारण अस्तित्व में अनुभव होने के क्रियाकलाप को ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ नाम दिया है ।

The other three perspectives (justice, dharma & truth) which also are active in jeevan, are the link to liberation from bondage. In its natural form, justice is something which is evidenced in human-human relationships. It is evidenced through the overall presence of a person in the form of values, character & ethics. Conduct rich with all these three dimensions is seen in humane conduct. It is not possible for these three dimensions to compliment each other till this conduct is replete with humaneness. It is a pointer to the fact that only after awakening is a person able to do humane conduct. It has been inspected & examined thoroughly. Meaning of awakening is being an expert in the knowledge of the holistic view of existence, knowledge of jeevan and knowledge of humane conduct. Humane conduct needs to be easily accessible in, by & for each student. As coexistence itself is the ultimate truth, the activity of realisation in existence has been named as ‘Realisation centred spiritualism’.

इस तरीके से हम सहज ही इस निष्कर्ष में आ सकते हैं कि हर व्यक्ति के जागृत होने की संभावना समीचीन है। जागृत मानव ही स्वायत्त मानव के रूप में मूल्यांकित होना पाया जाता है । ऐसे स्वायत्त मानव स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी होने का सामर्थ्य, प्रक्रिया, ज्ञान, दर्शन विधाओं में पारंगत होता है । ऐसे मानव ही परिवार मानव के रूप में मानवीयता पूर्ण आचरण को प्रमाणित करता है। मानवीयता पूर्ण आचरण में एक आयाम परिवार में परस्पर संबंधों को पहचानने, मूल्यों को निर्वाह करने, मूल्यांकन करने, उभयतृप्ति पाने के रूप में देखा गया है । इसकी अपेक्षा सर्वमानव में होना पाया जाता है । इसके लिये सम्भावना नित्य समीचीन है। यह मूलत: मानव केन्द्रित अध्ययन, चिन्तन के आधार पर ही सफल होता हुआ देखा जाता है ।

Thus, we can easily conclude that the possibility to attain awakening exists for each person. Only an awakened person is found to be categorised as an autonomous person. Such an autonomous person has the qualities of self confidence, respect for excellence, balance in talent & personality, sociability in behaviour, self-reliance in occupation, and has competency, knowledge and expertise in these areas. Such humans indeed produce evidence of humane conduct as family persons. One dimension of humane conduct has been observed to be in the form of recognition of relationships, fulfilling of values, doing the evaluation, and mutual happiness. This expectation is found to be present in every and every human being. The possibility to accomplish it also exists eternally. It is found to be succeeding by way of human centred study and contemplation.

मानवीयतापूर्ण आचरण में दूसरा आयाम है **नैतिकता**, यह चरित्र के पूरकता में होना देखा गया है, वह है, तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग-सुरक्षा के रूप में सार्थक होना । अर्थात् मानवीयता पूर्ण चरित्र में, से, के लिये यह नैतिकता पूरक होना पाया जाता है । अर्थात् अर्थ का सदुपयोग विधि, सुरक्षा विधि ही नैतिकता है । इसी प्रमाण के आधार पर अर्थ का सुरक्षा विधि से सदुपयोग, सदुपयोग विधि से सुरक्षा प्रयोजन स्पष्ट होता है । इसलिये अर्थ का सदुपयोगिता सिद्धान्त सुरक्षा के लिये और सुरक्षा सिद्धान्त सदुपयोग के लिये पूरक होता है । अस्तु, इससे आचरण में नैतिकता रूपी दूसरा आयाम सहज प्रयोजन स्पष्ट है । यह सर्वमानव मानस का अपेक्षा है ही अथवा सर्वाधिक मानव का अपेक्षा है । यथा-हर मानव अपने तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग-सुरक्षा चाहता ही है ।

Second dimension of humane conduct is **ethics**. It has been seen that it complements character by being meaningful in the right utilisation & protection of the resources (body, mind & wealth). In other words, ethics are complementary in, by & for for humane character; that is, the systematic right utilisation & protection of resources itself is ethics. This is how the objective of systematic protection of resources by way of right utilisation, and systematic right utilisation of resources by protection becomes clear. Thus, the principle of right utilisation of resources complements protection, and principle of protection of resources complements right utilisation. In this manner, the significance & purpose of the second dimension (ethics) of humane conduct is clear. It is the expectation of all humans, or maximum humans. That is, all humans want the right utilisation & protection of their resources (body, mind & wealth).

मानवीयतापूर्ण आचरण का तीसरा आयाम **चरित्र** है । चरित्र का स्वरूप स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में पहचाना गया है । चरित्र का क्रियाकलाप सामाजिक नियम के रूप में सम्पन्न होना पाया जाता है । समाज शब्द से अखण्डता इंगित तथ्य और उसका कार्य स्वरूप जीवन सहज पूर्णता (जागृति) को शरीर रूपी माध्यम से मानव परंपरा में प्रमाणित करना ही है । मानवीयतापूर्ण आचरण से हर व्यक्ति सम्पन्न होना, सार्थक होना मानव के लिये स्वत्व रूप में समीचीन है ही । इसी के साथ-साथ हर मानव में इसकी आवश्यकता का भास-आभास बना ही है ।

Third dimension of humane conduct is **character**. Character has been recognised as righteous wealth, marital faithfulness, and kindness in work & behaviour. Manifestation of character is seen to occur in the form of societal laws. The word ‘society’ denotes indivisibility, and its role in human tradition is evidence of completeness (awakening) in jeevan, by use of the human body as a resource. Everyone becoming accomplished & meaningful with humane conduct as essence is indeed always within reach. Along with this, its need is felt by everyone.

**स्वधन** का परिभाषा है - अर्थात् कार्य रूप है । प्रतिफल, पारितोष और पुरस्कार से प्राप्त धन । मूलत: धन का स्वरूप उपयोगिता और सुन्दरता मूल्य सम्पन्न वस्तुओं के रूप में होना पाया जाता है । जैसे आहार, आवास, अलंकार, दूरदर्शन, दूरश्रवण और दूरगमन रूपी वस्तुएँ है। इन सबमें उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य को मानव ही मूल्यांकित करता है । ऐसी सभी वस्तुएँ (धन) मानव सहज श्रम नियोजन पूर्वक सम्पन्न हुआ होना पाया जाता है । ऐसा धन किसी का भी स्वत्व रूप में होता है, प्राकृतिक ऐश्वर्य पर नियोजन किया गया श्रम के फलन में ही स्पष्ट होता है । ऐसे फलन को ही श्रम का प्रतिफल है। पारितोष भी किसी का स्वधन होना स्वाभाविक है । अपने स्वधन को स्वयं स्फूर्त प्रसन्नता में, से, के लिये हस्तांतरित करना, अर्पित करने की क्रिया को पारितोष है । पुरस्कार से प्राप्त धन किसी सार्थक घटना, कार्य, प्रमाण, प्रकाशन, अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रकाशन के फलस्वरूप उत्सव का अनुभव करता हुआ एक से अधिक लोग एकत्रित होकर ऐसे धन को अर्पित करने की क्रिया है । इन तीनों प्रकार से प्राप्त धन स्वधन की संज्ञा में आता है । तन, मन के साथ ऐसे स्वधन को सदुपयोग, सुरक्षा करने का अधिकार हर मानव में होता है ।

Definition, or the practical form of **righteous wealth** is wealth obtained by remuneration, gift and award. Basically, wealth is in the form of objects of usefulness and artistic values. The objects of food, shelter, clothing, telecommunication & transportation are the examples of wealth. It is only the humans who evaluate the usefulness value and artistic value in all these. All such objects (wealth) become available by way of human labour. Such wealth belonging to anyone, is clearly the result of someone’s labour upon the natural resources. The result of this labour itself is referred to as remuneration. Gift too is someone’s righteous wealth without doubt. The act of handing over, or conferring one’s righteous wealth with, by & for one’s own happiness, is referred to as a gift. The activity of happily conferring wealth upon someone by one or more persons as a result of significant achievement, work, evidence, publication, expression or communication is referred to as an award. Wealth received in these three ways is referred to as righteous wealth. It is the prerogative of every human to rightly use & protect such righteous wealth along with their body & mind.

**स्वनारी/स्वपुरूष** का प्रयोजन इस विधि और आधार से देखा गया है कि समाज रचना क्रम में एक नारी-पुरूष का शरीर संयोग मानव शरीर रचना अथवा संतान परंपरा के लिए आवश्यकता विधि से सहज कार्यकलाप विधि से भी आवश्यक घटना है । शरीर रचना विधि से यौवन ही इसका आधार है । कार्य विधि से मानव परंपरा बना रहना एक आवश्यकता है । प्रयोजन विधि से व्यवस्था में जीना एक अनिवार्यता है । व्यवस्था का तात्पर्य न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता ही है जिसका स्रोत मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार और स्वास्थ्य-संयम कार्यकलाप ही है । इसी से परिवार परंपरा होना भी सहज है ।

Purpose of the **marital faithfulness** has been seen on the basis that for the sustenance of human society, copulation between male and female human bodies is an essential and natural activity for the children being born, or reproduction. From the perspective of reproduction, youth is vital. From the perspective of work, continuity of human tradition is essential. From the perspective of purpose, living in systems is a necessity. Ease of justice, ease of production, and ease of production indeed is what is meant by systems, and it emanates only from humane education-sanskar and health-sanyam. The tradition of family also naturally flows from this.

**दयापूर्ण कार्य-व्यवहार** का स्वरूप आवश्यकतानुसार (अपने-पराये के दीवाल विहीन विधि से) अर्थ का सदुपयोग कार्य ही है । यह विशेष कर कर्तव्य और दया सूत्र सम्पन्न परिवार संबंधों में जुड़े होते हैं । जागृति सम्पन्न सर्व परिवार, सर्व मानव के साथ दया का प्रभाव क्षेत्र बना रहता है । हर परिवार समृद्ध होने और समाधानित रहने के आधार पर दयापूर्ण कार्य-व्यवहार सार्थक होना देखा गया है । दयापूर्ण कार्य-व्यवहार की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति समग्र व्यवस्था में भागीदारी का ही स्वरूप है। इतना ही नहीं व्यवस्था स्रोत सहित व्यवस्था में भागीदारी का स्वरूप है । इस प्रकार दयापूर्ण कार्य-व्यवहार का कार्य सार्थकता और उसकी अनिवार्यता स्पष्ट होती है । मूलत: यह सब अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के लक्ष्य में प्रतिपादित और प्रवर्तित है । इसका दृष्टफल मानवापेक्षा रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है । यह अनुभव मूलक प्रणाली से ही हर मानव में सार्थक होना पाया जाता है । अस्तु, मानवीयतापूर्ण आचरण सह-अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से और जीवन ज्ञान सहित ही अखण्ड समाज-सार्वभौम व्यवस्था सम्पन्न होना देखा गया है जो स्वयं में स्रोत के रूप में होना पाया जाता है ।

**Kindness in work & behaviour** is in the form of right utilisation of resources as needed (where the thoughts of us-and-them play no role). It is especially linked with duties, and kindness in family relationships. In an awakened family, kindness features in all relationships with all humans. It has been seen that kindness in work & behaviour is meaningful on the basis of a family becoming prosperous and being resolved. All the expression of kindness in work & behaviour is indeed in the form of participation in the overall system. Not only this, but actually it is in the form of the source of orderliness, along with participation in the overall system. In this manner, the meaningfulness and necessity of kindness in work & behaviour becomes clear. Basically, all this is towards the goal of the indivisible society and universal system. Its visible fruit is the accomplishment of human expectation in the form of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. It is found to be realised in everyone only by way of the realisation rooted method. Thus, accomplishment of the indivisible society & universal system has been seen as a result of humane conduct along with knowledge of jeevan; and this accomplishment in itself is its source.

परिवार मानव पद में ही मानवीयतापूर्ण आचरण सार्थक हो पाता है । परिवार में न्याय सार्थकता प्रमाणित रहता ही है । इसी आधार पर अर्थात् परिवार मानव ही व्यवस्था मानव होने के आधार पर बंधनमुक्ति के प्रमाण स्पष्ट हो जाते है । **न्याय सुलभता से स्वाभाविक रूप में भ्रमित आशा, विचार, इच्छा बन्धन से मुक्ति स्वाभाविक है ।** इससे पता चलता है न्याय प्रदायी योग्यता का विकसित होना ही बन्धन से मुक्ति का गवाही है । शरीर या मोह से ही मानव संपूर्ण प्रकार के अन्याय और कुकर्म करता है । इसे हर मानव, हर स्थिति में आंकलित कर सकता है। परिवार मानव विधि से हर काल, हर परिस्थिति में (मानवीयता पूर्ण परिस्थिति मे) न्याय प्रदायी योग्यता और क्षमता को प्रमाणित करना सहज है । यही प्रधान रूप में मुक्ति का प्रमाण है । ऐसी परिवार मानव के रूप में जीने की सम्पूर्ण चित्रण स्वयं में समाज रचना का चित्रण है ।

Humane conduct becomes meaningful only in the family person status. Justice is already prevalent and evident in such families. It is on this basis, that is on the basis of a family person and a systems person being the same, that the evidence of liberation from bondage becomes clear. **Becoming liberated from bondages of hope, thought & desire happens naturally by ease of availability of justice.** This shows development of the ability to provide justice is indeed the evidence of liberation from bondage. It is only under the effect of body or infatuation that a person indulges in all types of injustice and wrongdoing. It can be observed by anyone, anywhere. It is effortless for a person living as a family person to evidence the ability & potential to do justice at all times, in all circumstances (in the humane circumstances). This is the main evidence of liberation. Complete visualisation of how to live like such a family person, in itself is the visualisation of society’s structure.

बन्धन-से-मुक्त होने का स्रोत संभावना जीवन सहज विधि से ही स्पष्ट हो चुकी है । सम्पूर्ण अस्तित्व ही व्यवस्था है। अस्तित्व में सम्पूर्ण वस्तुएँ अपने त्व सहित व्यवस्था के रूप में होना इसका गवाही है । अस्तित्व में मानव जागृतिपूर्वक ही व्यवस्था के रूप में व्यक्त हो पाता है । मानव भी अस्तित्व सहज अभिव्यक्ति है । मानव भी अपने त्व सहित व्यवस्था के रूप में जीने की कला, विचार शैली, अनुभव, बलार्जन करना ही मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार का सार्थक स्वरूप है । अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से ही अनुभव बल से जीने की कला, जीने की कला से अनुभव बल पुष्ट होना पाया जाता है। ऐसी पुष्टि ही मानव परंपरा में उत्सव है । हर व्यक्ति उत्सवित रहना चाहता है । जागृति का फलन ही उत्सव का स्रोत है ।

It is clear by now that the source and possibility of becoming liberated from bondage is only by a method involving jeevan. The complete existence itself is in orderliness. Everything in existence being in orderliness with its respective essence, is its testimony. Regarding humans, it is only by way of awakening that they are able to live in orderliness. Humans are also a natural (entity and) expression in existence. Developing the ability to inculcate the art of living, thought process and the strength of realisation in humans so as to enable them to live in orderliness with humaneness, is the true form & meaningfulness of humane education-sanskar. It is only by the realisation rooted method that the strength of realisation nurtures the art of living, and the art of living nurtures the strength of realisation. Such nurturing is indeed the celebration in human tradition. Every person wants to remain in a state of celebration. Establishment of awakening is indeed the source of celebration.

जागृतिपूर्वक ही हर व्यक्ति प्रमाणित होना पाया जाता है। जागृति को अनुभव मूलक अभिव्यक्ति क्रम में जागृति और जागृतिपूर्णता स्पष्ट होता है । मानव व्यवस्था में जागृत होने से व्यवस्था के रूप में जीना प्रमाणित हो पाता है । इसी पद को अर्थात् जागृत पद क्रिया-पूर्णता है । क्रियापूर्णता का तात्पर्य भी मानवीयतापूर्ण विधि से करने योग्य सभी कार्य सम्पन्न होने की विधि से है । यह कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत कारित अनुमोदित विधि से होना पाया गया है । यही मानव सहज जागृति का विस्तार का भी द्योतक है। इन्हीं आधारों के महिमा को क्रियापूर्णता से इंगित किया है । न्याय और व्यवस्था में जीना ही इसका सार्थकता है । फलस्वरूप व्यवस्था की सार्वभौमता मानव सहज समाज में अखण्डता सूत्रित, व्याख्यायित, वैभवित हो पाती है ।

It is only by way of awakening that a person becomes evidence. Awakening and awakening completeness become clear during the process of expression of realisation rooted awakening. Upon attaining realisation of orderliness, it becomes possible for a person to become evidence of living in orderliness. This state of awakening itself is activity completeness. Activity completeness also means the method of doing everything worth doing by way of humane conduct. It has been observed that it occurs by way of physical, verbal, mental, doing, getting-done & endorsing. This is also an indicator of the expansion of awakening in humans. Gloriousness of these very points has been denoted by ‘activity completeness’. Living with justice and in orderliness is indeed their meaningfulness. As a result, universality of orderliness and indivisibility in human society becomes defined, explained and prevalent.

ऐसे अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के स्रोत रूप में कार्य करने वाला मानव, देव मानव, दिव्य मानव है । यह विचार बन्धन से मुक्ति का स्वरूप है । इनमें से दिव्य मानव आचरण पूर्णता को प्रमाणित करना देखा गया है । इसी पद को जागृतिपूर्णता नाम दिया है । इनके कार्यरूप को अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था का स्रोत सहित जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन, मानवीयतापूर्ण आचरण में प्रमाण के रूप में होना पाया जाता है । जागृतिपूर्णता ही प्रमाण का आधार है। हर व्यक्ति प्रमाण होना चाहता है । इसीलिये मानव परंपरा में दिव्य मानवीयता वांछित व आवश्यक है । इस अवस्था में बन्धन मुक्ति प्रमाण होना पाया जाता है । यही बन्धन मुक्ति का सार संक्षेप स्वरूप है । मुक्ति को आचरण में ही प्रमाणित होना पाया जाता है । व्यवहार कार्य में ही साक्षित होना पड़ता है । सम्पूर्ण अस्तित्व ही प्रकाशमान होने के कारण मानवीयता, देवमानवीयता, दिव्यमानवीयता भी प्रकाशित होना स्वाभाविक है।

Humans who act as sources of such an indivisible society, universal system are called deific humans and divine humans. This is the true form of liberation from bondage of thoughts. Out of these two, it has been observed that divine humans produce evidence of conduct completeness. This plane has been denoted as ‘awakening completeness’ here. Their deeds are the evidence of knowledge of jeevan, knowledge of existence, and humane conduct, and they themselves are the source of indivisible society and universal system. Awakening completeness is indeed the basis of evidence. Every person wishes to be the evidence. For this very reason, divine humanness is desirable & essential in human tradition. The evidence of liberation from bondage is found in this state. This is indeed the outline of the true form of liberation from bondage. Evidence of liberation is found in human conduct only. Its exposition or manifestation is seen only in work & behaviour. As the whole existence is exposed, it is natural that humaneness, deific humaneness, and divine humaneness would also be exposed (would not be hidden, available for observation & study).

**बंधन मुक्ति क्रम, मुक्ति (मोक्ष) और अभ्यास**

**Progression of liberation from bondage, liberation (*moksha*) and practice**

सह-अस्तित्व में अनुभव सहज प्रयोजनों को प्रमाणित अर्थात् जागृति क्रम में ही बन्धन मुक्ति होना दृष्टव्य है । मानव इकाई (सम्पूर्ण मानव इकाई) अपने आरंभिक काल से ही पहचानने-निर्वाह करने के क्रम को जारी रखा है । फलस्वरूप नस्ल, रंग, जाति, भाषा, देश, काल, दिशा, वस्तु उपयोग (उपभोग के लिये), अधिक, कम को पहचानने के लिये प्रयत्न किया ही है । यह सभी प्रक्रियाएँ जागृति क्रम में प्रमाणित होते हुए जागृति प्रमाणित होना अभी भी प्रतीक्षित है ही । अभी तक विविध प्रकार से स्थापित सामुदायिक परंपराएं अपने श्रेष्ठता को अहम्ता के रूप में (भ्रमित निर्णय के रूप में) पालता हुआ इस वर्तमान में देखने को मिल रहा है । इसमें मूलत: साम्य ध्रुव बिन्दु को मानव जाति अर्थात् सम्पूर्ण सामुदायिक परंपराएँ पहचानने से वंचित रह गया । इसी एकमात्र कारण से संघर्ष प्रवृत्ति मानव अथवा सभी समुदाय अथवा सर्वाधिक समुदाय उसकी तैयारी मान ली गई । यही भ्रमित विधि से श्रेष्ठता को मान लेना स्पष्ट हुआ । इसका साक्ष्य अभी तक यही है । सामरिक साधन और तकनीकी से पारंगत, अन्य देशों और समुदायों को शोषण करने में अभ्यस्त समुदाय; देश, विकसित देश और विकसित समुदाय कहे जा रहे हैं और माने जा रहे हैं । इस साक्ष्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि धोखेबाजी की अहम्ता विकास के नाम से किस प्रकार से स्थापित हुआ है। यह उल्लेख यहाँ भ्रम मुक्ति की आवश्यकता अथवा अनिवार्यता कितनी समीचीन है इस ओर ध्यान दिलाने के लिये प्रस्तुत किया ।

It is in coexistence itself that the evidence of realisation of human purpose is seen; in other words, liberation from bondage is attainable only in the (direction of) awakening progression. Humans (all humans) have sustained the tradition of recognising & fulfilling since they appeared on this planet. As a result, they have naturally made efforts to recognise race, colour, caste, language, place, time, direction, usefulness of objects for consumption, plentitude, and shortages. While these efforts have been evidenced in the awakening progression, evidence of awakening is still awaited. Various sectarian traditions established so far, are seen in the present to be nurturing their virtues in the form of superiority (deluded decisions). All of humankind or all the sectarian traditions have missed out on recognising the common ground in all this. This is the sole reason behind the assumption of all humans, or all sects, or most of the sects, having tendencies of conflict, and their preparation for the same. It explains how virtues were misunderstood as superiority under delusion. Its proof is that leaders in war machinery & technology, and those busy in exploitation of other countries & sects, are being called and believed to be the developed countries and developed sects. It becomes clear by this example how superiority in deception got established as development. All this has been mentioned here to draw attention to the need & necessity of liberation from delusion.

भ्रम मुक्ति के संबंध में इसके पहले ध्यान में ला चुके हैं कि न्याय, धर्म, सत्य में जागृत होना है । जागृत होने वाला वस्तु जीवन ही है । जीवन का रचना, स्वरूप, शक्ति, बल और लक्ष्य हर मानव जीवन में समान है । जीवन लक्ष्य केवल जागृति है । हर मानव में यह परीक्षण निरीक्षण पूर्वक प्रमाणित होता है । हर मानव अज्ञात को ज्ञात करने; अप्राप्त को प्राप्त करने के क्रम में ही है । इस क्रम में हर मानव जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने की प्रक्रिया में पारंगत होने के लिये प्रयत्नशील है । जागृति ही भ्रम मुक्ति का आधार है । जागृति के बिन्दु न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण परंपरा ही है । इसके कार्यरूप (जागृति सहज) को पहले स्पष्ट किया जा चुका है । जीवन में होने वाले अनुभव, अवधारणा और चिन्तन ही मानव परंपरा में जागृति प्रमाणित होने का आधार है क्योंकि जीवन ही जागृत होना, शरीर जीवन्त रहना ही संज्ञानशील और संवेदनशील कार्यों का आधार है । जीवंतता का स्रोत जीवन है । शरीर को जीवन जीवन्त बनाए रखने के आधार पर ही जीवन अपने जागृति और आशयों को मानव परंपरा में प्रमाणित कर पाता है। इन्हीं प्रयोजनार्थ शरीर और जीवन के साकार रूप में मानव का होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । इस पृष्ठभूमि से यह पता लगता है हर मानव जागृति का प्यासा है ।

With regards to liberation from bondage It has already been mentioned one needs to be awakened in justice, dharma & truth. Jeevan is indeed the entity which gets awakened. Constitution of jeevan, form, power, strength & goal is the same in each human jeevan. Awakening is the sole goal of jeevan. It can be verified in each human being by inspection & examination. Every person is in the process of knowing the unknown, and to acquire what one does not have (to resolve the unresolved). On this course, every person is making endeavours to become expert in the process of knowing, believing, recognising & fulfilling. Awakening is indeed the basis of liberation from delusion. The tradition of evidence of justice, dharma & truth is the main feature of awakening. The practical form of awakening has already been explained. Realisation, conceptual understanding and contemplation happening in jeevan indeed is the basis of evidence of awakening in human tradition, because the body being alive, and jeevan being awakened is indeed the basis of cognitive and sensitive actions. Jeevan is the source of aliveness. It is only by keeping the body alive that jeevan is able to produce evidence of its awakening and intentions in human tradition. It is solely for this purpose that the presence of humans in the combined form of body and jeevan, is a natural phenomenon. In this background, it becomes clear that every person wants to be awakened.

प्रिय, हित, लाभ, भय, प्रलोभन, आस्था, संघर्ष, विषय चतुष्टयों में प्रवृत्तियाँ, संग्रह और सुविधा लिप्सा ये सब जागृति क्रम को स्पष्ट करता है। जागृति जीवन के सर्वोपरि अभीष्ट है । जागृति के बिना जीवन अपेक्षा पूरा होता नहीं साथ ही मानवापेक्षा भी सफल नहीं होता । अतएव अभय अपेक्षा सहज सफलता सार्वभौम लक्ष्य के रूप में पहचाना जा सकता है । यह सर्वसुलभ होने के लिए अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था ही एक मात्र दिशा है । इसे संतुलित नियंत्रित बनाए रखने के लिये मानव में मानवत्व ही एकमात्र स्रोत है । मानवत्व ही सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज का सूत्र और व्याख्या है । इस क्रम में मानवत्व को पहचानने की विधि केवल जागृति विधि होना ही पाया जाता है । जागृति सर्वमानव के लिये वरेण्य है। इसीलिये जागृति की ओर ही एकमात्र मार्ग मानव मात्र के लिये सुस्पष्ट है।

Pleasant, health, profit, fear, temptation, faith, conflict, inclination towards interest-quad, craving for accumulation & comforts, all this is the description of the awakening progression. Awakening is the highest accepted goal (desideratum) of jeevan. Jeevan expectation as well as human expectation is not fulfilled in the absence of awakening. Therefore, success in fulfilling the fearlessness expectation, can be recognised as a universal goal in, of & for humans. Indivisible society & universal system is indeed the only direction for it to be within everyone’s reach. Humaneness in humans is the only source to sustain it. Humaneness is indeed the definition & description of the indivisible society, universal system. The way of awakening is found to be the only way for recognising humaneness. All humans embrace awakening. Therefore, it is abundantly clear that there is only one road to be taken by humans, and that is the road to awakening.

सम्पूर्ण जीवन क्रियाकलाप की दो स्थितियों को मानव में अध्ययन किया गया है । इनमें से पहला है - चित्रण के अनुरूप, वृत्ति और मन का परावर्तन और प्रत्यावर्तन होना । दूसरा है अनुभव के अनुरूप बुद्धि, चित्त, वृत्ति, मन का परावर्तन और प्रत्यावर्तन होना । जहाँ तक चित्रण के आधार पर प्रत्यावर्तन, परावर्तन होती है-वह सुनने आँखों से देखने के संयोग से चित्रण कार्य में पारंगत हुआ है । सुनाने की सभी क्रियाकलाप को श्रुति कहा है । ऐसे सुनने की ध्वनि, शब्द, वाक्य, गद्य, पद्य सूत्र, व्याख्या, छन्द, प्रास, लय, ताल के साथ आदमी श्रवण विधि को विकसित किया है । इसी के साथ भाषाएँ भी विकसित हुई है । सम्पूर्ण शब्द किसी क्रिया, वस्तु स्थिति, गति, परिणाम, प्रक्रिया, घटनाओं के नाम से प्रस्तुत है । घटना विहीन शब्दों को ज्ञान मानकर चलें और कुछ-कुछ घटना के साथ चलने लगे तब इसको विज्ञान कहेंगे। ये घटनायें, उपकारात्मक स्वरूप में, उपयोगी स्वरूप में दूरदर्शन, दूरश्रवण, दूरगमन संबंधी वस्तुएँ हैं । इसके अलावा सामरिक तंत्र के लिए जो कुछ भी घटनाओं को घटित किया गया है वह सब ह्रास, समस्या, क्लेश का ही कारण होना मूल्यांकित हो चुकी है । विवशतावश भले ही अपने अहम्ता को (भ्रम बंधन को) बढावा देने की विधि अपनाते रहें । सामान्य आकांक्षा संबंधित सभी उत्पादन विधियाँ आदि काल से भी क्रियागत विधि से विकसित होते ही आया ।

Two states pertaining to all the activities of jeevan have been studied in humans. One, projection and reflection of *vritti* & *mun* according to visualisation. And second, projection and reflection of *buddhi*, *chitta, vritti* & *mun* according to realisation. As far as projection and reflection based on visualisation is concerned, it becomes accomplished by combination of hearing and seeing. All activities related to narrating are called revelation (*shruti*). Humans have developed ways of listening (*shravan*) with sounds, words, sentences, prose, poetry, definitions, descriptions, stanzas, melodies, rhythms and beats. Languages also developed along with these. All words denote the name of some activity, state, motion, result, process or reality. We are looking at science as the field where knowing the words which indicate no reality, or to some extent the reality is also known, is confused with knowledge. In the form of their use and good-use, such realities pertain to the objects of telecommunications & transport. Besides this, all the objects produced related to war machinery, have been appraised as the cause of deterioration, problem and distress. Although humans have compulsively and historically embraced methods which strengthened their haughtiness (bondage of delusion); yet side by side, methods of production for objects of common aspirations kept on developing since ancient times.

जहाँ तक कृषि, बागवानी, उद्यान कार्यों में जितने भी उन्नत प्रजाति स्थापित हुए वह सब बीजानुषंगीय विधि से कार्यरत होने योग्य हुई और उन्नति के नाम से अत्याधुनिक बीजगुणन तकनीकी विकसित हुई, वह बीजानुषंगीय विधि से स्थिर नहीं हो पायी । बीजानुषंगीय स्थिरता का तात्पर्य यह है बीज के अनन्तर पौधा, फल, बीज होना स्पष्ट है । उस विधि से बारंबार अथवा निरंतरता को बनाये रखने की विधि । इसके विपरीत बीज को डालने के उपरांत फल-बीज, मूल बीज के अनुरूप न होने पर अस्थिरता कही गई है, यह भी सुस्पष्ट है ।

All the advanced varieties naturally established in the plant order, e.g. agriculture, horticulture and gardening abide by seed conformance; on the other hand, the latest technologies claiming qualitative improvements in seeds have not been able to achieve stability of seed conformance. Stability of seed conformance means continuity of the cycle of seed to plant to fruit to seed; in other words, the method of maintaining the generation to generation continuity of the plant. On the contrary, if cultivation of a seed does not result in fruit & seed as per the original seed, it has been called as instability.

जितने भी दूरश्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन संबंधी आधारभूत मूल प्रक्रियाओं का अनुसंधान हुआ है यह महत्वपूर्ण विज्ञानियों से अनुसंधानित नहीं हुई । यथा भौतिक शास्त्र, रासायनिक शास्त्र के संयोग से पैदा हो गया-ऐसा कुछ हुआ नहीं । ये घटनाएं मानव सहज कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता क्रम में घटित हुआ इसे विज्ञान सम्मत माना गया। अभी भी इन घटनाओं में पारंगत बनाने की क्रियाकलाप को तकनीकी के नाम से पढाया जाता है । इस प्रकार विज्ञान तकनीकी गति अपने में अपने ढंग से प्रेरणादायी होना देखा गया है । ये सब होने मात्र से मानव की प्रवृत्ति में कुछ गुणात्मक परिवर्तन हो गये ऐसा कुछ हुआ नहीं । अच्छा कपड़ा पहना हुआ, अच्छा सड़क, अच्छा गाड़ियों में घूमता हुआ आदमी को देखा जाता है । युद्ध, भय, संघर्ष इस शताब्दी में सर्वाधिक उग्र रूप धारण किया है । आदिमानव जैसा भय-भ्रम-शंका-कुशंकाओं से ग्रसित रहा है वैसा आज भी यह मानव जाति दिखाई पड़ता है । विभीषिका का तात्पर्य भय से पीड़ित मानव द्वारा भय को घटित करने के रूप में है । ऐसे विभीषिकाएँ सर्वाधिक रूप में मानव में निहित अमानवीयता के भय से प्रताड़ित, पीड़ित, संघर्षरत होना दिखाई पड़ती है ।

All the fundamental research done related to telecommunications & transport, has not been done only by scientific minds. In other words, it is not that they got developed automatically by natural laws of physics & chemistry; nothing like that happened. These developments occurred due to imaginativeness & free will of humans, and they have been recognised as aligned with science. Even now, teaching the students to become experts in these subjects is taught under the heading of technology. In this manner, each development in science technology has been seen in itself as a source of inspiration. In spite of all this happening, it did not result in any qualitative change in humans. People can be seen roaming around in good clothes, in good cars, on good roads. Wars, fear & conflicts have taken the ugliest forms in this century. Humans today are in as much fear, delusion, suspicion & dread as were the humans in ancient times. Meaning of horror is when a person under fear creates fear. On most occasions, such horrors are seen when suffering from the fear of inhumaneness of human beings.

संघर्ष का मूल मुद्दा अधिक संग्रह, अधिक सुविधा और पद ही है। पद से सुविधा, सुविधा से पद तक अनुवर्तीयता को भले प्रकार से किशोर अवस्था तक की पीढ़ियों में प्रभावित होना इस शताब्दी में साक्षित हुआ है। संघर्ष का परिणाम उभय नाश या एक का अधिक, एक का कम नाश घटित होना देखा गया है । तीसरा कोई परिणाम संघर्ष से निकलता नहीं । एक का सुरक्षा, दूसरे का नाश या उभय सुरक्षा ये दोनों संघर्ष विधि से निकलता नहीं है ।

More accumulation, more comforts and higher social rank are at the root of conflict. The grind of comforts from rank, and rank from comforts, is clearly visible in younger generations of the twentieth century. Destruction of both the parties, or more destruction of one party and less destruction of the other party - these are the only two possible outcomes of conflict. There is no other outcome of conflict. The outcomes of security of one and destruction of the other, or security of both, are not seen in conflicts.

उल्लेखनीय यही है किसी के नाश से हम सम्पन्न हो जायेगें ऐसा सोचते हुए ही संघर्ष किया जाता है । यह संघर्ष शासन और उसके विद्रोही संगठनों के साथ, इतना ही नहीं परिवार-परिवार के साथ और व्यक्ति, व्यक्ति के साथ देखने का मिला। यह संघर्ष अथवा संघर्ष की पराकाष्ठा ही आज समाधान के लिए एक मार्ग प्रशस्त करता है अथवा प्यास जगाता है । हर संघर्ष शांति की अपेक्षा में अथवा समाधान की अपेक्षा में ही आरंभ किया हुआ सुनने में मिलता है । उल्लेखनीय बात यही है संग्रह और सुविधा का तृप्ति बिन्दु होता नहीं । इसके लिए किया गया सभी संघर्ष व्यर्थ होना, पीड़ा का ही कारण होना पाया जाता है । अतएव संघर्ष ही बंधन की पराकाष्ठा का प्रकाशन है । समाधान और अनुभव मूलक विधि से किया गया सम्पूर्ण विचार, व्यवहार, कार्य, व्यवस्था और आचरण ही बन्धन मुक्ति का साक्ष्य और प्रमाण है । समाधान से ही समस्या की मुक्ति और प्रामाणिकताएं सदा-सदा के लिए छल-कपट, दंभ, पाखंड से मुक्ति है । इच्छा बन्धन जटिलतम रूप में मानव के कर्म स्वतंत्रता, कल्पनाशीलतावश विन्यासित हुआ है । विन्यासित होने का तात्पर्य भ्रमात्मक विचारपूर्वक छल, कपट, दंभ, पाखण्ड के रूप में मानव अपने को प्रस्तुत किया । यही आज की एक वीभत्सता का रूप है । इससे परिवर्तित होकर स्वतंत्रता, न्याय, समाधान और प्रामाणिकतापूर्ण अधिकार पाना ही अभीष्ट है। इसी तात्पर्यवश ‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’ को विचारार्थ मानव के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

This needs to be highlighted that the path of conflict is chosen only under the belief that we would become prosperous or secure by destroying the other. Such conflicts have been seen between rulers and their opponents, between one family and another, and between one individual and another. Such conflict, and often its extreme, indeed shows us the road to resolution, or triggers its thirst in us. It is heard that every conflict actually begins with the underlying expectation of peace or resolution. It is noteworthy that accumulation and comfort have no point of satiation. Therefore, all the conflict to achieve these is wasteful and a cause of suffering. In this manner, conflict is but a manifestation of extremity of bondage. All thought, behaviour, work, methodology & conduct based on resolution and realisation is the evidence of liberation from bondage. It is only the resolution that leads to authenticity, and liberation from problems, as well as relief from deceit, fraud, perfidy and hypocrisy. Bondage of desires, in its most complex form, got forged due to the free will and imaginativeness in humans. Meaning of ‘got forged’ is - humans expressing themselves in the form of deceit, fraud, perfidy and hypocrisy under deluded thoughts. This is the gruesome state of affairs today. To fork away from this, and to achieve the state of independence, justice, resolution & authenticity, is the intent or directionality. It is with this purpose that ‘Realisation Centred Spiritualism’ is presented to humanity for consideration.

न्याय का साक्षात्कार सम्बंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति के रूप में होने की प्रक्रिया है । यही न्याय प्रदायी क्षमता का द्योतक है । सम्बन्ध अपने में (सभी सम्बंध) परस्पर पूरक होना एक शाश्वत् सिद्धांत है । इसकी पुष्टि सह-अस्तित्व, सह-अस्तित्व में पूरकता सर्वमानव वांछित, अपेक्षित, वैभव है। ऐसी क्रियाएँ अर्थात् पूरक क्रियाएँ पुष्टिकारी, संरक्षणकारी, अभ्युदयकारी और जागृतिकारी प्रयोजनों के रूप में दिखाई पड़ती है । पुष्टिकारी कार्यों को शरीर पोषण, विचार पोषण, कार्य पोषण, आचरण पोषण, ज्ञान और दर्शन पोषण के रूप में देखने को मिलता है । यह पोषण विभिन्न सम्बंधों में घटित होता हुआ प्रत्येक व्यक्ति अनुभव कर सकता है । जैसा मातृ सम्बंध में शरीर-पोषण, शील संरक्षण, पितृ सम्बन्ध में शील, आचरण, शरीर संरक्षण, गुरु-शिष्य संबंध में शिक्षा, ज्ञान, दर्शन का पुष्टि और संरक्षण भाई बहन, मित्र, पति-पत्नी, साथी-सहयोगी इन सभी सम्बन्धों में सर्वतोमुखी समाधान (अभ्युदय) की अपेक्षाएँ जीवन सहज रूप में ही होना देखा गया है। इतना ही नहीं सभी संबंधों में किंवा नैसर्गिक सम्बंधों में भी समाधान, पुष्टि, पोषण, संरक्षण की अपेक्षा आवश्यकता, प्रवृत्ति जीवन सहज रूप में आंशिक रूप में भ्रमित अवस्था में भी होता है । इसमें पूर्ण जागृत होने की संभावना समीचीन है ।

Relationships being in the form of values, evaluation & mutual fulfilment is indeed the direct-perception of justice. This itself is an indicator of the ability to do justice. A relationship (all relationships) being mutually complementary, is an eternal principle. The fact that the coexistence and complementarity in coexistence is desired by, anticipated by and grandeur of all humans, is its testimony. These activities, that is the complementary activities, are visible in form of the nourishing, protecting, resolving and awakening purposes. Nourishing activities are visible as nourishing of body, nourishing of thoughts, nourishing of conduct, and nourishing of knowledge & holistic-view. Each person can feel & verify such nourishment occurring in the various relationships they have. For example, expectations of nourishing of body and protecting the modesty in mother’s relationship with the child; protecting the modesty, conduct and body in father’s relationship with the child; nourishing and protecting education, knowledge & holistic-view in teacher’s relationship with the student; and expectations of comprehensive resolution (enlightenment) in sibling-sibling, friend-friend, husband-wife & master-assistant relationships - all these have been seen only in jeevan. Not only this, but in all relationships including relationship with nature (remaining three orders) too, expectation, need & inclination for resolution, nourishment & protection is there, albeit partially, in jeevan even when one is deluded. Possibility of this expectation getting fully materialised exists, and is within reach.

इस शताब्दी के दसवीं दशक में इसकी अपरिहार्यता अपने आप में समीचीन हुई है कि मानव इतिहास के अनुसार गम्य स्थली के रूप में सर्वतोमुखी समाधान और प्रामाणिकता ही है । कार्यरूप में सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ही कार्य है । आचरण के रूप में मानवीयतापूर्ण आचरण ही एक मात्र सूत्र है । अनुभव के सूत्र में सह-अस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही सूत्र है । विश्लेषण के रूप में पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञानावस्था ही है। उपलब्धि के रूप में जो मानवापेक्षा सहज विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व अनुभव सहज प्रमाण ही है । जीवन अपेक्षा सहज रूप में तृप्ति, सुख, शांति, संतोष, आनन्द ही है। जागृतिपूर्ण विधि से जीने के क्रम में सह-अस्तित्व ही विशालता है । ये सब बन्धन मुक्ति का साक्ष्य है । जागृतिपूर्ण विधि से किया गया मानव सहज अभिव्यक्तियाँ है । यह सभी तथ्य को विधिवत देखा गया है, समझा गया है, जीया गया है और अंत में मानवीयतापूर्ण आचरण व्यवहार पूर्वक हर व्यक्ति सर्वतोमुखी समाधान का धारक-वाहक हो सकता है यही ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ का सार्थकता है ।

In the last decade of the twentieth century, it dawned within myself that everything in human history indisputably indicates that comprehensive resolution & authenticity is indeed the human goal. Participation in the universal system is the only program. Humane conduct is the only code of conduct. Evidence of realisation in coexistence is the only evidence. Four orders in nature is indeed the content of analysis. Evidence of realisation, or resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, is indeed the achievement. Happiness, peace, satisfaction, bliss is indeed the satisfaction of jeevan expectation. While living by way of awakening, it is the vastness of coexistence which is inspirational. While living by way of awakening, coexistence is indeed vastness. All this is the testimony of liberation from bondage. All these are expressions of awakened humans. All these facts have been duly observed, understood, and lived; and finally, each person can be the bearer-holder of comprehensive resolution by way of humane conduct. This indeed is the purpose of ‘Realisation Centred Spiritualism’.

सर्वतोमुखी समाधान अपने-आप में सह-अस्तित्व में जागृत होने का फलन है अर्थात् अस्तित्व को सह-अस्तित्व के रूप में जानने-मानने और पहचानने का फलन है । यह स्वयं व्यवस्था सहज कड़ी-दर-कड़ी के रूप में प्रमाणित होना पाया जाता है । मानव परंपरा में व्यवस्था स्वयं स्फूर्त अभिव्यक्ति है । क्योंकि स्वायत्त मानव मानवीयतापूर्ण शिक्षा पूर्वक प्रमाणित होना देखा गया है और ऐसे स्वायत्त मानव ही परिवार मानव और व्यवस्था मानव के रूप में जीना और प्रमाणित होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । अस्तु, स्वायत्त मानव सहज अभिव्यक्ति परिवार व्यवस्था में और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के अर्हता से परिपूर्ण रहता ही है । इसलिये हर स्वायत्त मानव व्यवस्था में, से, के लिए भागीदारी को निर्वाह करना सहज है। इस प्रकार हर नर-नारी स्वायत्त होना आवश्यक है ।

Comprehensive resolution in itself is the result of realisation in coexistence, or the result of knowing, believing & recognising existence as coexistence. It is evidenced at each stage of orderliness. Orderliness and systems are manifested effortlessly in humane tradition because autonomous persons are seen as evidence by way of humane education, and living and evidence of such autonomous persons as family person and systems person is a natural process. Thus, an autonomous person is naturally replete with the ability to participate in the family system and overall system. Therefore, it is natural for an autonomous person to participate in, by & for systems. Thus, it is essential for each man and woman to be autonomous.

जागृति विधि का लोकव्यापीकरण मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार, कार्यविधि से सम्पन्न होना भी देखा गया है । मानवीयतापूर्ण शिक्षा अपने में सत्ता में संपृक्त प्रकृति नित्य वर्तमान और विकास क्रम विकास एवं जागृति क्रम जागृति सहज विधि से पदार्थ, प्राण, जीव और ज्ञानावस्थाओं का पूरकता, उपयोगिता, उदात्तीकरण का अध्ययन है । जिसके फलस्वरूप प्रत्येक मानव में स्वायत्तता, परिवार व्यवस्था में जीने की कला और समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्वयं स्फूर्त होना स्पष्ट हुआ है । ये सभी तथ्य अस्तित्व में अनुभव होने का ही फलन है । कोई भी व्यक्ति अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित कर सकता है । इन सम्पूर्ण तथ्यों का अनुभवगामी विधि से अध्ययन करने और उसमें पारंगत होने के आधार पर सर्वतोमुखी समाधान जीवन सहज विधि से स्वीकृत रहता ही है।

It has been observed that dissemination of the method of awakening is accomplished by way of humane education *sanskar*. Humane education in itself is the study of the four orders in nature and their complementariness, usefulness and evolution by way of nature saturated in Omnipotence, development and development progression, awakening and awakening progression. As a result of that, autonomy in every human, the art of living in the family system, and the natural participation in the overall system, has become clear. All these facts are the result of realisation in existence. Anyone can evidence these in existence by the realisation rooted method. By studying all these facts by the realisation oriented method, and by becoming expert in them, comprehensive resolution naturally remains acceptable to jeevan

ऐसे अनुभव स्वीकृत होने के क्रम में न्याय, साक्षात्कार पूर्वक स्वीकृत रहता ही है । न्याय और समाधान की सार्थकता सहज गरिमा और महिमा ही अभिव्यक्ति क्रम में अनुभवपूर्ण होना अर्थात् अनुभव से परिपूर्ण होना पाया गया है । अनुभव, बोध, संकल्प, चिन्तन सहज विधि से किया गया चित्रण, तुलन, विश्लेषण, आस्वादन और चयन जीवन जागृति के अनन्तर सम्पन्न होने वाले कार्यकलाप है । जागृति ही भ्रम मुक्ति का प्रमाण है और लक्षण भी । प्रमाण का लक्षण प्रमाणित होने के लिये प्रेरक होना ही वर्तमान है । इन तथ्यों प्रक्रियाओं के आधार पर हर मानव अपने अर्हता को परीक्षण निरीक्षण पूर्वक मूल्यांकित कर पाता है । फलस्वरूप अनुभवमूलक विधि प्रक्रिया और फलन की संगीतमयता सहित हर मानव परिवार मानव के रूप में वैभवित होना संभव हो जाता है । इसकी आवश्यकता, अपेक्षा सब में देखने को मिलता है और संभावना सर्व समीचीन है । अस्तु, मानव अनुभवमूलक विधि से जीने की कला पूर्वक अनुभवों को पुष्ट करना चाहता है । यह अस्तित्व में अनुभवमूलक प्रणाली, पद्धति और नीतिपूर्वक सार्थक-सफल होना देखा गया है ।

When one is committed to such realisation, justice remains acceptable by way of direct perception. In one’s living, it is indeed the grandeur & magnificence aligned with meaningfulness of justice & resolution, that is found to be full of realisation. The activities of visualisation, deliberation, analysing, tasting & selecting by way of realisation, enlightenment, resolve & contemplation are the activities which happen in jeevan after attaining the state of awakening. Awakening is indeed the evidence as well as indicator of liberation from delusion. An indication of one being an evidence is being an inspiration to others for becoming evidence. Based on all these facts & indicators, everyone can evaluate their own ability (calibre) by examination & inspection. Thus, by way of harmony in the realisation based method, process and result, it becomes possible for every person to be established as a family person. Its need and expectation is observed in everyone, and possibility is within reach of everyone. In this manner, humans want to verify in practical life their conclusions by way of the realisation rooted method. It is seen to be meaningful & successful by the realisation based method, process & policies.

मानव जीवन और शरीर का संयुक्त साकार रूप है ।

अस्तित्व में अनुभव होता है ।

1. जीवन अस्तित्व में अनुभूत होता है ।
2. जीवन और शरीर के संयुक्त साकार रूप में हर मानव परंपरा के रूप में विद्यमान है ।
3. अस्तित्व में मानव अविभाज्य है ।
4. सम्पूर्ण अस्तित्व सत्ता में संपृक्त प्रकृति है । यही चार अवस्था में वर्तमान है ।
5. इसी धरती पर चारों अवस्थाएँ प्रमाणित है ।
6. इन चार अवस्थाओं में से मानव ही अनुभव मूलक विधि से विचार शैली और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में जीने की कला को जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने योग्य इकाई है ।

Humans are the combined form of jeevan and body.

Realisation happens in existence.

1. Jeevan attains realisation in existence.
2. Every human being is present in human tradition in the combined form of jeevan and body.
3. Humans are an integral part of existence.
4. Whole existence is nature saturated in Omnipotence. This is manifest in the form of four orders.
5. Evidence of four orders can be verified only on this planet.
6. Out of these four orders, humans are the only entity capable of the thought process of knowing, believing & recognising the art of living in the form of participation in the universal system, by way of realisation based method.

जागृत मानव सहज जीने की कला ही मानव पंरपरा का अक्षुण्ण गति है । विश्लेषण और प्रयोजन, प्रयोजन और विश्लेषण सम्मत जागृति सहज विचार शैली, अस्तित्व में अनुभव, सम्पूर्ण अस्तित्व को चार अवस्था के रूप में जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित होना देखा गया है ।

Art of living in, by & for awakened humans is indeed the basis of continuity of human tradition. Thought process in accordance with purpose and analysis is evidenced as realisation in existence, and knowing, believing & recognising the entire existence as four orders in nature (saturated in Omnipotence).

मानव ही अनुभव को व्यवहार में प्रमाणित करता है। फलस्वरूप मानव सहज अपेक्षा और जीवन सहज अपेक्षा सर्वसुलभ होना स्वाभाविक है। इसलिये यह सर्व स्वीकृत भी है। सम्पूर्ण प्रयोग सामान्य आकांक्षा, महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तु के रूप में प्रमाणित होता है । यह सब व्यवस्था में उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता के अर्थ में प्रमाणित होता है। यही इसकी सार्थकता है। इससे यह भी पता चलता है कि **नैतिकता पूर्वक ही मानव व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह कर पाता है । मानवीयतापूर्ण चरित्र पूर्वक व्यवहार करता है। मूल्य और मूल्यांकन पूर्वक जी पाता है अथवा सम्बन्ध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति पूर्वक जी पाता है। यही सुख, सुन्दर, समाधान पूर्वक जीने की कला का स्वरूप है।** प्रामाणिकता मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य स्त्रोत है। प्रामाणिकता अस्तित्व में अनुभव सहज अभिव्यक्ति है। सम्पूर्ण अस्तित्व व्यवस्था का ही ताना-बाना होने के कारण मानव भी व्यवस्था में जीने की आवश्यकता बना ही रहा।

It is human beings indeed who produce evidence of realisation in their behaviour. As a result, human expectation and jeevan expectation become naturally available to everyone. This is precisely why these are acceptable to everyone. All experimentation is evidenced in the form of objects of common aspirations and special aspirations. All this is evidenced in their utilisation, righteous utilisation & purposefulness in the system. This is indeed their meaningfulness. This also shows that **it is only with ethics that a person is able to participate in the system. It is only with character that their behaviour is humane. It is only with values & evaluation, in other words, by relationship, values, evaluation & mutual fulfilment, that they are able to live happily. This indeed is the true form of the art of living with happiness, goodness & resolution.** Authenticity is the common source of values, ethics and character. Authenticity is the expression of realisation in existence. Need of orderly living by humans has always been there, because existence in itself is indeed the web of orderliness.

चारों अवस्थाओं का अनुभव ही जागृति है । चारों अवस्थाएँ अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व के रूप में वर्तमान होना ही स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रूप में सूत्रित और व्याख्यायित है । इस प्रकार अस्तित्व ही सम्पूर्ण स्थिति, गति, सूत्र और व्याख्या है । अस्तित्व न घटता है न बढ़ता है । इसकी अक्षुण्णता वर्तमान के रूप में होना देखा गया है । स्थिति सत्य अपने स्वरूप में सत्ता में संपृक्त प्रकृति के रूप में विद्यमान है ही। यही विद्यमानता विकास, पूरकता, उदात्तीकरण, जागृति और प्रामाणिकता के रूप में व्यक्त होना स्पष्ट है । वस्तु स्थिति सत्य देश, काल, दिशा के रूप में देखने को मिलता है । यह परस्परता के आधार पर समग्रता के साथ व्याख्या का होना देखा जाता है । जैसे-एक से अधिक परमाणु अंशों के परस्परता में एक दूसरे के बीच एक निश्चित दूरी जिस स्थिति में सभी अंश एक निश्चित आचरण के लिये अर्पित रहना देखने को मिलता है। इसमें निश्चित दूरी ही देश के रूप में, निश्चित गति ही काल के रूप में, निश्चित क्रिया (आचरण) ही दिशा के रूप में व्याख्यायित है । इसलिये अनेक अणुओं के परस्परता में अणुरचित पिण्डों के परस्परता में देश, काल, दिशा स्पष्ट होना स्वाभाविक है । इसलिये प्रत्येक धरती में परस्पर वस्तुओं के बीच की एक निश्चित दूरी ही देश के रूप में दिखाई पड़ती है । एक ही धरती के परस्पर वस्तुओं अथवा परस्पर ग्रह गोलों के निश्चित दूरी अर्थात् देश और दिशा दोनों स्पष्ट होते हैं और क्रिया की अवधि में ही काल गणना का होना देखा गया है ।

Realisation of the four orders itself is awakening. Presence of four orders in coexistence itself is coded & described in the form of absolute truth, relative truth & objective truth. In this manner, existence itself is the complete state, motion, code and description. Existence neither increases nor does it decrease. The present has been seen as the evidence of continuity and intactness of existence. Ultimate truth in its true form is nature saturated in Omnipotence is always present. It is clear that this presence is what is indeed manifest in the form of development, complementariness, evolution, awakening and authenticity. Relative truth is seen in the form of place, time & direction. It is described with reference to entirety and is based on mutuality. For example, it can be seen that definite distance between atomic particles ensures their orderly or systematic conduct. Here, the definite distance indeed is the place, definite motion indeed is the time, and definite activity (conduct) indeed is the direction. In this manner, position, time & direction can be clearly described in the mutuality of atoms, and in the mutuality of various objects made up of atoms. Thus, it is the distance between objects on any planet indeed which is seen as a place. Place & direction becomes clear between objects on the same planet, or by the distance between planets, and the calculation of time is seen with respect to the period of an activity indeed.

वस्तुगत सत्य, हर वस्तु में समाहित रूप, गुण, स्वभाव, धर्म का ही व्याख्या है । प्रत्येक एक अपने वातावरण सहित सम्पूर्ण होने के कारण प्रत्येक एक में यह चारों आयाम समाहित रहता ही है और अविभाज्य रहता है । धर्म शाश्वत् रूप यथास्थिति में वर्तमान होना स्पष्ट होता है । हर अवस्था में धर्म सुस्पष्ट है । स्वभाव, मूल्यों के रूप में हर इकाई में विद्यमान रहता है । इसी को मौलिकता के रूप में भी पहचाना जाता है। धर्म और मूल्यों के आधार पर ही मौलिकता का पहचान हो पाता है । हर वस्तु प्रकाशमान है ही । प्रकाशमानता का मौलिक तत्व धर्म और स्वभाव ही है । गुण सदा ही गति के रूप में होना देखा गया है । यह सम, विषम, मध्यस्थ रूप में गण्य होना देखा गया है । इसमें से मध्यस्थ गति धर्म और स्वभाव के मौलिकता और उसकी अक्षुण्णता के अर्थ में व्याख्या है। रूप का जहाँ तक व्याख्या है वह आकार, आयतन, घन के रूप में ही होता है । जीवन चैतन्य इकाई होने के कारण, एक ही परमाणु होने के कारण इसका आकार, आयतन, घन स्पष्ट हुआ रहता है ।

Objective truth is indeed the description of form, attributes, intrinsic-nature & *dharma* inherent in each object. These four dimensions are inherent, or integral, to each object because each object is complete along with its environment. *Dharma* in eternal form is present in each state. *Dharma* in each of the four orders is absolutely clear. Each unit has innate-nature in the form of values. This itself is the uniqueness. Uniqueness of an entity is recognised on the basis of its *dharma* and values. Every entity is unmistakably luminous. Main element in this luminosity is *dharma* and innate-nature. It has been seen that the attributes are always in the form of motion. They are categorised as generative, degenerative and mediative. Out of these, the mediative motion is described in context of the uniqueness of *dharma* and innate-nature, and its continuity. As far as the form is concerned, it can be described only as shape, volume and density. As jeevan, the sentient entity, is also an atom only, it is clear that it also has shape, volume and density.

**हर विकासशील परमाणु भारबन्धन और अणुबन्धन सहित कार्य करता है।** हर विकासशील परमाणु सत्ता में ही क्रियाशील रहना पाया जाता है । हर परमाणु गठनपूर्वक ही परमाणु है । गठन का स्वरूप मध्यांश और आश्रित अंश के रूप में होना व निश्चित दूरी में होना सह-अस्तित्व सहज कार्यशीलता है । आश्रित अंश मध्यांश के सभी ओर चक्राकार में गतिशील रहना होता है । इसीलिये हर परमाणु गतिपथ (परिवेश) सहित परमाणु है । इनमें अंशों का अधिकाधिक समाहित होना एक से अधिक गतिपथ का होना भी होता है। जैसे-जैसे अंशों की संख्या बढ़ती जाती है वैसे-वैसे मध्य में भी अंश जमा होते जाते है । यह परमाणु में भार बन्धन का सूत्र है । सह-अस्तित्व विधि से अंश-अंशों के साथ कार्य करने की विधि स्पष्ट है । इसी प्रकार परमाणु, परमाणु के साथ और अणु, अणु के साथ सह-अस्तित्व को व्यक्त करने के क्रम में सह-अस्तित्व का प्रकाशन किये हुए है। अणुरचित रचना ही वृहद रचना के रूप में ग्रह-गोल रूप में दृष्टव्य है। यह पूर्णतया अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व का नित्य प्रभावी कार्य है।

**Each evolving-constitution atom (insentient atom) is active with gravitational bondage and molecular bondage.** Each such atom is active in Omnipotence itself. Each atom is an atom only by its constitution. Constitution of the atom comprises the nucleus (at the centre) and the dependent particles at well-defined distance, all these being active in coexistence. The dependent particles orbit around the nucleus. Thus, motion-paths (orbits) are the integral part of an atom. More particles in an atom means more orbits also. As the number of particles in orbits increases, the number of particles in the centre also increases. This is how gravitational bondage appears in atoms. The method of how the particles in an atom work or interact with other particles is by way of coexistence. In a similar manner, atoms coexist with atoms, and molecules with molecules, and thus manifest the coexistence. It is the compositions of atoms themselves which are visible even in the form of large planets. This is entirely the eternal effect of activities in existence in the form of coexistence.

परमाणु में विकास पूर्ण (गठनपूर्ण) होने के बाद अणुबंधन व भारबंधन से मुक्त हो जाते हैं। यही चैतन्य परमाणु जीवन पद में प्रतिष्ठित रहना पाया जाता है । ऐसे चैतन्य इकाई भार और अणुबन्धन से मुक्ति पाकर आशा बन्धन से अपने कार्य गतिपथ सहित पुंजाकार रूप में प्रतिष्ठित होना, ऐसे पुंजाकार का एक आकार होना, ऐसे आकार के एक शरीर रचना (पिण्डज या अण्डज विधि से) रचित रहना अस्तित्व सहज कार्यक्रम है। इसी कार्यक्रम के गति क्रम में मानव शरीर रचना भी एक स्वाभाविक क्रिया है । जीवन में आशा बन्धन के उपरान्त विचार बन्धन, इच्छा बन्धन बलवती होते हुए मानव शरीर द्वारा कर्म स्वतंत्रता, कल्पनाशीलता, क्रियाशीलता, क्रियाकलाप क्रम उसके परिणाम में आंकलन होना, फलत: जागृतिक्रम परंपरा के रूप में मानव प्रतिष्ठा होना, इसी कर्म स्वतंत्रता-कल्पनाशीलता और जागृतिक्रम प्रणालीवश (क्योंकि यह नियति क्रम है) अव्यवस्था का भास-आभास में पीड़ा होना स्व-भाविक रहा । इसी आधार पर जागृत होने की आवश्यकता, सार्वभौम व्यवस्था का शरण स्वीकृत होना देखा गया। यही समग्रता के साथ मानव और समग्र व्यवस्था के अंगभूत रूप में सर्वमानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सम्पन्न होने की सहज विधि समीचीन है। समग्रता के साथ मानव का निरीक्षण, परीक्षण के फलन में यह तथ्य अनुभव संगत विधि से देखने को मिला ।

Upon complete development in an atom (complete constitution), it becomes free from molecular bondage and gravitational bondage. Such sentient atoms are found to be established in the jeevan plane. Becoming free from gravitational bondage & molecular bondage, establishment of such sentient atom in bondage of hope and being functional in its path of working in cloud-like manner, this cloud-like entity having a shape, a body (by oviparous or viviparous method) getting evolved in existence in a similar shape - all this is a natural program in existence. Evolution of the human body is a natural occurrence in this evolutionary program. After bondage of hope, the bondages of thoughts and bondages of desires becoming more forceful in jeevan; actions of humans according to free will & imaginativeness, and appraisal of outcomes of such actions; subsequent establishment of humans in the tradition of awakening progression; the free will, imaginativeness and awakening progression (as it is predestined, *or the destination of awakening already exists*) and the eventual pain in, by & of disorder - all these have been the natural steps in this progression. It is on this basis indeed that the need to be awakened, and acceptance of refuge in universal systems, has been seen. This is the only way and recourse available to humans to live with entirety, as an integral part of the overall order, and be accomplished with resolution, prosperity, fearlessness & coexistence. This fact has been seen from the position of realisation as an outcome of inspecting & examining humans with reference to entirety.

उक्त विश्लेषण पूरकता विधि से भौतिक-रासायनिक क्रिया-प्रक्रियाएँ, परमाणु में अंशों का परिवर्तन, परस्पर अणुओं के पूरक विधि से रासायनिक द्रव्यों की महिमा सम्पन्न कार्यकलाप अनेक रचनाएँ, प्रत्येक रचना अपने वातावरण सहित सम्पूर्ण इसी क्रम में यह धरती भी एक रचना, ग्रह-गोल आदि भी एक रचना है । यह धरती भी अपने वातावरण सहित सम्पूर्ण है । इस धरती का पूरकता परस्पर ग्रह-गोल, सौर-व्यूह, अनेक सौर-व्यूह, अनेक सौर-व्यूहों के समूह रूपी आकाशगंगा परस्परता में पूरकता विधि से कार्य करता हुआ देखने को मिलता है । यही व्यवस्था के रूप में कार्य करने का गवाही है । सौर-व्यूह में हर ग्रह-गोल परस्परता में निश्चित दूरी के साथ ही तालमेल बनाया हुआ दिखाई पड़ते है । ऐसे तालमेल ही व्यवस्था का स्वरूप है। क्योंकि ऐसे तालमेल विधि से पूरकता, उदात्तीकरण, विकास इसी धरती पर देखने को मिलता है । विकसित परमाणु ही चैतन्य इकाई जीवन हैं आशा, बन्धन जीवों में जीवनी क्रम, आशा, विचार, इच्छा बन्धन से जागृति क्रम मानव के रूप में स्पष्ट है । जागृति क्रम ही जागृति रूपी मंजिल के लिए सीढ़ी होना स्वाभाविक रहा । स्वाभाविक प्रक्रिया का तात्पर्य विकासक्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति और उसकी निरंतरता से है । विकास क्रम भी अपने में निरंतर है । विकास भी निरंतर है, जागृति क्रम भी निरंतर है और जागृति भी निरंतर है । जागृति क्रम का स्वरूप है शिक्षा-संस्कार पूर्वक जागृति की स्वीकृति सम्पन्न होता है । जागृति के अनन्तर मानव कुल सार्वभौम व्यवस्था सहज वैभव सम्पन्न होना । फलस्वरूप जागृति स्वीकृति के अनन्तर प्रमाणित होने का मार्ग प्रशस्त रहता है । इस विधि से अनेकानेक मानव संतान जागृति क्रम में अवतरित होना, जागृतिपूर्ण मार्ग प्रशस्त होना यही मानव कुल का स्वराज्य है, वैभव है ।

The above analysis highlights the complementariness of physico-chemical activities, changing number of particles in atoms, the grandeur of activities due to chemical processes and evolution of various compositions therefrom, each such composition being complete along with its environment, formation of Earth in this evolutionary process, and formation of other plants in similar manner. This planet, Earth, is also complete along with its environment. Complementariness of Earth is observable from all planetary interactions, solar system, various solar systems, galaxies as a group of multiple solar systems, with complementariness with each other. This indeed is the testimony of systematic functioning. All planets in the solar system are seen to be in synergy with others, with a proper distance. This synergy in itself is the true form of orderliness because complementariness, evolution & development is seen on Earth due to this synergy only. Developed atom itself is the sentient entity, or jeevan. Bondage of hope is obvious in animals in the living world progression; bondage of hope, thoughts & desires is obvious in humans in the awakening progression. Awakening progression has naturally been a step towards the destination of awakening. Natural process means development progression, development, awakening progression, awakening and its continuity. Development progression is also continuous in itself, and so is development. Similarly, awakening progression and awakening are also continuous. By education *sanskar*, one reaches the stage where awakening becomes acceptable; this is the true form of awakening progression. And after awakening, humankind accomplishes the magnificence of universal systems. Its result is that upon acceptance of the goal of awakening, the road to achieve it also becomes clear. In this manner, the progression of many youngsters towards awakening, and availability of the process of awakening - this is indeed the self-governance and grandeur of humankind.

स्वराज्य व्यवस्था ही होता है, शासन नहीं होता। व्यवस्था के संदर्भ में पहले से उसके स्वरूप को स्पष्ट किया जा चुका है। परिवार मानव विधि से ही स्वराज्य वैभव का उदय होना देखा जाता है। हर परिवार में शरीर यात्रा के लिए शरीर पोषण, संरक्षण एवं समाज गति के लिये आवश्यकीय वस्तुओं को उत्पादित करने का भी कार्यकलाप समाया रहता है। सम्बन्ध-मूल्य-मूल्यांकन-उभयतृप्ति अथवा परस्पर तृप्ति विधि से व्यवहार और आचरण को प्रकट करना मूलत: परिवार का तात्पर्य है। ऐसे परिवार में उक्त तीनों प्रकार की आवश्यकताएँ बनी ही रहती है । इसके निर्वाह क्रम में उत्पादन कार्य की आवश्यकता बना ही रहता है। इसका तात्पर्य यह हुआ परिवार गति और समाज गति के लिए उत्पादन कार्य भी एक आवश्यकीय तत्व है। अस्तु, सम्बंध-मूल्य-मूल्यांकन और उभय तृप्ति विधि से परिवार और समाज सूत्र और आवश्यकता से अधिक उत्पादन-कार्य में परिवार के हर सदस्य का उपयोगिता-पूरकता विधि से भागीदारी परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था के सूत्र में प्रमाणित हो पाता है। इसीलिये प्रत्येक परिवार में, से, के लिए न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, विनिमय सुलभता, स्वास्थ्य-संयम सुलभता नित्य सार्थक होना सहज है। जिसका स्रोत रूप में मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार और स्वास्थ्य-संयम कार्यकलापों के रूप में होना पाया जाता है। इस प्रकार व्यवस्था सार्वभौमता के दिशा में प्रशस्त होता है और अखण्ड समाज का सूत्र भी नित्य प्रभावी होना पाया जाता है। इसमें मूलसूत्र सह-अस्तित्व सूत्र ही है। यह अथ से इति तक अनुभवमूलक विधि से ही समझ में आता है। अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन होता है फलत: हर व्यक्ति स्वायत्त मानव, परिवार मानव, समाज व्यवस्था मानव के रूप में प्रमाणित होता है। यही अनुभव परंपरा की गरिमा और महिमा है। इसी का फलन मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा परिपूर्ति और तृप्ति व उसकी निरंतरता बन पाती है।

Self-governance indeed is orderliness, governance is not. In the context of orderliness, it has already been explained. It is only by way of family person that rise in the grandeur of self governance is seen. Each family undertakes the activities of production of necessary items, for nourishment and protection of its members as well as for societal functioning. Behaving and conducting itself by way of relationships, values, evaluation & mutual happiness, this is the primary meaning of family. In such families, the above-mentioned three needs are always there. In order to fulfil these needs, production work is naturally required. It implies that for family functioning as well as for societal functioning, production work is an essential dimension. Thus, by way of relationships, values, evaluation & mutual happiness, and by way of producing more than what is needed, participation of each family member is evidenced in family as well as in society, by way of usefulness & complementariness. Thus, eternal availability of justice, production, exchange, health *sanyam* materialises in, by & for all families. Source of all this lies in humane education *sanskar* and health *sanyam* programs. In this manner, orderliness expands in all directions, and the idea of indivisible society is also continuously in effect. Coexistence is the key here. It is only by the realisation rooted method that it can be completely understood, expressed, communicated & exposed, each person becomes evidence of autonomous person, family person, societal person and systems person. This is indeed the grandeur & magnificence of the tradition of realisation. This leads to fulfilment of human expectation and jeevan expectation, and its continuity.

**बौद्धिक समाधान का फलन ही बौद्धिक, सामाजिक और प्राकृतिक नियम**

**Intellectual, social and natural laws are the outcome of intellectual resolution**

अस्तित्व में अनुभव का स्वीकृति ही अस्तित्व बोध और सर्वतोमुखी समाधान है । अस्तित्व अपने में सह-अस्तित्व के रूप में वर्तमान है; सदा नियमित और व्यवस्थित है । इसी सत्यतावश मानव भी व्यवस्था में, से, के लिए समाधानित और समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व को प्रमाणित करने की विधि बौद्धिक, सामाजिक और प्राकृतिक नियमों के रूप में सार्थक होना पाया जाता है ।

Acceptance of realisation in existence is indeed the enlightenment of existence and comprehensive resolution. Existence in itself exists as coexistence; it always abides by laws, and is orderly. It is based on this truth that humans are also meaningful when they attain resolution in, by & for orderliness and produce evidence of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence, by way of intellectual, social and natural laws.

नियमपूर्वक ही व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी अस्तित्व में दृष्टव्य है । परमाणु अपने में व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी का स्वरूप है। इसी क्रम में अणु, अणुरचित पिण्ड, मृदा, पाषाण, मणि, धातु, प्राणावस्था के बीजानुषंगीय प्रत्येक रचना-विरचना, वंशानुषंगीय सम्पूर्ण रचना-विरचना नियमपूर्वक व्यवस्था के रूप में ही प्रकाशित रहते हैं । पदार्थावस्था परिणामानुषंगीय विधि से ‘त्व’ सहित व्यवस्था, प्राणावस्था का सम्पूर्ण प्रकाशन बीजानुषंगीय विधि से त्व सहित व्यवस्था, जीव संसार में सम्पूर्ण प्रकाशन वंशानुषंगीय विधि से त्व सहित व्यवस्था व मानव प्रकृति में संस्कारानुषंगीय (ज्ञानानुषंगीय) विधि से ‘त्व’ सहित व्यवस्था होना पाया जाता है ।

Orderliness, and participation in orderliness, is visible in existence only by way of abiding by laws. An atom is the true form of orderliness in itself, and participation in the overall order. Similarly, molecules, objects formed from molecules, soil, stones, gemstones & metals, formation & deformation of all the entities of plant order or seed conformance, and of animal order or species conformance, all these exhibit themselves as being in orderliness only when abiding by the laws. Material order is in orderliness by constitution conformance, plants order is in orderliness by seed conformance, animal order is in orderliness by species conformance, and humans are found to be in orderliness by sanskar (knowledge) conformance methods.

संस्कार का मूल रूप अनुभव के प्रकाश में किया गया स्वीकृतियाँ है। समग्र अध्ययन का स्वरूप ही है । समग्र अस्तित्व को अनुभव योग्य वस्तुओं के रूप में स्वीकारना प्रमाणित करना ही संस्कार है । संस्कार का तात्पर्य यही है पूर्णता के अर्थ में अनुभवमूलक विधि से प्रस्तुत क्रियाकलाप । शिक्षा के रूप में सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज के अर्थ में स्थापित होना सार्थक संस्कार है । संस्कारित होने का ही प्रमाण है मानवीयता पूर्ण आचरण और व्यवस्था में भागीदारी । इस विधि से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुभव मूलक विधि से अनुभव योग्य तथ्यों को स्थापित करना । स्थापित करने का तात्पर्य स्वीकृत सहज प्रमाण होने से है । अवधारणा का तात्पर्य अनवरत सुख स्त्रोत स्वीकृति एवं प्रमाण है।

In its basic form, *sanskars* are acceptances in the light of realisation. This is indeed the true form of the entire study. Acceptance of the whole existence as comprising realities which can be understood, and to produce evidence of this understanding, itself is sanskar. All activities for completeness by the realisation rooted method, is the meaning of *sanskar*. Being meaningful for universal systems and indivisible society, and establishing these in education, itself is *sanskar*. Humane conduct and participation in the overall system, this is indeed the evidence of being with *sanskar*s. In this manner, the process of establishing the content of realisation by way of realisation rooted method becomes clear. To establish means being the evidence of acceptance. Conceptual understanding means source, acceptance & evidence of continuous happiness.

सतत् सुख की अपेक्षा में ही मानव सम्पूर्ण कार्य करता हुआ, सोच-विचार करता हुआ देखा जाता है । इसमें सफल होना ही मानवीयतापूर्ण संस्कार, विचार, कार्य-व्यवहार और अनुभव है । सफलता का प्रमाण जीवनापेक्षा और मानवापेक्षा सफल होने से है । यह अच्छी तरह से देखा गया है कि जीवन अपेक्षा फलवती होने के साथ मानव अपेक्षा फलवती होती है । उसी प्रकार मानव अपेक्षा फलवती होने के साथ जीवन अपेक्षा फलवती होती है । इस तथ्य को हर व्यक्ति अपने में परीक्षण, निरीक्षण पूर्वक निष्कर्षों को निकालते जाएँ तो हर मानव उपलब्धि और संतुष्टि स्थली में पहुँच पाता है ।

Whatever the humans are doing or thinking, is only in the quest for continuous happiness. To succeed in this is indeed the humane *sanskar*, thoughts, deeds and realisation. Evidence of success is being successful in attaining jeevan aspiration and human aspiration. It has been clearly seen that human aspiration fructifies along with jeevan aspiration. Similarly, jeevan aspiration fructifies when human aspiration fructifies. Everyone can achieve this and reach the point of contentment by examining & inspecting in themselves, and by drawing step-by-step inferences on these facts.

यहाँ इस बात का उल्लेख इसीलिये किया है कि जागृति के साथ-साथ मानव की उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयताएँ फलवती होते हैं । भ्रमित तरीके से नेक इरादे में कुछ भी किया जाए वह प्रमाणित नहीं हो पाता है । भ्रमित विधि का तात्पर्य यही है कि हम जाने बिना ही कुछ करते हैं इसके साथ आस्थाएँ भी जुड़ी रहती हैं । इस बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक का आंकलन है भय से प्रलोभन और प्रलोभन से आस्था अच्छा लगता है । भय और प्रलोभन के आधार पर ही संघर्ष होना देखा गया है। आस्थावादी क्षणों में मानव अपने आप में जो झलक पाता है उसी को शांति की संज्ञा देते हैं । उल्लेखनीय बात यही है आस्था शनै:-शनै: कोई न कोई विधि से रूढ़िवादी कट्टरपंथी के स्थली में पहुँचा देता है। इन दोनों स्थली में भय और प्रलोभन ही पुन: कार्यरत हो जाता है । इसे भली प्रकार से हर व्यक्ति देख सकता है । अस्तु भय, प्रलोभन, आस्था के संघर्षोंपरान्त एक मात्र दिशा और मार्ग सर्वतोमुखी समाधान ही है ।

It has been mentioned here because the use, good-use & purposefulness in humans fructifies only with awakening. Anything done under delusion does not result in evidence, even though it might have been well-intentioned. Meaning of under delusion is that we do something without knowing, and faiths are also associated with such deeds. Appraisal of history up to the last decade of the twentieth century is that temptation looks better than fear, and faith prevails over temptation. All the conflicts apparently take place only due to fear and temptation. The good feeling that humans find in themselves in the moments of faith, they call it peace. Here, it is noteworthy that faith, by one way or another, slowly leads to fanaticism or stubbornness. At these points, fear & temptation again take over. This can be verified by everyone. Thus, after the conflicts due to fear, temptation & faith, the only recourse & path available to humankind is of comprehensive resolution.

सम्पूर्ण नियम, विविध कार्य प्रणाली, विचार प्रणाली, व्यवहार प्रणालियाँ समाधान के अर्थ में अनुप्राणित रहने से सम्पूर्ण समाधान व्यवस्था सूत्र से सूत्रित रहने से सम्पूर्ण व्यवस्था ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में स्पष्ट रहने से और संपूर्ण व्यवस्था सह-अस्तित्व के रूप में वर्तमान रहने से मानव अपेक्षा, जीवन अपेक्षा का फलवती होना सहज है । इसे मानव परीक्षण-निरीक्षण पूर्वक प्रमाणित कर पाता है । जहाँ परीक्षण-निरीक्षण पूर्वक तथ्यों को अनुभव करने का प्रस्ताव है-यह सब चिन्तनाभ्यास का ही स्वरूप है । चाहे चिन्तनाभ्यास हो, चित्रणाभ्यास हो, विषयाभ्यास हो मानव अभ्यासी तो रहेगा ही। हर मानव कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधि से मानव अपने को अभ्यास विधा में ही प्रशस्त बनाए रखता है । जिसमें से विषयाभ्यास इंद्रिय सन्निकर्ष केन्द्रित होना पाया जाता है और चित्रणाभ्यास विश्लेषण केन्द्रित होना पाया जाता है जिसके लिये श्रुति और स्मृति स्त्रोत होना पाया जाता है। चित्रणाभ्यास सुविधा संग्रह के लिये व्यस्त रहना देखा गया। चिन्तनाभ्यास पूर्वक मानव स्वायत्त और परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होना पाया जाता है । अनुभवमूलक विधि प्रणाली से हर मानव सर्वतोमुखी समाधान सहित समग्र व्यवस्था में भागीदारी को निर्वाह कर सकता है । यही जागृति का सर्वोच्च प्रयोजन भी है ।

All laws, actions, thoughts and behaviours catering to resolution, all resolution getting linked to orderliness, all orderliness remaining clear in the form of orderliness with essence, and all orderliness being in the form of coexistence; all this leads to natural fulfilment of human aspiration and jeevan aspiration. Everyone can produce its evidence by way of examination & inspection. As far as the proposal of examining & inspecting in themselves is concerned, it is part of the contemplation practice. It is human nature to be engaged in practise, whether it is in the contemplation practice, or in visualisation practice, or in interests-quad. All humans remain engaged in the activity of practice by way of physical, verbal, mental, doing, getting-done or endorsing. Out of these, practising in interests-quad is focused on sensory organs; while visualisation practice focuses on analysis, revelation (*shruti*) and memory (*smriti*) being its source. Visualisation practice remains engaged in & for comfort accumulation. A person becomes evidence in the form of an autonomous person and family person by engaging in contemplation practice. While engaged in contemplation practice, humans give evidence in the form of autonomous and family human beings. It is only by realisation rooted method that everyone can become accomplished in resolution, and can participate in the overall order. This is also the ultimate purpose of awakening.

चिन्तनाभ्यास के साथ-साथ मानव में स्वाभाविक रूप में अनुभवात्मक स्वीकृतियाँ स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होती है । यही संस्कार रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है । मानवीयतापूर्ण संस्कार प्रतिष्ठा ही मानवत्व का स्थिर बिन्दु होना देखा गया है । इन्हीं सत्यतावश अनुभूत होना एक आवश्यकीय कार्य होता है । अनुभव जीवन तृप्ति के अर्थ में ही होता है जिसके प्रभाव मात्र से ही मानवापेक्षा की आपूर्ति हो जाती है । इससे यह पता चलता है कि बन्धन वश ही मानव में तनाव और ग्रंथियाँ बनी रहती हैं । बंधन मुक्ति के अनन्तर तनाव रहित विधि से ही सम्पूर्ण कार्यकलाप सम्पन्न होते हैं । यहाँ यह भी बोध समन्वित होता है कि स्वभाव गति प्रतिष्ठा में ‘त्व’ सहित व्यवस्था अक्षुण्ण रह पाता है । मानव में स्वभाव गति मानवत्व ही होना स्पष्ट हो चुकी है । मानवत्व सहज सम्पूर्ण कार्य यथा बौद्धिक, सामाजिक और प्राकृतिक नियम मानव के स्वभाव गति प्रतिष्ठा में सहज रूप में निर्वाह होना पाया जाता है । इस प्रकार जागृति की आवश्यकता स्वभाव गति प्रतिष्ठा के लिये अनिवार्य है । बौद्धिक समाधान का ध्रुव अस्तित्व और मानव होने की स्वीकृति है । अस्तित्व में मानव ज्ञानावस्था की इकाई होने के कारण मानव और अस्तित्व के बीच चारों अवस्थाएँ अध्ययन के लिये वस्तु होना पाया जाता है ।

As humans engage more & more in contemplation practice, they naturally become more & more accomplished in acceptances or concepts of realisation. These acceptances themselves are established in the form of *sanskar*s. Establishment of humane *sanskar* indeed has been seen as the pivotal point of humaneness. It is because of this that realisation is an essential activity. Realisation is for the satiation in jeevan, and the effect of realisation leads to fulfilment of human expectation. This leads us to the conclusion that humans remain in stress and constraints only in bondage. Upon liberation from bondage, humans are able to do everything in a stress-free manner. At this point, it helps in our understanding of the fact that orderliness with essence becomes sustained only when an entity is established in the normal motion. It is clear by now that humaneness is the normal motion in humans. All actions of humans abide by humaneness, e.g. by intellectual, social & natural laws, naturally when they are in the eminence of normal motion. In this way, awakening is essential for the eminence of natural motion. ‘Existence is’ and ‘human being is’ - this acceptance is indeed the pivot of intellectual resolution. Due to the fact that humans belong to the knowledge order, the main content of study is the four orders in nature, including humans.

जीवन प्रतिष्ठा सदा-सदा पीढ़ी रहते हुए मानव परंपरा में वैभवित होने के लिये ही संयोगित होना देखा गया है क्योंकि-

1. मानव परंपरा में जागृति और उसका प्रमाण ही तृप्ति का स्त्रोत है । तृप्ति में मानवापेक्षा-जीवनापेक्षा का संतुलन ही है ।
2. मानव परंपरा में सर्वतोमुखी समाधान का प्रयोजन, कार्य और प्रमाणों की आवश्यकता बना ही रहता है। फलस्वरूप हर व्यक्ति के लिये भागीदारी का स्थान इसमें बना ही रहता है ।
3. जागृति पूर्णता और प्रामाणिकता सहित ही अखण्ड-समाज, सार्वभौम व्यवस्था सर्वमानव में, से, के लिए समीचीन है ।
4. सर्वतोमुखी समाधान पूर्वक ही स्वायत्त मानव, परिवार मानव, समाज मानव और व्यवस्था मानव प्रतिष्ठा प्रमाणित होता है ।
5. जागृति पूर्वक ही अज्ञात का ज्ञात, अप्राप्ति का प्राप्ति समीचीन रहता है ।
6. जागृति पूर्वक ही मानव अस्तित्व में अनुभूत होता है अथवा अस्तित्व में अनुभूत होना ही जागृति है ।

It has been seen that the eminence of jeevan always passes on from generation to generation for the grandeur of humane tradition, because -

1. Awakening and its evidence is indeed the point of satiation in human tradition. Satiation is nothing but the equilibrium of human expectation and jeevan expectation.
2. The need for purpose, deeds & evidence of comprehensive resolution is always there in human tradition. Thus, there is always enough scope for everyone to participate.
3. It is only with awakening completeness & authenticity that the indivisible society & universal system is available in, by & for everyone.
4. It is only by way of comprehensive resolution that the eminence of autonomous person, family person, societal person & systems person is evidenced.
5. It is only by way of awakening that one reaches the state of knowing the unknown, and having what one doesn’t have.
6. It is only by way of awakening that one gets realised in existence; in other words, realisation in existence itself is awakening.

उक्त क्रम से बौद्धिक रूप में समाधानित होना स्वभाविक है यह तथ्य स्पष्ट हो गया । यह तथ्य भी जागृति का ही द्योतक है । जागृति के अनन्तर हर व्यक्ति स्वाभाविक रूप में असंग्रह प्रतिष्ठा को समृद्धि पूर्वक, स्नेह प्रतिष्ठा को पूरकता पूर्वक, विद्या प्रतिष्ठा को जीवन विद्या पूर्वक, सरलता प्रतिष्ठा को सह-अस्तित्व दर्शन पूर्वक, अभय प्रतिष्ठा को मानवीयता पूर्ण आचरण पूर्वक वैभवित होने के लिए सूझ-बूझ पूर्वक कार्य करता हुआ देखने को मिलता है । यही मुख्यत: बौद्धिक नियम है। ऐसे बौद्धिक नियम सम्पन्न मानव स्वाभाविक रूप में मानवीयता पूर्ण आचरण सम्पन्न होता है जो मूल्य, चरित्र, नैतिकता का अविभाज्य वैभव है। जिसमें से मानवीयतापूर्ण चरित्र जो स्वधन, स्वनारी/पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार है । जो अखण्ड सामाजिक नियम के रूप में प्रभावित होता है । संबंधो में मूल्यों को पहचानना, निर्वाह करना, मूल्यांकन करना फलस्वरूप उभय तृप्ति ही मानवीय मूल्य का स्वरूप है । तन, मन, धन का सदुपयोग एवं सुरक्षा नैतिकता है।

With the above-mentioned explanation, the fact that becoming resolved intellectually is a natural process, has become clear. This fact is also an indicator of awakening. Every awakened person is observed to be wisely occupied for the establishment of the grandeur of non-accumulation by way of prosperity, of affection by way of complementariness, of knowledge by way of knowledge of jeevan, of simplicity by way of holistic view of the coexistence, and of fearlessness by way of humane conduct. This is the crux of intellectual laws. A person accomplished with such intellectual laws, is naturally accomplished in humane conduct which is the combined grandeur of values, character and ethics. Out of these, humane character is defined as righteous wealth, marital faithfulness, and kindness in work & behaviour. This is manifested in the form of social laws. Recognising values in relationships, fulfilling them, their evaluation and the resultant mutual happiness is indeed the true form of humane values. Ethics is defined as the righteous use and security of body, mind & wealth.

यद्यपि पहले भी सामाजिक नियम और प्राकृतिक नियम का विस्तृत व्याख्या कर चुके हैं । यहाँ जागृति और प्रामाणिकता पूर्वक उक्त तथ्यों को स्मरण में लाना उचित समझा गया है । यहाँ उल्लेखनीय तथ्य यही है अस्तित्व स्वयं सह-अस्तित्व के रूप में नियमित है फलत: अस्तित्व में व्यवस्था अक्षुण्ण है । मानव भी अस्तित्व में अविभाज्य है । अतएव नियम त्रय पूर्वक ही मानव मानवापेक्षा और जीवन अपेक्षा को सार्थक बना सकता है ।

Although social laws & natural laws have already been described in detail, it has been thought appropriate to revise them here during the discussion about awakening & authenticity. It needs to be highlighted here that existence is orderly in the form of coexistence, thus the orderliness in existence is perpetual. Humans too are an integral part of existence. Therefore, it is only by following laws-trio that humans can fulfil human expectation and jeevan expectation.

इस सहज आशय के साथ ही यह तथ्य हर मेधावी व्यक्ति में,से, के लिए स्पष्ट होना स्वाभाविक है कि हम सर्वमानव बंधन मुक्ति रूपी जागृतिपूर्वक ही सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होते हैं । ऐसे जागृति सम्पन्नता में, से, के लिए मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार विधि ही एक मात्र उपाय है । मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार का मूल वस्तु जीवन ज्ञान, अस्तित्व-दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान है । यह मानव जागृति पंरपरा के लिए सार्थक सिद्ध होता है ।

The intent that we all humans become accomplished in comprehensive resolution only by way of awakening, or by liberation from bondage, can be easily understood by any seeker. Humane education-sanskar is the only recourse in, by & for accomplishment of such awakening. Main content of humane education-*sanskar* is the knowledge of jeevan, knowledge of existence, and knowledge of humane conduct. Such humans are meaningful in & for awakened human tradition.

| चेतना विकास, मूल्य शिक्षा का अध्ययन कराना ही शिक्षा का मानवीयकरण है ।  To impart knowledge of consciousness development value education indeed is the humanisation of education. |
| --- |

**Chapter 6**

**दृष्टा, कर्ता, भोक्ता**

**Seer, Doer, Enjoyer**

जीवन ही दृष्टा है-मानव परंपरा में जागृति प्रमाणित होता है ।

Jeevan is the seer. Evidence of awakening occurs only in human tradition.

मानव में किंवा हर मानव में देखने का दावा समाहित है। इसी के साथ और भी देखने की कामना बनी ही रहती है । ये दावा और कामना आँखों से जो कुछ भी दिख पाता है उसी के लिए अधिकतर संख्या में मानव जूझता हुआ देखने को मिलता है यह सर्वविदित तथ्य है । इसी क्रम में और देखने की विधि से प्रकारान्तर से पूरा धरती पूर्व से पश्चिम तक, उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक और दक्षिणी ध्रुव से उत्तरी ध्रुव तक देख लिया । इसी के आधार पर धरती का सर्वेक्षण कार्य भी सम्पन्न हुआ । इसी क्रम में आगे ग्रह-गोलों को, अनेक सौर व्यूह को देखने की इच्छा निर्मित होती रही । किसी एक पीढ़ी में धरती के मानव चाँद तक जाकर वापस आ गए । चन्द्रमा धरती के सदृश्य ठोस गढ्ढे और पत्थर का होना बताया । वहाँ पानी और वनस्पतियाँ न होने का सत्यापन किया । वहाँ हवा का दबाव नहीं है बताया । वहाँ गये हुए आदमी इसी धरती से पानी और हवा को ले गये थे । सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी आवश्यक रहा ही होगा ।

Claim of seeing is inherent in humans, or rather, in all humans. Along with this, the appetite to see more & more also remains there. It is easy to observe that most of the people are striving hard to satisfy this claim & desire regarding whatever can be seen by the eyes. In this process, in diverse ways, humans have seen this whole planet from east to west, and from north pole to south pole. It has been possible to complete the survey of Earth on the basis of these efforts only. In this process, additional desires emerged to see other heavenly bodies, planets, and other solar systems. At some point, humans made a round trip to the moon. It has been described as mostly similar to Earth, and is marked by rocks and craters. They certified the absence of water and vegetation there. Absence of atmospheric pressure has also been mentioned. The astronauts who went there, carried water & oxygen with them. Oxygen for breathing, and water for drinking, must have been essential for survival.

इससे बहुत बड़ी-भारी एक कौतूहलात्मक बाधा टल गई कि अन्य धरती से इस धरती तक आदमी पहुँच सकता है । यह एक बड़ी उपलब्धि इस शताब्दी का रहा है । इसमें मानव के लिए सकारात्मक पक्ष यही है न जाने चाँद धरती के साथ कितने समय से रहा है उसमें अभी तक मानव, जीव, वनस्पति योग्य परिवेश बना नहीं। इस धरती पर इन सबके योग्य वातावरण समृद्ध हो चुका है । यह लाभ मानव को हुआ । उसके उपरान्त अनेकानेक प्रयोगों से अन्य धरती जिस पर इस सौर व्यूह के सीमा में कहीं होने का कल्पना से विभिन्न देशों से अंतरिक्ष यानों को भेजकर (उपग्रह) देखा गया । अभी तक इस सौर व्यूह में जीव-वनस्पति से समृद्ध अन्य धरती का पता नहीं लगा है । सर्वाधिक ग्रहों को विरल अवस्था में ही होना पाया गया । कई ग्रहों के साथ एक से अधिक चन्द्रमा (उपग्रह) का होना भी बताया गया। ये सब देखने के क्रम में ही विस्तृत आंकलन मानव के पास पहुँच चुका है ।

This helped in settling the curiosity regarding whether someone from other planets can reach Earth or not. This has been a major achievement of the twentieth century. The key takeaway for humans from all these observations is that although the moon has been orbiting around Earth for a long long time, a suitable environment for humans, animals and vegetation hasn’t emerged there yet, while on our planet, a suitable environment for all of these is available. This key learning is the benefit we humans derived from these efforts. Recently, many spacecrafts and probes have been launched by different countries to other planets in our solar system to conclude whether another planet like Earth is there in this solar system or not. So far, no other planet rich with animals & vegetation has been found in this solar system. Scientists have found that most of the planets have only solids and gases (no liquids). It has also been mentioned that some planets have more than one satellite. All these detailed conclusions have been drawn by humankind based only on seeing or observing.

उक्त देखने की परिकल्पना विधि से मानव पर जो कुछ भी प्रतिबिम्बित, प्रभावित रहता है वह सब मानव के लिये देखने की वस्तु के रूप में रहता ही है । उल्लेखनीय तथ्य यही है आँखों से अथवा सभी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा देखा हुआ वस्तु अपने स्वरूप में दिखता नहीं। यह बात सर्वेक्षण पूर्वक प्रमाणित होता है कि आँखों पर ही वस्तु का सर्वाधिक भाग प्रतिबिम्बित होता है । बाकी अन्य प्रणालियों से उतना अधिक भाग चित्रित नहीं हो पाता है। आँख के अनन्तर शब्द और कहानी द्वारा मानव की कल्पना में बहुत सारा चीज आता है । ऐसे कथाओं के आधार पर किये गये कल्पनाएँ आँखों में आता नहीं । यही मुख्य मुद्दा है । सर्वमानव के साथ यही घटना घटती रहती है । चाहे कितने ही श्रेष्ठ अभ्यासों में परिपक्व क्यों न हुआ हो, चाहे सामान्य व्यक्ति क्यों न हो इस तथ्य का सर्वेक्षण हर व्यक्ति कर सकता है । यही मुख्य बिन्दु है आँखों से अधिक कल्पना होता है । साथ ही कल्पनाएँ आँखों में दिखती नहीं है । यही व्यथा हर मानव के साथ कमोबेशी बना हुआ है ही । इस मुद्दे में मुख्य रूप में जो विषमता का आधार है वह है देखने का परिभाषा । अभी तक आँखों पर जो कुछ भी प्रतिबिम्बित रहती है, दिखने की वस्तु यही है ऐसी ही मान्यता के आधार पर मानव सहज आँखों से अधिक शक्तिशाली यंत्र-उपकरण को बनाकर भी देखा गया । उपकरणों से दूर की चीज अथवा बहुत छोटी चीज को देखा भी है । इन उपकरणों से परमाणुओं एवम् परमाणु अंशों को देखने का दावा भी किये हैं और दूर में स्थित ग्रह-गोलों को, नक्षत्रों को देखने का सत्यापन किये हैं।

As per the above mentioned approach to ‘seeing’, all that which is reflected on or affects the humans, is indeed the content of seeing. Main point to note here is that an object is not completely seen or grasped in its true form only by the eyes, or even by all the sensory organs. It is evident by way of survey that maximum reflection of an object undoubtedly falls on the eyes. The role of other senses in capturing the reflection is lesser. After the eyes, it is the words and stories that are instrumental in further filling the imagination of humans. Imagination based on such stories is not dependent on eyes. It is an important point. It happens with all human beings. It can be verified by all humans, irrespective of whether they are highly learned, or ordinary. Thus, the fact that imagination is bigger than eyes, is an important point. Moreover, imagination can’t be seen with eyes. More or less, all humans face this agony. Mainly, it is the definition of ‘seeing’ itself that is at the root of this anomaly. So far, humans have assumed that the entirety of an object can be understood by whatever is reflected on the eyes; and they developed machines & instruments more powerful than the eyes based on this assumption only. No doubt, such instruments have been helpful in seeing distant or very small objects. Claims have been made regarding seeing of atoms & atomic particles, and truthful declarations regarding seeing distant planets & stars have also been made.

यह सर्वविदित तथ्य है आँखों में जो कुछ भी प्रतिबिम्बित होती है इसे आगे देखने पर पता चलता है मानव की आँखों में जो कुछ भी घटना और रूप दिख पाता है वह आंशिक भाग ही रहता है । हर रूप स्थिति में गति होना पाया जाता है । इस क्रम में रूप का परिभाषा जो आकार, आयतन, घन है उसमें से आकार का ही आंशिक भाग आँखों में प्रतिबिम्बित होता है । आकार और आयतन, घन अविभाज्य है । जो कोई भी आकार है सत्ता रूपी ऊर्जा में, शून्य में समायी रहती है, सभी ओर से सीमित रहता ही है । यही उस वस्तु का विस्तार अथवा आयतन का तात्पर्य है । आकार का स्वरूप लंबा, चौड़ा, ऊँचा, मोटा, गहरा, गोल, चपटा, बेलनाकार, विभिन्न संख्यात्मक कोणाकार में होना पाया जाता है । ऐसे सभी रूप में, से केवल आकार, आयतन का आंशिक भाग ही आँखों में प्रतिबिम्बित हुआ रहता है इससे किसी वस्तु का वर्तमान में होना स्वीकार होता है । स्वीकारने का पक्ष जीवन पक्ष का ही कार्यप्रणाली है ।

It's a well-known fact that although the image or reflection falls on the eyes, this image whether of an incident, or phenomenon, or form is only partial. Each form (object) has a state, and motion. Going further, the definition of form (or object) is shape, volume & density, out of which only shape is reflected on the eye and that too, only partially. Shape, volume & density are inseparable. Each form is submerged in the formless, the Omnipotence, the void; and is bound from all directions. This boundary is indeed the expanse or volume of that object. Shape may be as long, wide, high, thick, deep, round, flat, cylindrical, or comprising many corners. From all these, only shape and volume are reflected on the eyes, that too only partially; this leads to acceptance of the existence of some object. The aspect of acceptance is an aspect of jeevan only.

Alternate translation of this para with **प्रतिबिम्ब = projection** :

It's a well-known fact that although the projection falls on the eyes, this projection whether of an incident, or phenomenon, or form is only partial. Each form (object) has a state, and motion. Going further, the definition of form (or object) is shape, volume & density, out of which only the shape is projected on the eye and that too, only partially. Shape, volume & density are inseparable. Each form is submerged in the formless, the Omnipotence, the void; and is bound from all directions. This boundary is indeed the expanse or volume of that object. Shape may be as long, wide, high, thick, deep, round, flat, cylindrical, or comprising many corners. From all these, only shape and volume are projected on the eyes, that too only partially; this leads to acceptance of the existence of some object. The aspect of acceptance is an aspect of jeevan only.

हर परस्परता में पत्थर-पत्थर अथवा मृदा, पाषाण, मणि, धातुओं के परस्परता में, अन्न-वनस्पति की परस्परता में, पदार्थावस्था और प्राणावस्था की परस्परता में भी परस्पर प्रतिबिम्बन क्रिया बना ही रहता है । उसका सिद्धांत यही है ‘**बिम्ब का प्रतिबिम्ब रहता ही है**’ । इसी क्रम में मानव का प्रतिबिम्ब, मानव सहित अन्य प्रकृति के साथ भी बना ही रहता है । अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में विद्यमान हर वस्तु में प्रतिबिम्ब ससम्मुखता के आधार पर ही होता है या रहता ही है। इसे स्वाभाविक रूप में हर व्यक्ति अपने ही शक्ति, कल्पना और तर्क प्रयोग परीक्षण के आधार पर प्रमाणित कर सकता है । प्रतिबिम्ब की संप्राप्ति के लिये किसी मानव को कुछ भी करना नहीं है । ससम्मुखता में स्थित हर वस्तु का प्रतिबिम्ब रहता ही है । इसी क्रम में हर व्यक्ति की आँखों में, व्यापक रूप में वर्तमान सत्ता में ही हर वस्तु डूबा, घिरा हुआ दिखाई पड़ता है । इसी के साथ-साथ और एक नित्य प्रमाण समझ में आता है सत्ता हर परस्परता में पारदर्शी है क्योंकि हर ससम्मुखता में किसी न किसी सीमित वस्तुओं (इकाईयों) को पाया जाता है। सीमित वस्तुओं का ही प्रतिबिम्ब होता है । सीमित वस्तुओं की परस्परता के मध्य व्यापक रूप में वर्तमान सत्ता दिखाई पड़ती है । यह स्थिति सर्वत्र, सर्वकाल में सभी मानव के नजरों में आती है । इस तथ्य के आधार पर सत्ता पारदर्शी होना, देखने को मिलता है । क्योंकि सत्तामयता हर परस्परता के मध्य में होता ही है तभी परस्परता में प्रतिबिम्बन होना प्रमाणित होता है । ऐसे पारदर्शी सत्ता में घिरा, डूबा होने का महिमा के साथ-साथ हर सीमित वस्तुएँ ऊर्जा सम्पन्न रहना, उन-उन की क्रियाशीलता के आधार पर प्रमाणित होता है ।

In all mutualities, of stone & stone, or of soil, rocks, gemstones, metals, or of vegetation, in other words, in all mutualities of the material order and plant order, the activity of projection is always there. The basic principle here is ‘**Every object has projection** ’. Thus, it is natural that projection of humans is also there on other humans and on the rest of nature too. Projection of all objects in existence is, or remains, on the basis of interfacing. This can be verified by everyone applying and observing their own power, imagination and logic. No human effort is needed to get projection. Projection is naturally there of all objects facing each other. On this course, the eyes of every human see every object as submerged & surrounded in the omnipresent Omnipotence. Along with this, another truth becomes evident which is - Omnipotence is transparent in every mutuality because in every interfacing, the objects (units) are bounded. It is only the bounded objects which are projected. In between the mutuality of these bounded objects, Omnipotence as omnipresence is seen. This state is observable by all humans, at all places, at all times. Based on this fact, Omnipotence is observed to be transparent. Projection is evident in mutuality of objects only because Omnipotence is always there between any two objects. Along with the magnificence of being surrounded and submerged in Omnipotence, the fact that all these bounded objects are endowed with energy is evident on the basis of their respective activeness.

इससे यह भी पता लगता है-सत्ता में ही हर सीमित वस्तुएँ भीगी हुई है । इस प्रकार हर वस्तु अर्थात् हर सीमित वस्तु सत्ता में ही नियंत्रित, क्रियाशील, संरक्षित रहना भी पता लगता है क्योंकि अस्तित्व न घटता है न बढ़ता है । अस्तु, प्रतिबिम्बन का मूल वस्तु रूप है ही । ऐसे रूपों के परस्परता के मध्य में स्थित साम्य ऊर्जा, सत्ता पारदर्शी होता है ।

It also indicates that all bounded objects are soaked in Omnipotence. As existence neither increases nor does it decrease, it also leads to the conclusion that each bounded object is regulated, active and protected in Omnipotence itself. Hence, the form of the object is at the root of projection. The uniform energy, Omnipotence which is there between the mutuality of these forms, is transparent.

आँखों से देखने के क्रम में सारे सानूकुलताएँ अस्तित्व सहज रूप में समीचीन रहते हुए आकार, आयतन का आंशिक भाग आँखों के सम्मुख प्रतिबिम्बित होना स्पष्ट हो चुकी है । आँखों पर प्रतिबिम्बित आकार से अधिक आयतन, आकार और आयतन से अधिक घन रहता ही है । इस विधि से जो हम आँखों से देखते है उसकी सम्पूर्णता आँखों में आती नहीं है । यह रूप के सम्बन्ध में जो तीन आयाम बतायी गई है उसका प्रतिबिंबन और आँखों की क्षमता के संबंध में मूल्यांकित हुई । हर रूप के साथ गुण, स्वभाव, धर्म अविभाज्य रहना स्पष्ट किया जा चुका है । यह भी साथ-साथ हर व्यक्ति में किसी न किसी अंश में गुण, स्वभाव, धर्म को समझने की आवश्यकता-अरमान रहता है । इस विधि से यह स्पष्ट हो गया जितना मानव समझ सकता है वह आँखों में आता नहीं । हर वस्तु आँखों पर होने वाले प्रतिबिम्बन से अधिक है । यही कल्पनाशीलता, तर्क, प्रयोग, अध्ययन और अनुभव का मुद्दा है । अब यह बात सुस्पष्ट हो गई कि देखने का परिभाषा, आशय और सार्थकता समझना ही है, समझा हुआ को समझाना ही है । हर समझ अनुभव की साक्षी में ही स्वीकृत होता है । हर समझ अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित हो जाता है। समझने का जो महत्वपूर्ण पात्रता है और अनुभव योग्य क्षमता सम्पन्नता ही है, इन दोनों महत्वपूर्ण क्रिया के आधार पर अभिव्यक्त, संप्रेषित और प्रकाशित होने के आधार पर दृष्टा पद प्रतिष्ठा हर व्यक्ति में, से, के लिए जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना नित्य समीचीन है ।

It is clear by now that in the process of seeing with eyes, only a part of the shape and volume of an object in existence is projected on the eyes. Volume of an object is always missed out more than the shape projected on the eye, and the density is missed out even more than the shape & volume. Hence, when we look at something with our eyes, its entirety is not captured with the eyes. This is the appraisal of the capacity of the eyes with respect to the projection of the above-mentioned three dimensions of the form of an object. It has also been explained earlier that attributes, intrinsic nature, and dharma are inseparably integrated with each form. It is also clear that every human has the need and desire to understand attributes, intrinsic nature, and dharma, at least to some degree. By all this, it is clear that all that which a human can understand, is not captured by the eyes. There is more to everything than what gets projected on eyes. This is the content of all imaginativeness, logic, experiment, study and realisation. By now, it is amply clear that the definition, intent and meaningfulness of seeing (in humans) is to understand, and to pass on what one has understood. All understanding becomes acceptable only in the witness of realisation. All understanding is evidenced by the realisation rooted method. The important aspect of receptivity and the endowment with potential for realisation, based on these two, and based on expression, communication and exposition; knowing, believing, recognising, fulfilling the establishment in seer plane is always within reach in, by & for everyone.

मानव के सर्वेक्षण से यह भी पता लगता है कि जीवन क्रिया होते हुए भी कल्पना, विचार, इच्छाओं से तृप्ति पाना संभव नहीं होता है । इन तीनों का सम्मिलित योजना-कार्य योजनाओं को कितने भी विधाओं में प्रयोग किया, इससे किसी एक या एक से अधिक मानव को जीवनापेक्षा व मानवापेक्षा सहज उपलब्धियाँ होना साक्षित नहीं हो पायी । आशा, विचार, इच्छाओं के संयुक्त योजनाओं को मानव में से कोई-कोई विविध आयामों में प्रयोग किया । प्रधानत: युद्ध विधा में, शासन विधा में, व्यापार विधा, शिक्षा विधा में प्रयोग किया गया मानव सहज अपेक्षा द्वय इन सभी कृत्यों से प्रमाणित नहीं हो पायी । मानव इतिहास दस्तावेजों के रूप में जो कुछ भी रखा है, वह सब इसका गवाही है । अतएव ‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’ इस आशय की पुष्टि अध्ययन सामान्य योजनाओं का अवधारणा मानव परंपरा में प्रस्थापित करने के लिये प्रस्तुत हुआ है । यह दृष्टा पद की ही महिमा है । इसकी गवाही यही है मानव परंपरा में ही विगत की समीक्षा, वर्तमान में व्यवस्था, भविष्य में, से, के लिये व्यवस्थावादी कार्य-योजना मानव परंपरा को सफल बनाने का सुदृढ़ एवं सर्व मानव स्वीकार्य योग्य प्रस्ताव है । सह-अस्तित्व में अनुभव के आधार पर ही यह सम्पूर्ण प्रस्तुति है ।

It becomes clear by the survey of humans that in spite of the presence of activities in jeevan, it is not possible for a human to be satiated by imagination, thoughts & desires. Achievement of jeevan aspiration or human aspiration in one or more humans by use of these three aspects in planning or action in any dimensions, is yet to be seen. In diverse ways, many people have experimented with plans based on hope, thoughts and desires. Mainly applied so far to wars, governance, commerce & education, aspiration-duo could not be evidenced in humans by all these. Whatever is mentioned in history books is its testimony. Therefore, ‘Realisation Centred Spiritualism’ has been presented to establish the conceptual understanding of nurturing the intent, study, and plans regarding these in the human tradition. It is indeed the glory of the seer plane. The fact that appraisal of the past, systems in present, systematic action plans in, by & for future happens only in human tradition, is its testimony; and this proposal is to strengthen all this, and is acceptable to all humans. This whole presentation is indeed based on realisation in coexistence.

वर्णित ऐतिहासिक विफलताएँ अग्रिम अनुसंधान के लिये आधार होना स्वाभाविक है। इस क्रम में इस तथ्य को अनुभव किया जा चुका है कि आँखों से अधिक कल्पनाशीलताएँ हर मानव में विद्यमान है । गणित भी कल्पनाशीलता का ही प्रकाशन है । संख्या के रूप में हर घटना या रूप और गुणों को बताने के लिये प्रयत्न हुआ । गुण ही गति के रूप में होना देखा गया है । गणितीय क्रियाकलाप भी मानव भाषा में गण्य होना पाया जाता है। सर्व मानव में गणना कार्य प्रकट होते ही आया है । ऐसे गणना कार्य को विधिवत् प्रयोग करने के आधार पर रूप सम्बन्धी तीनों आयाम आकार, आयतन, घन को समझने-समझाने का कार्य सम्पन्न होता है । इसी के साथ-साथ गति सम्बन्धी संप्रेषणा भी गणना विधि से लाने का प्रयास हुआ। मध्यस्थ गति गणितीय भाषा में संप्रेषित नहीं हो पायी है। सम-विषमात्मक गतियों को दूरी बढ़ने-दूरी घटने, दबाव और प्रवाह बढ़ने-घटने के साथ परिणामों का आंकलन सहित अध्ययन करने का प्रयास विविध प्रकार से किया गया है ।

The above-mentioned failures in history naturally became a basis of future explorations. In this process, the fact that every human has imaginations which are more than what has been projected on the eyes, has been realised. Mathematics is also an expression of imagination. Attempts have been made to describe all phenomena, forms & attributes as numbers. It is the attributes indeed which have been seen in the form of motion. It is well-known that mathematics is also included in human languages. Counting & mathematics has always been relied upon by all humans. By proper application of mathematics, understanding & communicating of the three dimensions of form (shape, volume & density) is accomplished. Along with this, attempts have been made to have communication regarding motion by way of mathematics. However, humans have been unsuccessful in their attempts to have communication regarding the mediative motion using the language of mathematics. Attempts have been made in diverse ways to study generative- and degenerative- motions in matters related to increase or decrease in distance, pressure or current, as well as to assess results thereof.

ये दोनों सम-विषम गतियाँ आवेश के रूप में ही गण्य होते हैं जबकि हर वस्तु, हर इकाई, उसके मूल में जो परमाणु है वह अपने स्वभाव गति प्रतिष्ठा में ही उनके त्व सहित व्यवस्था होना पाया जाता है । जो कुछ भी अस्तित्व में त्व सहित व्यवस्था के रूप में व्यक्त है वह सब मध्यस्थ गति के अनुरूप ही कार्यरत होना देखा गया । मानव में इसका कार्य रूप, कार्य प्रतिष्ठा जागृति मूलक विधि से ही स्पष्ट होना देखा गया है। इसका प्रमाण न्याय, धर्म, सत्य मूलक अभिव्यक्ति के रूप में ही प्रमाणित होता है । इनमें से कम से कम न्यायपूर्ण अभिव्यक्ति क्रम में ही मानव त्व को प्रकाशित कर पाता है । न्याय साक्षात्कार के उपरान्त स्वाभाविक रूप में धर्म और सत्य में जागृत होता है अर्थात् प्रमाणित होता है । इसलिये मानवीयतापूर्ण मानव चेतना पूर्ण पद में संक्रमित होना अति अनिवार्य है । इसी आवश्यकता के आधार पर शिक्षा में प्रावधानित वस्तु जागृति पूर्ण रहना आवश्यक है। यही परंपरा का परिवर्तन कार्य है । शिक्षापूर्वक ही सर्वमानव के जागृत होने का मार्ग प्रशस्त होता है। अतएव मध्यस्थ गति मानव का स्वभाव गति के रूप में मानवीयता को प्रमाणित करने के रूप में ही संभव होता है । फलस्वरूप समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रामाणिकता और स्वायत्तता के साथ दिव्य मानव प्रतिष्ठा शिक्षा-कार्य और प्रमाण वैभवित रहता है । यही मानव परंपरा का सर्वांग सुन्दर वैभव है । इसे अनुभव मूलक विधि से ही सम्पन्न करना संभव है । यही दृष्टा पद परम्परा का भी प्रमाण है ।

Both of these, the generative- as well as degenerative- motions, are categorised as excitement while each entity, each unit, and the atom at their root, is found to be in orderliness with essence only when established in its natural (unexcited) motion. In existence, all that which is in orderly with essence, all that has been seen to be active in accordance with mediative motion. Its way of working in humans became clear only by the awakening rooted method. It is evidenced as projection of justice, dharma & truth. Out of these, at least a complete projection of justice must be there for a person to exhibit humaneness. After direct perception of justice, a person naturally gets awakened in dharma & truth, in other words, produces evidence thereof. Therefore, it is of utmost importance to transcend to the plane of humane consciousness. This is why the content of education needs to include awakening. This is the change the tradition needs to bring in. It is only by way of education that the path of awakening is paved for everyone. Thus, it is possible to evidence humaneness only when the mediative motion becomes a person’s natural motion. As a result, the grandeur of divine human, education-*sanskar* and evidence prevails along with authenticity in the form of autonomy and participation in the universal system. This is the overall beauty and grandeur of human tradition. It can be accomplished only by the realisation rooted method. This is indeed the evidence of seer-plane tradition, too.

स्वभाव गति सदा-सदा ‘त्व’ सहित व्यवस्था के रूप में दृष्टव्य है । स्वभाव गति का तात्पर्य इस बात को भी इंगित करता है कि स्वभाव-धर्म के अनुरूप गति । यही हरेक इकाई में अन्तर सामरस्यता का भी द्योतक है । फलस्वरूप परस्परता में व्यवस्था प्रमाणित होना सहज है । मानव का स्वभाव मानवीयता और उसमें परम श्रेष्ठता के आधार पर धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा पूर्ण कार्य-व्यवहार, विचार व अनुभव ही है । यही प्रतिष्ठा मुख्य रूप से दृष्टा पद का द्योतक है । दृष्टा पद परिपूर्ण समझदारी का ही अभिव्यक्ति संप्रेषणा व प्रकाशन है। ऐसी समझदारी का स्वरूप जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान है । यही दृष्टा पद जागृति का सम्पूर्ण अधिकार स्वरूप भी है । इस प्रकार सम्पूर्ण समझदारी का अधिकार सम्पन्न दृष्टा होना देखा गया है । इसी समझदारी में से जीवन ज्ञान के साथ निष्ठा, अस्तित्व दर्शन के साथ निश्चयता और मानवीयतापूर्ण आचरण की अभिव्यक्ति में दृढ़ता पूर्वक व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होना सहज है । इस विधि से हर मानव दृष्टा, कर्ता और भोक्ता होना पाया जाता है ।

Normal motion is always visible in the form of orderliness with essence. Normal motion also indicates motion aligned with innate nature and dharma. This is also an indicator of inner harmony in each entity. As a result, harmony is effortlessly evidenced in mutuality. Humaneness itself is the humane nature, which is fortitude, courage, generosity, kindness, grace & compassion, and actions, behaviour, thoughts & realisation based on and full of them. This eminence mainly is an indicator of the seer plane. Seer plane is expression, communication and living based only on complete understanding. Knowledge of jeevan, knowledge of existence and knowledge of humane conduct is the true form of such understanding. In its true form, the seer plane is also an authority in awakening. In this manner, it has been seen that they are accomplished in, and the seer of, complete understanding. It is natural to be the evidence of orderliness and participation in orderliness, in and by this understanding, with knowledge of jeevan by way of commitment, with knowledge of existence by way of certainty, and with expression of humane conduct by way of perseverance. Each and every person becomes seer, doer and enjoyer by this method.

आवर्तनशीलता जीवन सहज अक्षय शक्ति-अक्षय बल का ही महिमा है । इस बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक जितनी भी परंपराएं स्थापित हुई-पनपी है जिनको हम आस्थावादी और विज्ञान परंपरा कह सकते है । उक्त दोनों से जो कुछ भी कर पाये हैं वह सब कल्पनाशीलता-कर्मस्वतंत्रता चित्रण, स्मरण और भाषाओं के संयोग से व्यक्त हुआ है । इस दशक तक इस धरती पर कहीं भी अनुभव मूलक परंपरा स्थापित नहीं हो पायी है । उसके योग्य विश्व दृष्टिकोण ही उदय नहीं हुआ । अनुभवमूलक प्रणाली की आवश्यकता तब आवश्यक हो गया जब मानव जाति धरती का सर्वाधिक शोषण किया । जैसे वन खनिज अनानुपाती विधि से शोषण किया । जिसके प्रौद्योगिकी परिणामों में प्रदूषण की मात्रा बढ़ती गई ।

Cyclicity is the magnificence of inexhaustible strength & inexhaustible power of jeevan. All the traditions that got established till the last decade of this twentieth century, we can categorise them as idealistic traditions and scientific traditions. All the achievements of these two are the outcome of a combination of imaginativeness, free-will, visualisation, memory and languages. Until now, humans have not been able to establish the tradition rooted in realisation anywhere on Earth. Even an appropriate, globally acceptable viewpoint towards that is yet to emerge. Need of the realisation rooted method has become urgent when humans have most exploited the Earth. For example, forests and minerals have been used disproportionately; and as a result of industrialisation, pollution has been increasing.

कुछ मेधावियों को इसकी विभीषीकाएँ कल्पना में आने लगी तब अनुभवमूलक ज्ञान दर्शन आचरण की आवश्यकता निर्मित हुई । इसी आवश्यकता के आधार पर अनुसंधान सम्पन्न हुआ । इसमें मुख्य मुद्दा अनुभवों को संप्रेषित करना हुआ । **इसका सिद्धांत यही है मानव में, से, के लिये भाषा से कल्पना, कल्पना से चिन्तन, चिन्तन से अनुभव, अनुभव से प्रमाण विस्तार और स्पष्ट अभिव्यक्ति होना देखा गया ।** इससे स्पष्ट हो जाता है कि भाषा कल्पना चित्रण यह दृष्टा पद का आधार नहीं हो पाई । जबकि अभी तक जो भी अभिव्यक्तियाँ हुई वह इतने तक ही हुई । यह आशा, विचार, इच्छा बन्धन का प्रकारान्तर से किया गया प्रकाशन ही है । यह सब भ्रमित विधि होने के कारण जिसके गवाही के रूप में युद्ध ही प्रधान विकास का आधार मानने के फलस्वरूप भ्रम का साक्ष्य सुस्पष्ट हो जाता है । शांतिवादी कल्पनाएँ जितने भी हो पायी, व्यक्तिवादी होने के कारण परिवार, समाज और व्यवस्था का आधार नहीं हो पाया । भोगवादी परिकल्पना भी व्यक्तिवादी हुई। यह सर्वविदित है विरक्तिवाद भी एकान्तवाद स्वान्त: सुख रूप में है ।

Some intellectuals have foreseen the horrors of these wrongdoings which has created the need of realisation rooted knowledge, philosophy and conduct. This need is indeed the basis on which this exploration (Madhyasth Darshan) was undertaken and accomplished. Highlight of this exploration is the successful communication of realisation. **Main principle behind this is - expansion and clear expression of language to imagination, imagination to contemplation, contemplation to realisation, and realisation to evidence; all this has been seen.** Thus, it becomes clear that language, imagination & visualisation - all these could not become the basis of the seer plane; while all the expressions which happened so far in history were limited to these. All this is the exposition of bondage of hope, thoughts & desires in diverse ways. All this is nothing but the way of delusion, and the fact that military strength is considered to be the basis of development, is the irrefutable proof of delusion. All the ideas of peace, to whatever extent they emerged, remained individualistic, and thus could not be the basis of family, society and institutions. It is well-known that the idea of sensory enjoyment is individualistic. On the other hand, detachment is also a form of self-limited happiness in solitude.

इन सबका सार-संक्षेप संघर्ष ही पीढ़ी से पीढ़ी को हाथ लगी । इस दशक में सर्वाधिक लोग संघर्षरत भी हुए। ऐसे अनेकानेक संगठन पूरे धरती पर तैयार हो चुके हैं । कहीं भी राजगद्दी पर कोई बैठा है तो उसका विद्रोही संगठन भी रहा । यह सब इसी की गवाही में है कि हम सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज विधि को पाये नहीं है पाने की इच्छा आंशिक रूप में बना ही रहा । तीसरा मानवापेछा और जीवनापेछा किसी परंपरा में सार्थक नहीं हो पायी इसी कारणवश अनुभवमूलक शिक्षा-संस्कार, व्यवस्था और संविधान को सुस्पष्ट करना एक नियति सहज आवश्यकता रही है ।

In nutshell, it is only the conflict which is getting passed on from generation to generation. Till this decade, most people are engaged in conflict. Many such organisations are operational on Earth now. If anyone, anywhere is occupying a seat of power, there is certainly an opposing organisation too. All this is the testimony that humans have been unable to find the way to the universal system & indivisible society, although such desire, even though miniscule, has always been there. Finally, human expectation and jeevan expectation could not be realised in any tradition; therefore to provide clarity of realisation-rooted education, systems and constitution has remained an essential need of humans.

भ्रमवश शरीर ही समझने वाला वस्तु है ऐसा कल्पना करते हुए शरीर रचना के आधार पर विकास और जागृति को केन्द्रित करने का कोशिश किया किन्तु मानव का विश्लेषण न हो पाने से अभी भी इसी दिशा में अनुसंधान और उसके प्रोत्साहन को जारी रखा गया है । जबकि शरीर को जीवन ही जीवन्त बनाए रखते हुए समृद्धिपूर्ण मेधस सम्पन्न मानव शरीर के माध्यम से मानव परंपरा में जीवन ही अपने जागृति को प्रमाणित करने के क्रम में सदा-सदा प्रयास करते ही रहा । परम्पराएँ भ्रमित रहने के कारण मानव सहज जागृति की इच्छाएँ हर शरीर यात्रा में दिशा विहीनता और मार्ग विहीन होने का कुण्ठा सदा बाधा करता ही रहा । इस क्रम में ही जागृति के लिये आवश्यकीय अनुसंधान और उसे परम्परा में स्थापित करना आवश्यक हो गया ।

Under delusion, humans assumed that it is the human body which understands, and attempted to achieve development and awakening on this basis, and research, and support for such research, continues even today in this direction because study of humans has not been accomplished so far; while the truth is that it is jeevan which, while keeping the human body alive, has been striving hard since ages to produce evidence of awakening in human tradition by using the human body consisting of a fully-developed brain. Due to the traditions remaining deluded, the aspirations for awakening have always been impeded from generation to generation by directionlessness and inability to find the right path, causing frustrations in humans. In this background, it became essential to do the much-needed exploration for awakening, and establish it in human tradition.

जीवन का स्वरूप, कार्य और शरीर के साथ कार्य विधि इस मुद्दे पर विश्लेषण निष्कर्ष निकालने के विधि को प्रस्तुत किया जा चुका है । इसमें मूलत: विकास के मंजिल में जीवन ही जागृति क्रम में कल्पनाशीलता, विश्लेषण कार्य, चित्रण, चिन्तन सहज मौलिकता, बोध सम्पदा और अनुभव सहज वैभव को हर व्यक्ति अनुभव करने की आवश्यकता बनती है । जीवन में उक्त सभी क्रियाएँ कम से कम कल्पनाशीलता उससे अधिक विश्लेषण से मानव परंपराएँ व्यंजित होता देखा गया है । ऐसे विश्लेषणों को अधिकतर चित्रित करने का कोशिश किया गया है। जबकि चिन्तन से ही मानव अपेक्षा और जीवन अपेक्षा स्पष्ट हुआ। बोध और अनुभव पूर्णतया जीवनापेक्षा और मानवापेक्षा को सार्थक बनाने के कार्यक्रम से सम्पन्न हो जाता है। इसे सार्थक बनाने के क्रम में ही सार्वभौम व्यवस्था और अखण्ड समाज रचना विधि-यह दोनों सुस्पष्ट हो जाता है। इसलिये मानव परंपरा में अनुभवमूलक कार्य परंपरा स्थापित होना सहज है क्योंकि मानवापेक्षा की कसौटी में ही जीवन अपेक्षा की सफलता प्रमाणित होना है । इस प्रकार अनुभवमूलक ज्ञान, विज्ञान, विवेक, विचार, विश्लेषण व्यवहार में प्रमाणित होने की पद्धति प्रणालियाँ परम्परा में सार्थक होना, चरितार्थ होना समीचीन है ।

The true form of jeevan, its activities and its way of working with the human body - the analysis and way to draw conclusions on these points have already been presented. In all this, it is the jeevan itself in the awakening progression which engages in imaginativeness, analysis, visualisation, contemplation, enlightenment and grandeur of realisation - towards the goal of development desired by all humans. It has been seen that human traditions have benefitted from the above activities, at least to some extent from imaginativeness, and to a large extent from analysis. Attempts have been made to present the detailed visualisations of such analysis. However, the clarity about human expectation and jeevan expectation developed only by contemplation. Enlightenment and realisation are completely achieved by the program to accomplish jeevan expectation and human expectation. In the process of such accomplishment, the process of creation of universal systems and indivisible society, both these become explicitly clear. Thus, the realisation based tradition getting established in human tradition is natural because evidence of success in jeevan expectation happens only when it passes the test of human expectation. In this manner, meaningfulness & actualisation in human tradition - of realisation rooted knowledge, science, wisdom, thoughts and analysis, and methods & processes for evidencing in practice - is natural and within reach.

अनुभवमूलक ज्ञान को जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान के रूप में विज्ञान को अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व का विश्लेषण विधि से, विचारों को अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन के रूप में, विवेक को यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता के आधार पर विवेचना करने के आधार पर जान लिया, मान लिया, पहचान लिया गया है । इसे निर्वाह करने के क्रम में अभिव्यक्ति संप्रेषणा कार्य भी है । संप्रेषणा क्रम में ही मानवीयतापूर्ण आचरण, परिवार और परिवार व्यवस्था में भागीदारी का रूप होता है । इसी प्रकार, विश्व परिवार व्यवस्था में भागीदारी समीचीन रहती ही है । यह जागृत मानव का विशाल और विशालतम स्थिति में प्रमाणित होने का रूप है । मानवीयतापूर्ण आचरण, मानवीयतापूर्ण व्यवस्था में भागीदारी अविभाज्य कार्य है इसका सामान्य अपेक्षा हर मानव में देखने को मिलता ही है । इसे परिष्कृत और समाधानित रूप देना ही जागृत परंपरा है । इस प्रकार अभी तक इस धरती पर विभिन्न समुदायों के द्वारा भोगा गया भ्रमित परंपरा का कारण मानव का ही भ्रम होना स्पष्ट हो चुका है । इसी के साथ यह मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा सहज लक्ष्य पूर्ति में, से, के लिये जागृति परंपरा की सम्भावना और उसकी समीचीनता भी स्पष्ट हुई ।

Realisation-rooted knowledge in the form of knowledge of jeevan, knowledge of coexistence and knowledge of humane conduct; science by way of analysis of existence as coexistence; thoughts in the form of existence-rooted human-centred contemplation; wisdom on the basis of pondering over reality, actuality & verity - all these have been known, believed and recognised. The activities of expression & communication also get included in the process of their fulfilment. It is in the process of communication indeed that humane conduct, and participation in family & family-system takes place. Participation in the world family system is a natural extension of this. This is indeed the significant and most significant form of evidence of awakened humans. Humane conduct and participation in humane systems are integrated with each other, and its usual expectation is found in all humans. To refine and resolve these is indeed the humane tradition. Thus, it is clear that delusion of humans is the main cause of sufferings faced by various sects in deluded human traditions. Side by side, clarity about the possibility and naturality of establishment of humane tradition in, by & for achieving the goals of human expectation and jeevan expectation, also emerged.

जागृति कार्य परम्परा में अनुभवमूलक विधि से ही प्रामाणिकता का बोध-संकल्प, प्रामाणिकता का चिंतन-चित्रण न्याय, धर्म, सत्य सहज तुलन, विश्लेषण, मानवीय मूल्यों का आस्वादन और चयन सहित जीवन कार्य प्रणाली और शैली स्थापित होना ही जागृति परंपरा का, जागृत मानव का प्रमाण है। यह भी सर्वविदित है, जागृत मानव ही जागृत परंपरा का संस्थापक, धारक-वाहक होना सहज है । इस प्रकार जागृत शैली का तात्पर्य अभिव्यक्ति, संप्रेषणों, कार्य व्यवहार के रूप में स्पष्ट होना ही जागृत परंपरा के नाम से इंगित आशय है।

In the awakened tradition, establishment of lifestyle & routine based on enlightenment & resolve of authenticity; contemplation & visualisation of authenticity; deliberation & perspective in, by & for justice, dharma & truth; tasting & selection of human values, by the realisation rooted method, is the evidence of the awakened tradition as well as of awakening in humans. It is also well-known that it is only the awakened humans who are founders and bearer holders of the awakened tradition. In this manner, assimilation of expression & communication of awakening in a clear manner in work and behaviour is indeed the meaning & intent of the awakened tradition.

शरीर के किसी अंग-अवयव में न्याय, समाधान, सत्य की प्रतीक्षा, अपेक्षा शरीर सहज ज्ञानेन्द्रिय कार्यों कर्मेन्द्रिय कार्यों में दिखाई नहीं पड़ती । जैसा-हाथ को न्याय की अपेक्षा, आँख, कान, जीभ और नाक में न्याय, समाधान, सत्य की अपेक्षा चिन्हित रूप में समझने का कितना भी कोशिश करें निषेध ही निकलता है । ज्ञानेन्द्रियों में जब ज्ञान का अपेक्षा स्वरूप रूपी न्याय, समाधान, सत्य कान, आँख, नाक व्यंजित नहीं कर पाता है अपितु, इनमें उन-उन ज्ञानेन्द्रियों के लिये अनुकूल वस्तुओं का संयोग (सन्निकर्ष) अच्छा लगना होता है । यह अच्छा लगा किसको ऐसा पूछा जाए हाथ, नाक, कान आँखों में अच्छाइयों का कोई गवाही स्थित नहीं रहता है ।

Expectation of justice, resolution & truth is not observed in any part of the human body; nor is it seen in the working of any sensory or work organs. For example, whatever attempts we may make to identify and attach the expectation of justice, resolution & truth in hands, eyes, ears, tongue and nose, nothing comes out of it. The expectation of knowledge in the form of justice, resolution & truth is not expressed by sensory organs like ears, eyes, nose; the proximity to favourable or conducive objects and surroundings for respective sensory organs comes under the category of ‘liking’. When asked ‘who liked this’, then no evidence of this liking is found in hands, nose, ears & eyes.

यह सब जब स्पष्ट हो जाता है तब पुन: यह प्रश्न हो सकता है शरीर की आवश्यकता ही क्यों ? जिसका अक्षुण्ण उत्तर यही है कि मानव परंपरा में जीवन जागृति और उसकी प्रामाणिकता को प्रमाणित करना है । ऐसी महिमा सम्पन्न उद्देश्य पूर्ति क्रम में मानव अपेक्षा, जीवन अपेक्षा सार्थक हो जाता है । मानव अपेक्षाओं का संपूर्ति, परिपूर्ति, आपूर्ति क्रम में न्याय और नियम, समाधान प्रमाणित हो जाता है । वह भी चिन्हित रूप में प्रमाणित हो जाता है । हर जीवन का ही कार्य वैभव और फलन है । इसका सिद्धांत यही है कि अधिक शक्ति और बल, कम शक्ति और बल सम्पन्न माध्यम के द्वारा प्रकाशित होता है । जीवन अक्षय शक्ति, अक्षय बल सम्पन्न इकाई है । प्राण कोषाओं का शक्ति और बल उसके रचना के आधार पर सीमित रहता ही है। क्योंकि हर रचना का विरचना क्रम जुड़ा ही रहता है । इस आधार पर इस धरती पर जितने भी प्राण कोशाओं की रचना है शीघ्र परिवर्ती है, भौतिक रचनाएँ दीर्घ परिवर्ती है । इसीलिये मानव शरीर प्राण कोशाओं से रचित रहने के लिये इसमें परिवर्ती कार्य घटना समीचीन रहता ही है। इस प्रकार शरीर बल और शक्ति अपने व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होते हुए सीमित और जड़ कोटि में गण्य होना पाया जाता है। रचना सहज श्रेष्ठता मेधस रचना और मेधस तंत्रणा ही प्रधान है । हृदयतंत्र मेधस तंत्र यही मुख्य तंत्र है ।

When all this becomes clear, then a subsequent question can arise: Why is the human body needed at all? Its unwavering answer is that evidence of awakening needs to be produced in human tradition. In the process of accomplishing this magnificent goal, human expectation and jeevan expectation is fulfilled. In the process of fulfilling human expectations, justice, laws & resolution is evidenced. Human expectation is also fulfilled. Its grandeur and fructification are dependent only on jeevan, or on every jeevan. The principle behind this is that higher strength & power manifest through a medium which has lower strength & power. Jeevan is an entity endowed with inexhaustible power & strength. Biological cells have finite power and strength based on their composition. Each composition is linked with the chain of decomposition. Continuing with this, all biological compositions on this planet change more rapidly than the physical compositions. Therefore, the human body, consisting of biological cells, also undergoes changes. Thus, the physical strength & power of the human body, even when evidently in harmony, is finite and is categorised as insentient. As far as compositions are concerned, the brain and nervous system are the finest compositions. Brain and the nervous system are among the best compositions. Cardiac systems and nervous systems are the main systems.

इस प्रकार शरीर में मेधस और मेधस तंत्र हृदय और हृदय तंत्र सह-अस्तित्व में शरीर व्यवस्था कार्य सम्पन्न होना मानव शरीर के लिये रस, रसायन स्रोत, पाचन परिणाम, अनावश्यकता का विसर्जन, ये सब तंत्रणाएँ ऊपर कहे गये दोनों तंत्रों के आधार पर कार्यरत रहना पाया जाता है। इसी को शरीर व्यवस्था का नाम दिया जाता है । शरीर जीवन्त न रहने की स्थिति में स्वतंत्र रूप में आहार आदि क्रियाओं का सम्पादन नहीं हो पाता है और ज्ञानेन्द्रियों का क्रियाकलाप शून्य हो जाता है । ऐसे बहुत सारे उदाहरणों को मानव ने देखा है । इससे यह स्पष्ट होता है- शरीर को जीवन्त बनाए रखने का मूल तत्व जीवन ही है । जीवन ज्ञान के साथ-साथ ही यह तथ्य स्वीकार हो पाता है । तब तक भ्रमित रहना भावी है ही । भ्रम का सबसे चिन्हित गवाही यही है-शरीर को जीवन समझना। शरीर को जीवन समझने के मूल में जीवन सहज कल्पना ही आधार है । यह भ्रमित रहने के कारण ऐसा मानना होता है। फलस्वरूप जीवन अपेक्षा के विपरीत, मानव अपेक्षा के विपरीत घटित होता है यही कारण रहा है जागृति विधि को मानव परंपरा को अपनाने के लिये आवश्यकता बलवती हुई।

In this way, in the coexistence of brain and nervous system, and of heart and cardiac system, harmonious working of the human body is seen; working of all other systems like creation of bodily fluids & chemicals, digestion, and excretion are dependent on proper functioning of these two systems. This has been called harmony in the body. When the body is not alive, functions like intake of food are not accomplished independently, and functioning of sensory organs also stops. Many such examples have been seen by humans. Thus, it becomes clear that jeevan is indeed the basic element which keeps the body alive. It is only with the enhanced knowledge of and conceptual understanding of jeevan that this fact becomes acceptable. Till then, one is bound to remain in delusion. The most glaring proof of delusion is - assuming the body itself to be the jeevan. Actually, it is the imaginativeness in jeevan itself which is at the root of assuming the body to be the jeevan. It occurs because of being in delusion. As a result, events happen which are in contradiction to jeevan expectation and human expectation; this is the reason the need for including the method of awakening in human tradition was strongly felt.

**दृष्टा पद का सर्वप्रथम उपलब्धि शरीर का दृष्टा होना ही है ।** शरीर का दृष्टा होने के आधार पर ही ऊपर इंगित किये गये तथ्य स्पष्ट हुआ है । उक्त तथ्यों को हृदयंगम करने से जागृति की संभावना समीचीन होती ही है । इसी आशय से यह अभिव्यक्ति है । दृष्टा होने का सतत फलन यही है हर स्थिति-गति, योग-संयोग, फल-परिणाम परिपाक और प्रवृत्तियों का मूल्यांकन होना सहज हो जाता है । जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान सम्पन्न मानव मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान का मूल्यांकन, अस्तित्व सहज प्रयोजन का मूल्यांकन करता है । यह महिमा अस्तित्व कैसा है स्पष्टतया समझने के उपरान्त सफल हो जाता है और सफल होना देखा गया है ।

**Ability to see the body is the foremost achievement of the seer plane.** It is on the basis of the ability to see the body indeed that the above mentioned facts became clear. By internalising these facts, the possibility of awakening increases. This is the intent behind expressing all this. End result of being in the seer plane is the ability to naturally evaluate all situations, incidents & co-incidents, maturation of consequences, and tendencies. A person accomplished in knowledge of jeevan and in knowledge of existence is able to evaluate what is humane conduct and what is the purpose in existence. Success is achieved in this only after clearly understanding the existence, and such success has been achieved.

अस्तित्व सम्पूर्ण सत्ता में संपृक्त सह-अस्तित्व होने के रूप में अपने वैभव को चारों अवस्था में प्रकाशित किया है। यही वर्तमान का मतलब है। जीवन का स्वरूप, स्वीकृति और उसका अनुभव प्रतिष्ठा ही जीवन ज्ञान का तात्पर्य है । अस्तित्व सहज स्वरूप जैसा है इसका स्वीकृति और उसमें अनुभव स्वयं में से स्फूर्त प्रवृत्त सह-अस्तित्व दर्शन का तात्पर्य है । जीवन ज्ञान सह-अस्तित्व सहज के प्रकाश में ही अस्तित्व दर्शन सबको सुलभ होता है । इसलिये जीवन ज्ञान पर बल दिया जाता है । विद्या का तात्पर्य ही ज्ञान है ।

Existence, as nature saturated in Omnipotence, has exhibited its grandeur in the form of four orders. Existence is always present, this is the meaning of present. The true form of jeevan, its acceptance and the state of its realisation - this indeed is the meaning of knowledge of jeevan. The acceptance of existence as it is, and the state of its realisation - this indeed is the meaning of knowledge of existence. It is only with the knowledge of jeevan in light of coexistence that the knowledge of existence becomes accessible to everyone. That’s why emphasis is given to the knowledge of jeevan. Learning means knowledge.

यहाँ इस तथ्य का भी स्मरण रहना आवश्यक है-जिन बातों को विद्या अथवा ज्ञान आदिकाल से कहते आ रहे हैं वह कल्पना क्षेत्र में ही सीमित रह गया । इसका साक्ष्य यही है जिसको ज्ञान, आत्मा, देवता कहते हुए सम्पूर्ण साधना, उपासना, अर्चना का आधार मान लिया गया है । वह सब मन, बुद्धि का गोचर नहीं है । मन, बुद्धि को जड़ क्रिया मानते हुए ज्ञान चेतना इनके पहुँच से बाहर है ऐसे ही उद्बोधन करते आये । इसके बावजूद बहुत सारे किताब इन्हीं मुद्दे अथवा नाम पर लिखा गया है । उल्लेखनीय तथ्य यही है कि जीवन ज्ञान - जीवन में, से, के लिये ही होता है । सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, सह-अस्तित्व में, से, के लिये ही होता है । इन दोनों विधाओं का दृष्टा जीवन ही होना पाया जाता है फलस्वरूप मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान विधि से दृष्टा पद की महिमा स्पष्ट है । इस विधि से जीवन ज्ञान अर्थात् देखने समझने वाला, दिखने वाला भी जीवन सहित होना स्पष्ट हुआ । देखने वाला जीवन, दिखने वाला सह-अस्तित्व यह अस्तित्व दर्शन के रूप में स्पष्ट हुआ। जीवन सह-अस्तित्व में अविभाज्य वर्तमान होने के आधार पर जीवन का अस्तित्व भी सहज होना पाया जाता है ।

It is important to remember here that whatever has been identified since the ancient times as learning or knowledge, remains confined to imagination. The fact that all the words like knowledge, atma, gods which were assumed to be the basis of sadhana, worship & offerings, are not perceptible by mun and buddhi, is its proof. Mun and buddhi are insentient, and knowledge and consciousness are beyond their reach, such proclamations have also been made. In spite of all this, many books have been written precisely on these points, using these very nouns. Main point to note here is that the knowledge of jeevan is in, by & for jeevan. Knowledge of coexistence is in, by & for coexistence. Jeevan is indeed the seer of both of these segments of knowledge, and as a result, magnificence of the seer plane becomes clear by way of humane conduct. In this way, the knowledge of jeevan became clear; in other words, it became clear that the entity which is seeing and understanding, and the entity being seen, also comprises jeevan. Knowledge of coexistence became clear as - jeevan is the entity which is seeing, and what is being seen is coexistence. As jeevan is an integral part of coexistence, existence of jeevan too is found to be natural.

प्रमाणों के मुद्दों पर अध्यात्मवाद सर्वप्रथम शब्द को प्रमाण मान लिया गया । तदनन्तर, पुनर्विचार पूर्वक आप्त वाक्यों को प्रमाण माना गया । तीसरा प्रत्यक्ष, आगम, अनुमान को प्रमाण माना गया । ये सभी अर्थात् तीनों प्रकार के प्रमाणों के आधार पर अध्ययनगम्य होने वाले तथ्य मानव परंपरा में शामिल नहीं हो पाये । इसी घटनावश इसकी भी समीक्षा यही हो पाती है यह सब कल्पना का उपज है । शब्द को प्रमाण समझ कर कोई यथार्थ वस्तु लाभ होता नहीं । कोई शब्द यथार्थ वस्तु का नाम हो सकता है । वस्तु को पहचानने के उपरान्त ही नाम का प्रयोग सार्थक होना पाया गया है । इसी विधि से शब्द प्रमाण का आशय निरर्थक होता है । **‘‘आप्त वाक्यं प्रामाण्यम् ।’’** आप्त वाक्यों के अनुसार कोई सच्चाई निर्देशित होता हो उसे मान लेने में कोई विपदा नहीं है। जबकि चार महावाक्य के कौन से चार महावाक्य रूप में जो कुछ भी नाम और शब्द के रूप में सुनने में मिलता है उससे इंगित वस्तु अभी तक अध्ययन परंपरा में आया नहीं है ।

As far as evidence is concerned, initially under spiritualism, words were assumed to be the evidence. Thereafter, credible sentences were taken as the evidence. Thirdly, apparent, prediction & presumption were assumed to be the evidence. Facts worthy of studying as per these three types of evidence could not be included in human tradition. It is a clear indication that all this is the result of pure imagination. Reality is not grasped or understood by assuming words to be the evidence. A word can be a name indicating a reality. It has been concluded that the name of a reality is significant only after recognising the reality. In this manner, the assumption that words are the evidence is proven to be meaningless. It has been mentioned that **‘credible sentences are the evidence’**. If credible sentences actually indicate some reality, there is no harm in accepting them. However, study of the facts & realities indicated by the names and words used in the four epic sentences, is yet to become part of human tradition.

आप्त वाक्य जब अध्ययनगम्य नहीं है, मान्यता के आधार पर ही है, तर्क तात्विकता की कड़ी है, अध्ययन तर्क संगत होना आवश्यक है। ऐसे में आप्त पुरूषों को भी कैसे पहचाना जाय? यह प्रश्न चिन्हाधीन रह गया । कोई भी सामान्य व्यक्ति भय, प्रलोभन और संघर्ष से त्रस्त होकर किसी को आप्त पुरूष मान लेते हैं तब उन्हीं के साथ यह दायित्व स्थापित हो जाता है आपने कैसे मान लिया। इसके उत्तर में बहुत सारे लोग मानते रहे, अथवा मैं अपने ही खुशी से मान लिया हूँ-यही सकारात्मक उत्तर मिलता है । ऐसा बिना जाने ही मान लेने के साथ ही सम्पूर्ण प्रकार से कल्याण होने का आश्वासन भी देते हैं साथ ही सारे मनोरथ या मनोकामना पूरा होने का आश्वासन देते हैं । ऐसा आश्वासन स्थली, आश्वासन देने वाला व्यक्ति के संयोग से आस्थावादी माहौल (भीड़) का होना देखा गया है । ऐसे भीड़ से कोई एक अथवा सम्पूर्ण भीड़ के द्वारा जीवन अपेक्षा, मानवापेक्षा फलीभूत होता हुआ इस सदी के अंतिम दशक तक देखने को नहीं मिला ।

When epic sentences are not studiable, they can be said to be based only on assumptions; logic is the link to understanding the reality, and it is essential for all study to be logical. In this background, how to recognise credible persons? This question remains unanswered. When common persons, under fear, temptation or distress, accept someone as a credible person, it is safe to assume that such common persons themselves can explain how they accepted someone as credible. Everyone else was accepting them and so did I, or I accepted them on my own accord - this is the general answer we receive. All such faith-based acceptances of credible persons are accompanied with assurances of well-being and fulfilment of all wishes and desires. A large following and crowd of faithfuls is seen at such places and with all such persons. Whether the jeevan expectation or human expectation of the crowd, or anyone from the crowd, has fructified till the last decade of the twentieth century, is yet to be seen.

जहाँ तक प्रत्यक्ष की बात है ज्ञानेन्द्रिय गोचर अथवा इन्द्रिय सन्निकर्ष के नाम से इंगित कराया गया है । आँखों से अधिक कल्पना में, कल्पना से अधिक समझ में और समझ से अधिक अनुभव में आता है । इन तथ्यों को पहले स्पष्ट कर चुके हैं । अतएव आँखों में सम्पूर्ण वस्तु का प्रतिबिम्ब नहीं आता है, समझ में आता है । इस विधि से प्रत्यक्ष कोई प्रमाण होता ही नहीं है। अनुमान पूर्णतया कल्पना क्षेत्र है । अनुमान में नहीं आया हो, भविष्य में आने वाला हो ऐसे घटना को आगम भी नाम दिया गया है । अनुमान ही जब कल्पना हो गई-आगम भी कल्पना ही होगा । काल्पनिक निर्णय, प्रवृत्तियाँ, प्रयास किसी गम्य स्थली को प्रमाणित नहीं करता । इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुमान आगम का समीक्षा स्पष्ट हुई है । इसी के साथ आप्त वाक्य और शब्द प्रमाण का भी समीक्षा प्रस्तुत हो चुकी है ।

As far as ‘apparent’ is concerned, it has been indicated in tradition by the sensory proximity or proximity to sensory organs. Imagination captures more than eyes, understanding captures more than imagination, and realisation captures more than understanding. These facts have already been explained. Therefore, what is projected on the eyes does not capture the complete reality; it is captured by understanding. Hence, ‘apparent’ can not be the basis of any evidence at all. ‘Presumption’ is completely in the realm of imagination. ‘Prediction’ is the name given to incidents or phenomena which are not yet imagined but shall occur in future. When ‘presumption’ itself is imagination, ‘prediction’ has also to be imagination. Decisions, tendencies and efforts based on imagination don’t help us in achieving our goals. This completes the incompleteness of apparent, presumption and prediction. Appraisal of evidence of credible words & sentences has also been completed already.

जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण विधि से अनुभव, व्यवहार और प्रयोग ही प्रमाणों के रूप में होना देखा गया है । देखने का तात्पर्य समझने से है । ये तीनों हर मानव में घटित होने वाली घटनाएं है । मानवीयतापूर्ण विधि से मानव परंपरा अभिभूत होने की स्थिति में, (अभिभूत होने का तात्पर्य ओत-प्रोत होने से है) प्रत्येक मानव अपने में परीक्षण, निरीक्षण पूर्वक अनुभव को सत्यापित करना बनता है । मानवीयतापूर्ण व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी, आचरण का संयुक्त स्वरूप ही है । इसमें मानव का विचार शैली, अनुभव बल समाहित रहता ही है । प्रयोग कार्यों में जो कुछ भी किया जाता है विचार शैली और व्यवहार, प्रयोजन का सूत्र समाहित रहना पाया जाता है । इस सार्थक विधियों से मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा में सार्थक होना पाया जाता है ।

It is the realisation, behaviour and experimentation indeed which have been seen as the evidences by way of knowledge of jeevan, knowledge of existence and knowledge of humane conduct. Here, seeing means understanding. Potential for all these three is present in every person. When humaneness prevails (prevails here means commingled) in human tradition, all humans are able to affirm realisation by way of examination & inspection in oneself. Humane behaviour is the combined form of participation in systems and humane conduct. Thought process and the strength of realisation are naturally inherent in it. Thought process and behaviour, as well as the purpose, are inherent in whatever experiments humans do. Success is achieved in human expectation and jeevan expectation by using these methods.

अतएव यह स्पष्ट हो गया है कि मानव परंपरा में प्रमाण और प्रमाणीकरण का मूल स्रोत अनुभव ही है । यही विचार शैली, व्यवहार कार्य और प्रयोग कार्यों में प्रमाणित होता है । इसलिये अनुभव प्रमाण ही परम प्रमाण है, यह स्पष्ट हो जाता है । इसीलिये मानव परंपरा अनुभवमूलक विधि से ही सार्थक होना स्पष्ट हो चुकी है । अनुभव सहज अभिव्यक्ति ही दृष्टा पद एवम् प्रमाण परंपरा का प्रमाण है ।

Thus it has become clear that the main source of evidence and establishment of evidence in human tradition is realisation. This itself becomes evident in thought process, work & behaviour, and experiments. Thus it becomes clear that evidence of realisation is the ultimate evidence. It has already become clear that human tradition becomes successful by the realisation rooted method. Expression based on realisation is indeed the evidence of the seer plane and the tradition of evidence.

जागृत जीवन व जागृतिपूर्ण जीवन ही अपने कार्य व्यवहार, विचार और प्रयोगों को प्रमाणित करना ही जीवन दृष्टा पद प्रतिष्ठा मानव जागृति सहजता में होने का प्रमाण है । जीवन सहज अनुभव बल के आधार पर जीवन के सम्पूर्ण क्रियाएं अभिभूत होने के फलस्वरूप यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता का स्वीकृति होना व उसकी अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन सहज होना पाया जाता है । सम्पूर्ण सत्य स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रूप में ज्ञानगम्य विधि से दृश्यमान होना पाया गया है । क्रम से सह-अस्तित्व में ही दिशा, काल, देश, रूप, गुण, स्वभाव, धर्म सहज अध्ययन चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से बोध अनुभव ही है । यह हर जागृत मानव के समझ में होता ही है । मानवीयता पूर्ण व्यवहार सहज विधि से अर्थात् मानवीयतापूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने से इसी स्थिति में, इसी गति में हर व्यक्ति दृष्टापद अनुभव समाधान का प्रमाण प्रस्तुत करना सुगम, सार्थक होना समीचीन रहता ही है । इन्हीं तथ्यों के आधार पर मानव दृष्टा होना सह-अस्तित्व में अनुभव है, प्रमाणित होता है ।

Evidencing one’s work & behaviour, thoughts and experiments by awakened and fully awakened jeevan is indeed the evidence of jeevan’s being established in seer plane as well as being effortlessly in the state of awakening. As a result of all activities of jeevan getting inspired by the strength of realisation in jeevan, acceptance of reality, actuality & verity and their expression, communication & exposition occurs effortlessly. All truth has been understood, by way of knowledge, as absolute truth, relative truth & objective truth. Conceptual understanding and realisation is achieved by way of consciousness development value education by study in coexistence of direction, time, place, form, attributes, intrinsic nature & dharma. This is invariably part of the understanding of every awakened human. In this state and by such living, it is feasible and achievable for everyone to produce evidence of seer plane, realisation & resolution by way of humane behaviour, in other words by participating in indivisible society & universal system by way of humane conduct. Based on these facts, it is evident that being in seer plane means realisation in coexistence.

पूर्वावर्ती विचार में रहस्यमयी ईश्वर केन्द्रित विचार के अनुसार ईश्वर ही कर्ता-भोक्ता होना भाषा के रूप में बताते रहे। इसी के आधार पर ब्रह्म, आत्मा या ईश्वर सबका दृष्टा होना बताने भरपूर प्रयास किये । यह मुद्दा रहस्य होने के आधार पर अभी तक वाद-विवाद में उलझा ही हुआ है । जबकि सह-अस्तित्ववाद जीवन ही मानव परंपरा में दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहित कर्ता व भोक्ता के रूप में सफल होना देखा गया है । जागृति का प्रमाण केवल मानव परंपरा में ही होता है ।

जितने भी विधा से सह-अस्तित्व, जीवन और मानवीयतापूर्ण आचरण संगत विधि से किया गया तर्क से, विश्लेषण से, किसी भी दो ध्रुवों के बीच त्व सहित व्यवस्था सहज कार्य प्रणाली से, जीवनापेक्षा अर्थात् जीवन मूल्य और मानवापेक्षा अर्थात् मानव सहज लक्ष्य के आधार पर और सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज क्रम को जानने-मानने-पहचानने, निर्वाह करने के आशयों से अवधारणाएँ सहज रूप में ही जीवन में स्वीकार हो जाता है ।

As per the erstwhile mysterious God centred thoughts, it is indeed the God which has been described in literature as the doer & enjoyer. On this basis, a lot of efforts were made to convince that Brahma, atma or God is the seer of all. Due to its being based on mystery, this point is still a matter of debate and dispute. On the other hand, in the co-existential thought, it is the jeevan, established the seer plane in human tradition, which has been seen to be successful as doer and enjoyer. Evidence of awakening occurs only in human tradition.

Logic and analysis done in any which way by methods aligned with coexistence, jeevan and humane conduct, interaction between any two points of orderliness, based on jeevan expectation and human expectation, intentions and understanding of the concepts of knowing, believing, recognising & fulfilling, of universal system & indivisible society, become naturally acceptable in & by jeevan.

इस क्रम में इस तथ्य का उद्घाटन चेतना विकास मूल्य शिक्षा-संस्कार विधि से होता है जीवन ही सार्थकता के लिये जागृत होता है । सार्थकता में जीना ही भोगना है । सार्थकता के लिये ही जागृतिपूर्ण विधि से सभी कार्य व्यवहार करता है । जागृति ही दृष्टा पद सहज प्रमाण है । करना ही कर्ता पद है और जीवनापेक्षा और मानवापेक्षा को भूरि-भूरि विधि से जीना ही भोक्ता पद है । शरीर केवल करने के क्रम में एक साधन के रूप में उपयोगी होना देखा गया है । अध्ययन क्रम में भी सार्थक माध्यम होना देखा गया । अध्ययन-अध्यापन करना भी कर्ता के संज्ञा में ही आता है । दृष्टा पद में पूर्णतया जीवन ही जागृति के स्वरूप में प्रमाणित होता है । यह प्रमाण जान लिया हूँ, मान लिया हूँ, प्रमाणित कर सकता हूँ के रूप में स्थिति के रूप में अध्ययन का प्रयोजन होता है । अर्थात् हर व्यक्ति में जागृति स्थिति में होता है, भोगने का जहाँ तक मुद्दा है, मानवापेक्षा सहज समाधान समृद्धि को भोगते समय में सम्पूर्ण भौतिक-रासायनिक वस्तुओं का शरीर पोषण, संरक्षण, समाज गति के अर्थ में अर्पित, समर्पित कर समृद्धि को स्वीकार लेता है । जहाँ तक समाधान, अभय और सह-अस्तित्व में जीवन ही अनुभव करना देखा गया है । जीवनापेक्षा संबंधी सुख, शांति, संतोष आनन्द का भोक्ता केवल जीवन ही होना देखा गया है ।

In this process, the fact that it is the jeevan itself which becomes awakened for meaningfulness by way of consciousness development value education, becomes clear. Living with meaningfulness indeed is enjoyment. It is only for meaningfulness that it does all the work & behaviour by way of awakening. Awakening indeed is the evidence of the seer plane. Doing indeed is the doer plane, and to fully realise jeevan expectation and human expectation indeed is the enjoyer plane. It has been seen that the human body is useful only to the extent that it is a medium (or resource) for the doing part. It has a role during the process of study too. Studying & teaching is also categorised as doing. It is the jeevan in the seer plane which becomes evident as awakened. The purpose of studying is to reach a state of - now I know the evidence, now I believe the evidence, and now I can produce the evidence. In other words, when awakening occurs in a person, it is in the state of the person; as far as enjoyment is concerned, in the process of enjoying resolution & prosperity, a person accepts prosperity for offering all physico-chemical objects for nourishment & protection of the body, as well as for societal functioning. Also, it has been observed that realisation of resolution, fearlessness and coexistence occurs only in jeevan. Jeevan itself has been observed to be the enjoyer of jeevan expectation which is happiness, peace, contentment & bliss.

**ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाता :** के रूप में भी चर्चाएँ प्रचलित रही है । इस संदर्भ में भी कोई अंतिम निष्कर्ष अध्ययन गम्य होना सम्भव नहीं हुआ था। अब अस्तित्वमूलक, मानव केन्द्रित चिन्तन, विचार अध्ययन और प्रमाण त्रय के अनुसार ज्ञान जीवन कार्यकलाप ही है। इसे अन्य भाषा से जागृतिपूर्ण जीवन कार्य कलाप ही ज्ञान है । सह-अस्तित्व ज्ञेय है अर्थात् जानने योग्य वस्तु है । सह-अस्तित्व में जीवन अविभाज्य रूप में वर्तमान रहता है । जीवन नित्य होना सुस्पष्ट हो चुकी है । इसलिये जीवन जागृति के अनन्तर जागृति की निरंतरता स्वभाविक है । इन तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है **जागृत जीवन ही ज्ञाता है । जीवन सहित सम्पूर्ण अस्तित्व ही ज्ञेय है और जागृत जीवन का परावर्तन क्रियाकलाप ही ज्ञान है ।**

**Knowledge, to-be-known, knower :** have also been part of discussions for long. Here also, it has not been possible in tradition to reach any definite conclusions. Now, according to the existence based human centred contemplation, thought, study and evidence-trio, the activity of knowledge pertains to jeevan itself. To further elaborate, activities of fully awakened jeevan itself is knowledge. Coexistence is the content of knowable, or the reality to be known. Jeevan remains present as an integral part of coexistence. Jeevan is eternal, this has already been clearly explained. Therefore, continuity of awakening is natural after awakening of jeevan. Based on these points, it becomes clear that **awakened jeevan itself is the knower. The whole existence, along with jeevan, is to-be-known, and projection activities of awakened jeevan itself is knowledge.**

सह-अस्तित्व ही अनुभव करने योग्य समग्र वस्तु है यह स्पष्ट हो चुकी है । अस्तित्व स्वयं सत्ता में संपृक्त प्रकृति के रूप में स्पष्ट है । अस्तित्व में अनुभूत होने की स्थिति में सत्तामयता ही व्यापक होने के कारण अनुभव की वस्तु बनी ही रहती है । इसी वस्तु में सम्पूर्ण इकाईयाँ दृश्यमान रहते ही हैं। परम सत्य सहजता सह-अस्तित्व ही होना, अस्तित्व में जब अनुभूत होना उसी समय से सत्तामयता में अभिभूत होना स्वाभाविक है । अभिभूत होने का तात्पर्य सत्ता पारगामी व्यापक पारदर्शी होना अनुभव में आता है । अनुभव करने वाला वस्तु जीवन ही होता है । इस विधि से सत्तामयता को ईश्वर ज्ञान परमात्मा के नाम से भी इंगित कराया है । यही सह-अस्तित्व में अनुभूत होने का तात्पर्य है अर्थात् सत्तामयता पारगामी होने का अनुभव ही प्रधान तथ्य है । अस्तित्व में अनुभव इस तथ्य का पुष्टि होना स्वाभाविक है । सत्ता में प्रकृति अविभाज्य है । सत्ता विहीन स्थली होता ही नहीं है । सत्ता में प्रकृति नित्य वर्तमान रहता ही है ।

Coexistence, in its entirety, is the overall content of realisation, this is already clear. Existence is in the form of nature saturated in Omnipotence, this too is clear. As this Omnipotence itself is omnipresent, in the state of realisation in existence, it remains the content of realisation. It is in this omnipresent reality that all units are always present. Upon realisation that the coexistence itself is the ultimate truth, and upon realisation of the existence, from that very instant, being overwhelmed by omnipotence occurs naturally. Being overwhelmed means the realisation of Omnipotence as permeating, omnipresent & transparent. Jeevan is the entity where realisation occurs. Therefore, Omnipotence has also been called God, knowledge & *paramatma*. This is what is meant by realisation in coexistence; in other words, realising permeative-ness of the Omnipotence is the main point. Realisation in existence naturally corroborates this point. Nature and Omnipotence are inseparable. There is no place devoid of Omnipotence. Nature remains ever-present in Omnipotence.

इस विधि से सत्तामयता का पारगामीयता जड़-चैतन्य प्रकृति ऊर्जा सम्पन्न रहने के आधार पर प्रमाणित हो जाता है । इस विधि से सत्तामयता में ही अविभाज्य रूप डूबे, घिरे हुए व्यवस्था में दिखाई पड़ते हैं । यही परमाणु, अणु, अणु रचित पिण्ड अनेक ग्रह-गोलों के रूप में देखने को मिलता है । यही परमाणु, अणु, अणु रचित रचनायें प्राणावस्था का संसार, जीवावस्था और ज्ञानावस्था का शरीर ही दृष्टव्य है । इन सबका दृष्टा जीवन ही है । सत्ता में अनुभव के उपरान्त ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा निरन्तर होना देखा गया है । इसी अनुभव के अनन्तर सह-अस्तित्व सम्पूर्ण दृश्य, जीवन प्रकाश में समझ में आता है। जीवन प्रकाश का प्रयोग अर्थात् परावर्तन अनुभवमूलक विधि से प्रामाणिकता के रूप में बोध, संकल्प क्रिया सहित मानव परंपरा में परावर्तित होता है । अतएव जागृतिपूर्ण जीवन क्रियाकलाप अनुभवमूलक ज्ञान को सदा-सदा के लिये व्यवहार और प्रयोगों में प्रमाणित कर देता है । यही मानव परंपरा सहज आवश्यकता है ।

In this manner, the conclusion is drawn that permeative-ness of Omnipotence is the basis of insentient and sentient nature remaining endowed with energy. Thus, it is only in the Omnipotence that all units in nature are observed to be inseparably submerged & surrounded, and in harmony. All these are seen in the form of atoms, molecules, their compositions, and various planets. These very atoms, molecules and their compositions are observed as the plants order, and bodies of animal order & knowledge order. Jeevan is indeed the seer of all this. It has been observed that continuous establishment in the seer plane occurs only after realising the Omnipotence. Only after this realisation does one understand, in light of knowledge of jeevan, that coexistence is indeed the complete scene. Use of this understanding, or of projection, is established in human tradition by the realisation rooted method in the form of authenticity along with the activities of enlightenment & resolve. Thus, activities of fully awakened jeevan establish the realisation rooted knowledge in human tradition, forever, by way of behaviour & experimentation. This is precisely the need in, by & for human tradition.

अस्तित्व में अनुभव का परावर्तन = प्रामाणिकता = ज्ञान विवेक विज्ञान = (परावर्तन में)

अस्तित्व में अनुभूत (अनुभवपूर्ण) जीवन = ज्ञाता (प्रत्यावर्तन में)

अस्तित्व = ज्ञेय = सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति

अस्तित्व में अनुभव की स्थिति में ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाता में एकरूपता सह-अस्तित्व के रूप में होना देखा गया है जो ऊपरवर्णित विधि से स्पष्ट है ।

Projection of realisation in existence = authenticity = knowledge, wisdom, science = (in projection)

Jeevan full of realisation in existence = knower (in reflection)

Existence = to be known = nature saturated in Omnipotence

In the state of realisation in existence, uniformity in knowledge, knowable & knower has been seen in the form of coexistence, which is clear from the above explanation.

यह सम्पूर्ण अभिव्यक्तियाँ नियति सहज प्रणाली से ही गुंथी हुई होती है । सह-अस्तित्व सहज सम्पूर्ण क्रियाकलाप, सह-अस्तित्व में पूरकता, उपयोगिता-उदात्तीकरण, रचना-विरचना के रूप में विकास क्रम में दृष्टव्य है । दूसरी धारा विकास, चैतन्य पद जीवन कार्य, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति, जागृति पूर्णता और उसकी निरंतरता ही होना दृष्टव्य है। यह सुस्पष्ट हो गया कि नियति क्रम अपने में विकास क्रम, विकास, जागृतिक्रम व जागृति ही है। यह सम्पूर्ण अभिव्यक्ति ही वर्तमान है ।

All these statements are interlinked by way of destiny. All material activities in coexistence are observed in the development progression in the form of complementariness, usefulness & evolution, and formation & deformation. On the other hand, development is seen as the consciousness plane, jeevan activities, living-world progression, jeevan awakening progression, awakening, complete awakening and its continuity. So this becomes clear that the course of destiny is nothing but development progression, development, awakening progression, and awakening. This complete expression is true at all times.

**कार्य, कारण, कर्ता :** सहज मुद्दे पर भी मानव में चर्चा का विषय रहा है । ऊपर वर्णित दृष्टा, कर्ता, भोक्ता क्रम में कार्य, कारण, कर्ता का स्पष्ट कार्य प्रणाली समझ में आता है । यह मुद्दा रहस्यमय ईश्वर केन्द्रित विचार और अनिश्चियता मूलक वस्तु केन्द्रित विचार के अनुसार सदा-सदा प्रश्न चिन्ह के चंगुल में ही रहते आये । इसका भी कोई समाधान अध्ययनगम्य नहीं हो पाया था । अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित विचारधारा के अनुसार कार्य कारण का दृष्टा जीवन ही है । सत्ता में संपृक्त प्रकृति रूपी सह-अस्तित्व ही कार्य, कारण के रूप में नित्य वर्तमान है । सह-अस्तित्व ही कार्य का कारण रूप है । सह-अस्तित्व ही कार्य रूप है । क्योंकि सह-अस्तित्व में ही सम्पूर्ण नियति सहज क्रियाकलाप दृष्टव्य होना वर्तमान है । अस्तित्व नित्य वर्तमान है ही । अस्तित्व ही नित्य स्थिति रूप में सह-अस्तित्व में ही नित्य गति रूप में जड़-चैतन्य प्रकृति होना स्पष्ट है । सह-अस्तित्व ही अस्तित्व सहज सम्पूर्ण क्रियाकलाप का कारण है और सह-अस्तित्व ही क्रियाकलाप है । अस्तित्व में केवल दृष्टा ही कर्ता पद में होना स्पष्ट है और अन्य सभी पद कार्य पद में ही प्रतिष्ठित है । कार्य-कारण-कर्ता में सामरस्यता ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा का सूत्र बनता है । ऐसी प्रतिष्ठा में ही जीवन जागृति का प्रमाण अनुभवमूलक विधि से व्यवहार में ज्ञान प्रमाणित होना पाया जाता है । **अतएव मानव ही कर्ता पद में है और सम्पूर्ण अस्तित्व ही कार्य-कारण पद में है।** कार्य-कारण विधि से ही कर्ता पद प्रतिष्ठा ज्ञानावस्था में देखा गया है ।

**Activity, cause, doer :** have also been part of discussions among humans. In light of the discussion above on seer, doer & enjoyer, it is now easy to understand activity, cause, doer. This topic has always remained unanswered under the mysterious god centred thoughts as well as under uncertainty based material centred thoughts. None of its answers has become studiable so far. As per existence rooted human centred contemplation, jeevan is the seer of activity & cause. Coexistence, in the form of nature saturated in Omnipotence, is eternally present in the form of activity and cause. Coexistence is indeed the cause of all activity. Coexistence itself is in the form of activity because all destined activities are seen to be happening only in coexistence. It is clear that existence exists eternally. It is clear that existence itself is the form of eternal state, and coexistence manifests itself eternally in the form of sentient and insentient nature. Coexistence is indeed the cause of all activities in existence, and coexistence itself is the activity. Only the seer is in the doer plane in existence, and all other planes are categorised in the activity plane. Harmony in activity, cause & doer leads to establishment in the seer plane. Awakening of jeevan is evidenced only in the seer plane; and knowledge is evidenced in behaviour based on realisation. **Thus, only humans are in the doer plane, and the whole existence is in the activity-cause plane.** It is by way of activity-cause only that the doer plane has been seen in the knowledge order.

**साधन, साध्य और साधक :** का प्राचीन समय से चर्चा और अनुसरण की वस्तु (विषय) मानते हुए चले आता हुआ मानव परंपरा में स्पष्ट रूप में प्रस्तुत है । साधक के रूप में मानव को, साध्य के रूप में मानव व जीवन लक्ष्य को, साध्य और साधक के बीच में दूरी को घटाकर लक्ष्य सामीप्य, सान्निध्य, समरुप्य क्रम में प्रमाणित ही होने के क्रम में प्रयुक्त सभी उपाय साधनों के नाम से जाना जाता है । साधन के रूप में कल्पना किया गया सम्पूर्ण उपाय अनेकानेक उपायों का सम्मिलित स्वरूप में साधक होना देखा गया है । इस विधि में मानव बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक विभिन्न समुदाय परंपराओं में विभिन्न प्रकार के साध्य का नाम प्रचलित किया हुआ देखा गया है । इस प्रकार के साध्य का नाम अनेक होना देखा गया है । अनेक नाम के रूप में प्राप्त साध्य के लिये संतुष्टिदायी वचन प्रणाली जिसको हम प्रार्थना कह सकते हैं । अर्चना प्रणाली जिसको हम पूजा कह सकते हैं, इसे कहके, करके दिखाने का भी प्रक्रियाएँ सम्पन्न हुई है।

**Means, to-be-sought, seeker :** Clarity about these topics which for long have been part of discussions among humans, and are believed in human tradition to be worthy of emulation in living, is presented here. A human is known as seeker; human goal and jeevan goal is known as ‘to be sought’; and all measures used in order to reduce the distance between the seeker and the to-be-sought, to make them closer, together or congruent, are known as means. It has been seen that it is the seeker who imagines all and various measures as means. In this manner, til the last decade of the twentieth century, different names have been given to the seekable (to be ought) in various sectarian traditions. It has been seen that this ‘seekable’ has been called by diverse names. On this course, various soothing, language based compositions evolved for seeking the seekable, which may be called prayers. Some other methods of offerings & rituals also evolved which could be dictated or shown.

इसी आधार पर किसी आकार प्रकार की वस्तु को ध्यान करने की बात भी किया जाता है । ऐसी ध्यान में हर साधक में निहित कल्पनाशीलता का ही प्रयोग होना देखा गया है । ऐसी कल्पनाशीलता का प्रयोग बारबार हर दिन किया जाना भी देखा गया है । इसका अंतिम परिणाम और सार्थक परिणाम निर्विचार स्थिति होना जिसे ‘समाधि’ का भी नाम दिया जाना प्रचलित है। ऐसे स्थिति को भी अर्थात् निर्विचार स्थिति से भी गुजरा गया। भले प्रकार से गुजरने के उपरान्त समाधि का विश्लेषण कार्यक्रमों से और कार्यक्रम संबंधी प्रवृत्तियों से मुक्ति दिखाई पड़ती है । इसी को स्वान्त: सुख और चरमोपलब्धि के रूप में महिमा गायन किये है । जिसका विश्लेषण की कसौटी में कसने पर पता चला निर्विचार स्थिति के उपरान्त मानव का उपयोग शून्य हो जाता है । फलस्वरूप संयम साधना अपनाकर देखा जिसके फलस्वरूप सह-अस्तित्व ही समझ में आया जिसकी सम्प्रेषणा और अभिव्यक्ति में और लोगों को सह-अस्तित्व अध्ययन गम्य होना प्रमाणित हुई । इसी अभिव्यक्ति क्रम में ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ भी मानव सम्मुख प्रस्तुत किया गया ।

On similar lines, recommendations have been traditionally made to meditate on an object of some specified size and shape. In such meditation, imaginativeness inherent in each seeker is applied. Such application of imaginativeness is seen on a daily basis. Reaching a state of thoughtlessness, which is also famously called ‘samadhi’, is its ultimate and significant result. The author underwent this state also, that is the state of thoughtlessness. It was clearly seen after thoroughly undergoing the state of samadhi that it is devoid of any analysis or eagerness to make any programs. This state has been traditionally called self-limited happiness and admired as the ultimate achievement. However, on proper analysis, it was concluded that after achieving the state of thoughtlessness, the usefulness of a person becomes zero. Consequently, *sanyam* & sadhana was adapted as a result of which, coexistence was understood (by the author), and success in its communication & expression to others is evidence of the studiability of coexistence. In the process of this expression, ‘Realisation Centred Spiritualism’ has been presented to humanity.

जहाँ तक मनोकामनावादी अपेक्षाएँ होती है अधिकांश मानव में उसकी आपूर्ति हो ही जाती है जिसे साधना का फल माना जाता है जबकि ऐसी आपूर्तियाँ बिना साधना किये मानव को भी होते रहते हैं । इसीलिये साधना से मनोकामना पूरी हुई इस बात का चिन्हित प्रमाण नहीं मिल पाता है । यह केवल आस्था सूत्र और घटना काल के आधार पर सम्बोधन लगाने की बात आती है । यह सब प्रकारान्तर से भय-प्रलोभन का ही गठबन्धन है जबकि निर्विचार स्थिति में भय-प्रलोभन का कोई प्रभाव दिखाई नहीं पड़ती । अभाव की पीड़ा भी नहीं दिखती । इसीलिये भूत-भविष्य का पीड़ा एवं वर्तमान का विरोध नहीं रहता । इसी को स्वान्त: सुख का नाम देना समीचीन दिखा है। स्वान्त: सुख का प्रमाण समाज के रूप में सर्वसुख के रूप में परिवर्तित होने का कोई सूत्र नहीं रह जाती है । इसीलिये इस अवस्था में प्रवेश पाने का भी काल निर्णय नहीं हो पाती । यह भी इसके साथ देखा गया है कि सम्पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा ‘समाधि स्थिति’ के प्रति अर्पित रहने के क्रम में ही समाधि स्थली तक मन, बुद्धि, चित्त, वृत्तियाँ प्रवेश कर पाते हैं । फलस्वरूप इनकी कोई गति शेष नहीं है ऐसा बन पाता है जिसका निर्विचार स्थिति नाम दिया गया है । ऐसे घोर साधना के उपरान्त उस मानव का प्रयोजन ही, कार्यक्रम ही प्रसवित न हो ऐसे समाधि या निर्विचार स्थिति को कितने लोग चाह पाते हैं - यह प्रश्न चिन्ह में आता है। इसके उत्तर में विरले लोग ही चाह पाते है । ऐसे सद्ग्रंथों में ही लिखा गया है ।

As far as wishes are concerned, they get fulfilled for most persons and it is considered to be the fruit of sadhana; although wishes are fulfilled even for those who did not pursue sadhana. Hence, there is no clear evidence that the wishes get fulfilled due to sadhana. It is based only on faith or circumstances. In diverse ways, all this is a function of fear & temptation. On the other hand, no impact of fear & temptation is seen in the state of thoughtlessness; no feeling of deprivation is seen either. Due to this very reason, there are no unpleasant thoughts about past and future, nor any opposition to the present. This is probably what has been called the self-limited happiness. There is no evidence or link of this self-limited happiness leading to everyone’s happiness in society. For this very reason, it becomes difficult to figure out if and when someone entered this state of self-limited happiness. Along with this, it has also been seen that only with complete honesty and commitment towards the goal of samadhi does it become possible for *mun, vritti, chitta* & *buddhi* to attain the state of samadhi. Consequently, there is no activity in all these, and this state itself has been called thoughtlessness. After such strenuous sadhana, if no purpose or program originates from the person concerned, then how many people would want to reach this state of samadhi or thoughtlessness - this question comes to mind. Its answer is, rare are the people who want this. This is precisely what is written in scriptures too.

हम मूलरूप में सर्वसुख विधि को, सर्वशुभ विधि को अनुसंधान करने में तत्पर हुए । मैं अपने को सफल होने की स्वीकार स्थिति में आ गया । यह तभी घटित हुई जब अभ्यास, चिन्तन क्रम में सम्पूर्ण सह-अस्तित्व ही जानने-मानने में आ गई। अस्तित्व में मानव अविभाज्य रूप में होना जानने-मानने में आई । इसी के साथ-साथ इन-इनका निश्चित कार्य क्यों, कैसा का उत्तर निष्पन्न हुई । हर मानव जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में वर्तमान होना जानने मानने में आई । इसी के साथ अनुसंधान का फलन रूप स्वीकारने के स्थिति में आये । उसके तुरंत बाद ही इसे मानव में अर्पित करने की विधि को पहचानने की प्रक्रिया हुई । शनै:-शनै: इस कार्य में हम प्रवृत्त हुए । इस तथ्य को हम पहचानने में सफल हुए कि अनुभवमूलक विधि से मानव कुल को परंपरा के रूप में व्यक्त होने की आवश्यकता है और यह मानव में सफल होने के लिए सभी तथ्य से पूर्ण है।

Basically, I committed myself to explore the method of happiness for all, and method well-being for all. I reached a state where I considered myself to be successful in my efforts. This happened when in the process of practice and contemplation, the whole existence was grasped in my knowing & believing. Humans are an integral part of existence, this also became the content of knowing & believing. Along with this, answers to what is their respective role, and answers to how & why, also emerged. The fact that every human is the combined form of the body and jeevan became the content of knowing & believing. Along with this came the state of accepting the success of this exploration. The conclusion that it has to be offered to humankind followed immediately. Gradually, I became devoted to this. I succeeded in recognising the fact that humankind needs to express itself in tradition by realisation rooted method, and this method is replete with all the facts for the success of humans.

समाधि लक्ष्य के अतिरिक्त जो कुछ भी साध्य, साधक, साधन के रूप में और मान्यताएँ मानव परंपरा में प्रचलित है वे सभी कल्पना क्षेत्र का ही सजावट होना पाया गया। क्योंकि हर धर्म के मूल ग्रंथ में भी धर्म का लक्षणों के रूप में अपने-अपने कल्पना को सजाया हुआ है । अतएव ऐसे सभी प्रकार के प्रतीक और प्रतीकों से सम्बन्धित वस्तुओं को साध्य मानते हुए, उसके लिये तत्परता को अर्पित किया हुआ भ्रमित साधक और भ्रमित साधन के संयोग में ईष्र्या, द्वेष, श्राप, विरोध, वाद-विवाद, प्रलोभन, भय, समस्या ही समस्या देखने को मिला । इस प्रकार समाधिगामी साधना और मनोकामना प्राप्तिगामी साधनाएँ दोनों सुस्पष्ट है । उल्लेखनीय बात यही है उभय प्रकार से जूझा हुआ सभी साधक अथवा सर्वाधिक साधक, सर्वसुख को चाहने वाले होते हैं ।

Besides the goal of samadhi, all other assumptions prevailing in human tradition about seekable, seeker and means, were all found to be the adornments of imagination only. Even in the holy books of each religion, it is the indicators of religion which are described as detailed imaginations. Therefore, deluded humans assumed all types of such symbols and objects related to such symbols to be the seekable, and combined with deluded means, committed themselves to these, leading to problems in the form of jealousy, hatred, curse, resistance, disputes, temptation & fear. In this manner, both types of sadhana (pursuit) are clear, one leading to samadhi and the other leading to fulfilment of wishes. It is worth highlighting that almost all the seekers struggling to achieve their goal in either of these two ways, seek to achieve universal well-being.

इतने दीर्घकालीन परिश्रम से अभी तक सर्वसुख का मूलरूप अथवा सार्वभौम रूप को पहचानने में भी अड़चन रहा है क्योंकि रहस्य के आधार पर, उपदेश के आधार पर, प्रयोगशालाओं में स्थापित शक्तिशाली सूक्ष्मदर्शी दूरदर्शी और जितने भी क्षारीय अम्लीय किरण-विकिरण संयोग पाकर कार्य करने वाले रस रसायनों के विश्लेषणों से भी सर्वसुख विधि निकल नहीं पायी । करोडों में, अरबों में एक व्यक्ति रहस्यवादी विचारधारा के आधार पर स्वान्त: सुख विधि को पा चुके हैं क्योंकि यह स्थली हमें देखने को मिला है । इससे भी सर्वशुभ होने का रास्ता, दिशा, सूत्र, व्याख्या, अध्ययन विधि, प्रक्रिया परम्परा गम्य नहीं हो पायी । यह भी इसके साथ समीक्षीत हुई, कोई भी व्यक्ति स्वान्त: सुख को प्राप्त करने के बाद भी विभिन्न समुदायों के परस्परता में निहित द्रोह-विद्रोह, शोषण, युद्ध समाप्त नहीं हो पाया है । इतना ही नहीं हर समुदाय में निहित अन्तर्विरोध की शांति नहीं हो पायी । विज्ञानवाद युद्धोन्मुखी-संघर्षोन्मुखी होने के आधार पर इस शताब्दी के अंत तक सर्वाधिक प्रभावित रहा देखने को मिल रहा है । यही विगत का समीक्षा है । संघर्ष-युद्ध समाधान अथवा सर्वशुभ का आधार नहीं हो पाया ।

Even the true form of universal well-being has not been clearly recognised or answered despite untiring efforts for long; this is so because attempts and experiments based on analysis of mysterious spiritualism, religious advice, and scientific instruments & chemicals could not assist in finding the way to universal well-being. Rarely, someone in millions & billions of people could attain the state of self-limited happiness based on mystery based ideology; I can say this because I reached that state. But the way, direction, definition & description, method of study and process for universal well-being could not be established in tradition by this. Along with this, it also became clear that conflicts, exploitation & wars among sects did not end in spite of such rare persons attaining the state of self-limited happiness. Not only this, but even inner conflicts in each sect could not be resolved. As scientism accepts and justifies wars & conflicts, its impact is seen most in the recent years (till the last decade of twentieth century). This is the complete appraisal of the past. Conflicts & wars could not become the basis of resolution or universal well-being.

**जागृति विधि और अभ्यास**

**Practice and Way to awakening**

अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, दर्शन, आचरण ध्रुवीकृत रूप में अध्ययन गम्य होना देखा गया है । जीवन ज्ञान जीवन में सम्पन्न होने वाली क्रियाओं का परस्परता सहज ध्रुव बिन्दुओं के आधार पर उभय तृप्ति विधि सर्व शुभ एवं समाधान से देखा गया अभिव्यक्तियाँ है । जैसा मन और तृप्ति में सामरस्यता का बिन्दु, विश्लेषण, तुलन पूर्वक आस्वादन के रूप में पहचाना गया है । यह सह-अस्तित्व अनुभव के पश्चात् नियम, न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रयोग में अनुभूत होने के उपरान्त ही सार्थक हो पाता है ।

It has been seen that the existence based human centred contemplation is clearly studiable as knowledge, philosophy & conduct. Knowledge of jeevan comprises expressions based on activities of jeevan, seen from the viewpoint of mutual happiness, universal well-being, and resolution. For example, based on analysis & deliberation, the point of harmony between *mun* and *vritti* has been identified as tasting. This is actualised only after realisation in coexistence, and after becoming accomplished in application of law, justice, dharma & truth.

इसके लिये अर्थात् ऐसे अनुभूति के लिये अध्ययन क्रम से आरंभ होता है । अध्ययन अवधारणा क्षेत्र का भूरि-भूरि वर्तमान विधि है । इस विधि से जितनी भी अवधारणाएँ अध्ययन से सम्बद्ध होता गया, उतने ही अवधारणा के आधार पर प्रवृत्ति सहज न्याय, धर्मात्मक और सत्य सहज तुलन, न्याय तुलन सम्पन्न विचार के आधार पर किया गया आस्वादन सहित, सम्पन्न किया गया सभी चयन न्याय रूप होना देखा गया है ।

Journey for this, or for this realisation, begins with methodical study. The method of study requires a person to be continuously present in the field of conceptual understanding. By following this method, as the concepts and study started becoming aligned with each other, it was seen that the tendencies to deliberate in justice, dharma & truth based on such concepts became stronger; and based on the thoughts originating from the viewpoint of justice, all the tasting & selection was seen as based on justice.

इसी प्रकार ऊपर कहे चिन्तनपूर्वक जब चित्रण, तुलन, विचार, आस्वादन और चयन क्रियाएँ सम्पन्न होते हैं न्यायपूर्वक व्यवस्था में प्रमाणित होना देखा गया । अवधारणाएँ स्वाभाविक रूप में ही अस्तित्व सहज होने के आधार पर सह-अस्तित्व रूप होने के आधार पर अनुभूत होना अर्थात् जानना-मानना और उसके तृप्ति बिन्दु को पाना ही अनुभव है । जानना-मानना-पहचानना ही अवधारणा है। इसमें तृप्ति बिन्दु को पा लेना ही अनुभव है । इसे कार्य-व्यवहार व्यवस्था में व्यक्त कर देना प्रामाणिकता है । अनुभव प्रमाण पूर्ण बोध सहित सम्पन्न होने वाले संकल्प, चिन्तन, चित्रण, न्याय, धर्म, सत्य रूपी तुलन, विश्लेषण आस्वादन सहित किया गया सम्पूर्ण अभिव्यक्तियाँ, व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करता हुआ ही देखने को मिलता है । इस विधि से जागृतिपूर्ण मानव ही अस्तित्व में भ्रम बन्धनों से मुक्त होना स्पष्ट किया जा चुका है । जागृति विधि, अध्ययन रूपी साधना विधि से सर्वाधिक उपयोगी, सदुपयोगी, प्रयोजनशील होना देखने को मिला है । इस विधि से साध्य, साधक, साधन का सामरस्यता स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होना देखा गया है ।

In a similar manner, it has been seen that the accomplishment of activities of visualisation, deliberation, analysis, tasting & selection by way of contemplation lead to evidence of justice in systems. The acceptance that the conceptual understanding by its definition is in alignment with the existence, which is in the form of coexistence, leads to realisation; in other words, reaching the point of satiation in knowing & believing, indeed is realisation. Knowing, believing & recognising itself is conceptual understanding. Reaching the point of satiation in these is realisation indeed. Evidencing it in actions & behaviour, and in systems, is authenticity. All expressions done with deliberation, analysis & tasting based on resolve, contemplation, visualisation, justice, dharma & truth originating from enlightenment based on evidence of realisation, are observed to be aligned with systems, and participating in the overall system. It has already been clarified that such fully awakened humans in the whole existence are the only ones free from the bondages of delusion. Method of awakening, through study, has been found to be most productive, useful and serving the purpose. In this manner, it has been seen that harmony among the seekable, seeker and the means is achieved effortlessly.

**जागृति के लिये हर मानव साधक है । साध्य जागृति ही है । साधन जागृतिगामी अध्ययन प्रणाली है ।** इस क्रम में परम्परा साधन प्रतिष्ठा के रूप में तन-मन-धन व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण मानवाकांक्षा के रूप में होता ही है । इस प्रकार से साध्य-साधक-साधन का संयोग मानवीयतापूर्ण परंपरा विधि से सफल होने का स्वरूप स्पष्ट है । ऐसे परंपरा के पूर्व (जैसे आज की स्थिति में भ्रमित समुदाय परंपराएँ) मानवीयतापूर्ण परंपरा में संक्रमित होने की कार्यप्रणाली मुद्दा है । इस क्रम में अनुसंधान के अनन्तर जितने भी शोधकर्ता सम्मत होते जाते हैं और सम्मति के अनुरूप निष्ठा उद्गमित हो जाती है और भी भाषाओं से स्वयं स्फूर्त निष्ठा उद्गमित होती है । ऐसे ही निष्ठावान मेधावी इस कार्य में संलग्न है । यही आज की स्थिति में जागृतिगामी अध्ययन, जागृतिमूलक अभिव्यक्ति सहज विधि एक से अधिक व्यक्तियों में प्रमाणित होने का आधार बन चुकी है। जागृतिपूर्ण परंपरा में साध्य, साधन, साधक में नित्य संगीत होना देखा गया है । दूसरे भाषा में नित्य समाधान होना पाया गया है ।

**Every human is the ‘seeker’ of awakening. Awakening is what is ‘sought’ (to be sought). Method of study taking the seeker towards awakening, is the ‘means’.** On this course, there is a natural human aspiration in tradition to be recognised as ‘means’ by becoming the evidence of systems and participation in the overall system by way of harmony in body, mind & wealth. In this manner, clarity emerges regarding the framework of the seeker, seekable & means becoming successful by way of humane tradition. Before such humane tradition gets established (for example, deluded sectarian traditions in contemporary times), the main point to consider is the process of transitioning to humane tradition. On this course, as the number of explorers and their commitment increases, participation and commitment of explorers from other languages also commences. It is such committed and talented people who are attached to this cause. In today’s times, the study for awakening as well as expression based on awakening, has triggered the desire for evidence in multiple persons. In the awakened tradition, continuous harmony has seen among the seekable, the means and the seeker. In other words, a tradition of resolution has been seen.

उल्लेखित अनुभवों के आधार पर सम्पूर्ण जागृति अपने-आपसे जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान में ही सम्पूर्ण है । इसका अभ्यास विधि सर्वप्रथम अनुसंधान दूसरा अध्ययन पूर्वक शोध, शोध पूर्वक अध्ययन ये ही मूल अभ्यास है । क्योंकि अध्ययन विधि से ही, शोध विधि से ही अवधारणा का स्वीकृत होना देखा जाता है । अन्य विधि जैसे उपदेश विधि में भ्रमित होने की संभावना सदा बना ही रहता है ।

Based on realisation, it is proposed that awakening in itself comprises knowledge of jeevan, knowledge of existence and knowledge of humane conduct. One way to practise it is by exploration, while the other is to inquire while studying and to study while inquiring. It is so because only by way of study, and by way of inquiry, does the acceptance of concepts happen. There is always a possibility of delusion by other methods, for example the method of sermons & preachings.

हर परंपरा में अपने ढंग की आदेश प्रतिष्ठा स्थापित रहता ही है । वह अध्ययवसायिक (अध्ययनगम्य) होते तक उपदेश या सूचना मात्र है । परंपरा में जिस आशय के लिये आदेश-निर्देश है वह तर्क संगत-व्यवहार संगत बोध होने की प्रक्रिया प्रणाली पद्धति ही अध्ययन कहलाती है । तर्क का सार्थक स्वरूप विज्ञान सम्मत विवेक और विवेक सम्मत विज्ञान होना देखा गया । प्रयोजन विहीन उपदेश प्रयोग वह भी व्यवहार, प्रमाण विहीन उपदेश तब तक ही रह पाता है जब तक तर्क संगत न हो । तर्क का तात्पर्य भी इसी तथ्य को उद्घाटित करता है । तृप्ति के लिये आकर्षण प्रणाली (भाषा प्रणाली) ऐसे तर्क सहज रूप में ही विज्ञान के आशित विश्लेषणों को विवेक से आशित प्रयोजनों का प्रमाणित होना सहज है । हम इस बात को समझ चुके हैं कि प्रयोजनपूर्वक जीने के लिये, प्रमाणित होने के लिये समाधान समृद्धि के रूप में सह-अस्तित्व दर्शन के लिये तर्क संगत अध्ययवसायिक विधि का होना आवश्यक है ।

Some kind of command is always there in every tradition. Until the time it becomes studyable, it is only in the form of sermons or intimation. Study is the process, mechanism & technique under which the intent behind the commands and dictats of tradition become amenable to logic & behaviour, and are fully understood. It has been seen that in its true form, logic is in the form of science aligned with wisdom and wisdom aligned with science. Use of sermons without purpose, and that too without practicality & evidence, survives only until it is logically scrutinised. This actually emerges as the purpose of logic. It is only with logic in language can the intended analysis of science be merged with the intended purpose of wisdom, and be evidenced. I have understood and concluded that to live purposefully, with evidence, with resolution and prosperity and knowledge of coexistence, the method of study amenable to logic is essential.

अध्ययन क्रियाकलाप, तर्कसंगत प्रयोजन, प्रयोजन संगत मानवापेक्षा, मानवापेक्षा संगत जीवनापेक्षा, जीवनापेक्षा संगत सह-अस्तित्व, सह-अस्तित्व संगत विकास क्रम और विकास, विकासक्रम और विकास संगत जीवन-जीवनी क्रम-जागृति क्रम-जागृति एवं इसकी निरंतरता सह-अस्तित्व सहज लक्ष्य है । अस्तित्व सहज लक्ष्य में भी मानव ही अविभाज्य है और दृष्टा है । इसलिये मानव अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व विधि से पूरकता-उदात्तीकरण, पूरकता-विकास, पूरकता-जागृति सूत्रों के आधार पर सह-अस्तित्व सहज अध्ययन सुलभ हुआ है।

Goal of the program of study is to bring clarity of purpose aligned with logic; human aspiration aligned with purpose; jeevan aspiration aligned with human aspiration; coexistence aligned with jeevan aspiration; development progression and development aligned with coexistence; living world progression, awakening progression & awakening aligned with development progression & development, and their continuity. Humans are in the perceiver plane, and inseparable from the purpose of existence. Thus, by way of coexistence, based on the maxims of complementariness & evolution, complementariness & development, complementariness & awakening, study of coexistence is now available to humans.

सम्पूर्ण अस्तित्व ही व्यवस्था के स्वरूप में वर्तमान होना समीचीन है। आज भी मानव के अतिरिक्त सभी अवस्था में (पदार्थ, प्राण, जीव अवस्था) अपने-अपने त्व सहित व्यवस्था में होना दिखता है । इसी क्रम में मानव भी अपने मानवत्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज अपेक्षा को सार्थक बनाने के क्रम में ही जागृत होना पाया जाता है ।

The whole existence is perpetually in orderliness. Even today, except the humans, all the other three orders (material, plant and animal orders) are in orderliness with their respective essence. On this course, humans also become awakened when they work towards realising the expectation of being in orderliness with humaneness and participating in the overall order.

हम यह पाते हैं कि जागृति सूत्र व्याख्या और प्रमाण सर्वशुभ के स्वरूप में ही वैभवित होता है । इस आशय को लोकव्यापीकरण करना भी सर्वशुभ कार्यक्रम का एक बुनियादी आयाम है । इसी सत्यतावश ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ एक प्रस्तुति है । हर मानव अपने कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता पूर्वक ही हर प्रस्तुतियों को परखना (परीक्षण करना) स्वीकारना या अस्वीकार करने के कार्यकलाप को करता है । मानव अपने में ही पाये जाने वाले कल्पनाशीलता-कर्मस्वतंत्रतावश ही कार्यप्रणालियों की दिशाओं को परिवर्तित करता है । जैसे राजशासन राजकेन्द्रित दिशा से छूटकर लोककेन्द्रित दिशा के लिए तड़प रहा है । दूसरे भाषा में राजतंत्र से छूटकर लोकतंत्र की अपेक्षा बलवती हुई है ।

I find that the grandeur of definition & description, and evidence, of awakening is established only in the form of universal well-being. Dissemination of this insight is also an important program for universal well-being. ‘Realisation Centred Spiritualism’ has been presented with this truth in mind. It is only by using one’s imaginativeness and free-will that each person investigates (examines), and based on that accepts or rejects, any presentation. Humans change their way of doing things as per their own imaginativeness and free-will only. For example, in today’s times, seats of power are desperate to change from ruler centric to democracy centric. In other words, hopes from democracies have become stronger as compared to rulers.

मान्यताओं पर आधारित (अथवा मान्यता केन्द्रित) रूढ़ियों के स्थान पर सार्थकता की ओर नजरिया को फैलाने की प्रवृत्तियाँ मानव में उदय हो चुकी है । मान्यता का दूसरा आयाम रहस्यमूलक गाथाओं के आधार पर मानव अपने कार्य नीतियों, व्यवहार नीतियों को निर्धारित रहने के लिए विवश रहते आया है । उसमें पुनर्विचार की आसार जैसे-समझदारी के आधार पर कार्य-व्यवहार, उत्पादन-विनिमय, स्वास्थ्य-संयम, शिक्षा, न्याय जैसी प्रवृत्तियों को सार्वभौमता की ओर दिशा परिवर्तन की आवश्यकता बलवती होती जा रही है । इससे पता चलता है-हम मानव एक ऐसा अभ्यास विधि चाहते हैं जो सर्वमानव में स्वीकृत हो, प्रयोजनशील हो। इन दो ध्रुवों के आधार पर ही मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा का अर्थ, प्रयोजन और प्रणाली, पद्धति, नीति स्पष्ट हो गये है । मानवापेक्षा अर्थात् मानव लक्ष्य जीवनापेक्षा अर्थात् जीवन मूल्य है ।

Tendencies to expand viewpoint towards meaningfulness, instead of conventions based on assumptions, are already on the rise in humankind. The second aspect of assumptions is the compulsion to formulate policies and behaviour based on mystery-based recitations. Openness to rethinking in this aspect is being seen; for example, the need for change of direction towards actions & behaviour based on wisdom, and universality of production & exchange, health & *sanyam*, education, and justice is getting stronger. It is a clear indication that we humans want a method of practice which is acceptable to all, and is purposeful. It is based on these two points that the meaning, purpose, process and policies for fulfilment of human expectation and jeevan expectation have become clear. Human expectation is realisation of the human goal, and jeevan expectation is realisation of the jeevan values.

अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन विधि से उक्त मुद्दे पर हर व्यक्ति के पारंगत होने का अवसर, आवश्यकता और प्रत्येक मानव जीवन में निहित अक्षय बल रूपी साधन वर्तमान रहता है । समझदारी के आधार पर ही मानव में जीवनापेक्षा और मानवापेक्षा को सार्थक बनाने की विधि प्रमाणित होती है । मानवापेक्षा क्रम में जीवनापेक्षा अविभाज्य रूप में वर्तमान रहता है । मुख्य मुद्दा इसमें यही है, सर्वतोमुखी समाधानपूर्वक ही हर मानव सुखी होता है और सर्वतोमुखी समाधानपूर्वक हर परिवार समृद्ध होता है । समाधान का धारक-वाहक प्रत्येक मानव ही होना देखा गया है । मानव में भी केवल ‘जीवन’ को धारक वाहक होना देखा गया है । जीवनापेक्षा सदा ही जागृति मूलक होता है । जागृति जीवन सहज आवश्यकता मानव सहज परंपरा में निरंतर समीचीन है जिसके लिये हर मानव का जिज्ञासु रहना सुस्पष्ट है । अतएव जीवनापेक्षा मानवापेक्षा अपने आप में नित्य प्रभावी होना देखा गया है इसी के साथ-साथ सर्वमानव में यह प्रभाव होना देखने को मिलता है । जीवनापेक्षा का प्रमाण ही मानवापेक्षा और मानवापेक्षा का प्रमाण ही जीवनापेक्षा का होना देखा गया है ।

By way of existence rooted human centred contemplation, all humans have opportunity and need to become expert on the above point; and each human has inherent means in the form of inexhaustible strength in jeevan. It is only by the understanding that the method of realising jeevan expectation and human expectation in humans is evidenced. Jeevan expectation is inseparable from the process of human expectation. The main point here is that a person becomes happy only by comprehensive resolution, and each family becomes prosperous also by comprehensive resolution. It has been observed that every human is the bearer-carrier of resolution. It has been further observed that in humans too, it is the ‘jeevan’ indeed which is the bearer-carrier of resolution. Jeevan expectation is always based on awakening. Awakening is a need of jeevan, and it is readily available in humane tradition, and each human is undoubtedly inquisitive about it. Thus, jeevan expectation and human expectation in themselves are effective continuously, and their effect is seen in all humans. It has been observed that human expectation is the evidence of jeevan expectation, and jeevan expectation is the evidence of human expectation.

सह-अस्तित्व में ही मानव, जीवन सहज जागृति को प्रमाणित करना सहज, सुंदर, समाधान और सुखद होना देखा गया है । सह-अस्तित्व में हर परंपरायें (हर अवस्था, हर पद) नित्य वैभव के रूप में अथवा निरन्तर वैभव के रूप में तभी प्रमाणित हुई है जब परम्परायें अपने में समृद्ध और आवर्तन शील होती हैं । इसी क्रम में मानव परम्परा भी अनुभवमूलक विधि से जीवनापेक्षा व मानवापेक्षा सहज आवर्तनशील रूप में, वैभवित होना ही सार्वभौम व्यवस्था और अखण्ड समाज का होना समीचीन है । यह भी मानव परंपरा में आवश्यकता के रूप में देखा गया गया है कि मानव में सार्वभौमता की अपेक्षा स्वीकृत है। इसे दूसरी विधि से आशा के रूप में सार्वभौमता हर मानव में, हर परम्परा में, हर समुदाय में, हर जाति में, पंथ, मत, सम्प्रदायों में समाहित है ही । इसे सार्थक बनाने की इच्छा भी इस बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक में आवाजों के रूप में सुनने को मिलता है । इसे सार्थक बनाने के लिए अनुभवात्मक अध्यात्म मानस अनिवार्य रही है ।

Producing evidence of the awakening of jeevan in coexistence by humans has been seen as natural, beautiful, resolution and pleasant. The grandeur of all traditions (all orders, all planes) in coexistence becomes evident only when traditions in themselves are prosperous and cyclic. On this course, grandeur of humane tradition too is readily available in the form of universal systems and indivisible society, by way of realisation rooted method, in the cyclic form of jeevan expectation and human expectation. It has also been observed in human tradition that humans have a natural acceptance or need for universality. In other words, as an expectation, universality is inherent in each human, in each tradition, in each sect, in each caste, creed, faith & community. Even the desire to give it a practical shape is also being expressed in this last decade of the twentieth century. Realisation Centred Spiritualism is essential for humans to give it a practical shape.

अनुभवात्मक अध्यात्मवादी विचार और व्यवहार स्वाभाविक रूप में सह-अस्तित्व को प्रमाणित कर लेना ही है । यह कार्य मानव परंपरा में ही संपादित होना स्वाभाविक है । क्योंकि मानव इकाई ही संस्कारानुषंगी अभिव्यक्ति होना स्पष्ट किया जा चुका है । अभिव्यक्ति का तात्पर्य भी सर्वतोमुखी समाधान के रूप में सार्थक होना देखा गया है । ऐसा समाधान मानव परंपरा सहज हर आयाम दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्यों में समाधानित होने के अर्थ में सार्थक होने और विशालता की ओर गतिशील होने के रूप में देखा गया है । यही जागृति विधि साधना का अभीष्ट व प्रमाण है । मानव अपनी जागृति सहज प्रमाणों को प्रमाणित करना ही अभ्यास का तात्पर्य है । अभ्यास अपने सार्थक स्वरूप में सर्वतोमुखी समाधान के लिये किया गया अनुभव, विचार, व्यवहार समुच्चय है ।

Realisation centred spiritual thoughts & behaviour, in their natural form, is nothing but the evidence of coexistence. It is natural that it will be achieved in human tradition only. It is so because only the expressions of humans conform to *sanskars*. It has been observed that the meaning of ‘expression’ is significant in the context of comprehensive resolution. It has been observed that this resolution is meaningful for facilitating and expanding resolution in human tradition in all dimensions, directions, angles & areas. This is indeed the intent and evidence of the practice of the method of awakening. To produce evidence of one’s awakening is indeed the meaning of practice. In its true form, practice is the aggregate of realisation, thought & behaviour done for comprehensive resolution.

अनुभव मानव सहज अपेक्षा एवं वैभव है । मुख्य रूप में इन्द्रिय सन्निकर्षात्मक स्वीकृतियाँ आबाल-वृद्घ पर्यन्त प्रभावित रहता ही है । इसके मूल्यांकन के लिये और समीक्षा के लिये मूल्य मूलक व लक्ष्य मूलक सिद्धांत, सूत्रों व व्याख्याओं के प्रति मानव का प्रमाणित होना आवश्यक है । क्योंकि इन्द्रिय सन्निकर्षात्मक विधियों, कार्यों और इसके लिये आवश्यकीय साधनों की संग्रह विधियों से कोई भी समुदाय परंपरा मानवापेक्षा व जीवनापेक्षा को प्रमाणित करने में असमर्थ रहा है अथवा पराभवित रहा है । इसी के साथ-साथ समाधान, समृद्धि, अभय व सह-अस्तित्व की अपेक्षा हर समुदायों में बना ही रहा किन्तु प्रमाणित नहीं हो पाया है ।

Realisation is the natural expectation and grandeur of all humans. An important observation here is that intakes from sensory contacts are functional from childhood to old age. For its proper evaluation & appraisal, it is essential that humans become evidence of feelings based and goal based principles, definitions and descriptions. It is so because by focusing on activities of sensory contacts, and by mobilising and accumulating means for the same, no sectarian tradition has ever achieved success in or evidence of human expectation and jeevan expectation. On the contrary, expectation of resolution, prosperity, fearlessness & coexistence remained intact in all sects, although not evidenced.

इस तारतम्य में यह स्पष्ट हो जाता है कि आदि काल से ही मानव सार्वभौम शुभ चाहते हुए अभी तक पराभवित होने का कारण एकांतवादी व भोगवादी प्रवृत्ति ही है । वैभवित होने का मार्ग भी सुस्पष्ट हो चुका है । यह केवल सह-अस्तित्व में अनुभवमूलक प्रणाली ही है जो लक्ष्य मूलक, मूल्य मूलक अपेक्षाओं को सार्थक रूप देने में समर्थ होना देखा गया है । मूल्य मूलक प्रणाली से स्वाभाविक रूप से मानवापेक्षा सफल हो जाता है । लक्ष्य मूलक प्रणाली से जीवनापेक्षा सार्थक होना देखा गया है ।

It becomes clear from this chronology that although humans have been in search of universal good since ancient times, the reason for being unsuccessful is the tendency towards solitude and sensory enjoyment. The way for achieving grandeur has also become clear. It has been observed that it is only the method of realisation in coexistence which is capable of actualizing goal based and feelings based expectations. Feelings based process leads to fulfilment of human expectation. It has been observed that jeevan expectation is fulfilled by goal based process

प्रणालियाँ मूलत: इन्द्रिय सन्निकर्षात्मक अथवा अनुभवात्मक होना ही देखा गया है । इन्द्रिय सन्निकर्षात्मक प्रणालियों पर आधारित प्रयोगों को मानव ने इस धरती पर किया है । इसका समीक्षा पहले हो चुका है । अब केवल मूल्य मूलक, लक्ष्य मूलक विधि ही सम्पूर्ण मानव के लिये शरण होना समीचीन है । मानव में मूल्य व लक्ष्य की अपेक्षा सदा रहते हुए इसके विपरीत प्रणाली से इसको पाने की अपेक्षा किया ।

It has been seen that such processes are mainly either sensory based or realisation based. Humans on this planet have done enough experiments with sensory based processes. Its critique has already been presented. Now feelings based and goal based processes are the only refuge available to humankind. Although expectation of fulfilment of feelings and goals was always there, humans tried to achieve these by sensory based processes.

मानव परंपरा में शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन कार्य, विनियम कोष, स्वास्थ्य-संयम, व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी सहज मुद्दों पर जागृत सहज प्रमाण होना, जानने-मानने-पहचानने में निरीक्षण समर्थ होना और निर्वाह करने में निष्णात रहना ही प्रामाणिकता है । निष्णातता का तात्पर्य निरीक्षण पूर्वक हर कार्य व्यवहारों को पूर्ण रूपेण, पूर्णता के अर्थ में प्रतिपादित, प्रकाशित और प्रमाणित करना ही है । यह मानव सहज अपेक्षा और आवश्यकता होना देखा गया । इसकी दूसरी विधियों में मानव कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत-कारित और अनुमोदित विधाओं में जागृतिपूर्ण कार्यकलापों को प्रमाणित करना ही है । यह सर्वमानव स्वीकृत है। स्वीकृति को सर्वत्र देखने के लिए जागृत होना चाहते हैं या भ्रमित रहना चाहते हैं, इसके उत्तर में हर व्यक्ति जागृति का ही पक्ष लेते हैं।

To be the evidence of awakening in human tradition on the points of education sanskar, justice protection, production work, exchange storage, and health *sanyam*; to be capable of examining oneself in knowing, believing & recognising; and to be an expert in work & behaviour, is the authenticity indeed. Meaning of ‘expertise’ is to thoroughly examine, propound, exhibit & evidence one’s actions & behaviour for completeness. It has been seen as a universal expectation & need of humans. Seen from another angle, it (expertise) means to produce evidence of awakened actions by way of physical, verbal, mental, doing, getting done and endorsing. It is universally acceptable to all humans. When asked if to see such acceptance everywhere, you need to become awakened or remain deluded, everyone’s answer in favour of awakening.

जागृति का सुस्पष्ट स्वरूप अस्तित्व में जागृत होना ही है । अस्तित्व में जागृत होने का गतिक्रम स्वरूप अपने आप में सह-अस्तित्व में ही निहित है । जिसको हम सह-अस्तित्व के रूप में पहचानते हैं । सह-अस्तित्व में ही परमाणु में विकासक्रम और विकास, विकसित परमाणु ही जीवन पद में होना जीवन ही जीवनी क्रम, जागृतिक्रम, जागृति और जागृतिपूर्ण विधियों से विविध परंपराओं में मुक्त रहने, अखण्डता सार्वभौम व्यवस्था सहज रूप में वर्तमानित रहने तथा गठनशील परमाणुओं में भौतिक-रासायनिक क्रियाकलापों के फलन में रचना-विरचनाएँ वर्तमान है, इन्हीं सह-अस्तित्व सहज गति को जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करना ही जागृति और जागृति का प्रमाण है । इससे यह विदित होता है ऊपर कहे सभी क्रमों में हर मानव, सर्वाधिक मानव प्रमाणित होना ही जागृत मानव परंपरा का स्वरूप होना सुस्पष्ट हो गई । यही सर्वसुख विधि को सार्थक बनाता है ।

Awakening, in reality, means being awakened in existence. The path to becoming awakened in existence is inherent in existence itself, which we recognise as coexistence. Development progression and development in atom; developed atom itself being in the jeevan plane; jeevan itself on course to liberation and to be always in its natural state of indivisibility & universality in various traditions by following living world progression, awakening progression, awakening and fully awakened methods; and all compositions & decompositions as a result of physico-chemical activities in material atoms - to know, believe, recognise & fulfil all this in coexistence is awakening and the evidence of awakening. From everything that is mentioned above, it becomes clear that all humans, or most humans, becoming evidence is indeed the true form of the awakened human tradition. This is what is achieved by the method of universal happiness.

मानव में जागृत परंपरा स्थापित होने प्रमाणित होने और उसकी निरंतरता को बनाए रखने के लिए सर्वसुखवादी विधि और व्यवस्था ही एक मात्र शरण है । यह पहले से ही स्पष्ट हो चुकी है जागृति ही विधि है, इसे प्रमाणित करना ही व्यवस्था है। यही व्यवस्था मानवीयता पूर्ण शिक्षा-संस्कार सुलभता व्यवस्था अपने स्वरूप में न्याय-सुरक्षा सुलभता, विनियम-कार्य सुलभता, उत्पादन-कार्य सुलभता, स्वास्थ्य-संंयम कार्य सुलभता रूप में होना देखा गया है । यह सर्वसुलभ होना समीचीन है, आवश्यक और संभव है । मानव परंपरा में जागृति का प्रमाण मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार ही है । जागृति और व्यवस्था के निरंतरता क्रम में स्वास्थ्य-संयम प्रणाली अपने आप मानव में, से, के लिये करतलगत होता है । इस प्रकार जागृति और जागृतिमूलक विधि से व्यवस्था सार्वभौम होना स्वाभाविक है । क्योंकि हर मानव जागृत होना चाहता ही है और हर मानव व्यवस्था में जीना चाहता ही है । यही अस्तित्व में अनुभव की महिमा है सह-अस्तित्व का प्रभाव है फलत: जागृति और जागृति का प्रमाण रूप सार्वभौम व्यवस्था मानव परंपरा में सार्थक होता है । यही ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ का प्रयोजन है ।

The method of universal happiness and systems is the only refuge for establishment of awakened human tradition, for its evidence and to maintain its continuity. It is already clear that awakening is the method, and evidence of awakening itself is the system. It has been observed that this system is humane education sanskar availability in the form of justice security availability, production exchange availability, production work availability, and health *sanyam* availability. Its availability to everyone is feasible, essential and possible. Humane education *sanskar* is indeed the evidence of awakening in human tradition. On course to awakening, systems and their continuity, humans naturally attain proficiency in the health *sanyam* dimension. In this manner, awakening and the awakening rooted method naturally lead to universal systems as all humans want to be awakened and to live in systems. This is the magnificence of realisation in existence, and the effect the coexistence wields; as a result, awakening and the evidence of awakening in human tradition materialises in the form of universal systems. This is indeed the purpose of ‘Realisation Centred Spiritualism’.

**अभ्यास और साधना, आराधना**

**Practice and *sadhna*, worship**

यह आदि काल से सुनी हुई भाषा अथवा मुद्दा है । मुद्दा के रूप में मानव प्रवृत्तियाँ को आंकलित किया जाना सहज है । सुनी हुई आधार पर किताबों, दस्तावेजों के रूप में, प्रवक्ताओं के मुखारबिन्द से सुनी हुई स्थितियाँ आंकलित होती है ।

These words or points have been heard since ancient times. It is easy to appraise human tendencies in the form of specific points. Books, documents and oral proclamations are appraised based on whatever has been heard.

आराधनाओं को अपने आर्तता (असमर्थता) को अर्हता (समर्थता) के लिये सर्व समर्थ सम्पन्न किसी अज्ञात के अस्तित्व को मानते हुए आर्तनाद करते हुए क्रियाकलापों के रूप में देखा गया है । इस विधि से प्रमाण और उसकी सार्वभौमता का कोई एक सूत्र बना ही नहीं । फिर भी इस बात को आंकलित करने के लिए यह प्रयत्न किया कि बहुत सारे लोग कैसे आराधना में प्रसन्न रहते हुए भी देखने को मिलता है । इस क्रम में यह पाये कि किसी न किसी इष्ट-अनिष्ट घटनाओं को अपने आराधना का फल मानते हुए सांत्वना लगाते हुए देखा गया । हमारी यात्रा में आराधना का फल-परिणामों में उक्त प्रकार से आंकलित करते रहे । अतएव सभी आराधना व्यक्तिवादी होना स्पष्ट हो गया ।

Worships have been interpreted as activities wherein desperate pleadings are made to convert one’s inability into ability, believing or having faith in the existence of some omnipotent, accomplished, unknown entity. This method did not produce any shred of evidence and its universality. Even then, attempts were made to figure out how so many people appear to be happy in worship. In the process, it was concluded that people consoled themselves by assuming that the outcome of some favourable or unfavourable incident is the fruit of worship. In my journey, the outcome of worship was assessed in this manner. Thus, it became obvious that all worship is individual-centred.

साधना में कई लोग आज भी शुभकामना से ही प्रवृत्त रहते हैं । साधना को हम अपने सुधार के लिये किया गया प्रयास के रूप में देख पाए। सुधार का अंतिम (तृप्ति) बिन्दु जागृति के रूप में ही होना देखा गया।

A few people, even today, take up *sadhana* while motivated by good wishes. I could see sadhana as an attempt towards my own improvement. It has been observed that awakening is indeed the last point (of fulfilment) in improvement.

अभ्यास को हम इस तथ्य के रूप में देख पाये हैं कि साधना से जो जागृति बिन्दु हमें प्राप्त हुई और समृद्ध हुए उसे अभ्युदय (सर्वतोमुखी समाधान) के रूप में वयवहृत करने के रूप में सार्थकता को देखा गया । इसी के साथ-साथ नि:श्रेयष (निरंतर श्रेय) को जागृति पूर्णता के रूप में देखा गया । देखने का तात्पर्य समझने से ही है । समझने का तात्पर्य जानने-मानने-पहचानने से ही है । श्रेय के स्वरूप को जागृति और उसकी निरंतरता में ही होना देखा गया है । हर मानव, हर परिवार, हर समुदाय, हर पंथ-सम्प्रदाय सब जागृति को स्वीकारते ही हैं । इसे निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण पूर्वक हर मानव देख सकता है । इससे यह स्पष्ट हो जाती है हर देश काल में हर मानव श्रेय अपेक्षी है ही । इसे सार्थक रूप देने के लिये परंपरा सहज कर्तव्य स्वीकृति आवश्यक है । इस क्रम में यह भी स्पष्ट हो गया है कि साधना सहज क्रम में जागृति, जागृति विधि में व्यवस्था होना, नित्य अभ्यास एवं प्रमाण है ।

I have interpreted practice as becoming meaningful in disseminating the enlightenment (comprehensive resolution) or the state of awakening & prosperity which I attained by *sadhana*. Along with this, absence of delusion (continuity of excellence) has been seen as awakening completeness. Meaning of ‘seeing’ is ‘understanding’. Meaning of understanding is knowing, believing & recognising. It has been observed that excellence in its true form is nothing but awakening and its continuity. All persons, all families, all sects, all creeds & communities naturally accept awakening. Each person can verify this by inspecting, examining, and surveying. It is thus obvious that all humans, at all places, at all times expect excellence. A sense of duty in, by & for tradition is essential to give it a practical shape. It has also become clear by now that the process of sadhana leading to awakening, and the method of awakening leading to systems, is the continuous practice and evidence.

अभ्यास ही अनुसंधान कार्यकलाप के रूप में प्रमाणित होता है । हर मानव में पायी जाने वाली प्रवृत्तियाँ अनुसंधान के लिये प्रयुक्त होने वाली मूल शक्तियाँ ही है । ये जीवन सहज शक्तियों के रूप में देखा गया है । जीवन शक्तियाँ जीवन भ्रमित रहते तक कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता के रूप में कार्य करते ही रहती है । सम्पूर्ण प्रयोग साधना के रूप में ही होता है। हर साधना सुधरने के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ रहता है । सुधार केवल जागृति की ओर ही है । जागृति का लक्ष्य बिन्दु अनुभव और प्रामाणिकता ही है । प्रामाणिकता अभ्युदय के अर्थ में अर्थात् सर्वतोमुखी समाधान के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यही मानव धर्म है । जागृति-सुख-शांति-संतोष-आनंद के रूप में ख्यात रहता ही है । यही जीवनपेक्षा का नित्य स्वरूप है ।

It is the practice indeed which is evidenced in the form of exploratory activities. Human tendencies themselves are the basic powers to be channelised for exploration. It has been observed that these are the powers of jeevan. While jeevan is deluded, powers of jeevan are still active in the form of imaginativeness and free-will. Their complete application is only in the form of *sadhana*. All *sadhana* is applied for improvement only. Improvement is only towards awakening. The final goal of awakening is in the form of realisation and authenticity. Authenticity is applied for furthering the enlightenment, in other words, for comprehensive resolution. This itself is human dharma. Awakening is famously known as happiness, peace, contentment & bliss. This is the perpetually true form of jeevan expectation.

अनुभव अस्तित्व में ही होना पाया गया है । जीवन ही अस्तित्व में अनुभव करता है। इसीलिये जीवन ही कर्तापद प्रतिष्ठा में ख्यात होता है । यहाँ मुख्य रूप से इंगित मुद्दा यह है जीवन भी सह-अस्तित्व में ही है । अस्तित्व का स्वरूप, प्रभाव पहले से स्पष्ट किया जा चुका है-अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है । सह-अस्तित्व ही नित्य प्रभावी प्रकटनशील है । अस्तित्व में जो कुछ भी है- यह सब वस्तु के रूप में है क्योंकि इनमें वास्तवकिताएँ नित्य प्रमाणित हैं । अस्तित्व में व्यापक और एक-एक के रूप में अनन्त इकाईयाँ वर्तमान में होना दिखाई पड़ती है । जिसका दृष्टा मानव ही है । अस्तित्व में जो वस्तुएँ है, जितनी भी है इन्हीं वस्तुओं का नामकरण करना मानव का अधिकार सहज क्रियाकलाप है । जैसा- मिट्टी एक नाम है । मिट्टी नाम से इंगित वस्तु अस्तित्व में है ही। यह (मिट्टी) स्वयं में केवल नाम न होते हुए भी वस्तु के रूप में वर्तमान है । इसी प्रकार हर नाम से इंगित वस्तु अस्तित्व में होना वर्तमान है । व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक-एक भीगा-डूबा और घिरा हुआ होने के आधार पर व्यापक वस्तु को सत्ता नाम दिया है । पहले से भी कुछ नाम है - वह है अध्यात्म ।

It has been observed that realisation occurs in existence only. Jeevan is the entity which attains this realisation in existence. Jeevan is placed in the ‘doer plane’ precisely for this reason. The main point being highlighted here is that jeevan is also in coexistence. The true form of existence has already been described earlier - existence is coexistence. Coexistence is eternally effective and non-mysterious. Whatever is in existence, is in the form of realities because realities are perpetually evident in existence. Existence is the coexistence of the omnipresent reality and innumerable units which can be singularly seen; humans are the perceiver of all this. Humans can name only those realities which are in existence, in whatever quantity they are. For example, ‘soil’ is a name. The reality indicated by ‘soil’ exists in existence. This (soil) is not only a name, but also a reality which is present in existence. In a similar manner, each reality denoted by a name, is present in existence. It is in the omnipresent reality indeed that all the units are soaked, submerged & surrounded, therefore this omnipresent reality has been called the Omnipotence. Tradition has already given it a name, which is *adhyatma* (spirit).

व्यापक वस्तु को पूर्व में सार्थक रूप में समझना-समझाना बन नहीं पाया था । अभी इस व्यापक वस्तु को हर मानव समझ पाना संभव हो गया है । एक-एक के रूप में जो वस्तुएँ है, इन्हें परस्परता में देखने के पहले ही व्यापक वस्तु दिखता ही है। इसी व्यापक वस्तु को हम अध्यात्म नाम भी दिये हैं । इसी व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण वस्तु डूबा-भीगा-घिरा दिखाई पड़ने के आधार पर ‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’ इस ग्रंथ का नाम रखा गया है । वाद सदा ही मानव परंपरा में एक-दूसरे के बीच संप्रेषणा कार्य ही है । दूसरे विधि से सम्भाषण ही है । मानव परंपरा में संभाषण एक अनिवार्य प्रक्रिया है । हर तथ्यों के प्रति जागृति और उसका संप्रेषणा मानव परंपरा में होना आवश्यक है ही । मानव में, से, के लिये समीचीन सभी आयाम कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य संबंधी सम्भाषण-संप्रेषणा एक अनिवार्य घटना है । यह घटना स्वभाविक रूप में मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा को सार्थक बनाए रखने के क्रम में सर्वाभिलाषित है ही। इसी अभीप्सावश ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’ की अभिव्यक्ति है ।

However, success is yet to be attained in meaningfully understanding and explaining the omnipresent reality. Now, by way of Madhyasth Darshan Co-existentialism, it has become possible for each person to understand this. The omnipresent reality is seen (understood) even before we look at the mutuality of the units. One of the names I have also given to this omnipresent reality is ‘adhyatma’. This scripture has been named as ‘Realisation Centred Spiritualism’ because all the units are seen to be submerged, soaked & surrounded in this omnipresent reality. Communication among humans has always been the purpose of conversations. It includes instruction or teaching also. Instructing (or teaching) is an important activity in human tradition. Being aware about these details and communicating them is an essential activity in human tradition. Instructions & communication concerning all dimensions, directions, areas in, by & for humans is an essential activity. It is a natural yearning in all humans in order to fulfil human aspiration and jeevan aspiration. ‘Realisation Centred Spiritualism’ has been written to assist in fulfilment of this aspiration.

Instruct= in- +struct=मानव के अंदर स्थापित करना; पूर्णता के अर्थ में भाषण; to impart knowledge

सुदूर विगत से अनुभव के अभाववश कई प्रकार से विचारों को सजाते हुए भी मानवपेक्षा-जीवनापेक्षा का सफलता या सफल बिन्दु नहीं मिल पाया था । अभी ‘‘अनुभवात्मक अध्यात्मवाद’’, ‘‘व्यवहारात्मक जनवाद’’ और ‘‘समाधानात्मक भौतिकवाद’’ के रूप में सह-अस्तित्व विधि से उभय-अपेक्षा सर्वसुलभ होने की विधि से चर्चा-वार्तालाप, संभाषण, प्रबोधन, अध्ययन करना संभव हुआ है । अध्ययनपूर्वक मानव में समझदारी परिपूर्ण होना देखा गया । इसीलिये सम्पूर्ण वस्तु समझदारी के लिये जो आवश्यकता है उन सबको परंपरा में सर्वसुलभ करने की आवश्यकता है ही । इन्हीं आशय के साथ जीवन सहज जागृति, जागृति सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा क्रम में यह एक वांग्मय मानव के सम्मुख प्रस्तुत है ।

Since ancient times, humans have devised many ideologies and theories but could not achieve success in fulfilling human aspiration or jeevan aspiration due to the absence of realisation. Now, by the co-existential method in the form of ‘Realisation Centred Spiritualism’, ‘Behaviour Centred Conversations’ and ‘Resolution Centred Materialism’, it has become possible to engage in conversations, instruction, facilitation & study for availability of mutual fulfilment to everyone. It has been seen that the state of complete understanding can be achieved by study. Therefore, whatever is the content of complete understanding, that needs to be made available to everyone by way of tradition. It is with that intent, and on course to awakening of jeevan, and expression & communication pertaining to awakening, that this literature is now available to humankind.

जीवन ही दृष्टा, सह-अस्तित्व ही दृश्य, न्याय, धर्म, सत्यपूर्ण दृष्टियों का क्रियाशीलता ही दृष्टि का स्वरूप है । इसका साक्ष्य है न्याय सुलभता (परस्पर मानव और नैसर्गिकता में) धर्म सुलभता (सर्वतोमुखी समाधान सुलभता) और जागृति सुलभता (प्रामाणिकता और प्रमाण सुलभता) यह सब जागृति केन्द्रित विधि से सह-अस्तित्व रूपी परम सत्य व्यवहार- कार्य रूप में सम्पन्न होना देखा गया है । जागृति हर व्यक्ति का आकांक्षा है ही । इसलिये परंपरा में निर्दिष्ट रूप में शिक्षा-संस्कार परंपरा में इनका सहज अध्ययन-मूल्यांकन पद्धति, प्रणाली, नीतियों को अपनाना ही परंपरा में वांछित परिवर्तन का स्वरूप है । दृष्टा पद रूपी जीवन अथवा दृष्टा पद प्रतिष्ठा में वैभवशील जीवन परंपरा में न्याय, धर्म, सत्य को अभिव्यक्त, संप्रेषित, प्रकाशित करने में मानव ही समर्थ है । इस तथ्य को परीक्षण, निरीक्षण पूर्वक देखने के उपरान्त ही उद्घाटित किया है । इसलिये कि मानवाकांक्षा, जीवनाकांक्षा ही सर्वशुभ के रूप में है । यह सर्वदा मानव परंपरा में सफल होते ही रहेगी ।

Jeevan is the seer, coexistence is the scene, and activation of the perspectives of justice, dharma & truth is indeed the true form of viewpoint. It has been observed that availability of justice (among the mutuality of humans and with rest of the nature), availability of dharma (availability of comprehensive resolution), and availability of awakening (availability of authenticity & evidence); accomplishment of all this in behaviour & work by awakening centred method in coexistence, is its testimony. Awakening is indeed the aspiration of all humans. Therefore, to include their study & evaluation methods, processes and policies in tradition, specifically in education *sanskar* tradition, is precisely the change that is needed in tradition. Only those humans, in whom jeevan is in the seer plane, have the competence to express, communicate & exhibit the justice, dharma & truth in human tradition. This fact has been mentioned after proper verification by way of examination & inspection. This is so because human expectation & jeevan expectation is indeed the true form of universal well-being. This shall continue to be perpetually successful in human tradition.

जागृत परंपरा में ही हर मानव और परिवार सर्वाधिक उपयोगी, सदुपयोगी, प्रयोजनशील होते हुए उपकारी होना देखा गया है । उपकारिता का तात्पर्य मानव को, मानव जागृति मार्ग को प्रशस्त कराते हुए देखने को मिला है । यह क्रिया वश जो मानव कर पाता है वह उपकारी होता है वह जागृति सहज प्रमाणों को प्रस्तुत करता ही है, वर्तमान में समीचीन मानव जो जागृत नहीं हुए हैं उन्हें जागृत होने के लिये योग्य प्रस्तुति के रूप में हो जाता है। यह सह-अस्तित्व में अनुभव सहज प्रामाणिकता सहित सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि सम्पन्न स्थिति और गति के रूप में होना देखा गया है; क्योंकि जागृतिगामी अध्ययन प्रणाली से हर व्यक्ति स्वायत्त होता है ।

It is only in awakened tradition that all humans and families are seen to be benevolent in addition to being maximally useful, righteously useful & purposeful. Meaning of ‘benevolent’ has been interpreted as humans paving the way of awakening for others. The one who is successful in this is called benevolent, and naturally produces evidence of awakening; and becomes available for awakening of those who are still unawakened. It has been seen as state & motion accomplished with comprehensive resolution and prosperity; along with authenticity of realisation in coexistence, because everyone becomes autonomous by awakening oriented study.

स्वायत्तता का स्वरूप स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय (उत्पादन) में स्वावलंबी होना देखा गया है । ऐसे स्वायत्त मानव ही परिवार मानव के रूप में जीने देकर जीने में समर्थ होता है । यही अद्भूत सामर्थ्यवश सर्वतोमुखी समाधान और समृद्धि वैभवित होता है । यही हर स्वायत्त परिवार मानव सफलता का प्रमाण है और सर्वशुभ का भी प्रमाण है । अस्तु, मानव सत्य दृष्टि पूर्वक, धर्म दृष्टि पूर्वक, न्याय दृष्टि सहज स्वायत्त होता है और स्वायत्तता का मूल्यांकन कर पाता है । इसीलिये परिवार मानव का सार्वभौमता (परिवार मानवता में, से, के लिये सर्वमानव में स्वीकृति) प्रवाहित होना सहज है ।

It has been observed that self-confidence, respect for excellence, balance in talent & personality, sociability in behaviour and self-reliance in profession, is the true form of autonomy. Only such autonomous persons, in the form of family persons, are capable of letting live and live. Comprehensive resolution and prosperity thrives due to this phenomenal capability. This is indeed the evidence of the success of every autonomous family person, as well as the evidence of universal well- being. Thus, humans become autonomous by perspectives of truth, dharma & justice, and become capable of evaluating autonomy. Therefore, universality flows naturally from every family person (acceptance in everyone in, by & for living as a family person).

**कर्ता-कार्य-कारण :** यह तथ्य पहले स्पष्ट हो चुका है कि दृष्टा, कर्ता, भोक्ता पद में प्रमाणित होने वाली इकाई जागृत मानव ही है । जिसमें से भोक्ता पद में हर भ्रमित नर-नारी को देख सकते हैं । चाहे पंडित हो, मूर्ख हो, ज्ञानी कहलाता हो, अज्ञानी कहलाता हो, बली हो, दुर्बली हो, धनी हो, निर्धनी हो, बाल्य कौमार्य, यौवन, प्रौढ़, वृद्घावस्था में क्योंं न हो हर व्यक्ति हर अवस्था में इच्छित-अनिच्छित, परेच्छित विधि से भोक्ता हुआ देखने को मिलता है । भोग इस बात का साक्ष्य है कि कुछ करने का फलन में ही प्राप्तियाँ हो पाती हैं । स्वीकारना भी करना ही है । इस प्रकार कुछ करके, कुछ स्वीकार के भोग्य वस्तुओं को प्राप्त किया रहता है । यह तथ्य सर्वविदित है । इस क्रम में करने और स्वीकारने के रूप में हर मानव स्वतंत्र होना देखा गया है । एक व्यक्ति जो करता है उससे भिन्न दूसरा करता हुआ देखने को मिलता है, एक व्यक्ति जिन वस्तुओं को स्वीकारता है उससे भिन्न वस्तुओँ को दूसरा व्यक्ति स्वीकारता है । इसलिये कर्म स्वतंत्रता की सूत्र प्रमाणित हो जाती है । यह भी इसी के साथ निष्कर्षित होता है कुछ करने के आधार पर ही भोग्यमान वस्तुओं की प्राप्ति होती है ।

**Doer-Action-Cause :** It is already clear that an awakened human is indeed the entity that evidences doer, seer & experiencer status. Out of these, the experiencer plane includes all deluded humans. Irrespective of whether a person is learned or foolish, knowledgeable or ignorant, strong or weak, rich or poor, or may be a child, adolescent, youth, grown-up or aged, each person is seen to be in the experiencer plane knowingly, unknowingly or forcefully. Experiencing is the proof that one gets something only as a result of doing something. Accepting or endorsing is also a form of ‘doing’. In this manner, humans get things worth-experiencing by doing or accepting something. This is well-known. In all this, it has been seen that each person has freedom regarding what to do or what to accept. If one person is doing something, another is seen to be doing something different. Whatever is acceptable to one person, something quite different is acceptable to another. This is how the concept of free-will gets evidenced. Along with this comes the conclusion that one gets things worth-experiencing only on the basis of doing something.

हर व्यक्ति में हर क्षण किसी एक भोग के उपरान्त पुन: भोगने के लिये प्रवृत्तियाँ उदयशील रहते ही हैं, उसमें परिवर्तन का आधार पूर्व में किया गया भोग देखने को मिलता है । इस विधि से भोगने के लिये, भोग्यमान वस्तुओं का परिवर्तन और परिवर्तित वस्तुओं की प्राप्ति के लिये करने की शैली में परिवर्तन, करने की शैली के मूल में विचारों का परिवर्तन होना देखा गया है । इस प्रकार न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण सम्पन्न होने पर्यन्त हर मानव में, से, के लिए परिवर्तन अवश्यंभावी है ।

After favourably experiencing something, an inclination to re-experience arises in each person, and the change if any is on the basis of the previous experience. It has been observed in this method that change is needed in the objects for change in experience; change is needed in the way of doing to get this new set of objects for experiencing; and at the root of change in doing, there is change in & of thoughts. In this manner, change is inevitable in, by & for humans till they become accomplished in evidence of justice, dharma & truth.

सम्पूर्ण परिवर्तन मानव में जो कुछ भी देखने को मिलती है, देखने का नजरिया करने के लिये वैचारिक तैयारी और शरीर के द्वारा सम्पन्न किये जाने वाली क्रिया व्यवहार ही है। इन्हीं के फलन में प्राप्तियाँ होना देखा गया है । इस प्रकार कर्ता, भोक्ता के मूल में दृष्टा पद ही प्रधान वस्तु होना स्पष्ट हो चुकी है । इसी आधार पर कर्ता, कार्य, कारण अपने आप में स्पष्ट होना स्वाभाविक है । कारण मूलत: मानव में पाये जाने वाली दृष्टि ही है । दृष्टि के कारण ही कार्य, कार्य के कारण से भोग, भोग के कारण से पुनर्दृष्टि, विचार होना हर मानव में दृष्टव्य है ।

All the change that is seen in humans is in thoughts for refinement in viewpoint, and in work & behaviour accomplished by the body. Whatever one gets is based on these only, it has been clearly seen. In this manner, the seer plane is the main reality at the root of doer & experiencer. On this basis, doer, action & cause becomes clear by itself. ‘Cause’ is basically a person’s perspective only. Action because of perspective, experience because of action, review of perspective & thoughts because of experience, this is seen in all humans.

मानव में संपूर्ण कारण रूपी दृष्टि (जागृति) के आधार पर हर व्यक्ति करणीय कार्यों का निर्धारण कर पाता है । ये निश्चित वैचारिक प्रक्रिया है । इन्हीं कारणवश करने, स्वीकारने के रूप में कार्यकलाप सम्पन्न होते हुए देखने को मिलता है । सर्वमानव में छ: दृष्टियाँ क्रियाशील होने की आवश्यकता और संभावना ही अध्ययनगम्य है, इसे स्पष्ट किया जा चुका है। इसी के साथ यह भी स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रिय, हित, लाभ दृष्टि पूर्वक कोई भी मानव सामाजिक होना संभव नहीं है, व्यवस्था में जीना अति दुरूह रहता ही है । इसी अवस्था को भ्रमित अवस्था के नाम से स्पष्ट किया गया । जागृतिपूर्वक मानव में न्याय, धर्म, सत्य, दृृष्टि विकसित होती है । जागृतिपूर्वक मानव सामाजिक होता है और व्यवस्था में जीता है। हर मानव में, से, के लिये जागृति न्याय, धर्म, सत्य स्वीकृत है और वांछनीय है । भ्रमवश विभिन्न समुदाय परम्पराएँ अपने-अपने सामुदायिक अहम्ता के साथ उनके परंपरा में आने वाले सन्तानों को भ्रमित करने का तरीका खोज रखे हैं । इसलिये हर परंपरा में आने वाले संतान पुन: पुन: भ्रमित होते आए । यह काम बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक देखने को मिला ।

It is based on the complete perspective in the form of ‘cause’ (awakening) that each person can decide which are the actions worth doing. This is a well-defined thought process. Because of this only, it is seen that all human activities are accomplished in the form of actions & acceptance. It has been already clarified that the need and possibility of activating six viewpoints in all humans, is studiable. Moreover, it has also been explained that it is not possible for any human to become sociable based on the perspectives of pleasant, health & profit; and living in systems remains a herculean task. This stage has been named and explained as the deluded stage. The perspectives of justice, dharma & truth get developed in humans by way of awakening. It is by way of awakening that a person becomes sociable and lives in systems. Awakening, justice, dharma & truth is acceptable and desirable in, by & for everyone. Under delusion, various sectarian traditions are (unknowingly) looking for ways to mislead their future generations. In this manner, delusion is getting passed on from generation to generation in each tradition. This is what has happened in human history till the last decade of the twentieth century.

दसवें दशक में ‘‘अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित दृष्टिकोण’’ सम्पन्न कुछ लोगों में यह सुस्पष्ट हो गई कि विगत से परम्परा में प्राप्त शिक्षा-संस्कार भ्रम की ओर है । इससे छूटना आवश्यक है । इसी के साथ यह भी समझ में आया कि हर मानव परम्परागत समुदाय मानसिकता से बड़ा होना देखने को मिलता है । इसका साक्ष्य यही है परम्पराओं में कहे हुए विधि से जितना खराब होना था, उतना न होकर उतना भाग सही की ओर होना पाया जाता है । जैसे हर प्रकार की धर्मगद्दियाँ अपने-अपने धर्म के विरोधी सभी पापी है, विधर्मी हैं, अधर्मी हैं, इन सबका नाश होगा। नाश करने वाला ईश्वर परमात्मा, सर्वशक्तिमान है । धर्म को बचाने वाला ही विधर्मियों का संहार करेगा । ऐसे विधर्मियों को संहार करना न्याय है और इससे ईश्वर प्रसन्न होते हैं । यह तो हुई परस्पर विद्रोहीता के लिये तत्व। यदि ईमानदारी से हर धर्म परम्पराओं में कही हुई बातों पर तुला जाये तो सदा लड़-झगड़ कर मारते ही रहना चाहिये या मरते ही रहना चाहिये । इतना कुछ हुआ नहीं । इसके विपरीत धरती में जनसंख्या बढ़ते ही रहा ।

By the last decade, some people accomplished in ‘Existence based human centred viewpoint’ have become clear that the education *sanskar* received from previous generations is misleading. It is essential to get rid of this. It also became clear that each human is apparently more humane than the traditional sectarian mindset. Its testimony is that whatever wrong could happen as per the dictates of traditions, actually that much wrong or bad has not happened; and right has also happened to some extent. For example, all seats of religion claim that all their opponents are sinners, anti-religious, infidels, and all of them are destined to be doomed. The supreme God, the Almighty is the one who will destroy them. The saviour of religion will destroy the infidels. Destruction of such infidels is justice and it is as per the wish of God. This is enough description regarding how mutual enmity gets promoted. On the positive side, if whatever has been said by religious traditions was sincerely followed then humans would always be killing each other or getting killed. But nothing like this happened. On the contrary, the population on Earth kept on increasing.

इसलिये पता चलता है परंपरा जिस बदतर स्थिति में डालने के लिये अपने-अपने वचनों को बनाये रखा है उससे बेहतरीन स्थिति में अधिकांश लोगों को देखा जाता है । जिसका गवाही में किसी भी देश, काल, जाति, मत, संप्रदाय पंथों के अनुयायी हो अथवा समर्थक हो उन किसी सामान्य मानव से यह पूछने पर कि परस्पर समुदाय लड़ना चाहिये या साथ में जीना चाहिये ? उत्तर साथ में जीना चाहिये मिलता है । इस प्रकार हमें समुदाय परम्पराओं के मान्यताओं से बेहतरीन मानव होने की इच्छा आज भी दिखाई पड़ते हैं ।

So we can conclude that most people are apparently found to be in a much better state than where they would have been if they followed the dictates of the tradition. Its testimony is - if followers or supporters (general public) of any caste, faith, sect or creed are asked at any place at any time whether people of different sects should fight each other or live harmoniously, the answer we invariably get is for harmonious living. In this manner, even today, we can easily see the desire in humans to be better than what the beliefs of sectarian traditions promote.

यह सुस्पष्ट हो चुकी है कि मानव का दृष्टिकोण ही, विचार ही हर कार्यों का कारण है । विचारों का कारण दृष्टिकोणों के आधार पर ही निर्भर है । हर दृष्टिकोण मानव जीवन सहज जागृति क्रम, जागृति, जागृति पूर्णता और उसकी निरंतरता पर निर्भर है । जागृति का कारण अस्तित्व, अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व, सह-अस्तित्व सहज परमाणु में विकास, परमाणु में विकास सहज गठनपूर्णता, परमाणु में गठनपूर्णता सहज जीवन, जीवन सहज दृष्टियाँ, दृष्टि सहज विचार, विचार सहज क्रियाशीलता, क्रियाशीलता सहज जागृतिक्रम, जागृति, जागृति पूर्णता नियति सहज क्रियाकलाप है । नियति सहज क्रियाकलाप का तात्पर्य विकासक्रम, विकास, जागृति क्रम और जागृतिपूर्णता ही है । इसी क्रम में सम्पूर्ण अस्तित्व ही अभिव्यक्त है । इस प्रकार दृष्टि की क्रियाशीलता जागृति का कारण सह-अस्तित्व ही है । इसी सत्यातावश हर मानव जागृति को प्रमाणित करने योग्य है। अस्तु, अस्तित्व सहज रूप में जागृति को प्रमाणित करना ही मूल कारण है ।

It is amply clear by now that perspectives and thoughts are the cause of all human actions. Cause or basis of thoughts depends on perspectives. The perspective of a person depends on their jeevan’s status in awakening progression, awakening, awakening completeness and its continuity. Existence, or coexistence; development of the atom in coexistence; constitution completeness as a result of development of the atom; jeevan; perspectives in jeevan; thoughts depending on perspectives; actions depending on thoughts; and actions indicating the status in awakening progression; awakening; awakening completeness; and activities in the course of destiny - all this is the cause of awakening. Meaning of activities in the course of destiny is development progression, development, awakening progression and awakening completeness. The whole existence is expressive in this sense only. In this manner, coexistence is indeed the cause of activation of perspectives, and of awakening. Based on this fact itself, each person has the potential of evidencing awakening. So actually, to produce evidence of awakening in existence is the root cause.

सम्पूर्ण अस्तित्व जो कुछ भी अवस्थाएँ स्थितियाँ है, यथा-परमाणु, परमाणु अंश, धरती एक सौर व्यूह, ऐसे ही अनंत सौर-व्यूह जिसको ग्रह-गोल-नक्षत्र, तारागण, आकाशगंगा आदि नामों से हम मानव इंगित होते रहे हैं । यह सब सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज विधि से अस्तित्व ही है । इनमें से कोई-कोई धरती चारों अवस्था सहज अभिव्यक्ति सम्पन्न हो चुके हैं, कोई-कोई हो रहे हैं । कोई-कोई होने वाले हैं । इसीलिए अस्तित्व नित्य वर्तमान होना हमें समझ में आई है । इसीलिये अस्तित्व को परम सत्य के नाम से इंगित कराया गया है । अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति का मूल कारण सह-अस्तित्व ही है।

Whatever we see in the whole existence, for example, atoms, atomic particles, Earth, solar system, innumerable other solar systems; all of these have been variously named by humans as planets, constellations, stars, galaxies, etc. - all this is existence in the form of nature saturated in Omnipotence. Out of these, the four orders have already developed on some planets, while it is under- development on some planets. For some, it shall happen in future. This is how I understood the eternal presence of existence. For this reason only, existence has been called the ultimate truth. Root cause of realisation and its expression is coexistence only.

**एकान्त और सह-अस्तित्व**

**Solitude and coexistence**

आदि काल से आस्था के आधार रूप में एकान्त वास मान्यता के रूप में कहता हुआ देखने को मिल रहा है । इसके मूल प्रतिपादन में कोई एक महान ज्ञान और सर्वज्ञ शक्तिमान है जिससे ही सम्पूर्ण जीव-जगत की उत्पत्ति, स्थिति और लय होता है-ऐसे शक्ति के अनुग्रह से ही जीवनों का उद्धार हो सकता है । इसीलिये ऐसे अज्ञात शक्ति को प्रसन्न कर अनुग्रहित होने के लिये अनेक उपायों को प्रस्तुत किया है । यही अध्यात्मवाद, अधिभौतिकवादी, अधिदैवीयवादी मान्यताएँ प्रणीत हुआ, प्रचलित हुआ । इस प्रणयन में विविधता बना रहा । मूलत: यही मानसिकता है, विचारों में प्रभेद, मानसिकता में प्रभेद और समुदायों में प्रभेद होना दृष्टव्य है । इन्हीं प्रभेदता और उन-उन के प्रति कट्टरता है । इसी के साथ ही रूढ़ियाँ (एक परंपरा जिस प्रकार रूढ़ियाँ को बनाए रखता है - के अतिरिक्त बाकी सभी को गलत माने रहना।) यही भ्रमात्मक अहमता का मूल है ।

Living in solitude since ancient times has been seen as a belief based on faith. At its root is the belief that there is a great knowledge and some omniscient almighty entity behind the origin, state and rhythm of the whole living and non-living world - only by the grace of this supreme power, the living beings can attain redemption. To be graced by this unknown supreme power, various remedies have been suggested to please it. This gave rise to the beliefs of spiritualism, polytheism & metaphysics. However, there has always been variation in these beliefs. Basically, this itself is the mindset. Variation in thoughts, variation in mindsets and variation in the sects is easy to see. Radicalism is the strong support to these respective variations. Combined with customs, this itself is the root of a deluded mindset (the way one tradition follows some type of customs, and their assumption that all others are wrong).

यह सुस्पष्ट है कि भ्रमात्मक अहमताएँ मानव के सामाजिक होने का सूत्र व्यवस्था अभी तक नहीं बन पाई । आगे भी नहीं बन सकेगा । इसका गवाही यही है कि भ्रमात्मक विधि से कोई भी सूत्र निर्धारित नहीं हो पाता । अहमतावश जिसको निर्धारण मान लेते हैं, उसका विरोध उसी समय से निर्गमित रहता ही है । जैसा विधर्मियों का नाश - यह सभी समुदायों का आवाज है । इसका विश्लेषण यही है कि एक समुदाय से मान्य रूढ़ियों अहमताओं के अतिरिक्त और जितनी भी अहमताएँ और रूढ़ी है उनके नाश की कामना । इन सभी रूढ़ी और अहम्ता के मूल में आस्था ही कारण है । आस्था का तात्पर्य यही है किसी वस्तु को हम नहीं जानते हुए उसके अस्तित्व को मान लेना । इसी आस्था के आधार पर अपने मनमानी रूढ़िगत अहमताओं को सुदृढ़ करते हुए जुटे रहना देखा गया है । यद्यपि हर आस्थाएँ शुभकांक्षा से शुरू होते हुए किसी के नाश रूपी अशुभ के रूप में ही स्वयं के शुभ को मानने वाली स्थिति में आ जाता है । इसी आधार पर किसी भी प्रकार की आस्था अभी तक इस धरती में सार्वभौम होने में समर्थ नहीं हुआ । इस विधि से हम एकान्तवादी मान्यताओं के आधार पर, सार्वभौम नहीं हो पाये । क्योंकि हम मानव इस धरती पर एकान्तता का प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाये हैं ।

It is absolutely clear that deluded mindsets have not been able to establish sociability in humans. Nor will they be able to establish in future. The fact that not even a single maxim can be finalised by way of delusion, in itself is its testimony. Opposition to whatever is assumed to be finalised by the deluded mindset, starts immediately. For example, all sects are very vocal about destruction of the infidels. Upon analysis, it denotes the desire to destroy the mindsets and customs of all others, except the mindsets and customs acceptable to their own sect. Faith is the main cause at the root of all these customs and mindsets. Meaning of faith is - accepting the existence of some reality without knowing it. It has been observed that based on faith only, hard work is being done to enforce the customs rooted in deluded mindsets. Beginning with good intentions, all faiths reach a state where they assume that their own good can be achieved only by the destruction of others. This is the reason why not even a single faith has been universally accepted so far on Earth. By this logic, the thoughts of solitude have not been universally accepted because we humans could not produce evidence of solitude on this planet.

इसका तात्पर्य जिस एक में सम्पूर्ण जीव जगत विलय होने अथवा लय होने की बात कही गई; वह अभी तक इस धरती पर किसी व्यक्ति के द्वारा प्रमाणित नहीं हो पायी है । हर मानव हर दिन भौतिक-रासायनिक रचना-विरचनाओं को देखता है, इसी को सृष्टि और लय कहता है । इसी क्रम में लय को एक में अन्त (विलय) होने वाला और ऐसे एक से ही सभी सृजन होना बताया गया है । इन दोनों क्रियाकलाप के मूल - अभिप्राय रूपी जिस एक से पैदा होना है, जिस एक में विलय होना है, वह मूल तत्व ही प्रमाणित नहीं हो पाया । उसके बारे में कुछ अटकले लगाते रहे, तत्कालीन रूप में ठीक लगा होगा । क्योंकि हर व्यक्ति कुछ न कुछ मान्यता रखते हैं। जहाँ तक सृष्टि, स्थिति लय को घटना और मानसिकता के संयोग से भाषा के रूप में हम पाते हैं, इसे अधिकांश लोग मानते हैं । इस क्रम में एकान्तवाद रहस्यमय होना सर्वविदित है ही और एकान्त की कल्पना प्रमाणित होना, अभी भी प्रतीक्षीत है ही ।

In other words, the one in which the dissolution and rhythm of the whole living and non-living world was talked about; that has not been evidenced by even a single person on Earth. Every day, all humans see composition & decomposition of physico-chemical objects, and this has been traditionally called nature and its rhythm. In this chronology, it is mentioned that nature will eventually dissolve in the One, and everything is created from this One. The basic reality at the root of these two functions - the One from which everything is created, and the One in which everything dissolves - itself has not been evidenced; although speculations were made regarding this, whatever they thought appropriate at those times. All persons have some beliefs or the other. As far as incidents and mindset regarding nature, state and rhythm are concerned, most people believe in whatever is communicated by tradition. In this manner, solitude is still shrouded in mystery, and evidence of solitude is still awaited.

व्यवहार, अनुभव और प्रयोगपूर्वक प्रमाणित होने की विधि हम पाये हैं सभी इस तथ्य को समझ सकते हैं । इसे सभी प्रमाणित कर सकते हैं । अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन इसका आधार है । इस आधार के अनुरूप जीवन जागृतिपूर्वक अस्तित्व में अनुभूत होना एक स्वाभाविक उपलब्धि है । इस उपलब्धि की अपेक्षा, हर मानव में है ही । हमें यह उपलब्ध है । इसी आधार पर (अनुभव के आधार पर) हम यह सत्यापित करते हैं - अस्तित्व स्वयं सह-अस्तित्व है । सह-अस्तित्व नियम है, नियन्ता नहीं है । सह-अस्तित्व में भौतिक-रासायनिक रचना-विरचना है, ‘लय’ से इंगित कोई चीज नहीं है । विरचना को हम ‘लय’ नाम रख सकते हैं । लय की परिकल्पना के अनुसार चीज गायब होने की बात, समाप्त होने के बात, अस्तित्व ही खत्म होने की बात पर जो परंपराएँ तुले हैं, यह पूर्णतया भ्रम है, क्योंकि अस्तित्व न घटता है, न बढ़ता है । सह-अस्तित्व में रचना-विरचना एक आवश्यकीय घटना है क्योंकि परिणामानुषंगीय, बीजानुषंगीय रचना होना पाया जाता है, इन रचनाओं का विरचना होते हुए उन-उन रचनाओं में समाहित रासायनिक-भौतिक-रचनाओं का विलगीकरण ही होता है । विरचनाएँ होने मात्र से उन-उन में निहित वस्तु का तिरोभाव अथवा नाश नहीं होता । इसी तथ्यवश अस्तित्व स्थिर, नित्य वर्तमान रूप में देखने को मिलता है ।

I have found the method to evidence by way of behaviour, realisation and experiment, and everyone can understand this. Everyone can evidence this. Existence rooted human centred contemplation is its basis. On this basis, realisation in existence by awakening of jeevan, is a natural achievement. All humans have a natural expectation to attain it. I have already attained it. On this basis (on the basis of realisation), I truthfully declare this - Existence is coexistence. Coexistence is controlled by laws, but there is no controller. There is physico-chemical composition & decomposition in coexistence, but there is nothing called ‘rhythm’. We may denote decomposition as ‘rhythm’. Based on the imagination of rhythm, traditions are vehemently trying to fabricate the concept of disappearance of something, annihilation of something, even the obliteration of the existence itself; all this is completely delusion because existence neither decreases nor does it increase. Composition & decomposition is an essential occurrence in coexistence because compositions are formed as per constitution conformity, seed conformity; when these formations decompose, it is only their respective physico-chemical constituents which scatter. Just because an entity has decomposed does not mean annihilation or destruction of its respective constituents. Based on this fact, existence is seen to be stable and in the form of eternal presence.

इन तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है - सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी है, वर्तमान है, क्योंकि अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है पुन: क्योंकि सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही नित्य वर्तमान है । यही अस्तित्व है । इस प्रकार हम निष्कर्ष पर आते हैं कि जो कुछ भी है - यह सह-अस्तित्व ही है न कि एकान्त । अतएव एकान्त विचार प्रमाण विहीन होना सबको विदित हो चुकी है, इसीलिये जो है, परम सत्य के रूप में उसे स्वीकारना जागृति अथवा जागृति क्रम का द्योतक है ।

From these facts, it becomes clear that - coexistence is eternally effective, is eternally present because existence itself is in the form of coexistence and nature saturated in Omnipotence is eternally present. This itself is existence. In this manner, we come to the conclusion that whatever exists is in the form of coexistence, and not as solitude. Thus, it is well-known by now that the thoughts of solitude have no evidence; therefore whatever the reality is, to accept it as the ultimate truth is the indicator of awakening or awakening progression.

**आत्मा, परमात्मा, अस्तित्व**

***Atma, Paramatma*, Existence**

Own review (second round) —

इन मुद्दों में से आत्मा, परमात्मा की चर्चा अनेक भांति से मानव कुल में फैल चुकी है । परमात्मा को व्यापक बताते हुए आत्मा को परमात्मा का अंश होने की परिकल्पना यह चर्चा का विषय रही, प्रमाणित वस्तु के रूप में धरती पर किसी ने देखा नहीं । जब हम सह-अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन विधि से अस्तित्व को देख पाये तभी यह पता लगा कि व्यापक वस्तु में अनंत वस्तु क्रियाशील है । ये सभी अनंत वस्तुएँ चार अवस्था में क्रियाशील हैं । चारों अवस्थाओं को प्रमाणित करने वाला वस्तु अनंत रूपी प्रकृति ही है । यही जड़ और चैतन्य रूप में विद्यमान वर्तमान है। व्यापक वस्तु रूपी सत्ता में ही अनंत वस्तु रूपी प्रकृति नियंत्रित, संरक्षित रहना देखा गया । इन सम्पूर्ण अनंत में चारों अवस्था का मूल प्रभेद तत्व परमाणु ही है अर्थात् विविध प्रकार से अभिव्यक्ति होने का मूल तत्व परमाणु है ।

परमाणु में समाहित एक से अधिक परमाणु अंशों के संख्या भेद से ही विभिन्न अवस्थाओं की अभिव्यक्ति सहज हो पायी ।

ये परमाणु, अणु व अणु रचित रचनाओं के रूप में रासायनिक, भौतिक क्रियाओं को सम्पन्न करते रहे है ।

परमाणु ही विकासपूर्वक गठन पूर्णता पद में वैभव होना देखा गया । इसी को चैतन्य इकाई (जीवन) नाम से इंगित कराया गया ।

Among all such issues, discussions on *atma* and *paramatma* are also widespread in various ways in human tradition. Description of *paramatma* as Omnipresent, and imagination of *atma* as a fragment of *paramatma*, has been a point of discussion in human tradition but noone on Earth has seen any evidence of this. When I was able to see (understand) the coexistence by way of the Existence Rooted Human Centred Contemplation, I discovered that innumerable units are active in the omnipresent reality. All these innumerable units are active as the units of four orders in nature. Nature as innumerable units is indeed the evidence of these four orders. This very nature is present in the form of insentient and sentient. Nature as innumerable units is regulated & protected in Omnipotence which is in the form of the omnipresent reality. Atoms are indeed the main element (building block) providing diversity in all these four orders in existence; in other words, atoms are at the root of expressions of diversity in nature.

Due to variation in the number of subatomic particles in an atom, the four orders emerged naturally.

These atoms are at the root of all physicochemical activities in the form of molecules and molecular formations.

In the process of evolution, an atom indeed is seen to be established in the plane of constitution- completeness.

This has been named as the conscious unit (jeevan).

मानव परंपरा में जीवन अपने ही कल्पनाशीलता - कर्म स्वतंत्रता की ओर प्रवृत्त होते हुए जागृति की ओर बाध्य होता गया । जागृति जीवन सहज स्वीकृति रहता ही है । जागृति अर्थात् जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना क्रियाकलाप ही है । यह प्रमाणित करने के लिये, ऐसे प्रामाणिकता को पाने के लिये, सर्वमानव इच्छुक रहा है । इन्हीं अस्तित्व सहज जीवन सहज आधारों पर समुदायगत संकीर्णताओं और वैज्ञानिक कर्मगत धरती के साथ किये जाने वाले अनिष्ट क्रियाकलाप के प्रति अस्वीकृति होते ही आया । जागृति के लिये नित्य विद्यमान अस्तित्व, जीवन और मानवीयतापूर्ण आचरण ही प्रधान बिन्दु रहा अथवा सम्पूर्ण बिन्दु रहा । भले प्रकार से देखने - परखने के उपरान्त यह पता चला अस्तित्व में व्यापक वस्तु है, इसे परमात्मा के नाम से इंगित कर सकते हैं । यह भाग-विभाग होता नहीं । यह सम्पूर्ण प्रकृति में पारगामी है । परस्पर प्रकृति के लिये पारदर्शी है । इन प्रमाणों को हर व्यक्ति समझ सकता है । सत्ता में हर व्यक्ति डूबे, घिरे हुए स्थिति को देखता ही है। हरेक - एक इसी प्रकार दिखती है । पारगामी होने का बिन्दु तभी पता चलता है, वस्तु में निहित ऊर्जा सम्पन्नता को, बल सम्पन्नता के रूप में देखा जाता है । इसे इस प्रकार देख सकते हैं कि प्रत्येक वस्तु मूलत: परमाणु अंश, परमाणु अंशों से रचित परमाणु, अनेक परमाणु से रचित अणु, अनेक अणुओं से रचित रचनाएँ दिखते ही हैं । परमाणु अंश, परमाणु के रूप में गठित होने के क्रम में इन अंशों के परस्परता में निश्चित दूरी होना पाया जाता है । ये दूरियाँ स्वयं व्यापक वस्तु ही है । ऐसे परमाणु अंशों को भी अनेकानेक भाग-विभाग में कम से कम गणितीय विधि से विभाजन कल्पना कर ही सकते हैं । कितने भी विभाजन करें एक की संख्या (अंश) बढ़ती जायेगी, न कि किसी एक का नाश होगा । इस सहज क्रिया से यह पता चलता है, एक का वैभव नित्य है । एक के सभी ओर ऊर्जा (व्यापक) दिखाई पड़ती है । इस विधि से सत्ता रूपी ऊर्जा पारगामी है । यह स्वाभाविक ही स्पष्ट हो जाती है । यह बौद्धिक प्रक्रिया इसलिये आवश्यक है कि जड़-चैतन्य रूपी अनन्त प्रकृति में सत्ता पारगामी है और यही पारगामीयता सहज महिमावश हर वस्तुएँ अथवा प्रत्येक एक सत्ता में भीगा हुआ होना पाया जाता है । इस मुद्दे को पहले भी स्पष्ट किया जा चुका है। अस्तु, अस्तित्व में व्यापक सत्ता विद्यमान है, आप हमारे आँखों में देखने को मिलती है, इसका भाग-विभाग होता नहीं है और जीवों का उत्पत्ति अव्यक्त विधि से होता नहीं है । अस्तित्व में परमाणु ही जीवन पद में गठन पूर्णता पूर्वक वैभवित है । जीने की आशा का उद्गमन जीवन में, से, के लिये होता ही रहता है । यही ऊर्जा आशा रूप में प्रगट है क्योंकि जीवन अक्षय बल - अक्षय शक्ति सम्पन्न है, इस बात को पहले स्पष्ट किया जा चुका है । इसी के साथ पहले यह भी स्पष्ट किया है कि गठनपूर्ण परमाणु पर रासायनिक-भौतिक दबाव-प्रभाव प्रभावशील होता नहीं है । रासायनिक-भौतिक वस्तुओं का दबाव-प्रभाव, इन्हीं के आपस में प्रभावशील होना देखा गया है। यह निष्कर्ष स्वाभाविक रूप में धरती, वायु, जल को नियंत्रित रखने के लिये सद्बुद्धिदायी सूत्र है । इसी के साथ वन, खनिज का संतुलन, उसका उपयोग प्रयोजन को संतुलित रखने का प्रतिष्ठा, अधिकार (जिम्मेदारी) स्वाभाविक रूप में मानव से निर्गमित होता है और प्रमाणित होता है । यह सब जागृति और उसकी प्रभावशीलन का क्रम और वैभव है । इस प्रकार अस्तित्व सहज रूप में जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु होना, जिसमें ही मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा रूपी जीवन बल, आशा, विचार, इच्छा, ऋतंभरा और प्रमाण रूपी जीवन शक्तियाँ प्रमाणित होते हुए देखा गया है । अध्यात्म का परिभाषा सभी आत्माओं का आधार रूप में इंगित होना पाया जाता है क्योंकि सत्ता पारगामी है ।

In human tradition, jeevan is destined for awakening in quest of its own imaginativeness and free will. It is natural for jeevan to have acceptance of awakening. Awakening is the activity of knowing- believing- recognising- living. All humans have always been desirous of evidencing it, authenticating it. Based on these realities of existence and jeevan, unacceptance towards the narrowness of sects and unwelcome activities on this planet as a handiwork of scientists kept on increasing. Focal point, or main point, for awakening has always been the eternally present existence, jeevan and humane conduct. After thorough examination, it was found that the all-pervasive reality exists in existence, and it can be called paramatma. It is indivisible. It permeates the whole of nature. For nature, it is transparent. Every person can understand these evidences. It is easy for every person to see units of nature submerged, surrounded in omnipotence. Each unit appears in this manner. The point of permeating is understood only when the inherent energy in each unit is seen in the form of strength. It can be seen like this - basically, each unit is made up of molecules, which are made up of atoms, which are made up of subatomic particles. For a subatomic particle to work as an atom (or to constitute an atom), a definite distance is observed between subatomic particles. These distances, in itself, are the all-pervasive reality. It can be imagined that these subatomic particles can be further subdivided, at least mathematically. To whatever extent we may subdivide them, it will only increase the number of units (particles), and no part will be annihilated. With this natural observation, we find that the grandeur of a unit is eternal. All around a unit, we see the energy (all-pervasive reality). Thus, energy in the form of omnipotence is permeative. It becomes naturally clear. This intellectual exercise is essential because omnipotence is permeative in innumerable units of insentient-sentient nature; and due to magnificence of this permeation, each and all units are found to be soaked in omnipotence. This point has been clarified earlier too. All-pervasive omnipotence exists in existence, we can see it with our eyes, it is indivisible; and the origin of animals and humans does not happen in a mysterious way. In existence, the atom itself is established in the jeevan plane by way of constitution- completeness. Origin of the hope to be alive is in, by & for jeevan. Hope is the practical form of this energy because jeevan is endowed with inexhaustible strength - inexhaustible power, this has already been clarified. There is no impact of physicochemical pressure-effect on constitutionally-complete atom, this too has been clarified earlier. Pressure-effect of physicochemical objects is seen to occur on physicochemical objects only. This conclusion is an extremely wise sutra to regulate soil, air and water. Along with this, eminence and authority (responsibility) to maintain balance in use and purpose of forests and minerals naturally emerges from humans and is evidenced. All this is the grandeur of awakening and its effect. In this manner, jeevan as a constitutionally- complete atom in existence in which mun, vritti, chitta buddhi, atma as jeevan- strengths and hope, thought, desire, resoluteness, evidence as jeevan- forces getting evidenced has been seen.

अस्तित्व में अनुभव विधि से यह तथ्य सुस्पष्ट हो जाता है कि जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु है, इसमें मध्य में एक ही अंश कार्यरत है । सत्ता पारगामी होने के कारण, पदार्थ सत्ता को घेर नहीं पाता । इसका साक्ष्य यही है, किसी भी एक दूसरे के साथ भार बंधन का मूल में पाये जाने वाले चुम्बकीय धारा संबंध क्षेत्र से मुक्त होने के उपरान्त शूून्याकर्षण स्थिति में स्पष्ट हो चुकी है । ऐसे स्थिति में हर वस्तु अपने ही गति और मात्रा के परिसीमन में निरंतरता को प्राप्त किया रहता है, जैसे यह धरती, सौर व्यूह है। यहाँ उल्लेखनीय तथ्य इतना ही है, व्यापक वस्तु भाग-विभाग होता नहीं है और इन चारों अवस्थाओं की प्रकृति अथवा किसी एक अवस्था की प्रकृति व्यापकता में से किसी एक अंश को घेर लेने में समर्थ नहीं है । इसीलिये इकाईयाँ सभी ओर से सीमित रहती है, ऐसे सीमाएँ व्यापक वस्तु में घिरा हुआ ही दिखाई पड़ता है । इस तथ्य से यह भी इंगित हुआ और स्पष्ट हुआ है कि सत्ता में प्रकृति अविभाज्य है और वर्तमान है । इस प्रकार अध्यात्म का तात्पर्य भी यही सार्थक समझ में आता है, व्यापक में अनंत का अविभाज्य वर्तमान । यह अध्ययन इसीलिये समीचीन है, रहस्य से नित्य कुण्ठित मानव परंपरा रहस्य मुक्ति चाहता ही रहा ।

By way of realisation in existence, it becomes clear that jeevan is a constitutionally- complete atom having a single particle in the centre. Because of the permeation of omnipotence, matter is unable to surround the omnipotence. Its proof is - after getting free from the magnetic current interaction which is at the root of molecular- bondage between any two objects, the state of zero- attraction becomes clear. In this state, each object attains perpetuity within the limits of its motion and quantity, as is this earth and solar system. Main point here is that the all-pervasive reality is indivisible and the four orders of nature, or any single order, is unable to surround any part or section of this all-pervasive reality. Therefore, units are bounded from all sides, and these boundaries are seen to be surrounded by the all- pervasive reality. It also indicates and clarifies that nature is the integral part of, and active in, omnipotence. In this manner, the meaning of adhyatm is like this - inseparable presence of the innumerable in the all-pervasive reality. The only reason this study is available is because the human tradition, ever frustrated with mystery, always wanted the reality to be unveiled.

**भोक्ता, भोग्य, भोग**

**Enjoyer, Enjoyable (to be enjoyed), Enjoyment**

अस्तित्व में जीवन जागृति पूर्वक मानव परंपरा में दृष्टा-पद-प्रतिष्ठा को प्रमाणित करना ही जीवन सहज तृप्ति और अस्तित्व सहज व्यवस्था है । व्यवस्था में ही हर मानव वर्तमान में विश्वास करना और होना पाया जाता है । और किसी उपाय से अभी तक प्रमाणित नहीं हुआ कि मानव को वर्तमान में विश्वास हो सके, कर सके । जीवन तृप्ति सहित मानव परंपरा तृप्ति, मानव परंपरा में, से, के लिये मूल उद्देश्य है । इसी सार्वभौम आशय को सार्थक बनाने के क्रम में हर व्यक्ति में स्वायत्तता, हर परिवार में समाधान, समृद्धि और सम्पूर्ण मानव में समाधान, समृद्धि, अभय, सह- अस्तित्व यही अपेक्षित भोग है। भोग के मूल में सुखापेक्षा का होना सर्वमानव में दृष्टव्य है । यह भी देखा गया है कि समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में जीवनापेक्षा सहज सुख, शांति, संतोष, आनंद वर्तमानित रहता है । मूल मुद्दा यही है कि सुविधाएँ और संग्रह इन्द्रिय सन्निकर्षात्मक भोग, अतिभोग, बहुभोग इसे वर्तमान तक अर्थात् बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक तक अभिप्राय माना गया । इनके निष्कर्ष को इस प्रकार देखा गया कि संग्रह-सुविधा-भोग-अतिभोग के क्रम में सुख भासते हुए उसकी निरंतरता नहीं होती - यह सर्व विदित है ही । जबकि हम मानव सदा-सदा से सुखापेक्षा से ही परम्परा क्रम में व्यक्त होते आ रहे हैं । यह घटना अर्थात् संग्रह-सुविधामूलक सुखापेक्षाएँ सदा-सदा ही हर व्यक्ति में क्षणिकता में भंगुरता को सत्यापित कराते ही आया है । ऐसी क्षणिकता (सुख भासने वाली क्षणिकता) को पाने के लिये दिवा रात्रि संग्रह-सुविधा का परिकल्पना-सम्पादन कार्यों में लगा रहता हुआ अथवा लगे रहने के लिये इच्छा करने वाले स्थितियों में अधिकांश लोगों को देखा गया । अंतिम बात क्षणिकता के सत्यापन में ही हर पीढ़ी का उद्गार संप्रेषित होते ही आया । इस मुद्दे का संप्रेषणा इसलिये यहाँ स्मरण में लाया कि मानव परंपरा सुखापेक्षा से ही भय, प्रलोभन, आस्था, संघर्ष झेलता हुआ इतिहास रेखा बनाया है । यह रेखा मानव अपने भोग विधि और प्रवृत्ति विधि का संयोजन में स्पष्ट कर दिया है । प्रवृत्ति विधि कार्य और व्यवहारों में, प्रवृत्ति विधि के मूल में समझदारी का भी चिन्ह बना ही रहा । Evidencing the seer-plane eminence in human tradition by way of awakening of jeevan in existence, is indeed the fulfilment of jeevan and harmony in existence. It is in harmony indeed wherein humans trust the present. No other method has been successful so far by which humans can have trust in the present. Fulfilment of jeevan along with fulfilment of human tradition - this is the main goal in, by & for human tradition. In order to actualise this universal intent, self-reliance in each human, resolution prosperity in each family and resolution prosperity fearlessness coexistence in all humans - this is the expected enjoyment. Expectation of happiness is at the root of all enjoyment, this is apparent in all humans. It has also been seen that happiness, peace, contentment, bliss (jeevan- expectation) is present in resolution, prosperity, fearlessness, coexistence. Main point here is that comforts, accumulation, enjoyment based on sensory pleasures, extreme-enjoyment, multi-enjoyment have been mistaken for happiness till the last decade of the twentieth century. The conclusion drawn from this is - while pursuing accumulation, comforts, enjoyment, extreme-enjoyment, one gets a semblance of happiness, but the continuity of happiness is missing; it is well known. While we humans have always been doing everything in expectation of happiness, fragility in momentariness is experienced by everyone in the process of expectation of fulfilment of happiness by accumulation -comforts. Maximum people are seen to be in states where they are round the clock busy in planning for and maximisation of accumulation-comforts for attaining these moments (when they get semblance of happiness). Last point is that each generation is seen to be proclaiming and communicating the momentariness as the truth. This point has been reminded here because human tradition is full of pages in history consisting of endurances of fear, temptation, faith, struggle in expectation of happiness only. From these pages, it is clear that the past efforts were the result of a quest for enjoyment and their natural tendencies. Traces of wisdom at the root of these tendencies, in the form of work and behaviour, could be seen.

कुछ समय तक मानव भयभीत होकर उससे छूटने का उपायों को ही समझदारी मान लिया । उसके तुरंत बाद या उसी के साथ-साथ भय मुक्ति का स्थली को प्रलोभन के अर्थ में इन्द्रिय सन्निकर्ष व वस्तु संग्रह की ओर प्रवृत्त होना ही ज्ञान मान लिया । इनमें से समीचीन समस्याओं विकृतियों के चलते, इस धरती पर कोई सुख-संभावना नहीं है । इस धरती पर कोई सुखी हो नहीं सकता । सुख स्थली कोई और है । वह ईश्वर परमात्मा का लोक है, घर है, देवी-देवताओं का घर है, वहीं सुख मिलेगा । इस शरीर यात्रा में ऐसे अज्ञात ईश्वर, देवी-देवताओं को प्रसन्न करना आवश्यक है, संभव है । ऐसी कल्पना के साथ अनेक उपाय सुझाया गया । इसी के साथ यह भी परिकल्पना दी, ईश्वर-देवी-देवता के शासन में ही हवा-पानी शासित रहने के बयान किये गये । साथ ही हर जर्रा शासित रहने का बयान दिया । यही आस्था स्रोत का आधार हुआ । कल्पनाएँ ज्यादा सुविधा की ओर दौड़ी। ऐसी ईश्वरीय और देवी-देवताओं के लोकों में सुख मिलने के लिये प्रलोभन और उनके कोप भाजक न होने के लिये भय का इस्तेमाल किया गया । यही आधार रहा है आस्थाओं का । जो सभी समुदायों में मौलिक ग्रन्थों के रूप में देखने को मिलता है । प्रकारान्तर से आस्था में भी वही भय और प्रलोभन जो इस धरती में भय और प्रलोभन के पराभव को स्वीकार कर चुके थे, उसी को पुन: दूसरे विधि से इस धरती से अतिरिक्त स्थली में सफल होने के आश्वासनों के साथ सम्पूर्ण आस्थाएँ, अधिकतम मानव-मानस में स्वीकृत हुई । इस प्रकार के आस्था की लहरों को अभी भी धरती के जनमानस में देखा जा रहा है । इसमें समावेश हुई भय और प्रलोभन संघर्ष के रूप में आज प्रचलित हो चुकी है । जैसा-जैसा संघर्ष बुलंद होता गया वैसे-वैसे संग्रह सुविधा की आवश्यकता का तादात बढ़ती गई । इसे पाने के प्रवृत्ति-प्रयासों के साथ-साथ धरती, जल, वायु, वन, खनिज बरबाद होता गया । यही संघर्ष का परिणामों के रूप में आंकलन स्पष्ट हुआ है ।

For some time, humans assumed that getting rid of fear itself is wisdom. Immediately after that, or side by side, directing the areas where they became free from fear, towards temptation, inclining towards sensory pleasures and accumulation-comforts - it was assumed to be knowledge. Looking at contemporary problems and distortions (all through the history), there is no possibility of happiness on this earth; no one can be happy on this earth; the place where happiness is found is somewhere else; that place is the home of God, paramatma, gods and goddesses, that’s the place one gets happiness; in this bodily journey, it is important and possible to please such unknown paramatma, gods and goddesses - under this assumption, various measures have been recommended. Another theory was put forward - it has been mentioned that air, water are ruled under the rule of God-gods-goddesses, even the smallest grain of sand is also ruled in this manner. This formed the basis of the source of faith. But imaginations ran wild towards comforts. Temptation was used to assure happiness in the world of God and gods-goddesses, and fear was used to scare about their wrath. All this has been the basis of faiths. It is seen in scriptures of all the sects. In various ways, the assurances of fear and temptation (of a place different from this earth) were repeatedly tried in faiths, although fear and temptation had failed to yield any results on this earth; and most people accepted such assurances. Such waves of faith can be seen even today among the people of this earth. The inherent fear and temptation in this is seen in the form of conflicts today. As the conflicts intensified, the need for accumulation and comforts kept on increasing. Due to their efforts to obtain these, soil, water, air, forests, minerals, all of these are getting damaged. This is the assessment of the results of conflicts.

उक्त ऐतिहासिक तथ्यों को इसीलिये यहाँ स्मरण में लाना हुआ, हम मानव मूलत: सुख धर्मी है । सुखापेक्षा जीवन सहज है । जीवनापेक्षा सदा ही सुख, शांति, संतोष, आनन्द है । यह मानवापेक्षा रूपी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित करने के क्रम में ही जीवन सहज सुख भोग नित्य सफल होने के लिये व्यवस्था ही एकमात्र शरण है ।

The above historical facts have been refreshed here because we humans are basically sukh-dharmi. Expectation of happiness is in jeevan. jeevan expectation is always happiness, peace, contentment, bliss. To evidence human expectation in the form of resolution, prosperity, fearlessness, coexistence, and to be successful in continuous happiness in jeevan, harmony (orderliness) is the sole refuge.

व्यवस्था क्रम अपने आप में जागृति मूलक अभिव्यक्ति ही है । जीवन ही जागृत होना देखा गया है । समझदारी का धारक-वाहक केवल जीवन ही होना देखा गया है । जीवन सहित ही मानव परंपरा वैभवित रहना विदित है। इन तथ्यों के आधार पर अस्तित्व सहज व्यवस्था में अथवा नियति सहज व्यवस्था में जागृत होना और प्रमाणित करना ही सुख भोग का उपाय है । इस प्रकार सुख ही भोग का आशय है - आवश्यकता है । यह व्यवहार में सर्वतोमुखी समाधान प्रमाणित होने के क्रम में मानव में, से, के लिये नित्य समीचीन है । इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर आते हैं, भोग केवल सुख, शांति, संतोष, आनन्द है । ऐसे जीवनापेक्षा को भोगने के लिये समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित करना केवल व्यवस्था में ही संभव है, शासन में संभव नहीं है ।

The chronology of orderliness, in itself, is the expression which has awakening at its root. It has been seen that it is jeevan which gets awakened. It has been seen that jeevan is the bearer-holder of understanding. It is known that the grandeur of human tradition is with jeevan only. Based on these facts, to awaken and to evidence is the only recourse to enjoy happiness in the existential orderliness or in the destined orderliness. In this manner, happiness is the need and intent of enjoyment. In order to evidence comprehensive resolution in behaviour, it is readily available in, by & for humans. Thus, we conclude that enjoyment is actually happiness, peace, contentment, bliss. It is possible to enjoy the fulfilment of such jeevan-expectation by evidencing resolution, prosperity, fearlessness, coexistence only in orderliness (harmony), not in governance.

धर्मशासन और राज्य शासन विशेष और अव्यक्त के आधार पर तथा रहस्यमूलक होने के आधार पर सर्वसुख होना, होता ही नहीं । विशेष अथवा विशेष व्यक्तियों के प्रति सम्मान इसलिये है, शापानुग्रह शक्ति अथवा ज्यादा से ज्यादा तंग करने के लिये शक्तियाँ, विशेषों के पास हैं । इसके अतिरिक्त यह भी देखने को मिला कि विशेष व्यक्ति किसी जिज्ञासा को सफल होने के लिये आश्वासन देता है ।

As the religious governance and state governance are based on special and inexpressibility, and on mystery, universal happiness is not possible at all. There is respect for the distinguished persons because they have powers to cause maximum trouble. Besides, it has also been seen that the distinguished person gives assurance for fulfilment of curiosity.

आदिकाल से भी विशेष अथवा आदर्श व्यक्ति कम संख्या में होते रहे हैं । सामान्य कहलाने वाले सदा-सदा ही अधिक संख्या में रहते आये हैं । सम्मान अर्पण सदा ही विशेष व्यक्तियों के लिये सामान्य व्यक्तियों से होते ही आया । आज भी ऐसे ही अपेक्षाएं बनी रहती है । यह सर्वविदित है ।

Since ancient times, the number of distinguished or ideal persons has always been small. Number of people known as commoners has always been large. Respect has always been accorded by commoners to the distinguished persons. Even today, such expectations are there. It is well-known.

सामान्य व्यक्तियों के परस्परता में आजीविका संबंध प्रधान रहा है । इसी के साथ राज्य और धर्म शासन सूत्रों से अनुप्राणित संस्कृति, सभ्यता का धारक-वाहक होते हुए आज तक का इतिहास उक्त चार चौखटों से गुजरता हुआ देखने को मिलता है । यहाँ प्रासंगिक निष्कर्ष यही है, राज्य और धर्म शासन विधि से समाज रचना का सूत्र बनता ही नहीं है, न स्थापित हो पाया है । धर्म और राज्य के साथ, अभी तक जितने भी समुदायों के रूप में स्वीकृतियाँ है, वह सब संघर्ष परक ही है क्योंकि अभी तक समुदायगत राज्य और धर्म सर्व स्वीकृति होना संभव नहीं हो पाया । धर्म और राज्य शासन छल बल और प्रताड़ना जैसे औजारों के आधार पर ही गतिशील रहना देखने को मिल रहा है । इसका साक्ष्य यही है, धर्मशासन के अनुसार मानव प्रजाति सदा ही स्वार्थी अज्ञानी व पापी है । इससे छुटकारा दिलाना धार्मिक कार्यक्रम है । इस धरती पर जितने भी राज्य शासन है उनका मानना यही है देशवासी गलती-अपराध कर सकते हैं, पड़ोसी देश युद्ध कर सकते हैं इसलिये गलती को गलती से रोकना, अपराध को अपराध से रोकना और युद्ध को युद्ध से रोकना है यही सभी राज्यों का कार्यक्रम है । इस बीच जन सुविधा, जन कल्याण के नाम से जन, तन, धन, मन को लगाकर कल्याणकारी कार्य का दावा किया करते हैं यही अभी तक देखने को मिलता है । ऐसी जनकल्याणकारी कार्य दूरसंचार, यातायात, वाहन, सड़क, स्वास्थ्य, जनसुविधा व शिक्षण संस्थाओं के रूप में होना देखने को मिलता है । इस धरती में कलात्मक विज्ञान, तकनीकी, व्यापार की शिक्षा ही स्थापित हुई दिखती है । इस धरती में अभी तक न्याय पूर्ण व्यवहार और समाधानपूर्ण व्यवस्था मानवीयता पूर्ण शिक्षा में प्रवेश ही नहीं हो पाया । जबकि विनिमय व सार्वभौम व्यवस्था ही शिक्षा की सम्पूर्ण आत्मा है । ऐसी व्यवहार शिक्षा के लिये आवर्तनशील अर्थशास्त्र और व्यवस्था, व्यवहारवादी समाज शास्त्र और व्यवस्था, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान और व्यवस्था अनिवार्यतम स्थिति है। उत्पादन, प्रौद्योगिकी, तकनीकी को हर परिवार में समृद्धि सम्मत विधि से विकसित और स्थापित करने की आवश्यकता है। एक पीढ़ी समृद्ध होता है, आगे पीढ़ी को समृद्ध बनाने के लिये स्थापना कार्य को करते रहता है । समृद्धि के मूल में मानव व्यवहार ध्रुवीकृत होना आवश्यक है । मानव व्यवहार सूत्र मानव की परिभाषा और मानवीयतापूर्ण आचरण के रूप में अनुप्राणित होना देखा जाता है । फलस्वरूप परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होना पाया जाता है । शिक्षा-संस्कार से हर मानव में स्वायत्तता प्रमाणित होना ही इसकी सार्थकता है। इन तथ्यों को पहले भले प्रकार से स्पष्ट किया जा चुका है। यथार्थ यही है हर जागृत मानव सुख, शांति, संतोष को ही भोगता है और कोई चीज को भोगता नहीं है । सुविधा-संग्रह भी सुख, लक्षित होना सुस्पष्ट हो चुका है । इसी के साथ इसकी क्षणिकता-भंगुरता भी है, अतएव मानव इतिहास रूपी चारों सोपानों में कहीं भी सुख भोग की निरंतरता नहीं हो पायी। अब केवल परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था उसके पाँचों आयामों सहित कार्यप्रणाली में मानवापेक्षा सहित जीवनापेक्षा रूपी सुख, शांति, संतोष, आनंद भोगने में मिलता है । इसे भले प्रकार से हम देख पाये हैं । इस स्थिति के लिये हर व्यक्ति जागृत हो सकता है । इसी तथ्य के आधार पर सर्वसुख समीचीन है । सर्ववांछनीयता भी यही है । इस प्रकार जीवन भोक्ता है, सुख भोग है, भोग्य वस्तु व्यवस्था है । शरीर सहित मानव समाधान-समृद्धि अभय, सह-अस्तित्व सहज तथ्यों को भोगता है ।

The relationships among commoners have been mainly based on livelihood. Along with this, while bearing and holding culture and civilisation inspired by state and religious governance, history till today has passed through the above-mentioned four doors (fear, temptation, faith, conflict). The relevant conclusion here is that state and religious governance provide no sutra to build a society, nor could such a society be built. All the sects which are aligned with religion and state revolve around conflicts, because it has not been possible so far for sectarian state and religion to become universally accepted. It is seen that religious and state governance operate on the basis of deceit, power and oppression. Its proof is - as per religious assertions, humans are always selfish, ignorant and sinners. To get rid of these is the program of religion. All the ruling states on this earth have this belief - their own citizens can commit mistakes and crimes, neighbouring countries can wage wars. Therefore, a mistake for preventing a mistake, crime for preventing a crime, war for preventing a war - this is the program of all states. Along with this, in the name of convenience of the public, claims are made of public welfare by deploying public resources - this has been seen so far. Such public welfare activities are seen in the form of telecommunications, transport, traffic, roads, health, public conveniences and educational institutions. It is found that on this earth, education of only science, technology, and business is getting established. Behavior based on justice, orderliness based on resolution are yet to even enter the field of humane education on this earth; although exchange and universal orderliness are the core of education. For education of such behaviour, cyclic economics and orderliness, behaviour -centred sociology and orderliness, human consciousness -centred psychology and orderliness are most essential. Aligned with prosperity, production, industry and technology needs to be developed and established in each family. When one generation achieves the state of prosperity, it naturally works to ensure prosperity in the next generation. For prosperity, focus needs to be on human behaviour. Sutras of human behaviour are inspired by the definition of humans and in the form of humane conduct. As a result of this, a person becomes evidence of a family person. Evidence of self-reliance in each human - this indeed is the role of education -sanskar. These facts have been explained in detail earlier. Actually, each awakened human enjoys nothing else but happiness, peace, contentment, bliss. It has already been discussed that comforts and accumulation too are towards the goal of happiness. However, these have their momentariness and fragility; that’s the reason continuity of happiness could never be achieved in human history by pursuing interests-quad. I could very well see that only in family -rooted self -organised orderliness and its five dimensions, one can find happiness, peace, contentment, bliss. Everyone can get awakened and reach this state. Based on this fact, universal well- being is possible. This is universally desired too. In this manner, jeevan is the enjoyer, happiness is enjoyment, orderliness is what is enjoyable (to be enjoyed). We humans, using our bodies, enjoy resolution, prosperity, fearlessness, coexistence.

**सिद्धी-चमत्कार**

**Siddhi - miracles**

सिद्धी-चमत्कार के मुद्दे पर बहुत सारे वांग्मय और बहुत सारे लोगों का प्रयास अर्पित हुई । इसी के लिये योगाभ्यास, संयम, शक्तिपात, शक्ति जागरण, इन्द्रजाल, सम्मोहन जैसी प्रयोगों को किया जाना देखा गया है । इसके अलावा भी कितने भी प्रकार से सिद्धी-चमत्कार के लिये प्रयत्न किया जो वांग्मय रूप में भी नहीं पाया, ऐसा भी लोगों को देखा गया । ये सबका समीक्षा यही है अभी तक इस धरती पर सर्वशुभ के लिये उपकार, प्रमाण अथवा तर्कसंगत मार्ग जो अध्ययन विधि से बोध हो सके, ऐसा कुछ हो नहीं पाया । पुन: यह सब में से समाधि लक्षित (सम्पूर्ण विचारों का मौन स्थली) प्रवृत्ति कार्य के अतिरिक्त सभी का सभी यश कीर्ति सुविधा संग्रह के लिये किया गया प्रयासों के रूप में परिणितियाँ देखने को मिली । जहाँ तक समाधि के लिये इशारा है यह घोर परिश्रम के अनन्तर होने वाली स्थली के रूप में देखा गया । इस स्थिति में सर्वसुख का कोई भी तरीका उपजता नहीं । इसलिये इसे स्वान्त: सुख कहा गया । यह सही होना देखा गया है परन्तु अस्तित्व में सिद्धी और चमत्कार के रूप कोई चीज नहीं है । जो कुछ है क्रमबद्ध है, नियमित है, संतुलित है और व्यवस्थित है । मानव कुल अभी तक व्यवस्था को ही पहचानने के क्रम में भयादि चारों सीढ़ीयों को पार किया है ।

On the points of siddhi-miracles, a lot of literature has been written and many people have made sincere efforts. For this only, people have experimented with yogabhyas, sanyam, shaktipaat, shakti jaagaran, indrajaal, hypnotism. In addition to this, many other efforts for siddhi-miracles have also been made which are undocumented, but such people have been seen. Appraisal of all this is - so far, for the purpose of universal well being on this earth, we haven’t yet found a method whether of benevolence, evidence or logic, which is understandable by the method of study. Again, from all these, except when done for the goal of samadhi (a state of thoughtlessness), it was observed that the outcome of all other efforts was in the form of recognition, fame, comforts and accumulation. As far as samadhi is concerned, it is a state achieved after strenuous grind. In this state, no way to universal well being emerges. That’s why it has been called self-limited happiness. This is correct, but there is no siddhi-miracle in existence. Whatever is, is in natural progression, is regular, is balanced, is orderly. In order to understand orderliness, humankind has been making efforts in which so far they have overcome the four steps, including fear.

सर्वशुभ समझदारी से ही है ।

Universal well-being is achievable by understanding only.

**Chapter 7**

**जागृति कैवल्य**

**Awakening kaivalya (emancipation)**

मानव परंपरा में जागृति कैवल्य शब्द परिचित सा है । सम्मानजनक अभिप्राय में ही इन शब्दों का प्रयोग किया गया है। इतना होते हुए इन दोनों शब्दों का अभिप्राय रहस्यमयता के चुंगल में फँसा होने के कारण, मानव परंपरा में प्रमाणित होने का संयोग ही नहीं हो पाया । प्रमाणित होने का तात्पर्य परंपरा में एक दूसरे में एवं पीढ़ी से पीढ़ी में अंतरित होने से है । कैवल्य को अथवा जागृति को मानव परंपरा ही प्रमाणित करेगा। इसका परिभाषा और इसकी व्याप्ति समझ में न आते हुए भी सर्वोपरि शुभ स्थिति इंगित हो चुकी है । दूसरी विधि से मानव में स्वीकार्य हो चुकी है । जागृति का स्वरूप जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान ही है । जैसा जीवन है और अस्तित्व है, उसे वैसा ही जानना-मानना-पहचानना और निर्वाह करना ही जागृति और जागृति का प्रमाण है । जीवन वस्तु को गठनपूर्ण परमाणु के रूप में स्वीकारते हुए, समझते हुए, जीवन वस्तु में ही अक्षय शक्ति, अक्षय बल का प्रवाह बना हुआ समझते हुए, स्वीकारते हुए जीवन सहज क्रियाकलापों के पाँच शक्ति और पाँच बलों को समझते हुए, स्वीकारते हुए, जीवन बल प्रवाह में प्रिय, हित, लाभ रूपी नजरिया एक दूसरे के लिए अपना-पराया होना समीक्षित होते हुए को सभी स्वीकारते हुए एक-दूसरे के लिए पूरकता को आवश्यक समझते हुए न्याय, धर्म, सत्य रूपी दृष्टियाँ एक दूसरे के साथ पूरक होते हुए सार्थकता का मार्ग प्रशस्त होता हुआ स्थिति और गतियों को समझते हुए उक्त नजरिये में सम्पूर्ण अस्तित्व को सह-अस्तित्व रूप में साक्षात्कार करते हुए बोध और अनुभव करते हुए स्थितियों को विधिवत् समझते, सत्यापित करते हुए किया हुआ सम्पूर्ण आचरण अपने में मानवीयतापूर्ण आचरण होते हुए देखा गया है ।

In human tradition, awakening kaivalya is a familiar term. It has been generally used in respectable contexts only. However, as the meaning of both the words is enveloped in mystery, their evidence is not seen in human tradition. Meaning of evidence is the transfer, in tradition, from one to another and from generation to generation. Awakening or kaivalya will be evidenced by humans only. Although its definition and importance is not clearly understood, it is accepted that it is something very important for well being. In other words, it has become acceptable to humankind. Knowledge is in the form of knowledge of jeevan and knowledge of coexistence. To know- believe- recognise- fulfil jeevan and existence as they are indeed is awakening and the evidence of awakening. Accepting and understanding the reality of jeevan as a constitutionally- complete atom; accepting and understanding the flow of inexhaustible powers and inexhaustible strengths in jeevan itself; accepting and understanding inexhaustible powers and inexhaustible strengths of the activities of jeevan; appraising and accepting of pleasant, health, profit perspectives in the flow of jeevan strengths being behind the mentality of mine and theirs; accepting the need of everyone being complementary to each other; understanding that it is the perspectives of justice, dharma, truth which are helpful in showing the path to meaningfulness mutual complementariness; understanding and realising the whole existence as coexistence - all the conduct based upon properly understanding and affirming the above is how humane conduct has been seen.

मानवीयता पूर्ण आचरण, मूल्य, चरित्र और नैतिकता का अविभाज्य रूप होना देखा गया है जिसको पहले स्पष्ट किया जा चुका है । हर परिवार मानव में मानवीयतापूर्ण आचरण ही समाज रचना और निर्वाह का सूत्र है । समाज रचना क्रम में ही परिवार रचना न्यूनतम आकार है । परिवार रचना के साथ ही व्यवस्था की आवश्यकता उद्भूत होना देखा गया है । व्यवस्था में जीना सर्वाधिक मानव का स्वीकृति है । व्यवस्था अपने में सह-अस्तित्व सहज है, इस तथ्य को भी स्पष्ट किया जा चुका है, यह जागृति का पहला प्रमाण है । परिवार व्यवस्था में जीना सहज होने के उपरान्त ही समग्र व्यवस्था में भागीदारी संभव हो जाता है, समीचीन हो जाता है । जागृतिपूर्णता का यही प्रमाण होना देखा गया है। समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण सहित अभिव्यक्ति, संप्रेषणा प्रकाशन ही कैवल्य होना देखा गया है । कैवल्य अवस्था में सर्वतोमुखी समाधान अनुभव प्रमाण के आधार पर नित्य प्रवाह के रूप में होना पाया जाता है । कैवल्य अवस्था का महिमा यही है । इसी स्थिति में मानवापेक्षा, जीवनापेक्षा पूर्णतया प्रमाणित संतुष्ट रहना देखा गया । यही भ्रम से मुक्त अवस्था है । बंधन मुक्ति का सकारात्मक स्वरूप जागृति पूर्णता ही है । भ्रमवश ही बन्धन का पीड़ा होना पाया जाता है । मानव परंपरा में पीढ़ी से पीढ़ी भ्रमित होने का कारण परंपरा ही भ्रमित रहना रहा है । मानव परंपरा पाँच आयाम में प्रमाणित रहना ही जागृति है । स्वभावत: मानव अनेक आयामों में व्यक्त व प्रमाणित होने योग्य इकाई है । उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता को साक्षित होने, रहने, करने योग्य इकाई है । यह सब कैवल्य पद में सार्थक व चरितार्थ होता है । दृष्टा पद जागृति योगफल में ही कैवल्य है न कि मोक्ष में ।

It has already been clarified that humane conduct has been seen in the integral form of values, character and policies. Humane conduct in each family indeed is the formula to building of and living in society. In order to build the society, family is the basic fundamental unit. It has been seen that the need for orderliness arises as soon as family comes into being. For most people, there is an acceptance to live in orderliness. It has already been clarified that orderliness is in, by & for coexistence; this is the first evidence of awakening. Only after the ability to live in orderliness in the family does it naturally become possible to participate in the overall orderliness. This has been seen as the evidence of awakening completeness. It has been seen that expression, communication, exposition along with evidence of participation in overall orderliness indeed is kaivalya. In the state of kaivalya, it is found that all round resolution flows naturally on the basis of evidence of realisation. This is the magnificence of the state of kaivalya. In this state, human expectation and jeevan expectation are completely evident and fulfilled. This indeed is the state of liberation from delusion. In reality, liberation from bondage indeed is awakening completeness. Due to delusion remaining prevalent from generation to generation, human tradition itself remained deluded. Evidence in all five dimensions of human tradition is awakening. Humans, by nature, are units capable of expressing and evidencing in multiple dimensions; and capable of evidencing use, right-use and purposefulness. All this has significance and role in the state of kaivalya. Kaivalya is in the combined state of seer-plane and awakening, not in moksha.

मानव परंपरा जागृत होने के लिये अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित विश्व दृष्टिकोण को तर्क संगत विधि से अध्ययनगम्य होने के प्रणालियों से अभिव्यक्त होने के फलन में मानव परंपरा जागृत होना स्वाभाविक है । इसका प्रमाणों का धारक-वाहक अध्यापक ही होना पाया जाता है । निर्देशिका के रूप में वांग्मय और धारक-वाहकता के रूप में अध्यापक ही हो पाते हैं । विद्यार्थियों को जागृत शिक्षा प्रदान करने में समर्थ होना स्वाभाविक है । इस क्रम में मानव परंपरा जागृत होने का संयोग समीचीन है। जागृति निरंतर, न्याय, समाधान, सत्य सहज होता ही है, इसका वैभव ही मानवापेक्षा और जीवनापेक्षा के रूप में सार्थक हो जाता है । ऐसे सार्थकता को प्रमाणित करना ही जागृत मानव परम्परा का तात्पर्य है ।

It is natural for human tradition to awaken as a result of development of logical methods to study and express existence rooted human centred global viewpoint. Teacher is found to be the holder bearer of its evidence. Literature offers the guidelines and teachers are the holder bearer. These teachers are naturally capable of providing awakened education to the students. On this course, the event of human tradition getting awakened is inherent. Awakening is eternally in, by & for justice, dharma, truth and its grandeur is actualised in the form of human expectation and jeevan expectation. To evidence this is the role of awakened human tradition.

कैवल्य अवस्था में प्रमाणित होता हुआ मानव में यह भी देखा गया है कि शरीर यात्रा की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती है । कैवल्य पद प्रतिष्ठा प्राप्त जीवन जागृति पूर्ण होने के आधार पर जीवन के संपूर्ण क्रियाकलाप शरीर विरचित होने पश्चात् अनुप्राणित रहना देखा गया है । जागृति केन्द्रित वैभव जागृतिमूलक विधि से सम्पूर्ण जीवन क्रियाकलापों में जागृति अपने आप में प्रवाहित होता हुआ देखा गया है बल एक स्थिति, शक्ति एक गति के रूप में कार्यरत रहता है । बल और शक्ति में अविभाज्यता नित्य वर्तमान है । मूलत: बल ही है, महिमा के रूप में शक्तियाँ है । अनुभव मूलत: सह-अस्तित्व में जागृति है । अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व में नित्य वर्तमान जीवन ही और जीवन में से आत्मा ही अस्तित्व में अनुभूत होना सहज है । अनुभव का स्वरूप जानने, मानने का तृप्ति बिन्दु पा लेना है । यही भ्रम निर्मूलन का प्रमाण है । अनुभव के अनन्तर अनुभव बोध होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । ऐसे बोध में जानने, मानने की स्वीकृति बनी ही रहती है । यही ऋतम्भरा बुद्धि है । ऐसी बोध सम्पन्न बुद्धि का प्रवर्तन में ही सहज संकल्प, यथा सत्यपूर्ण संकल्प सुदृढ़ रहती ही है । इसीलिये सत्य सहज परावर्तन में दृढ़ता को संकल्प के नाम से इंगित कराया गया । यह सत्य प्रभावी होना पाया गया है । सत्य सहज रूप में अस्तित्व ही है, इस तथ्य को यथा स्थान में स्पष्ट किया जा चुका है । यह नाम भी सत्य सहज दृढ़ता को इंगित कराता है । इस विधि से सत्य साक्षात्कार सहित चिन्तन सहज ही उत्सवित रहना देखा गया है । यही जीवन सहज नित्य उत्सव है । उत्सवापेक्षी चित्रण, तुलन, विश्लेषण, आस्वादन, चयन क्रियाएँ उत्सव से अनुप्राणित, उत्सवित रहते हैं । यह सब आत्म तृप्ति का ही द्योतक है । आत्मा निरंतर अनुभव तृप्ति सहज विधि से परमानन्दित रहना स्वाभाविक रहता ही है । इस क्रम में अनुभव सहज आनन्द, व्यवहार सहज सुख अपने आप में ध्रुव होना स्वाभाविक है, पुनश्च जागृति का स्वभाव होना देखा गया है । ऐसी नित्य उत्सव को ही कैवल्य का नाम दिया गया है ।

For the humans in kaivalya state, it is seen that there is no further need for the bodily journey. It has been seen that jeevan in kaivalya -plane, because of being fully awakened, continues to inspire even after death of the physical body. It has been seen that grandeur of awakening, awakening in all activities of jeevan by awakening -rooted method flows by itself; strength is active in the form of state, power is active in the form of motion. Strength and power are eternally integrated with each other. Basically, it is strength; it manifests as powers. Realisation is basically awakening in coexistence. With its eternal presence in existence, it is natural for jeevan (and actually atma in jeevan) to become realised in existence. To achieve the point of fulfilment of knowing, believing is realisation. This is the evidence of elimination of delusion. After realisation, it is natural to have the understanding of realisation. Acceptance of knowing, believing is continuous in such understanding. This indeed is the buddhi with resoluteness. Buddhi accomplished with such understanding has inclinations with conviction; that is, conviction full of truth remains firm. That’s the reason the firmness in extrospection based on truth has been called ‘conviction’. This has been found to be in effect. Truth is existence itself, this fact has been highlighted at relevant places. This name also indicates firmness associated with truth. In this manner, festivity of contemplation along with discernment has been seen. This indeed is the eternal celebration in, by & for jeevan. Activities of visualisation, deliberation, analysis, tasting, selecting, which are in expectation of celebration, are energised and enthused by this celebration. All this is the indicator of fulfilment in oneself. By way of eternal fulfilment in realisation, it is natural for atma to be in the state of ultimate bliss. In this course, bliss in realisation and happiness in behaviour naturally become the focal points; again the awakening nature becomes apparent. This eternal celebration itself has been named as ‘kaivalya’.

नित्य उत्सव हर मानव का वांछित अभीप्सा है, जीवन सहज रूप में हर मानव शुभ स्वीकृति किया हुआ रहता है, जैसे सत्य, धर्म, न्याय स्वभाव इस प्रकार जीवन स्वीकृत तथ्यों के प्रति अपेक्षाएं रहना स्वाभाविक है। ऐसी अपेक्षाएँ सर्वमानव में विद्यमान है ही । इसीलिये सर्वमानव में, से, के लिये सर्वशुभ समीचीन है ।

Eternal celebration is the desired goal of all humans, In the form of jeevan, all humans are with continuous acceptance of well being. For example, it is natural to have expectations of truth, dharma, justice; these are always acceptable to jeevan. Such expectations are present in all humans. Therefore, in, by & for all humans, universal well being is in close proximity.

सर्वशुभ विधि जागृति मूलक अभिव्यक्ति और जागृतिगामी शिक्षा-संस्कार ही है । यही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र है । इस विधि से अनुभव मूलक विधि से अभिव्यक्त होने का कार्यक्रम ही शिक्षा-संस्कार के रूप में प्रभावित व वांछित होना देखा गया है । इन तथ्यों को हृदयंगम करने के लिये ‘‘समाधानात्मक भौतिकवाद’’, ‘‘व्यवहारात्मक जनवाद’’ को अवश्य ही अध्ययन करें । मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान सहज विधि से अस्तित्व सदा-सदा ही विकासोन्मुखी सह-अस्तित्व होने के कारण समाधान के अनंतर समाधान ही होना देखने को मिलता है । विकास का हर बिन्दु, हर कड़ी, हर अवस्था अपने आप में समाधान होना दिखाई पड़ती है । हर व्यक्ति को इसे हृदयंगम करना आवश्यक है ।

The method of universal well being is realisation rooted expression and realisation oriented education sanskar only. This indeed is the sutra to indivisible society universal orderliness. In this way, realisation rooted expression is effective and desired in the form of education sanskar. To internalise these, the reader must study ‘Resolution Centred Materialism’ and ‘Behaviour Centred Communication’. Resolution after resolution is seen by study of ‘Human Consciousness based Psychology’, as existence due to its being coexistence is always oriented towards development. Each point, each link, each stage of development is resolution in itself. It is essential for everyone to internalise it.

जो कुछ भी हम अनुभव, बोध, चिन्तन, चित्रण, विश्लेषण पूर्वक मानसिकता को बनाये रखते हैं । ऐसे स्थिति में हर मानव व्यवहार में सामाजिक होना, परिवार समृद्ध होना पाया जाता है । इस तथ्य के आधार पर ‘‘व्यवहारात्मक जनवाद’’ स्रोत को और आधार को मानव के रूप में पाते हैं । इस विधि से मानव ही प्रमाणों का आधार होना पाया गया है । अस्तित्व नित्य वर्तमान है ही, मानव ही प्रमाण कर्ता है । प्रमाण कर्ता का तात्पर्य परम्परा में प्रमाणों को उद्घाटित करने, प्रमाणित करने और बोध कराने योग्य इकाई है ।

We all have mindsets by way of visualisation, analysis based on realisation, understanding, contemplation. Each person in such a state is found to be sociable in behaviour and each family prosperous. Hence, humans are the source and basis of ‘Behaviour Centred Communication’. By this method, it is human indeed who is the basis of all evidence. Existence is eternally present and humans are the producer of evidence. Producer of evidence means the one who is capable of describing evidence in tradition, and helping in understanding.

मानव परंपरा व्यवहार, अनुभव और प्रयोग विधियों से प्रमाणित होना पाया जाता है। प्रमाणित होने के लिये उभय पक्ष की आवश्यकता है । इसलिये प्रबोधित, संबोधित होने रहने की स्थिति बनी रहती है । अनुभव मूलक विधि से ही प्रयोग-व्यवहार प्रमाणित होता है । मानव समझता है इसलिये प्रयोग है। प्रयोग अपने आप में होता नहीं । सभी प्रयोगों का दृष्टा मानव ही है । ऐसे प्रयोगों में, से अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिये साधन रूप में उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील होने वाली सभी उपलब्धियाँ, मानवीयतापूर्ण प्रयोगों के रूप में होना पाया जाता है । इसके साथ यह भी आंकलन हो जाता है, मानव तथा नैसर्गिक असंतुलन के लिये किया गया सभी प्रयोग निरर्थक होना स्पष्ट हो जाता है । इस प्रकार प्रयोगों में, से जो कुछ भी हम पाते हैं यह सामान्य आकांक्षा और महत्वाकांक्षा सम्बन्धी वस्तुओँ के रूप में ही होना पाया जाता है। आज की स्थिति में इन वस्तुओं को पाने के लिये आवश्यकीय मानसिकता सहज ही लोकव्यापीकरण हो चुकी है। इनका उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता करतलगत नहीं हो पायी है । इसीलिये इनके अपव्यय को अर्थात् अमानवीयता वश अपव्यय की संभावना दिखाई देती है, इसका शमन, उपाय, समाधान, मानवीयता पूर्ण पद्धति, प्रणाली, नीति सम्मत सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज को जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने की आवश्यकता है । यही अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान सहज सह-अस्तित्व विधि पूर्ण परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था को साकार करना ही है।

Human tradition is evidenced by way of behaviour, realisation and experiment. For evidence, more than one is needed. Therefore there are situations of being a teacher and being taught. It is only by realisation rooted method that experiment and behaviour is evidenced. Humans understand, that’s why experiments are done; otherwise, there is no rationale behind experiments. Humans are the seer of all experiments. In and from these experiments, all outcomes which provide resources in, by & for use, good-use and purposefulness in indivisible society, universal order are recognised in the form of humane experiments. All experiments leading to imbalance in humans and the rest of nature are meaningless, this is also appraised instantly. In this way, whatever we get in and from experiments, are the objects of common aspirations and higher aspirations. In today’s times, mentality is already widespread to procure these objects. However, their use, good-use and purposefulness has not become handy (not been understood). There thus exists a possibility of their wastage due to inhumaneness; there is a need to mitigate, remedy, resolve it and know- believe- recognise- fulfill universal order, indivisible society aligned with humane method, process and policy. This is the implementation of family rooted self organised orderliness aligned with coexistence.

व्यवस्था साकार होने के उपरांत शासन की निरर्थकता समझ में आती है । इसके फलस्वरूप छल, बल सहित किये जाने वाले द्रोह, विद्रोह, शोषण और युद्ध निरर्थक हो जाता है । साथ ही मानवीयता पूर्ण विधि क्रम में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में, से, के लिये कार्यक्रम, प्रवृत्ति, मानसिकता, अवधारणा और अनुभव सर्वसुलभ होना व्यवस्था गति में समाहित रहता है ।

Meaninglessness of governance is understood after orderliness is realised. As a result of this, treason, rebellion, exploitation and wars done with deceit and power, become meaningless. Side by side, in the course of the humane method, accessibility of program, inclination, mindset, concept and realisation to everyone for resolution, prosperity, fearlessness,coexistence is contained in the working of orderliness.

मानवीयतापूर्ण व्यवस्था गति बहुआयामी अभिव्यक्ति और उसका मूल्यांकन क्रम में तृप्ति, संतुष्टि और समीक्षा करने योग्य प्रणाली है । मानव अपने में, से किये गये सम्पूर्ण अभिव्यक्ति संप्रेषणा, प्रकाशनों को व्यवहार में प्रमाणित करने के उपरान्त उसका मूल्यांकन करना ही सफलता की स्वीकृति के रूप में होता है । जागृत परंपरा में किये गये सम्पूर्ण कार्य-व्यवहारों का मूल्यांकन मानवीयतापूर्ण व्यवस्था के अंगभूत होने के कारण मूल्यांकन सदा समाधान सहज होना पाया गया है । मानव परम्परा में व्यवस्था सहज विधि से जीना ही जीने की कला को प्रमाणित कर पाता है । इस तथ्य को अच्छी तरह से देखा गया है। इसके साथ यह भी समीक्षीत हुआ है कि व्यवस्था के पहले हम किसी भी प्रकार से जीने के जैसा नहीं दिखते हैं ये सब जीने के लिये प्रयत्नशील है ।

Humane working of orderliness is a multi dimensional expression and mechanism to evaluate fulfilment, contentment and appraisal. After evidencing in behaviour all expression, communication, presentation, and evaluating it is accepted as success by humans. In awakened tradition, evaluation of all work and behaviour is part of humane orderliness; evaluation is thus always aligned with resolution. In human tradition, living in orderliness is the evidence of the art of living. This fact has been clearly seen. Along with this, another fact came to be that before orderliness, we are nowhere near living, all that we do are efforts to live.

जीना कम से कम तीन आयामों में स्वयं स्फूर्त विधि से सम्पन्न होता है । तभी व्यवस्था में जीने का रस और सुख अपने आप मिलने लगता है । ऐसे तीन आयाम को न्याय सुलभता (न्याय प्रदायिता एवं पाने में सुलभता), उत्पादन सुलभता और विनिमय सुलभता पूर्वक ही हर परिवार व्यवस्था में जीता हुआ अनुभव करता है । ज्यादा से ज्यादा मानव, मानवीयतापूर्ण व्यवस्था में पाँचों आयामों में अपने भागीदारी को प्रमाणित करता है । यह उक्त तीनों के साथ शिक्षा-संस्कार सुलभता और स्वास्थ्य-संयम सुलभता है । इन्हीं व्यवहारिक आधारों के कारण मानव को जागृत और जागृतपूर्ण स्थितियों में देखा गया है । यह सबके लिये समीचीन है । इन्हीं दो स्थिति को क्रम से क्रियापूर्णता और आचरणपूर्णता का नाम दिया है। आचरण की विशालता में ही विशाल, विशालतर और विशालतम व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना सहज है । सम्पूर्ण प्रक्रिया का सफल स्वरूप समाधान और समृद्धि के रूप में मूल्यांकित होता है । अभय, सह-अस्तित्व मानवीयता पूर्ण आचरण का फलन है । इन तथ्यों को भली प्रकार से देखा गया है । इस प्रकार हर परिवार मानवीयतापूर्ण शिक्षा-संस्कार पूर्वक स्वायत्त मानव और परिवार मानव के रूप में जीते हुए व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण प्रस्तुत करना सहज है । सहजता का तात्पर्य जागृति पूर्वक प्रमाण सहज गति ही सहज होना । जागृति नित्य समीचीन रहता ही है । यह परम्परा जागृत होने के उपरान्त ही सर्वसुलभ होता है। मानवापेक्षा, जीवनापेक्षा ही सार्वभौम अपेक्षा है। यही जागृति और कैवल्य का प्रमाण है।

Living is accomplished effortlessly in minimum three dimensions. At that point, one naturally starts getting the flavour and happiness of living in orderliness. Only by these three dimensions of accessibility of justice (ease of doing and receiving justice), accessibility of production and accessibility of exchange does a family feel that it is living in orderliness. The maximum evidence that a person can produce is by participating in five dimensions of orderliness. These are accessibility of education sanskar and accessibility of health sanyam, along with the other three already mentioned. These are the practical basis on which humans are seen to be in awakened and fully awakened states. These are achievable by everyone. These two states have been called activity completeness and conduct completeness respectively. Only with height in conduct is it possible to naturally accomplish participation in large, larger and largest orderliness. Success of the whole process is evaluated in the form of resolution and prosperity. Fearlessness and coexistence are the result of humane conduct only. These facts have been seen thoroughly. In this manner, by way of humane education- sanskar, while living as autonomous and family persons, it is natural for every family to evidence orderliness and participation in the overall orderliness. Natural here means living in, by & for evidence by way of awakening. Awakening is always handy. It becomes universally accessible only after awakening in and of tradition. Human expectation and jeevan expectation is the universal expectation. This is the evidence of awakening and kaivalya.

जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान तथ्यों सहज विधिवत् अध्ययनपूर्वक बोध होना देखा गया है । ऐसे बोध सहज तथ्यों को उद्घाटित करने के क्रम में और लोकव्यापीकरण करने के क्रम में प्रमाणित होते ही है । फलस्वरूप अनुभूत भी होते हैं । इस प्रकार नित्य प्रमाण और अनुभव सहज रूप में ही सम्पन्न होता हुआ देखा गया है । यही कैवल्य और जागृति की महिमा है ।

It has been seen that by methodical study, understanding of knowledge of jeevan, knowledge of coexistence and knowledge of humane conduct is accomplished. Evidence is naturally produced in the process of unveiling and disseminating these facts of understanding. As a result, realisation too is accomplished. In this manner, eternal evidence and accomplishment in and of realisation has been seen. This is the magnificence of kaivalya and awakening.

अस्तित्व सदा-सदा वर्तमानित है ही, व्यक्त भी है । अस्तित्व में अव्यक्त नाम की वस्तु अथवा नाम से इंगित वस्तु नहीं है । अस्तित्व निरंतर परम सत्य होने के कारण रहस्य भी नहीं है । अस्तित्व नित्य वर्तमान होने के कारण समझने वाले मानव में, से, के लिये अति सहज है, जटिल नहीं है । अतएव अस्तित्व में अविभाज्य रूपी मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण इस अवस्था में, से, के लिये सार्थकता को प्रमाणित करने में समर्थ भी है। इन सभी कारणों से अनुभव मूलक विधि से जागृति और कैवल्य को प्रमाणित कर सकता है । मानव परंपरा इसका धारक-वाहक भी हो सकता है। यही ज्ञानावस्था का सार्थकता है।

Existence has always been present, it is manifest too. There is no reality in existence by the name ‘unmanifest’. Existence, because of being the ultimate truth, is not mysterious either. As the existence is eternally present, it is easy in, by & for a person who wants to understand; it is not complicated at all. Thus, humans being integral part of the existence, and also being in knowledge order, humans have the capacity to evidence their meaningfulness. Because of all this, humans have the ability to evidence awakening and kaivalya by realisation rooted method. Human tradition can be its holder, carrier too. This is the purpose of knowledge order.

**मानव ही जीवन मूलक व्यवस्था है…**

**Humans are the jeevan rooted orderliness…**

ज्ञानावस्था में पाये जाने वाले मानव अपने में मौलिक अभिव्यक्ति होना सर्वस्वीकृत है । इस मौलिकता के मूल में शरीर रचना के आधार पर पहचानने के लिए कोशिश किया वह नस्ल के ढांचे-खाँचे में पहचानने में आता रहा । इसी के साथ अर्थात् शरीर रचना के साथ रंग में भी विभिन्नता होना देखा गया । इन्हीं मुद्दे पर सर्वाधिक समय मानव अपने को मनमानी सोच में लगाया । इसी क्रम में मानव, मानव के साथ जैसा भी पाशविकताएँ बरती गई हैं वह सर्वविदित है ही । यह आरंभिक काल में ही अर्थात् इस धरती पर मानव के अवतरण होने के थोड़े ही समय के उपरांत घटित-घटनाओं के आधार पर समझा जाता है । इसके पश्चात भी बहु कारणों से समुदायों को अलग-अलग श्रेष्ठ-नेष्ठ बताने के लिए प्रयास किया गया, वांग्मय बनाये गये और उनके आधार पर आचार-संहिता बताई गई । अभी तक यही निष्कर्ष निकला है कि सार्वभौम रूप में मानव को पहचानने का विधि स्थापित नहीं हुआ । जबकि सुदूर विगत से ही यह प्रयास जारी रहा है ।

It is well-accepted that humans, as part of the knowledge order, are unique in themselves. Whatever efforts were made to identify the uniqueness of humans on the basis of their bodily composition, they kept coming in the purview of the classification of animal species. Along with the physical body, variations were apparent in colours too. On these points, humans spent a lot of time in arbitrary thoughts. During all this, humans treated other humans in animal like fashion, all this is well known. All this is concluded based on the incidents occurring shortly after the emergence of humans on this earth. After that too, due to multiple reasons, efforts were made to categorise sects as superior or inferior, literatures were written and codes of conduct were defined based on them. Conclusion of all this is that no universal method has been established yet for recognising humans, although efforts for the same have been going on since ages.

जैसा-जैसा मानव अधिकाधिक आयामों में अपने को सार्थक बनाने जाता रहा उनके सम्मुख उतना ही अधिक जटिलताएँ आता रहा । इन सभी कुण्ठा, प्रताड़नाओं को झेलता हुआ मानव लुके-छिपे विधियों से अपने में अच्छाइयों को पालने का भी बहुत सारा प्रयत्न करता रहा । ये सब करने के उपरांत भी अच्छाइयों का तृप्ति बिन्दु कहीं मिल नहीं पाया । इन्हीं सब विरोधाभासी घटनाक्रम में मानव अपने को पहचानने की अभीप्सा को बरकरार रखा । यही मुख्य रूप में परंपरा का देन है । इसी क्रम में पहले कहे गये चारों विभूतियों के गुजर रहे हैं। इन्हीं में उतरता-चढ़ता रहा विभिन्न समुदायगत मानव दृष्टव्य है ।

As the humans tried to make themselves meaningful in more dimensions, they kept on facing more and more challenges. Humans endured all these frustrations and oppressions and kept on making serious efforts to live with goodness. In spite of all this, the point of fulfilment for goodness could not be achieved anywhere. During all these contradictions and challenges, humans persisted in their desire to understand themselves. This is the main contribution of tradition. On this course, humans passed through the phase of using the four powers mentioned earlier (roop, pad, dhan, bal ??). Humans, belonging to various sects, can be seen caught in all this turbulence.

प्रधान उलझन यही है मानव शरीर मूलक व्यवस्था है या जीवन मूलक व्यवस्था है ? यदि जीवन मूलक व्यवस्था है, ऐसी स्थिति में जीवन क्या है ? कैसा है ? क्यों है ? इन्हीं प्रश्नों से बोझिल होता है । इसका उत्तर भौतिकवादी, अधिभौतिकवादी व अध्यात्मवादी विधि से व अधिदैवीवादी विधियों से अध्ययन प्रक्रिया सहित कोई तथ्य कल्पना प्रस्तुत नहीं कर पाया । विचार तो काफी दूर रहा । इसका उत्तर ‘‘अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन’’ से प्राप्त किया जाना सहज सुलभ है । यह रहस्यों और अनिश्चयताओं से मुक्त विधि है, और क्रम पूर्वक हृदयंगम होता है । इसी बिन्दु पर सुस्पष्टता के लिये विभिन्न स्थलियों में आवश्यतानुसार अवगाहन योग्य तथ्यों को प्रस्तुत किया ।

Are humans a body-based system or jeevan-based system ? This is the main confusion. If it is a jeevan based system, then what is jeevan ? How to understand it ? What is its purpose ? One becomes saddled with these questions. Leave alone any concrete thoughts, bhautikvadi, adhibhautikvadi, adhidaivivadi and adhyatmvadi methods could not even present any facts or clues forming procedures to study or to answer these questions. The answers are available in and from ‘existence rooted human centred contemplation’. This method is free of mysteries and uncertainties, and gets imbibed in a definite manner. To specifically clarify on this point, suitable explanations have been provided at relevant places.

अस्तित्व सर्वमानव को स्वीकृत होने के रूप में अनेकानेक ग्रह गोल, ब्रह्माण्ड, यह धरती, धरती में पानी समुद्र, नदी, नाला, हवा, वन-खनिज, जीव-जानवर, कीट-पतंग पशु-पक्षी का होना आबाल वृद्घ पर्यन्त हर व्यक्ति को समझ में आता है। इस धरती पर स्वयं के सदृश्य बहुत सारे लोग का होना भी स्वीकार होता है । इस परिशीलन से मानव सहित अस्तित्व सहज वर्तमान स्वीकार्य होता है । इससे आगे का मुद्दा मानव ही अस्तित्व का दृष्टा, अर्थात देखने-समझने वाला इकाई है ।

Various planets, galaxies, this earth, water oceans rivers rivellets air forests minerals animals insects birds on this earth - in this form, the existence is acceptable to all humans; this can be seen and understood by all humans, including children and elderly people. Even the presence of many other people, like oneself, on this earth gets accepted by everyone. By this observation, the presence of existence, including humans, becomes acceptable. Humans are the seers of and in existence, in other words the entities which can completely understand the existence - is the natural agenda for exploration after this.

उक्त तथ्य आदिकालीन मानव के सम्मुख भी यथावत् बना ही रहा । इन सबको बनाने वाला कोई और है, ऐसा मानने वाले बनाने वाले को खोजने-मानने और मनाने के कार्य में लग गये । इस मुद्दे पर धरती के सभी प्रकार के समुदाय फंसे ही है । जबकि धरती में स्थित ये सभी परस्परताओं में पूरक और विकासक्रम में काम करते रहते हैं । इसे दूसरे भाषा में यह कहना बनता है नियंत्रित, नियमित विधि से काम करते रहे हैं । विकास के आधार पर हर वस्तु अपने-अपने पद प्रतिष्ठा में रहता ही है । ऐसे निरंतर रहने वाली वस्तुएँ मूलत: एक-एक के रूप में अनन्त वस्तुएँ और व्यापक वस्तु में होना सबको समझ में आता है । इसी मूल तथ्य से वंचित होने से ही बनाने वाले को खोजने गये । रचना-विरचना क्रम में रासायनिक-भौतिक वस्तुएँ हैं । इन्हीं वस्तुओं को अपने कल्पनाशीलता-कर्मस्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए मानव कुछ रचनाओं को बना लिया है, कुछ रचनाओं को बना सकता है । मानव जो कुछ रचनाओं को साकार करता है, उसका विरचना होते ही रहता है। चाहे प्राकृतिक रूप में हो, चाहे मानवकृत रूप में हो, अथवा जीव कृत रूप में हो । इनसे किया गया सभी रचनाएं विरचित होते हुए देखा गया है । जैसा मधुमक्खी के छत्ते का रचना-विरचना, पक्षियों के घोंसले का रचना-विरचना, दीमकों से बनी बांबीयों का रचना-विरचना, मानव के द्वारा बनाई गई झोपड़ी, महल, सेतु, महासेतु, सड़क, यंत्र-उपकरणों का रचना-विरचना होने का तथ्य को आप हम देखते ही रहते हैं । यह ध्यान में लाने की आवश्यकता है, निर्णय लेने की आवश्यकता है, ये दोनों क्रिया के लिये मानव, अस्तित्व सहज रूप में पर्याप्त रहना देखा जाता है । इस धरती के बाहर भी जो कुछ भी वस्तुएँ है, रचना-विरचना क्रम में ही सदा-सदा ही तरल-तरल के साथ, विरल-विरल के साथ, ठोस-ठोस के साथ सह-अस्तित्व सहज नियम के आधार पर वर्तमानित रहता है । अस्तित्व न घटती है, न बढ़ती है ।

All the above facts, as it is, remained in front of the people in ancient times too. Those who believed that there is some maker of all these, got busy in finding that maker, and in persuading others. Sects of all beliefs on this earth are stuck at this point. Actually, all these objects are complementary in their mutual interactions and busy in development progression. In other words, they are regulated by natural laws. On the basis of its development, each reality naturally remains established in its plane. Whatever humans have been seeing since ancient times is these uncountable realities, in the form of countable units, soaked in the all pervasive reality - this much is understandable by everyone. Due to this detail getting missed, humans started their search for the maker. Physico-chemical realities are in the cycle of formation decomposition. By using these objects and applying their own imaginativeness and free will on these, humans have developed some new objects, and can develop some more. Whatever new is materialised by humans, that too eventually decomposes. Whether it is in natural form, or made by humans, or belonging to the animal order, all such formations are seen to be eventually decomposing. For example, formation and decomposition of beehives, nests of birds, mounds of termites; huts, palaces, bridges, roads and instruments made by humans - fact of their construction and destruction is seen by all of us. Attention needs to be given to this, decisions need to be taken regarding this; and for both of these, in the whole existence, it is only humans who have enough potential. Even in all the physico-chemical objects which are there at places other than this earth, in the cycle of formation and decomposition, liquid is present with liquid, gas with gas and solid with solid, as per the laws of coexistence. Existence neither depletes nor replenishes.

अस्तित्व सदा-सदा होने के वैभववश ही अस्तित्व नाम है, इसमें सह-अस्तित्व विधि से संतुलन, नियंत्रण, संरक्षण, परिणाम, विकास, जागृति जैसी अभिव्यक्तियाँ सदा-सदा रहता ही है । ऐसा कोई क्रियाकलाप को हम प्रस्तुत या कल्पना नहीं कर सकते हैं जो अस्तित्व में नहीं । अब रहा इस ग्रह गोल में हो, उस ग्रह गोल में न हो, यही स्थितियों के आधार पर किसी भाव की अपेक्षा में ही अभाव का कल्पना हो पाता है, हर अभाव देश काल ही है । इस आधार पर कोई नया-पुराने की बात नहीं हो पाती, नया-पुराना के स्थान पर नित्य वर्तमानता का भाव समीचीन रहता है । सम्पूर्ण भावों का स्वरूप ही अस्तित्व है । दूसरे विधि से ऐसे स्वरूप को अस्तित्व नाम दिया गया । मानव ही दृष्टा पद प्रतिष्ठा में होने के कारण अस्तित्व को देखने, समझने, समझाने योग्य है । अभी तक जो कुछ भी अध्ययन के नाम से की गई है अथवा अध्ययनपूर्वक हाथ लगा है, वह सब अस्तित्व सहज, सह-अस्तित्व में ही हुआ । हर अध्ययन का कसौटी यही है पूरकता, विकास, जागृति, उदात्तीकरण, प्रक्रिया-प्रणाली अनुरूप रहने से इसके विपरीत कुछ भी किया जाता है सर्वाधिक मानव ही परेशान होने से शुरुआत होता है । जैसा युद्ध, शोषण, द्रोह, विद्रोह क्रियाकलाप के लिये किया गया सभी प्रकार का प्रयास । इस क्रियाकलाप के लिए जितना भी सोचा गया है मानव दुखी पीड़ित होकर सोचा है । पीड़ाओं का उपचार उत्पीड़न विधि को अपनाने से युद्ध कर्म, युद्धाभ्यास, युद्धकौशल, युद्ध तकनीक की सामग्रीयाँ बनते आया । आज की स्थिति में युद्ध और शोषण के लिए सर्वाधिक जन-धन लगा हुआ है । इसके लिए द्रोह, विद्रोह, शोषण अति आवश्यक हुआ । इसीलिये धरती के श्रेष्ठतम प्रतिभाएँ इन्हीं कार्यों के लिए नियुक्त हुई है ।

Existence is called existence due the grandeur of its eternal presence, and by way of coexistence, the expressions of balance, regulation, protection, result, development and awakening are always present in it. We cannot present or imagine an activity provision of which is not there in existence. The only question is regarding the place, it may be on one planet and not on the other; based on such situations, only with reference to something sufficient can its deficiency be imagined; all deficiencies are of place and time. On this basis, all discussions of new and old become irrelevant, the feeling of continuous presence prevails instead of new and old. Existence includes all that is needed. This itself has been called existence. In the whole existence, only humans have the potential to see, understand and explain the whole existence due to their being established in the seer plane. By way of study, all achievements so far have been in existence which is in the form of coexistence. All activities against complementarity, development, awakening, evolution start only after the majority of the people are disturbed - this is the litmus test of all study. All the efforts for wars, exploitation, treason, rebellion are its examples. Origin of all the thought that has gone into these originated from the frustration of humans. All the developments in the practices, abilities, techniques and equipment of wars occurred because humans adapted methods of suffering to get rid of sufferings. In today’s times, maximum public money is directed towards wars and exploitation. Revolts, rebellions and exploitation have been at its root and its outcome. Best talents on this earth have been deputed for these tasks.

युद्ध के लिए व्यापार एक अनिवार्यता रही । अभी तक जितने भी युद्ध-व्यापार हुए, देश, देशों के बीच, पहले से अधिक शंका-कुशंका भयोत्पादी क्रम में प्रभावित हुआ । यह सम्पूर्ण मानव का देखा हुआ तथ्य है । व्यापार और युद्ध के लिए द्रोह-विद्रोह अति अनिवार्य रहा । इस प्रकार युद्ध पूर्वक शोषण, व्यापार पूर्वक शोषण कार्यों को इस धरती पर देखा गया है । जो अत्यधिक शोषण कर लेता है उसे विकसित देश कहने, स्वीकारने तक मानव जाति तैयार हो गयी । जबकि युद्ध, शोषण, द्रोह, विद्रोह समाज रचना और समाज वैभव का सूत्र नहीं बन पाती है । इसलिये व्यापार और नौकरी में लगे हुए आदमियों से समाज रचना, समाज संरक्षण, समाज संतुलन, समाज नियंत्रण जैसी महत्वपूर्ण मुद्दों का पूरक होना, इस धरती पर देखा नहीं गया । यहाँ इन तथ्यों को उद्घाटित करने के मूल में आशय यही रहा कि हम मानव जाति किस प्रकार के प्रवृत्तियों के चंगुल में आ चुके हैं जिसके फलस्वरूप मानव परेशान होता ही है, उसके साथ-साथ धरती उजड़ने की ओर गति बन चुकी है ।

Trade and wars go hand in hand. All the trading and wars which happened till date, only resulted in increasing the suspicion, mistrust and fear between the nations. It is obvious to everyone. Revolts and rebellions are essential for trade and wars. In this manner, exploitation as a result of wars and trade has been seen on this earth. So much so that nations which become experts in exploitation are called and accepted as the developed nations; although wars, exploitation, revolts and rebellions can never lead to building and grandeur of society. Therefore, building, protection, balance and restraint in society are yet to be seen on this earth by the efforts of people devoted to trade and jobs. Intent of highlighting all this here is to reflect upon the methods to which we humans are resorting to, as a result of which humans are perturbed, and the earth too is heading towards disaster.

चाहे उपयोगिता विधि से हो, चाहे संग्रह विधि से हो, चाहे युद्ध के लिये हो, चाहे जो कुछ भी वस्तुएँ चाहिये उनकी इस धरती से ही आपूर्ति होना, इसके लिए वन खनिज ही स्त्रोत है । धरती में जो कुछ भी वन खनिज बनी है, मानव के अवतरण के पहले से ही स्थिति में था ही उसके अनन्तर ही मानव का अवतरण इस धरती पर हुआ । मानव अपने को अखण्ड समाज के रूप में जीने की आवश्यकता को सोचा ही नहीं है । फलस्वरूप जीव-जानवरों के सदृश्य नस्ल, रंग के आधार पर लड़-भिड़कर अपने भद्दगी जितना करना था वह सब कर चुका ।

Whether it is for right-use, or for accumulation, or for wars - whatever is needed by humans, is supplied by this earth only, and forest and mines are its only sources. All the mines and forests which are found on this earth, have been here before humans appeared on this earth; humans have appeared only afterwards. Humans never ever thought of the need of living as an indivisible society. Consequently, they indulged in all the ugliness that they could indulge in, and fought like animals on the basis of race and colour.

अभी इस बीसवीं शताब्दी के दसवें दशक में देश, देश के साथ कूटनीतिक व्यापारोन्मुखी शोषण तंत्र का मुद्दा यही है कि विकसित देश कहलाने वाले, ऐसा कहलाने के लिए पैमानों को पहचाना गया है, अधिकाधिक सुवर्ण धातु जिस राष्ट्र कोष में संग्रहित हो चुका हैं उस देश का मुद्दा (मुद्रा ?) विकसित हो जाता है। यह व्यापार तंत्र का धन, धन को पैदा करता है सिद्धांत के आधार पर आधारित है । जिन-जिन देश के राष्ट्र कोष में सुवर्ण धातु कम रहती है उस देश की मुद्राएँ अविकसित रहती है । दूसरे भाषा में ज्यादा मूल्यवान कम मूल्यवान हो जाता है जबकि दोनों कागज ही रहता है ।

While identifying the yardsticks of whom to call a developed nation in this last decade of the twentieth century, the main issue in the strategic, trade- oriented, exploitative system is - currency of the nation having most gold in its reserves appreciates. It is based on the principle of - money generates money. Currency of the nations having less gold reserves depreciates. In other words, although both are papers, one becomes more valuable than the other.

दूसरा विकास का मापदण्ड समर शक्तियाँ, सामरिक सामग्री, सामरिक प्रयास जिन देशों में सर्वाधिक रहता है, उसी को विकसित देश कहा जाता है । युद्ध से शोषण की चर्चा सुनने में मिलता ही है । इस शताब्दी में हुई युद्धों के सिलसिले में भी शोषण-लूट-खसोट की चर्चाएँ जन वार्ताओं में देखा गया है । इन दो मापदण्डों में जो विकसित देश है, अब अन्य देशों के वन खनिज को उपयोग करने के लिए इच्छुक हो चुके है इसके लिये सभी योजनाएँ बन चुकी हैं । यहाँ उक्त तथ्यों का उल्लेख करने का आशय इतना ही है जिन युद्ध, शोषण, द्रोह-विद्रोह पूर्वक लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद की ओर सभी विधा में अग्रसर है । उसके लिए अंत विहीन साधनों की अपेक्षा मानव मात्र में होना देखा जा रहा है । इसकी आपूर्ति इस धरती से संभव नहीं है । इसलिये और भी संघर्ष की ओर इसका स्पंदन दिखाई पड़ती है । अतएव इससे मुक्त होना सहज सुंदर, सुखद, समाधानपूर्ण परंपरा बनानी ही है ।

Another yardstick of development is military powers, equipment and efforts; nations having more of these are called developed nations. Wars leading to exploitation, this narrative is frequently heard. People have been seen talking about exploitation and plunder even in the wars of the twentieth century, Nations which are developed based on these two yardsticks, are now planning and willing to lay their hands on forests and mines of other nations. All these details are mentioned here just to highlight that in their march towards satisfying the obsession -trio by way of war, exploitation, revolt and rebellion, an unending need for resources is clearly visible in humans. It is not possible to fulfil this supply from this earth. It is clearly leading to more and more conflicts. It is thus very essential to get rid of all this and have a tradition full of beauty, happiness and resolution.

इस विधि से हम इन तथ्यों के प्रति स्पष्ट हो चुके हैं कि वस्तुओं के आधार पर (रासायनिक-भौतिक) मानवाकांक्षा सम्मत व्यवस्था नहीं हो पाती है । यह जीवन जागृति मूलक विधि से ही सम्पन्न होना देखा गया है । जीवन में ही तुलन कार्यकलाप सहज रूप में ही सम्पन्न होने के कारण भौतिक-रासायनिक वस्तु संसार में प्रियाप्रिय, हिताहित, लाभालाभ तुलन के कसौटी पर देखा जा सकता है, देखा गया है । न्याय, धर्म, सत्य को मानव चेतना पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान (धर्म) सह-अस्तित्व सहज परम सत्य दृष्टियों के आधार पर अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को परंपरा के रूप में पाना सहज समीचीन है। बहुमुखी अभिव्यक्ति रूपी मानव सर्वतोमुखी समाधानपूर्वक ही व्यवस्था और उसका सार्वभौमता को प्रमाणित करने में सक्षम है। इसे योग्यता और पात्रता में प्रमाणित कर देना ही मानव परंपरा का प्रतिष्ठा है, क्योंकि जीवन में अक्षय शक्ति, अक्षय बल अविनाशीता सहित नित्य समीचीन है । उसे व्यवस्थात्मक प्रणालियों के रूप में परिशोधित प्रवर्तित करने की आवश्यकता है ।

By all the discussion above, it is clear that it is not possible to accomplish orderliness aligned with human- expectation based on physicochemical objects. It can be accomplished only by the realisation -rooted method. The activity of deliberation occurs in jeevan, and the deliberations of like-displeasant, healthy-unhealthy, profit-loss can be seen, and have been seen, pertaining to the physicochemical world. By way of human consciousness and comprehensive resolution based on justice, dharma and truth, it is natural to establish indivisible society and universal orderliness in the form of tradition. It is only by comprehensive resolution that multi- dimensional expressions of humans are able to produce evidence of orderliness and its universality. It is the magnificence of humane tradition to produce its evidence in ability and receptivity because inexhaustible power and strength, along with indestructibility, is ever present in jeevan. There is a need to refine and search for it in the form of methods of orderliness.

न्याय, धर्म, सत्य को स्वीकारने वाला, व्यंजित होने वाला, प्रमाणित होने वाला और प्रमाणों को प्रस्तुत करने वाला मानव जीवन ही है । इस तथ्य को भले प्रकार से देखा गया है। प्रिय, हित, लाभानुवर्ती कार्यकलापों में व्यस्त रहते हुए भी न्याय, धर्म, सत्य की स्वीकृति, अपेक्षा, कल्पना करता हुआ मानव को देखा जाता है यही इस बात का द्योतक है । इन्द्रिय सन्निकर्ष में प्रिय-हित व्यंजनाएँ होते हुए लाभ की कल्पना (अस्पष्ट आशा, विचार, इच्छा का क्रियाकलाप) लाभ की स्वीकृति को मानव में होना पाया जाता है । इसका अंतिम सर्वेक्षण हानि का अस्वीकृति, लाभ की स्वीकृति । उल्लेखनीय तथ्य यही है अस्तित्व में लाभ-हानि का कोई विधि नहीं है । इसलिए कहीं लाभ होता है तो कहीं हानि हो ही जाता है । इसलिए आज तक लाभोन्मुखी व्यापार विधि से कोई संतुष्टि बिंदु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है । जबकि मानव हर विधाओं में संतुष्ट होना चाहता है । इसीलिए चाहना होना का विरोधी है। सम्पूर्ण क्लेश भ्रमवश ही हो पाता है । जीवन ही भ्रमवश शरीर को जीवन समझने का फलन है । जीवन-जीवन को समझने के उपरान्त भ्रम जाल कष्टों से मुक्त होने के लिए उपायों को सोचना स्वाभाविक है । इसी क्रम में यह अध्ययन के लिए प्रस्तुत किया गया है । अस्तित्व न घटता है, न बढ़ता है, इसलिए लाभ-हानि से मुक्त है, इसलिये नाश से मुक्त है । इस प्रकार अस्तित्व नित्य वर्तमान रूप में अपने यथास्थिति में बने रहने के वैभव स्पष्ट है । अस्तित्व में अविभाज्य मानव भी सह-अस्तित्व में अनुभूत होना स्वाभाविक है । सह-अस्तित्व में ही व्यवस्था का विधान है । विविधता के साथ ही जुड़ा हुई परस्पर पूरकता सूत्र ही विधान है । ऐसा विधान नियति सहज रूप में नित्य प्रभावी है । यही सह-अस्तित्व का प्रमाण है । इसका और प्रमाण ग्रह-गोल एक दूसरे के पूरक होना, पदार्थ, प्राण, जीव, और ज्ञान अवस्था परस्पर पूरक होना ही है ।

It is the jeevan in humans which accepts justice, dharma, truth, becomes evidence and produces evidence. It has been clearly seen. While busy in actions revolving around the perspectives of pleasant, health and profit, humans are seen to be expecting and imagining justice, dharma and truth - this itself is its indicator. Acceptance and imagination (activity of unclear hope, thought, desire) of profit while being submissive to like-health in sensory proximity is seen in humans. Its conclusive proof is unacceptance of loss and acceptance of profit. But it is important to note that there is no provision of profit or loss in existence. Therefore, if profit is seen somewhere, there is a corresponding loss somewhere else. That is the reason no point of fulfilment has been achieved so far by resorting to profit oriented commercial activities. Results not meeting the expectations is precisely because of this reason. All the problems are due to delusion only; they are the result of jeevan assuming itself to be the body. When jeevan becomes aware that it is jeevan, and not body, it naturally starts thinking of ways to get liberated from the traps and sufferings of delusion. This writing has been presented to cater to this. Existence neither decreases nor increases, it is therefore free from profit and loss, it is therefore indestructible. In this manner, grandeur of the existence as ever presence and maintaining its state of existence, is obvious. As an integral part of existence, it is natural for humans to become realised in existence. Provision of orderliness is in coexistence only. Code of mutual complementariness linked with diversity indeed is the provision. This provision is ever effective in the form of destiny. This itself is the evidence of coexistence. Complementariness of planets with each other, and mutual complementariness of all the four orders is its further evidence.

पूरकता सहज विधि से अनुप्राणित होना रहना ही व्यवस्था सूत्र का आधार है । यह संवेदनशीलता, संज्ञानशीलता का संतुलन रूप में कार्यरत होना देखा गया है **। जानने-मानने के रूप में संज्ञानशीलता को और पहचानने-निर्वाह करने के रूप में संवेदनशीलता को हर मानव अपने में और सम्पूर्ण मानव में पहचान सकता है।** यही संवेदनाएँ अर्थात् पहचानने-निर्वाह करने का प्रवर्तन क्रम में पूरकता विधि अपने आप से चरितार्थ होता है। ऐसी चरितार्थता जीवन सहज अक्षय शक्तियों का ही वैभव है । इस क्रम में सम्पूर्ण मानव अपने को प्रयोजित कर पाना समीचीन है । इस क्रम में यह पता लगता है, समझ में आता है । मानवीयतापूर्ण आचरण के रूप में प्रमाणित हो जाता है कि मानव संचेतना अर्थात् संवेदनशीलता संज्ञानशीलता में, से जानना-मानना-पहचानना-निर्वाह करना यह पूर्णतया जागृत मानव सहज कार्यकलाप है । जीवन ही संज्ञानीयता का, मानव ही संज्ञानीयता-संवेदनशीलता का धारक-वाहक है । इस तथ्य को भले प्रकार से देखा गया है । निर्वाह करने की स्थिति में हर मानव द्वारा प्रमाणित होना आवश्यकता के रूप में देखा गया है। ऐसे प्रामाणीकरण क्रम में ही न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होना स्वभाविक है ।

To be and remain enlivened by way of complementariness is the basis of orderliness. Its working has been seen in the form of balance between sensitivity and intelligence. Intelligence in the form of knowing -believing and sensitivity in the form of recognising -fulfilling; this can be verified by every human in oneself and in all. In working of these sensations, or in pursuit of recognising -fulfilling, the way of complementariness becomes apparent. It is indeed the grandeur of inexhaustible powers of jeevan. In this manner, it is possible for all humans to live purposefully. This is the way it becomes clear or is understood. While in this process, it is evident in the form of humane conduct that knowing -believing -recognising -fulfilling in and from human consciousness is entirely an activity of the awakened humans. It is jeevan indeed which is the bearer -carrier of intelligence, while human is the bearer -carrier of intelligence and sensitivity. It has been clearly seen. The need of producing evidence has been seen in all humans in their interactions. It is natural that evidence of justice, dharma, truth will be seen in this process only.

शरीर तंत्र में प्रधानत: मेधस तंत्र ही सर्वोपरि सूक्ष्म तंत्र के रूप में देखने को मिलता है । मेधस तंत्र रचना सर्वाधिक पुष्टि तत्व से बना हुआ दिखाई पड़ता है । यह जीवन विचारों के साथ-साथ तंत्रित होना स्पष्ट होता है क्योंकि जीवन्त शरीर में ही मेधस तंत्र ही इसके क्रियाकलापों को करता हुआ देखने को मिलता है । इस रचना में कहीं भी ऐसी स्थली नहीं है जिसमें न्याय, धर्म, सत्य को बनाए रखे । इसी प्रकार हृदयतंत्र, फुप्फुसतंत्र, आंत्र तंत्र, प्लीहा तंत्र, वृक्कतंत्र, मलाशय, गर्भाशय तंत्रों में इसे बनाये रखने का कोई स्थली नहीं है । और भी देखा गया पाँचों कर्मेंन्द्रियों-ज्ञानेन्द्रियों में भी न्याय, धर्म, सत्य को पहचानने की स्थली कुछ भी नहीं है । इन तथ्यों से यह विदित हो जाता है कि जीवन शक्तियों से तंत्रित मेधस तंत्र द्वारा ज्ञानेन्द्रियों का कार्यकलाप सम्पन्न होता हुआ स्पष्टतया देखा गया है । अतएव जीवन ही न्याय, धर्म, सत्य को जानता है, मानता है, पहचानता है, निर्वाह करता है । फलस्वरूप जीवनाकांक्षा रूपी सुख, शांति, संतोष, आनंद भोगता है । भ्रमवश ही शरीर को जीवन मानते हुए प्रिय, हित, लाभात्मक प्रवृत्तियों में ग्रसित होते हुए स्वयं दुखी होता है, अन्य को दुखी बनाता है । नैसर्गिकता को भी अव्यवस्था में परिणित कर देता है । इस प्रकार से मानव अभी तक भ्रमित कार्यों को पूरा करने वाला है या कर चुका है । अब शेष जागृत कार्यों विचारों सहित सार्वभौम व्यवस्था, अखण्ड समाज सूत्रों में सूत्रित होना ही है । यही मानव का सुखद, सुंदर, समाधानपूर्ण कार्य है ।

In the physical body, the brain is seen at the topmost level. Brain is observed to be containing most proteins. Its working is seen with jeevan and thoughts because the brain in an alive body only is found to be busy in these activities. In all this (body and brain), there is no place which sustains justice, dharma, truth. Similarly, there is no place in the heart, lungs, intestines, spleen, kidney, colon, uterus to sustain these. It has been further seen that there is no pace in the five sensory or work organs which recognise justice, dharma, truth. All these facts clearly indicate that all sensory organs are governed by the powers of jeevan with the help of the brain; it has been clearly seen. Thus, it is jeevan only which knows, believes, recognises and fulfils justice, dharma, truth. And as a result, enjoys the fruits of happiness, peace, contentment, bliss. On the other hand, if under the assumption that the body itself is jeevan, then it (jeevan) is afflicted with the tendencies of pleasant, health and profit; as a result, it suffers and causes suffering to others too. In this state, it causes disharmony in the rest of nature too. In this manner, humans are accomplishing the activities of delusion, or have already accomplished. Now, what remains to be accomplished are the thoughts and actions of awakening connected with universal order, indivisible society. This is the pleasant, beautiful and resolutionful role of humans.

**भूमि: स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।**

**धर्मो सफलताम् यातु, नित्यं यातु शुभोदयम् ।।**

May Earth become heavenly, and humans become gods,

May *dharma* prevail, and goodness arise forever.